

श्री महावीर प्रेम सहायसी-समाज, मुम्बई

बाई अजीतमति एवं उसके समकालीन कवि

[१९ वीं-१७ वीं शताब्दि के अर्थात्, अज्ञात एवं अल्पवर्षिक पांच कवियों—बाई अजीतमति, परिमल्ल, जनपाल, म० महेन्द्रकीर्ति एवं देवेन्द्र के जीवन, व्यवस्था एवं कृतित्व के साथ उनकी सम्पूर्ण कृतियों के मूल पाठों का प्रथम बार संकलन प्रकाशित]

लेखक एवं सम्पादक

डा० कस्तूरचन्द्र कासलीबास

एच. ए., पी. एच. डी., मारसी

प्रकाशक

श्री महावीर प्रेम सहायसी समाज

प्रथम संस्करण : अक्टूबर, १९७४

मूल्य २०.००

सम्पादक — डा० हीरालाल माहेश्वरी एम.ए., डी०फिन, डी.लिट जयपुर
डा० रामचरण शर्मा, एम.ए. डी-एच.डी. अहमदनगर
डा० गंगाधर शर्मा, एम.ए. पी-एच.डी. भरतपुर

निदेशक मण्डल—

परम संरक्षक— श्री भट्टारक चावकोटिवाले, महाराज, मुंबई

संरक्षक— श्री साहू अशोक कुमार जैन, देहली

श्री पुनमचन्द जैन, अरिया (बिहार)

श्री रामेशचन्द जैन (श्री. एच. जैन) देहली

श्री डी० बीरेन्द्र हेगडे, धर्मस्थल

श्री निर्मलकुमार सेठी, लखनऊ

श्री महाबीरप्रसाद सेठी, सरिया (बिहार)

श्री कमलचन्द कासलीवाल, जयपुर

डा० (श्रीमती) सरयू० बी० बोसो, बम्बई

श्री यन्नालाल सेठी, डीमापुर

श्री रूपचन्द काटारिया, देहली

श्री बालचन्द जैन, सागर

अध्यक्ष— श्री शांतिलास जैन, कलकत्ता

कार्याध्यक्ष— श्री रतनलाल गंगवाल कलकत्ता श्री पूरुषचन्द गोडीका, जयपुर

उपाध्यक्ष— सर्वश्री गुलाबचन्द गंगवाल, रैनवाल, अमितप्रसाद जैन ठकेदार, देहली

कन्हैयालाल सेठी जयपुर, परमचन्द तोतूका जयपुर

रतनलाल विनायक्या डीमापुर, त्रिलोकचन्द कोठारी, कोटा

महाबीरप्रसाद नृपत्या जयपुर, चिरंजीलाल बच्च, जयपुर

रामचन्द्र राया गया, लेखचन्द बाकलीवाल, जयपुर

रतनलाल विनायक्या भागलपुर, सम्यतकुमार जैन, कटक

परमकुमार जैन नेपालगंज, ताराचन्द बबरी, जयपुर

रतनचन्द पंतारी जयपुर, भरतकुमारसिंह पाटोदी, जयपुर

श्रीमती जनेनी देवी कोठिया कराराणसी, शांतिप्रसाद जैन, देहली

सूर्यचन्द पंड्या जयपुर, समितकुमार जैन, उज्जैन

मोहनलाल अग्रवाल जयपुर

निवेशक एवं प्रधान

सम्पादक— डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल, जयपुर

प्रकाशक— श्री महाबीर प्रसाद अक्षयशर्मा

८६७ अमृत कला

प्रतिष्ठा ११००

अरकत नगर, किसान मार्ग

टॉक काटक, जयपुर-१५

मुद्रण ५० कल्पे

मुद्रक-मनोज प्रिन्टर्स, जयपुर-३

वर्ष-६७६६७

श्री महावीर ग्रंथ प्रकाशनी

प्रगति परिचय

श्री महावीर ग्रंथ प्रकाशनी के प्रगति परिचय में मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता है कि जिस उद्देश्य को लेकर प्रकाशनी की स्थापना की गयी थी उसकी ओर यह निरन्तर ध्यान बढ़ रही है। प्रस्तुत पुष्प सहित अब तक उसके साथ पुष्प निकल चुके हैं। इन सब पुष्पों में जिन कवियों का व्यक्तित्व एवं कृतित्व के रूप में मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है उनमें से अधिकांश कवि अब तक अज्ञात, अज्ञात अथवा अल्प चर्चित रहे हैं। कुछ कवि तो ऐसे हैं जिनके व्यक्तित्व को प्रकाश में लाने का एक मात्र श्रेय श्री महावीर ग्रंथ प्रकाशनी को दिया जा सकता है।

प्रकाशनी के छठे पुष्प कविवर बुलासीचन्द, बुलासीदास एवं हेमराज का विमोचन तिजारा (राजस्थान) में पञ्च कल्याणक प्रतिष्ठा मण्डल के विद्यालय समारोह में परमादरणीय महामहिम राष्ट्रपति श्री श्री जैलमिह जी सा० ने अपने कर कर्मलों से किया था। यह संभवतः प्रथम अवसर है जब महामहिम राष्ट्रपति महोदय ने किसी जैन विद्वान की पुस्तक का ऐसे विद्यालय समारोह में विमोचन किया हो। इसलिये ऐसा गौरव प्राप्त कर लेखक एवं प्रकाशनी दोनों भाई गौरवान्वित हैं।

प्रस्तुत सप्तम पुष्प में हमने पाँच कवियों का परिचय एवं उनकी कृतियों का संक्षेप किया है जिनमें अब तो अब तक पूर्णतः अज्ञात एवं अज्ञात माने जाते रहे हैं। हिन्दी साहित्य में कवियों के नाम अज्ञात पर जिनके वा शक्य हैं इसलिये बाई शक्यता की उपस्थिति एक अनोखी बात है। बाई शक्यता की अतिरिक्त, अज्ञात, अज्ञात एवं अज्ञात अज्ञात कवि हैं।

राजस्थान के शास्त्र मण्डलों में हिन्दी रचनाओं का विशाल भण्डार छिपा हुआ है। इन शास्त्र मण्डलों की जिसमें अधिक जानकारी की जाती है उतनी ही

यकी एवं अर्चयित कृतियों की उपलब्धि होती रहती है प्रस्तुत पुष्प में जिन चार कवियों का परिचय दिया गया है उनमें तीन कवियों की उपलब्धि अभी अत वर्ष १९८३ में की गयी खोज का सुखद परिणाम है ।

अब तक प्रकाशित सात भागों में ८० से भी अधिक कवियों पर विस्तृत प्रकाश डाला जा चुका है । उनमें-महर्षि-पूर्ण कवि, १ भट्टारक विष्णुवर्धकीर्ति, २ बृजराज, ३ श्रीहंस, ४ ठक्कुरसी, ५ नारवदास, ६ अतुलमल, ७ ब्रह्मजिनदास, ८ भट्टारक रत्नकीर्ति, ९ कुमुदचन्द्र, १० अजयचन्द्र, ११ सुभचन्द्र, १२ श्रीपाल, १३ सत्यसागर, १४ धर्मसागर, १५ श्लेष, १६ ध्याध्याय नोत्रकीर्ति, १७ ब्रह्म बसोधर, १८ सांगु, १९ गुणकीर्ति, २० यज्ञ.कीर्ति, २१ बुलाजीचन्द्र, २२ बुलाकीदान, २३ हेमराज गोदीका, २४ हेमराज पांडे, २५ बाई अजीतप्रति, २६ जनपाल, २७ परिमल्ल, २८ अ० महेन्द्रकीर्ति, २९ हेमेश, एवं ३० ब्रह्म रायमल्ल के नाम उल्लेखनीय है । प्रस्तुत भाग को मिलाकर अब तक २८५० पृष्ठों का विशाल भेदर उपलब्ध कराया जा चुका है जो अनेक भाग में एक रिफाई है । मुझे पूर्ण विश्वास है कि हिन्दी के जैन कवियों का जैसे-जैसे परिचय, मूल्यांकन एवं उनकी कृतियों का संकलन हिन्दी के विद्वानों के पास पहुंचेगा, जैन कवियों के प्रति उनकी उषेका की भावना उतनी ही तेजी से दूर हो सकेगी और जैन कवियों को भी हिन्दी की मुख्य धारा में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हो सकेगा ।

सहयोग

अकादमी को समाज का जितना सहयोग अपेक्षित है उतना सहयोग अभी तक प्राप्त नहीं हो सका है । हम चाहते हैं कि अकादमी के प्रत्येक प्राय एवं नगर में सदस्य हों जिससे इसके द्वारा प्रकाशित सभी महत्वपूर्ण पुस्तकें साहित्य प्रेमियों के हाथों में पहुंच सकें । फिर भी जितना सहयोग हमें अब तक मिला है उसके लिये हम उन सभी महानुभावों के आभारी हैं जिन्होंने अकादमी का सदस्य बन कर साहित्य प्रकाशन की योजना को मूर्त रूप देने में सहयोग दिया है । हमारी हार्दिक भावना तो यही है कि अकादमी द्वारा प्रति वर्ष तीन प्रकाशन हों, एक सेमिनार का आयोजन एवं प्राचीन साहित्य की खोज के विभिन्न कार्यक्रम तीव्र गति से होते रहें । अकादमी के संरक्षक माननीय श्री निर्मलकुमार श्री सा० सेठी लखनऊ की भी यही भावना है कि अकादमी की साहित्य प्रकाशन की योजनाओं पर सख्ती रक्षित खर्च हो । हम सेठी जी की भावनाओं के प्रति आभारी हैं । आभार अकादमी के प्रति सहज सहयोग प्रदर्शनीय है । उसी तरह अकादमी के परम संरक्षक स्वामी श्री पंडिताचार्य भट्टारक आर्यकीर्ति श्री महाराज सू कवित्री एवं डा० दरबारी लाल

श्री सा० कोटिया वाराणसी के सहयोग के लिये श्री हनुमान्मारी हैं। सा० कोटिया सा० के सर्व का तो सहयोग विवश ही रहता है, वे दूसरों की भी कलाकमी का खयल बनाने की भी प्रेरणा देने रहते हैं।

अकादमी के अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल जी सा० महाशयों महाशय के सांस्कृतिक निष्पन्न के संस्था को बहरी अति पहुंची है। महाशय सा० अण्ण्डे समाज सेवी के तथा बहिनू भारत में राष्ट्रस्वात का प्रतिनिधित्व करते थे। वे अकादमी के प्रति पूर्ण सहयोग की भावना रखते थे। इस अवसर पर हम अकादमी की ओर से उनके प्रति हार्दिक श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं।

नये संरक्षक सदस्यों का स्वागत

अच्छ पुष्प प्रकाशन के परचाद् माननीय श्री रूपचन्द जी सा० कटारिया एवं श्री डालचन्द जी सा० जैन सागर ने अकादमी के संरक्षक सदस्य बनने की स्वीकृति दी है। कटारिया सा० समाज सेवा एवं साहित्य प्रकाशन दोनों में पूर्ण रुचि लेते हैं तथा बिना किसी प्रदर्शन के अपनी सेवाओं से समाज को लाभान्वित करते रहते हैं। इसी तरह माननीय श्री डालचन्द जी सा० जैन मध्यप्रदेश में ही नहीं किन्तु पूरे देश में अपने सेवा भावी जीवन के लिये प्रसिद्ध हैं। आप देश के जाने माने उद्योग-पति हैं तथा अपनी उदारता एवं सरल स्वभाव के लिये सभी ओर लोकप्रिय हैं। हम दोनों ही महानुभावों का हार्दिक स्वागत करते हैं।

नये अध्यक्ष का का स्वागत

कनकसा निवासी श्री सांतिनाथ जी सा० जैन ने अकादमी के अध्यक्ष पद की स्वीकृति देकर अपने सहयोगी भावना का परिचय दिया है। आप एक युवा व्यक्तिसाथी हैं तथा धार्मिक सन वाले व्यक्ति हैं। आपने अभी इसी वर्ष श्री महावीर जी में सम्पन्न पञ्चकत्वायक प्रतिष्ठा सहोत्सव में तीर्थं इन्द्र का महास्वी स्वागत लेकर अपनी धार्मिक रुचि का परिचय दिया था। अकादमी की ओर से हम आपका हार्दिक स्वागत करते हैं।

वर्ष १९८२ में जिन महानुभावों ने अकादमी का उपाध्यक्ष बन कर संस्था को सहयोग दिया है उनके लिये हम सभी के हार्दिक आभारी हैं। वे महानुभाव हैं जयपुर के सर्व श्री भूपचन्दजी वाङ्मय, भरतकुमारसिंह जी पाटोली, एवं श्री मोहन लाल श्री अन्नदास, वाराणसी की श्रीमती चनेतीदेवीजी कोटिया, देहली के श्रीमंति प्रकाश जी जैन एवं उज्जैन के श्री साहित्यकुमार जी जैन। श्री भूपचन्द जी वाङ्मय युवा व्यक्तिसाथी हैं तथा सभी के प्रति सहयोग की भावना रखते हैं। धार्मिक

कार्यों में अपना अथवा योगदान देते रहते हैं। श्री भरतकुमार सिंह जी पुरातः
 धार्मिक जीवन जीने वाली व्यक्ति हैं। व्रत उपवास वृक्षा पाठ जिनका प्रति दिन का
 नियम है। संस्कारों को धार्मिक सहयोग देने की भावना रखते हैं। श्री मोहन लाल
 जी सा० काला प्रबन्धन जयपुर के जाने मनि चाटैई अकाउन्टेन्ट हैं। धार्मिक सन्म
 एवं सुमात्र केका की अन्वन्स रखते हैं। साहित्य प्रकाशन में धार्मिक रचि लेते हैं।
 श्रीकरी कमेलीदेवीजी श्रीक्रीडा समाज के अगस्वी अकीकी अ० दरबारीलालजी श्रीक्रीडा
 की अर्धमन्त्री हैं। हमारे अग्र्यवर्गों में आप एक मात्र महिला सदस्य है। अकादमी
 के अर्थों से अन्न विशेष रचि रखती हैं। हम आपकी अग्रनानों का हादिक स्वागत
 करते हैं। देहली के श्री शांतिप्रसाद जी सा० जैन स्वयं-कडे अमरी पुस्तक अग्र्य-
 सावी हैं। आपकी धार्मिक एवं साहित्यिक लगन देखते ही बनती है। बिना किसी
 प्रदर्शन एवं अन्न लिप्सा के आप सभी को अपना धार्मिक सहयोग देते रहते हैं।
 इसी तरह श्री अन्नितकुमार श्री जैन उन्नैक के प्रतिष्ठित अन्न समाज सेवी एव
 अन्न अर्थकर्ता हैं तथा मानका में अन्वधिक लोकप्रिय हैं। हम आप सबका हादिक
 स्वागत करते हैं।

इसी तरह कलकत्ता के श्री दुलीचन्द जी सरावगी, अम्बई के श्री राज
 मल जी जवेरी, सागर के श्री महेन्द्र कुमार जी मलैय्या, जयपुर के श्री गणपतराय
 जी सरावगी एवं भावनगर के श्री अन्नरलाल जी सा० अन्नमेरा ने अकादमी का
 सम्माननीय सदस्य बन कर जो सहयोग दिया है इसके लिये हम सभी महानुभावों
 के अगारी हैं।

सम्पादन में सहयोग

प्रस्तुत पुष्प के सम्पादन में राजस्थान विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ० हीरा
 लाल जी माहेश्वरी, अकाकासेज के प्रोफेसर डॉ० राजाराम जी जैन एवं भरतपुर
 राज्यकीय महाविद्यालय के अग्र्यता डा० गंगारामजी अन्न ने जो सहयोग एवं अन्न
 दर्शन दिया है इसके लिये हम तीनों ही विद्वानों के अगारी हैं। डॉ० माहेश्वरी
 सा० ने तो विद्वत्पूर्ण सम्पादकीय भी लिखा है जिसके लिये हम उनके विशेष
 अगारी हैं।

विद्वानों का स्वागत

अमृत कलश स्थित अकादमी कार्यालय में देश विदेश के विद्वानों का स्वागत
 करने का अन्नर मिलता रहता है। इस वर्ष जिन विद्वानों में विशेष रूप से अमृत
 कलश में अन्नर कर अकादमी के कार्यों को देखा, परखा एवं अपना अगारी

प्रदान किया उनमें डॉ० भगवन्त भावेन्तु दमोदर, श्रीमती राजकुमारी दीपेशीय, कटनी, डॉ० विनायक कसेबाई प्राच्य विद्या विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय वेल्डिगम, डॉ० अहेन्द्र सावर प्रचंडिया एवं डॉ० आदित्य प्रचंडिया घाटीपट, डॉ० भगवन्त भास्कर नागपुर एवं श्रीमती डॉ० पुष्पा जैन नागपुर, डॉ० प्रेमचन्द रावका मनोहरपुर के विशेष रूप से आभारी हैं। हम समाज के सभी विद्वानों का स्वागत करते हैं।

आगामी पुष्प

अकादमी का अगस्त पुष्प "दुर्लभ समाज एवं उनका पद्यपुराण" का प्रकाशन कार्य भी मई ८४ तक पूर्ण हो जावेगा। इस भाग में हिन्दी में रचित प्रथम पद्यपुराण का पूरा पाठ एवं कवि के काव्य का मूल्यमंकन किया गया है। जिसमें १६० से भी अधिक कृष्ट रहेंगे।

आभार

अन्त में मैं इन सभी महात्माओं का आभारी हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष एवं पर्यक्ष रूप से अकादमी को अपना सहयोग/भागीरथ तथा आर्थिक संबल प्रदान किया है।

डॉ० कस्तूरचन्द्र कामतजीबाब

निदेशक एवं प्रधान सम्पादक

संरक्षक की ओर से

श्री महावीर ग्रन्थ अकादमी के सप्तम पुष्प "बाई अजीतमति एवं उनके समकालीन कवि" को पाठकों को हाथों में देते हुए मुझे अत्यधिक प्रसन्नता है। प्रस्तुत पुष्प में बाई अजीतमति, परिमल चौबरी, भ० महेन्द्रकीर्ति, बनपाल एवं देवेन्द्र कवि-इन पांच कवियों का जीवन परिचय एवं उनके कार्यों के विस्तृत अध्ययन के साथ उनकी मूल कृतियों को भी प्रकाशित किया गया है। यह प्रथम अक्षर है जब योजनाबद्ध प्राचीन जैन कवियों की रचनाओं को सुसंस्थापित करके साहित्यिक जगत के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। सप्तम पुष्प के पांच कवियों में से परिमल चौबरी को छोड़ कर शेष सभी चार कवि अब तक अज्ञात एवं अर्थात्त रहे हैं। वही नहीं हिन्दी जगत के समक्ष एक महिला कवि बाई अजीतमति को खोज निकालने में श्री डा० कासलीबाल जी को सफलता मिली है। बाई अजीतमति की कृतियों के अध्ययन के पश्चात् इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है वह एक आध्यात्मिक कवयित्री थी तथा भक्ति परक पद रचना में पूर्ण रचि लेती थी।

भ० महेन्द्रकीर्ति के सभी १५ पद उच्चस्तर के हैं जो आध्यात्म एवं भक्ति रस में धीरे धीरे हैं। बनपाल कवि ऐतिहासिक पदों के लिखने में रचि लेते थे। वे पहले कवि हैं जिन्होंने केजोराम पाटन में स्थित भगवान भुनिसुव्रतनाथ, आमेर (जयपुर) में स्थित भगवान नेमिनाथ, ठोडारायसिंह में स्थित भगवान आदिनाथ एवं सांगानेर में स्थित भगवान महावीर की अतिमयशुक्त प्रतिमाओं के स्तवन के रूप में पद लिखे हैं। इसी तरह देवेन्द्र कवि हैं जिन्होंने संवत् १६३८ में यज्ञोत्तर रास को महारा नगर (गुजरात) में लिखवा दिया था। यज्ञोत्तर रास १६वीं शताब्दी की महत्त्वपूर्ण कृति है जिसका भी प्रथम बार प्रकाशन किया गया है। इसी पुष्प में १७वीं शताब्दी के महत्त्वपूर्ण कवि परिमल चौबरी का महान अध्ययन किया गया है। कवि परिमल अपने युग में ही नहीं किन्तु उसके पश्चात् भी शताब्दियों तक

सांस्कृतिक जीवन में रहे हैं इसीलिए उनकी "जीवात्मक कविता" कृति की पन्नाओं पर साहित्यिक जैन ग्रन्थकारों के उपलब्ध होनी हैं। डा० काठलीवाल ने ऐसी महत्वपूर्ण कविताएँ एवं उनकी कृतियों को जोड़ निकालने में जो प्रयत्न परिश्रम किया है और उसमें सफलता प्राप्त की है उसके लिए वे साधुभाव के पात्र हैं। साहित्यिक जगत उनकी इस महान् सेवा के लिए विरक्त नहीं रहेगा।

श्री महावीर ग्रन्थ प्रकाशनी साहित्य सेवा संस्था है जिसकी स्थापना समस्त हिन्दी जैन साहित्य को योजनाबद्ध ढंग में प्रकाशित करने के लिए की गई है। यह उसका सप्तम पुष्प है इसके पूर्व छह पुष्पों में, ब्रह्म रामचन्द्र, बृहदारण्यक, श्रीहस्त, भारवदास, ठक्करसी, ब्रह्मचिनदास, भ० रत्नकीर्ति, भ० कुमुदचन्द्र, प्राचाम सोमकीर्ति, सांगा, ब्रह्म यशोचर, कुलाकीचन्द, कुलाक्षीदास, पाँडे हेमराज, हेमराज गोदीका जैसे कवियों पर उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के रूप में बहुत सुन्दर प्रकाश डाला जा चुका है।

प्रकाशनी के षष्ठम पुष्प का विमोचन गत वर्ष मार्च में महामहिम राष्ट्रपति श्री ज्ञानी बैलसिंह जी ने तिवारा (राजस्थान) में आयोजित पंचकल्याणक महोत्सव में अपने कर कमलों से किया था। यह प्रथम अवसर था जबकि देश के महामहिम राष्ट्रपति जी ने किसी जैन विद्वान की कृति का विमोचन किया हो। इसके पूर्व के पुष्प भी स्व० डा० सत्येन्द्र, झुल्लकरल सिद्धसागर श्री महाराज साबनू वाले, भट्टारक बाणकीर्ति जी महाराज मूढचित्री जैसे मनीषियों एवं सन्तों द्वारा विमोचित हो चुके हैं।

श्री भारतवर्षीय दिवम्बर जैन महासभा सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र की तरह साहित्यिक क्षेत्र में भी कार्य करते रहने की ओर निरंतर जाबरूक है। वह यह भी चाहती है कि श्री महावीर ग्रन्थ प्रकाशनी जैसी साहित्यिक संस्था द्वारा जैन साहित्य के प्रकाशन का कार्य निरन्तर चले बढ़ता रहे। मैं समाज के सभी महानुभावों से प्रार्थना करता हूँ कि वे प्रकाशनी के अधिक से अधिक से संस्था में सहाय्य बन कर जैन साहित्य के प्रकाशन में अपना पूर्ण योगदान दें।

निर्मल कुमार शंकर

दो शब्द

(डॉ० होरालाल माहेश्वर, एम.ए., एल्-एल्. बी., डी. फिल., डी. लिट्)

धार्मिक भारतीय धार्यभाषाओं—विशेषतः हिन्दी, गुजराती और राजस्थानी के साहित्येतिहासों में जैन काव्य धारा का महत्वपूर्ण स्थान है। वह धारा बड़ी व्यापक है। जैन काव्य की गणना धार्मिक काव्य के अन्तर्गत है। जिन जैन कवियों ने लौकिक प्रेम कहानियों और इतिहास को आधार बनाया है, उन्होंने भी धार्मिक रचनाएँ तो लिखी ही हैं।

मध्य युग में मुख्यतः तीन तत्व जनभावना को प्रेरित करते थे—राजा, धर्म और परम्परा। धार्मिक प्रेरणा से ही हमारी अधिकांश सांस्कृतिक और साहित्यिक धाती सुरक्षित रह गई है। जैन काव्य का निर्माण, संरक्षण और प्रचार-प्रसार इस प्रेरणा के फलस्वरूप हुआ है। धार्मिक उत्थान उसका लक्ष्य है। माध्यम है—तत्-तत् कालीन क्षेत्र-विशेष में प्रचलित सरल भाषा और कथ्य है—(1) परम्परागत और पौराणिक कथाएँ तथा (2) स्वानुभव और जावपूर्ण उद्गार। साहित्यिक दृष्टि से सर्वाधिक आकर्षक है—जैन कथा और अरि काव्य। ऐसे काव्यों में स्थान-स्थान पर मनोवृत्तियों और दशाओं, विभिन्न वस्तुओं, स्थानों, अवसरों, प्रकृति आदि के भाव-भीने चित्रण मिलते हैं। कथा में वर्णित समाज की युग-युगीन भाँकी के भी दर्शन होते हैं। इन काव्यों की विशिष्ट शब्दावली का सांस्कृतिक महत्व है। इस महत्व को भलीभाँति दर्शाना अध्ययन का एक पृथक् पहलू है। इस ओर ध्यान दिया जाना चाहिए।

यद्यपि भारतीय साहित्य अन्त-अन्त भाषाओं में लिखा गया है तथापि वह मूलतः एक है। देश, काल, युगीन मान्यताओं, विचारों और परम्पराओं के कारण उसमें अलग-अलग रंगत दिखाई देती है। भारतीय साहित्य वाटिका में अन्त-अन्त भाषा-साहित्यों के फूलों की यह रंगत भी उसका विशिष्ट सौन्दर्य है।

ऐसी ही एक रंजित जैन काव्य की है। यह हमारी गौरवपूर्ण बरोहर है जिस पर गर्व होना उचित ही है।

इस बरोहर की कुछ जानगी डॉ० कस्तूरचंद कासलीवाल ने दिखाई है— प्रस्तुत ग्रंथ में और इससे पूर्व प्रकाशित ६ अन्य ग्रंथों में। प्रेमी पाठकों और ग्रन्थेताओं के लिए यह ग्रंथभाला अत्यन्त उपादेय सिद्ध होगी, इसमें संदेह नहीं ऐसा कार्य कितना कठिन, अथ और व्यय—साध्य है, यह युक्तयोगी ही जान सकता है, और इसके लिए साहित्य जगत की ओर से डॉ० कासलीवाल बधाई के पात्र हैं।

यह खेद की बात है कि अभी तक भी जैन काव्य का साहित्येतिहासों में सम्मक् धाकसन और विवेचन नहीं हो सका है। इसका कारण साहित्येतिहासकार उतने नहीं जितने स्वयं जैन काव्य प्रेमी हैं। जैन काव्य—कृतियाँ इस काव्य के जैनेतर ग्रन्थेताओं और इतिहासकारों को भी सुलभ नहीं हो पाती, साधारण पाठक की तो बात ही क्या है। उसकी यत् किञ्चित् चर्चा जैन समाज तक ही अधिकीकृतः सीमित है। दूसरे, जैन दर्शन और चिन्तन की पगडंडियों में जैन काव्य खो गया है यद्यपि यह बिचित्र बात है कि साधारण जिज्ञासु और पाठक के लिए जैन काव्य ही उसके दर्शन और चिन्तन के प्रसार का सुदृढ आधार है। विभिन्न जैन—संस्थाएँ इन बातों की ओर किञ्चित् ध्यान दे सकें, तो साहित्य का बड़ा उपकार होगा। तब जैन काव्य जैनेतर समाज में भी और अधिक चर्चा—परिचर्चा का विषय बन सकेगा जिसके फलस्वरूप उसके अनेक पक्षों के अतिरिक्त उसकी धाज की प्रासंगिकता भी उजागर होगी। प्रस्तुत कार्य और अन्य ऐसे कार्यों को प्रोत्साहन देना और उनका प्रचार—प्रसार करना ही इसका एक मात्र उपाय है। विश्वास है जैन समाज इस ओर ध्यान देगा।

बिनीस
हीरालाल माहेश्वरी

लेखक की ओर से

देश में हिन्दी भाषा का विशाल साहित्य विद्यमान है। विगत सात शताब्दियों से कवियों एवं लेखकों ने हिन्दी साहित्य के भण्डार को इतना अधिक प्राप्लावित किया है कि उसकी ग्राह्यता किसी नये द्वीप की खोज करने के समान है। हम किसी भी गाँव/शहर में स्थित शास्त्र भण्डारों अथवा व्यक्तिगत संग्रहों की खोज में निकल जावें तो कभी-कभी कुछ ऐसी कृतियाँ उपलब्ध हो जाती हैं जिनके बारे में हमने अब तक सुना भी नहीं होगा। इसलिये हिन्दी साहित्य के विशाल भण्डार को इतिहास के रूप में बाँचना किसी एक विद्वान के लिये संभव नहीं है। अब तक हिन्दी साहित्य के जो इतिहास लिखे हैं वे सब किसी न किसी प्रकार अपूर्ण हैं क्योंकि उनमें समग्र हिन्दी साहित्य का प्रतिनिधित्व नहीं हो पाया है। उदाहरण के लिये हम जैन कवियों द्वारा स्थित हिन्दी साहित्य को ही लें। इस साहित्य को किसी भी विद्वान् ने उचित स्थान प्रदान नहीं किया। अब तो प्राचीन कवियों को इतिहास में स्थान मिलना ही बन्द सा हो गया है। जैन कवियों एवं उनकी काव्य कृतियों के बारे में अभी तक जो कुछ भी सामग्री सामने आई है उसे केवल सेम्पल सर्वे (Sample Survey) कह सकते हैं। वही कारण है कि जैसे-जैसे अकादमी के प्रकाशनों की संख्या बढ़ रही है वैसे ही अज्ञात एवं अर्थाक्षित कवियों की संख्या में आश्चर्यातीत वृद्धि हो रही है। अब तक हम ऐसे ३० हिन्दी जैन कवियों को प्रकाश में लाने में सफलता प्राप्त कर चुके हैं जिनके बारे में हम अब तक पूर्णतः अन्वेषण में थे। प्रस्तुत सप्तम पुष्प में चार कवि पूर्णतः अज्ञात एवं अर्थाक्षित हैं तथा एक कवि अल्प अर्थाक्षित है।

में इन पाँच कवियों में एक कवियत्री अज्ञीतमति है जो १७ वीं शताब्दी में अपनी कविताओं से अज्ञानियों को आनन्दित किया करती थी। अज्ञीतमति प्रथम जैन कवियत्री के रूप में हिन्दी जगत् के सामने आयी है। इसकी उपलब्धि की कहानी भी अत्यधिक रोचक है। जिस पोथी में कवियत्री की कृतियों का संकलन

है इसकी वजा बीहड़ बीहड़ी होने से यह उपेक्षित बनी रही और उसके एक एक पाठ नहीं बचे जा सके। करीब ६-७ पहिले पूर्व का बीबी भुवः देखने में आती और जब उसका एक २ पृष्ठ देखते २ भागें बड़ने लगीं तो एक पत्र पर बाई अजीतमति का नाम बड़ने में आया। एक पहिला कवि बाई अजीतमति का नाम बड़कर उसकी कृति को पूरा बड़ने की और भी उत्सुकता बड़ी तथा और २ पूरी बीबी के एक २ पृष्ठ को खान से देखने पर अजीतमति की अन्धी सामग्री हाथ जब बनी। साथ में उसके स्वयं के द्वारा लिखा हुआ वह पत्र जिसमें संवत् १६२० अंकित है। इसकी प्राचीन कवयित्री की उपलब्धि अत्यधिक प्रसन्नता की बात है। अजीतमति औराबाई की समयकालीन थी। मीरा का जन्म सं० १५५५-१५७३ के मध्य माना जाता है तथा उसकी मृत्यु १६०३-१६०४ के मध्य मानी जाती है इसी तरह बाई अजीतमति का जन्म हमने सन् १५५० के आसपास एवं मृत्यु सन् १६१० के आस पास मानी है। जैसे मीरा ने भक्ति परक पद लिखे उसी प्रकार अजीतमति ने भी आध्यात्मिक पद लिखे हैं। यही नहीं संवत् १६२० (सन् १५६३) में प्रयुक्त हिन्दी पद्य के प्रयोग का भी एक नमूना मिला है जो भावा साहित्य की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

प्रस्तुत पुष्प के दूसरे कवि परिमल चौधरी है जिनके बारे में डॉ० प्रेम सागर, डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री एवं पं० परमानन्द शाल्मी ने संक्षिप्त प्रकाश डाला है। कवि की एक मात्र रचना श्रीपाल चरित्र ४०-४५ वर्ष पहिले प्रकाशित हुई थी जो अनुपलब्ध मानी जाती है। परिमल कवि उच्च स्तरीय कवि थे। उनके कवि श्रीपाल चरित्र में श्रीपाल की घटनाओं का बहुत विस्तार रूप से वर्णन मिलता है। कवि की भाषा में साहित्य एवं शब्दों में मधुरता है। कवि ने श्रीपाल के चरित्र का इतना सुन्दर एवं आकर्षक वर्णन किया है कि पूरा काव्य रोचक बन हो गया है। उसके वर्णनों में सजीवता एवं हृदय पुनर्जीवित करने की भरपूर क्षमता है। इसलिये कोई भी पाठक श्रीपाल चरित्र को एक बार प्रारम्भ करने के बाद उसे पूरा करने के बाद ही छोड़ता है। प्रस्तुत भाग में काव्य का प्रारम्भिक एवं अन्तिम अंश दिया गया है वह काव्य का प्रमुख अंश है।

तीसरे कवि बनवास है। जिसकी चर्चा भी साहित्यिक जगत् के समस्त प्रथम बार की जा रही है। बनवास वैद्य कवि के द्वितीय पुत्र थे। पिता का कवि होना और उनके बीबी भुवों का भी कवि होना अत्यधिक उत्प्रेरणात्मक है संयोग है। बनवास की कविताओं का कोई बड़ी कृति नहीं खोज सके हैं लेकिन उनके जो चार पद्य मिले हैं वे चारों ही इतिहास परक हैं। केसोरामसदन, चमेर, चामेरेर एवं टोडारामसिंह के मुनिमुक्तनाथ, नेमिनाथ, महावीर एवं चादिनाथ स्वामी की

प्रतिभाओं का इन पदों में उल्लेख किया गया है। जैन कवियों ने इस प्रकार के बहुत कम पद लिखे हैं।

प्रस्तुत श्राव के अत्युत्कृष्ट कवि महारत्न महेन्द्रकीर्ति हैं जो अजमेर की महारत्न शाही के सस्य थे। महेन्द्रकीर्ति के पदों का प्रकाशन भी प्रथम बार हो रहा है। शिवजी श्राव के द्वियन्त्र जैन मन्दिर के शास्त्र भण्डार में संभ्रूत एक गुटके में इनके पदों का संग्रह मिला है। श्री० महेन्द्रकीर्ति पुरातः आध्यात्मिक सन्त थे। उनके पदों के अध्ययन से पता चलता है कि जैसे अध्यात्म उनके जीवन का प्रमुख अंग था। कवि के सभी पद एक से बढ़ कर हैं। सरल एवं क्वचित् भाषा में निबद्ध है। वेदव कहे, अरब सुशानव एवं जेतव जेतव न्यू नहि मन में जैसे पद कविवर मूबर दास, बनारसी दास, रूपचन्द द्वारा लिखे हुए पदों के समान हैं।

देवेन्द्रकीर्ति इस पुष्प के अन्तिम कवि हैं जिन्हें महाकवि की उपाधि से भी सम्बोधित किया जा सकता है। देवेन्द्रकीर्ति १६वीं एवं १७वीं शताब्दि के एक सनातन कवि थे जिनका एक मात्र रास काव्य यशोधर रास अपने युग का महाकाव्य है। यद्यपि काव्य की भाषा जटिल एवं दुर्बुद्ध अवश्य है लेकिन जब रास का गहराई से अध्ययन किया जाता है तो कवि के काव्य कौशल को देख कर मन झूमने लगता है। एक महाकाव्य के लिये जो आवश्यक तथ्य स्वीकृत किये गये हैं वे सब इस रास काव्य में हैं। यशोधर रास की कथा में पूर्व कवियों द्वारा प्रतिपादित कथा ग्रहण करने के पश्चात् भी कवि ने प्रत्येक घटना का वर्णन जितना गहन, रोमाञ्चक एवं अलंकारिक किया है वह अपने ढंग का अनूठा है। कवि ने राजगृह नगर, राजपौर नगर एवं अजमेरी एवं उज्जयिनी नगर चारों का बहुत विस्तृत वर्णन किया है। अजमेरी की शोभा का तो पूरे ४० पदों में वर्णन हुआ है नगर के वैभव एवं समृद्धि का वर्णन करते हुए उसे इन्द्रपुरी से भी उत्तम नगर सिद्ध किया है।

धनद तिहां एक अहां अनेक, इन्द्र अणा नर अहां सुखिके

चतुर अणा नर सुर गुरु समा, अणी अणी भोम तिलोत्तमा ॥४०॥

सवे नार अर्ता उवंसी, अिर अिर नार सुकेसी जी।

रंभा अणी ऊर अणी माननी, रंभा वन अंभित अनी ॥४१॥

इसी तरह कवि अजमेरी के वर्णन में इतना डूब गया कि उसका वर्णन ५१ पदों में भी कठिनाता से पूर्ण हो पाया है। कवि ने भीम देश की सभ्यता का उल्लेख किया है। एक वर्णन में कवि ने लिखा है कि अहां स्फटिक के अर्ध अवन से इसलिये जब जल में से अलंकारक जाती थी ती अंभी सुखिके असे अन्तरा समक कर दूँने अगती थी। जब कभी अन्तमुखी ऊँचे अन्तरा पर अंभिके अंठ

जाया करती थी तो लोच उसे पूर्णिमा का चन्द्र समझ कर आकाश में देखने लगते थे : कवि के बीसे ही सभी वर्णों एक से एक बढ़ कर है लेकिन इनमें यशोधर की रानी अमृतमती के सौन्दर्य एवं उसके विवाह का वर्णन बहुत अच्छा हुआ है। प्रत्येक रीतिरिवाज का बड़ा सूक्ष्मता से वर्णन किया गया है। भारत की पहचान ही होना एक महत्वपूर्ण विषय माना जाता है कवि ने लिखा है कि पहचान ही के लिये परिवार के सभी सदस्य एकत्रित हो गये हैं। राजा यशोधर अपनी रानी अमृतमती के रूप सौन्दर्य पर मुग्ध था। रात्रि को जब वह अमृतमती के महल में गया तो उसका एक २ मंजिल पर जितना स्वागत हुआ कवि ने उसका बहुत सूक्ष्म वर्णन किया है उसने अपने जीवन में उसे अमृत के समान समझा। यशोमती रानी का बसन्त कीड़ा का वर्णन भी अमूठा हुआ है। इन सबके अतिरिक्त मुनि सुदत्ताचार्य द्वारा अमोपदेश का भी कवि ने १३६ पद्यों में वर्णन किया है। पूरा रास काव्य ६ अधिकांशों में विभक्त है जो किसी काव्य के लिये पर्याप्त कहे जा सकते हैं।

इस भाग में परिमल चौधरी के श्रीपाल चरित्र का एक भाग ही दिया जा सका है शेष सभी कवियों की सभी रचनाओं के पूरे भाग इस में दिये गये हैं। यशोधर रास काव्य ही एक काव्य है, इसके अतिरिक्त बाई अजीतमति की ६ कृतियाँ, महेंद्र कीर्ति के पूरे १५ पद एवं वनपाल के ४ गीत इस प्रकार ३० मूल कृतियों के पाठ भी दिये गये हैं।

सम्पादक मंडल :—

प्रस्तुत पुष्प के संपादक मंडल में माननीय डॉ० हीरालाल जी माहेश्वरी, डॉ० राजाराम जी जैन एवं डॉ० गंगाराम जी वर्मा हैं। डॉ० माहेश्वरी राजस्थान विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग में रीढ़र हैं। आप राजस्थानी भाषा के जाने माने इतिहासज्ञ विद्वान एवं लेखक हैं। अकादमी पर आपकी विशेष कृपा रहती है आपने विद्वतापूर्वक "दो शब्द" व्यक्तव्या लिखने की जो कृपा की है उसके लिये हम उनके अत्यन्त आभारी हैं। डॉ० राजाराम जैन मन्थ विश्वविद्यालय के प्राकृत एवं अपभ्रंश के प्रोफेसर हैं समाज आपकी विद्वता से चिरपरिचित है। इसी तरह डॉ० गंगाराम जी वर्मा युवा पीढ़ी के विद्वान् हैं। जैन साहित्य पर जोष कार्य आपकी र्चन में शामिल है। पारमेश्वर निवेशक पर आपने अच्छी खोज की है। तीनों ही विद्वानों के हम हृदय से आभारी हैं।

अकादमी के संरक्षक श्री विमल कुमार जी सेठी ने "संरक्षक की ओर से दो शब्द" लिखने की बहुती कृपा की है। सेठी साहब उदार व्यक्तित्व के बनी

है तथा शास्त्रिय प्रकाशन में बहुत रुचि लेते हैं। प्रकाशनी को धन्यका पूर्ण सहयोग प्राप्त है।

प्रस्तुत भाग के उपयोग के लिये श्रीपाल खरिभ की पाण्डुलिपि के लिये श्री पं० अनूपचन्द्र जी न्यायतीर्थ एवं श्री राममलजी साँधी, अजीतमति की पाण्डुलिपि के लिये कैलाशचन्द्र जी सोमानी, बनपाल एवं महेश्वर जी की पाण्डुलिपियों के लिये श्री रामचन्द्र चन्द जी सेठी दिग्गी एवं यशोवन्तर रास की पाण्डुलिपि के लिये श्री लक्ष्मीचन्द्रजी साँधी, प्रतापगढ़ का आधारी हूँ जिन्होंने उदारता पूर्वक पाण्डुलिपियाँ देकर इस भाग के प्रकाशन में योगदान एवं सहयोग प्रदान किया है।

डा० कस्तूरचन्द्र कासलीवाल

३०-३-८४

विषय-सूची

	पृष्ठ संख्या
१. श्री महावीर ग्रंथ अकादमी-प्रवृत्ति परिचय	i
२. संरक्षक की ओर से	vi
३. दो शब्द	viii
४. लेखक की कलम से	x
५. पूर्व पीठिका	१
६. आई अमीतमति	२-७
कृतियां—(१) ग्रन्थात्मिक छन्द	८-१०
(२) पद् पद्य	११
(३) पद्य-रागकेदारो (२)	१२
(४) पद्य-राग बसन्त	१२
(५) पद्य-राग बसन्त	१३
(६) पद्य-राग साभरी	१४
(७) इतिहास परक घटनाओं का वर्णन	१४
७. कविद्वय परिमल्ल चौधरी	१५-२४
कृति—श्रीपाल चरित्र	२४क२४क
कवि जनपाल	२५-२३
८. कवि जनपाल	२४-२६
कृतियां—I मुनिसुव्रत जिन बन्दना	२७
II नेमीजिन बन्दना	२८
III वर्धमानवीर	२८
IV आदि जिन वीर	१००
९. महद्वारक अहोम्वरकीर्ति	१०१-१०३
पद्य—पद्यह विधिस	१०४-११०
राग रामनियों में	
१०. अहोम्वर कवि	१११-१२३
कृति—महावीर रास	१२४-३०४
११. अनुक्रमशिकाएँ	३०५

पूर्व परिचय

१७वीं शताब्दी में जितने व्यापक रूप से हिन्दी कृतियां लिखी गयीं उतनी कृतियां इसके पूर्व किसी शताब्दी में भी नहीं लिखी जा सकीं। इस शताब्दी में देश के सभी प्रदेशों में हिन्दी रचनायें लोकप्रिय बन रही थीं। प्राकृत एवं संस्कृत ग्रन्थों के हिन्दीकरण का यह युग था। जैन कवियों का इस और विशेष ध्यान जा रहा था। पाण्डे रूपचन्द्र इसी शताब्दी के कवि थे जिन्होंने समयसार कलश पर हिन्दी टीका लिखी थी। जैन कवि स्वतन्त्र रूप से भी काव्य रचना करते तथा गीत, रासो एवं काव्य की ध्वन्य विधाओं के माध्यम से छोटी बड़ी रचनाएं लिखते रहते थे। इस शताब्दी में होने वाले ब्रह्म रायमल्ल, भ. प्रतापकीर्ति का धकादमी के प्रथम पुष्प में भट्टारक रत्नकीर्ति, कुमुदचन्द्र एवं उनके समकालीन ६८ ध्वन्य कवियों का। चतुर्थ पुष्प में बुलाखीचन्द्र, बुलाकीदास एवं हेमराज जैसे सुप्रसिद्ध कवियों का छोटे भाग में परिचय दिया जा चुका है। इनके अतिरिक्त अभी और भी पचासो कवियों का परिचय अवशिष्ट है जिन्होंने हिन्दी साहित्य के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

इस शताब्दी में होने वाले कवियों में कवयित्री 'अजीतमति' का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। किसी जैन कवयित्री की यह उपलब्धि विगत ५०-६० वर्षों में की गयी सतत खोज के बाद ही हो सकी है। जैन हिन्दी कवयित्रियों में दिगम्बर समाज में चम्पाबाई का नाम आता है जो करीब १०० वर्ष पूर्व टोंग्या परिवार में देहली में हुई थी और जिनकी एक मात्र कृति 'चम्पा सतक' का मैंने सम्पादन करके प्रकाशित करवाया था। श्वैताम्बर समाज की कवयित्रियों में हरकू बाई, (सं. १८२०) हुल साजी (सं. १८८७) सदापा बाई, जडावजी एवं मूर सुन्दरी जैसे नाम और आते हैं लेकिन ये सब कवयित्रियां हरकूबाई एवं हुलसाजी के अतिरिक्त एक शताब्दी पूर्व ही हुई हैं। इसके अतिरिक्त जहां हिन्दी जैन कवियों की संख्या ४०० से कम नहीं होगी वहां महिला कवियों की यह संख्या एक दस नगण्य है इससे पता चलता है कि महिला समाज में कभी साहित्यिक चेतना नहीं रही या फिर उनके द्वारा निबद्ध साहित्य की संख्या की गयी और उसकी संग्रहीत नहीं सम्भवा गया। इसलिये १६वीं-१७वीं शताब्दी में होने वाली कवयित्री अजीतमति से हिन्दी साहित्य निःसंदेह औरवान्वित हुआ है।

बाई अजीतमति

अजीतमति ने अपने आपको बाई अजीतमति लिखा है। वह भट्टारक वादिचन्द्र (१६वीं-१७वीं शताब्दी) की प्रमुख शिष्या थी। उन्हीं के सब मे ब्राह्म-चारिणी साध्वी के रूप में रहती थी। वादिचन्द्र स्वयं अपने समय के प्रसिद्ध विद्वान् भट्टारक थे। जो मूलसंघ के भट्टारक ज्ञानमूषस के प्रशिष्य एवं प्रभाचन्द्र के शिष्य थे। स्वयं वादिचन्द्र एक समर्थ साहित्यकार थे जिन्होंने संस्कृत एवं हिन्दी में कितनी ही रचनायें निबद्ध करने का श्रेय प्राप्त किया था। साध्वी अजीतमति ने इन्हीं के संघ में रहकर शिक्षा प्राप्त की थी।

कवयित्री अजीतमति हुंबड जाति के श्रावक कान्ह जी की पुत्री थी काहूजी अपने समय के प्रभावशाली व्यक्ति थे। वे हुंबड जाति के शिरोमणि थे। उनका निवास स्थान सम्भवतः सागवाडा था जिसका उन्हींने एक गीत में निम्न प्रकार उल्लेख किया है—

“सागवाडा नयरे छि बहु अवास, धीय सघनी पुरवो स्वामी घास”

इसके अतिरिक्त कवयित्री का जन्म कब हुआ, कहा हुआ इस सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं मिलती लेकिन उसके स्वयं का हाथ लिखा हुआ जो गुटका मिला है उसमें कवयित्री द्वारा रचित सभी पाठों का संग्रह है। गुटका का संभवकाल संवत् १६५० (सन् १५९३) है इससे उसके जन्म काल कब कुछ अनुमान लगाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त उसने गुटके में जो पाठ लिखा है वह ऐतिहासिक तथ्यों से युक्त है इसलिये यदि उसकी आयु उस समय ४० वर्ष की भी होगी तो उसका जन्म संवत् १६१० (सन् १५५३) के प्रायः पास हुआ होगा।

अजीतमति की शिक्षा दीक्षा के बारे में भी कोई जानकारी नहीं मिलती लेकिन क्योंकि उसके गुरु भ. वादिचन्द्र स्वयं अच्छे विद्वान् थे, अन्धों के निर्माता थे। संस्कृत, हिन्दी एवं गुजराती में प्रबन्ध रचना करने में प्रवीण थे। इसलिये अजीतमति की शिक्षा दीक्षा भी अच्छी होती चाहिये। इसके अतिरिक्त जिस तरह की उसकी रचनायें मिली हैं उनसे भी पता चलता है कि उसने सभी रचनाओं स्वयन्तः सुखाय लिखी थी।

कवयित्री के जिस गुटके में इसकी रचनाएँ मिली हैं उसमें बीच-बीच में ऐसे पाठ भी हैं जो अचिन्ताक गुटके में नहीं मिलते हैं। उसकी विधि भी इतनी सुन्दर नहीं है जितनी एक महिला कवि की होनी चाहिये। फिर भी जैन समाज का यह लक्षणांक है कि उसमें ऐसी किन्तुकी कवयित्री ने जन्म लिया और अपनी रचनाओं से एक रिक्त स्थान की पूर्ति की। राजस्थान के अर्वाशिष्ट शास्त्र जगदालों की यदि सधन खोज की जाये तो सम्भवतः और भी कुछ कवयित्रियों के नाम एवं उनका साहित्य मिल सकता है।

कवयित्री अजीतमति द्वारा निर्मित तथा एक ही गुटके में संग्रहीत रचनाओं के नाम निम्न प्रकार हैं—

१. अध्यात्मिक छन्द
२. षट पद्य
३. भक्ति परक पद—७
४. इतिहास परक घटनाओं का वर्णन—

उक्त सभी रचनाओं का सम्मिश्र परिचय निम्न प्रकार है—

अध्यात्मिक छन्द

आध्यात्मिक विषय पर प्रथम सभी जैन कवियों ने बड़ा बहुत अवश्य लिखा है। यदि किसी कवि ने स्वतन्त्र रचना नहीं लिखी हो तो उसने अपनी अन्य कृतियों में ही अध्यात्म विषय का वर्णन किया है। कवयित्री अजीतमति ने भी "अध्यात्मिक छन्द" निबद्ध करके अपनी आध्यात्मिकता का परिचय दिया है। इसमें केवल ३० पद्य हैं लेकिन सभी पद्यों में आत्म रस, भय-दुःख है जो मनुष्य को अपनी आत्मा का ज्ञान कराते हैं। अपनी आत्मशक्ति की वास्तविकता को बतलाते हैं और उसे सचेत करते हैं। क्योंकि यदि शुद्ध दृष्टि से अपने आपको देखा जाय तो अपने भीतर ही हमें आत्म प्रकाश मिल सकता है।

जो करी दृष्टि करी लिलाचि, ज्ञान जोत घट भीतर पाबि ॥२॥

कवयित्री अजीतमति ने अपने समकालीन कवि के लिए लिखा है "जुझे देलना ही है तो अपनी आत्मा को देख। दूसरे को देखने से आत्म ज्ञान की प्राप्ति अथवा आत्म दर्शन कभी नहीं हो सकता। क्योंकि दूसरों के कपड़ों को धोने से अपने कपड़े कभी नहीं धुल सकते अर्थात् अपने कपड़ों को धोने से कभी साफ नहीं हो सकता—

जो कृषि तो अपना कृषि, पर कि कृषि ज्ञान न होवि ।

पर का उलझल क्या तु भोवि, अपना मेल कवि नहीं कौहोवि ॥७॥

बाईं अजीतमती ने इसी अघ्याय खंड में आगे कहा है कि यदि तेरा मन भगडालू है तो दूसरो के भगडो में जाकर क्यों पड़ता है । दूसरों के भगडों में तुझे किञ्चित् भी स्थान अर्थात् सद्वर्ति प्राप्त होने वाली नहीं है क्योंकि तू अपना भगडा निपटाने अथवा शांत करने के स्थान पर दूसरो का भगडा शांत करने में लगा हुआ है ।^१

यह बत्ती वाला दीपक सभी को देखता है किन्तु यदि उसमें बत्ती न हो उसे कोई नहीं देख सकता लेकिन यह आत्मा तो बिना बत्ती का ही दीपक है जो स्वयं तो सबको देख लेता है और दूसरा इसे कोई नहीं देख पाता । वह स्वयं ही अपने ज्ञान के द्वारा अपने को देख सकता है ।^२ अपनी इसी बात को कवयित्री ने आगे के पद्य में फिर दुहराया है और जो अधिक स्पष्ट है—

बाती दीपक सबको जालि, बिल बाती कोई न विछारि ।

तो अपना तो अपनेहु प्यावि, बिल बाती का दीपक पावि ॥२१॥

मानव का यह मन बहुत ही भटकता है स्थिर रहना तो मानो जानता ही नहीं । अधिक डोलने से वह अपना मार्ग ही भूल गया है । अनेक जातियों में वह फिर चुका है जन्म से चुका है लेकिन अभी तक उसे सदबुद्धि नहीं आयी है क्योंकि वह आत्मा से परे रहता है और आत्म ज्ञान के बिना उसे सुख नहीं मिल सकता ।

एह मन मेरो बोहोत डोलारो, करी करी जो बिलरो भूलाखो ।

बहु अकल ज्योहो गलि करी जावि, अपना बिल कही सुख न पावि ॥२२॥

आत्म ज्ञान मानव के लिये आवश्यक है । जैसे सिंहालय में आत्मा निवास करती है उसी प्रकार शरीर में भी आत्मा का निवास रहता है इस प्रकार जो

१. जो भगडु मन होवि तेरा, पर कि भगडि जावि कसोरा ।
पर कि भगडि छेडन पावि, अन्तर जोडी उर हुं प्यावि ॥ ॥

२. आत्म दीपक सबको देखे, बिल बाती कोई नहीं देखे ।
अपना अप्य न्यान करि प्याव, बिल बाती का दीपक पाव ॥१७॥

आत्मा को जानता है। वही आत्म सुख का अनुभव कर सकता है और जन्म मृत्यु के बन्धनों से मुक्त हो सकता है।

इस प्रकार अस्मार्तिक छंद के सभी पद्य अस्मर रस से ओत ओत है। इससे मालूम पड़ता है कि अजीतमति का जीवन पूर्ण वैराग्यमय था तथा आत्म चिन्तन में उसकी अधिक रुचि थी।

इसमें ३० पद्य हैं। अन्तिम पद्य में कवयित्री ने अपने पुत्र वादिचन्द्र को नमस्कार किया है। भाषा यद्यपि अधिक परिष्कृत नहीं है किन्तु कवयित्री के भावों को समझने के लिये पर्याप्त है। भाषा पर गुजराती का प्रभाव है।

२. षट् पद्य—यह लघु कृति है जिसमें केवल पाच छंद हैं और प्रत्येक छन्द में पाच छह पंक्तियां हैं। विषय की दृष्टि से इसमें किसी एक विषय का वर्णन न होकर एक से अधिक पर चर्चा के रूप में है। प्रथम छन्द में आत्म का वर्णन है तो दूसरे छन्द में भगवान् आदिनाथ के माता-पिता, शरीर प्रमाण एवं वंश का उल्लेख हुआ है। यह छन्द नमस्कार के रूप में है।¹

तीसरे पद्य में भट्टारक वादिचन्द्र का परिचय दिया गया है। वादिचन्द्र ने बडिल वंश में जन्म लिया। उनके पिता का नाम विरा एवं माता का नाम उदया था जो रत्नाकर के समान थी। वे जब प्रवचन देते थे तब उनकी बाणी मेघ के समान गर्जना करती थी। वादिचन्द्र साधुओं के शिरोमणि थे।

चतुर्थ पद्य में भी अपने गुरु वादिचन्द्र का ही और अधिक परिचय दिया गया है। वादिचन्द्र मूलगुणों एवं उत्तरगुणों सभी का पालन करते थे। अपने समय के वे प्रसिद्ध साधु थे जिन्होंने मोह एवं काम दोनों पर विजय प्राप्त की थी। उनमें विद्वत्ता भी खूब थी इसलिये कुवायियों के लिये वे सिंह के समान थे। वे भट्टारक प्रभाचन्द्र के पट्ट पर विराजमान थे।

बसं बडिल विख्यात, क्यात विरा सुत सुन्दर
 रूप कला अत्युर्ध्व, अतुर शरीरमह मन्विरं
 उदयी उर्ध्वरि तास, तास काननी रत्नाकर
 बाणी भाषि मेघ, मेघ सतु वान रत्नाकर
 सुभाकर शरीर कपो, श्री वादिचन्द्र वादिचन्द्र
 बाह अजीतमती इव शरीर-सकलार्थ आत्मन्दर

अन्तिम पद्य के पंच परमेष्ठी की शरणा ही एक मात्र उत्तम करण है इसी भाव को उसमें बतलाया गया है।

३. बाई अजीतमति ने कुछ पद भी लिखे थे जिनकी संख्या अभी तक सात है।

प्रथम पद में चौबीस तीर्थंकरों को नमस्कार किया गया है लेकिन पद शैली में लिखा होने से "नेकली स्र मुञ्ज बहुवाधो" स्थायी अन्तर है। यद्यपि इसमें पद का कोई सम्बन्ध नहीं है। इसमें १३ अन्तरे हैं। भाषा एवं शैली दोनों ही सामान्य हैं। इस पद को सम्भवतः उज्जैनगढ़ में जो पर्वत शिखर पर स्थित था, लिखा गया था। कवयित्री ने इसका निम्न प्रकार उल्लेख किया है—

उज्जैनगढ़ चिरिखर तरणो नेत्री जिनराय ।

कर जोड़ अजीतमती कहि, मित सेवुं रे पाय ॥१३॥

दूसरे पद में ऋषभदेव की स्तुति की गयी है। तीसरा पद मानव को चेतावनी के रूप में है। चौथा पद नेमिनाथ स्तवन है जिसे कवयित्री ने सागवाडा नगर में निर्मित किया था। इसमें ६ अन्तरे हैं। पंचम पद में धन यौवन पर हमने बहुत अभिमान किया इसका वर्णन किया गया है। छठा पद उपदेशी है तथा सातवा पद पार्श्वनाथ स्तवन के रूप में है। भाषा एवं भावों की दृष्टि से सभी पद सामान्यतः अच्छे हैं।

४. ऐतिहासिक लेख

यह एक ऐतिहासिक लेख है जिसमें वृषभनाथ के पौत्र मारिचि द्वारा दूसरे मतों की स्थापना से प्रारम्भ होता है। भरत चक्रवर्ती के द्वारा ब्राह्मण मत की स्थापना की गयी। तीर्थंकर शीतलनाथ के पीछे यज्ञशालाओं की स्थापना हुई थी। भगवान पार्श्वनाथ के युग में पिहितारव के शिष्य बुधिकीर्ति द्वारा बुद्ध मत की स्थापना की गयी। जो मांस मद्य सेवन में दोष नहीं मानते थे। विक्रमसिंह के पीछे सम्बत् १३० में यत्याचार्य भद्रबाहु के शिष्य जिनचन्द्र के शिष्यवर सम्प्रदाय की स्थापना की थी। जो स्त्री की मुक्ति, केवली ककलाहार, आशुकर धीरः नीहृहर, मर्कटहरण, केवली उपसर्ग आदि मान्यताओं को मानने वाला है। ५३६ वर्ष पश्चात् वृज्यपाद के शिष्य वज्रनन्दि द्वारा त्रिकुलसंघ की स्थापना, संवत् ७४३ में कुषारसेन द्वारा काष्ठा संघ की स्थापना, चबरो की प्रीति का अहस, इसी तरह त्रिकुलसंघत् २००

के पीछे माधुर गच्छ की स्थापना । सवत् १८०० के पश्चात् लोग विपरीत क्रिया करने लगेगे ऐसा भी लिखा है ।

उक्त लेख स्वयं अजीतमति द्वारा सवत् १६५० में लिपिबद्ध किया गया था ।

इस तरह साध्वी अजीतमती ने यद्यपि लघु रचनाएं लिखी हैं लेकिन वे उसकी काव्य शक्ति की परिचायक हैं । वे सभी रचनाएं एक ही मुद्रक में लिपिबद्ध हैं जो स्वयं अजीतमति का था । हो सकता है अतीत काल के शास्त्र भण्डारों में कवयित्री की और भी रचनाएँ संग्रहीत हों । एक महिला कवि द्वारा इतनी सारी काव्य रचना करना प्रशंसनीय है ।

कृतियों की भाषा गुजराती प्रभावित है । अलंकार शैली एवं शब्दों की दृष्टि से सभी रचनाएँ सामान्य हैं ।

अध्यात्मिक छन्द

आर्षा

परमाण्वं नत्वा अनिभारति देवी गुणं धरीया ।

छंदो परमाण्वंदो धारांदो एहि गुणकंदो ॥

हवि छंद

आतम आपज दृष्टि जोवि, परम जोत घर भीतर होवि ।

जो खरी दृष्टि करी लिलावि, ज्ञान जोत घर भीतर पावि ॥१॥

गीत कवीति क्या लिलाया, गुणी छोडि निर्गुणी कु ध्याया ।

गध वरण रस उसका नाही, परम जोत सोहे घट माहि ॥२॥

घट छोडी उर क्या तुं चाहि, घट मांहि न्यान पट सोहि ।

घट मूला तु फरे सायणा, घट मा सुता चतुर सुजाणा ॥३॥

नीर विकल्प तुं काहे नही ध्यावि, विकल्प सेथि क्या लिलावि ।

एह विकल्प छि जीव का जाणा, परम जोत कुं नही समाणा ॥४॥

रे आतम चित किहा फिरावि, जे न्या हालि सो घट मां पावि ।

एक समो जब रुदि पेस्वे, ज्ञान जोत घर भीतर देख ॥५॥

न्यान छोडी जीव उर कुं ध्यावि, बीखया सेथि बिन्ह चमावि ।

इति मन कुं तुं अंतर ल्यावि, परम समाधी समिमां पावि ॥६॥

जो जूयि तो अप्पा जूयि, परकि जूयि ज्ञान न होयि ।

परका उजवल क्या तुं धोवि, अपणा मेल कदि नही खोहोवि ॥७॥

जो भगडु मन होयि तेरा, पर कि भगडि जायि घरोरा ।

परकि भगडि ठोडन पावि, अतर छोडी उर कुं ध्यावि ॥८॥

रे जीव ज्ञान काहा तुं जोवि, जे जूयि सो घटमां होवि ,

सूता जे मन जाइ जगया, मन भारी अपणो घरे आया ॥९॥

मन रुंधी करी कां नहि राखि, बीखया फल या फरी फरी बाखि ।

जाय्य जब अपणो घरि भावि, तब होबी लगता नही भावि ॥१०॥

जो रे जीव मन होवतु पावि, जगंदा जनि जगंदा मृता, पावि
एक धरि जगंदा विनावि, कहां पावि जगंदा कोही न पावि ॥१२॥

रे जीव एक कुं जगंदा ही जगंदा एक कहां सुकरी करी जगंदा
एक धरि जगंदा करी जगंदा, मन कहां जगंदा सवना जगंदा ॥१३॥

रे जीव इकका कहि पावि, जे दुःखि सो पाटे मीपन हरि
दुःख बांड ज्योही कीति जगंदा, बिखरुंदि घर जीतर पाय ॥१४॥

रे जीव जगंदा काहीवि जगंदा, पर धरि, सुखि जगंदा मृता जगंदा
जगंदा जगंदा जगंदा, बिखरुंदि घर जीतर देहे ॥१५॥

रे तता परम सुपिले, जायि काल बहुती न देहे
एक समीप जगंदा, जेरी जगंदा, जेरी जगंदा जेरी जगंदा ॥१६॥

अनाद का थिर विकल्प भाड, धीर विकल्प कुं रहा समाड ।
धीर विकल्प कुं जो बन लावि, निर विकल्प साधि भी पावि ॥१६॥

आतम दीपक सबको देखे, बिखर जाती कोइ नहीं देखे
अप्या अप्य न्यान करी ध्याया, बिखर जाती का दीपक पाया ॥१७॥

रे जीव ध्यान धरे सब कोइ, जगंदा बिखर जगंदा जगंदा
जो पंजी जगंदा करी जगंदा, घर की जगंदा जगंदा साधते साधना ॥१८॥

घर की जोत न जगि कोइ, धंग पठ्या पर्य न्यानि न होइ ।
रे जीव करी करी विकल्प ध्यावि, विकल्प ध्यानि न्यान न पावि ॥१९॥

एह विकल्प जे जीव का नाहि, निर विकल्प कुं कहा न जाहि ।
जेह जोनी जोगीश्वर जगंदा, उंसका गुरु मही माहि बिखाण्या ॥२०॥

जाती दीपक सबको जगि, बिखर जाती कोइ न पिछारि ।
सो अप्या सो अपसु ध्यावि, बिखर जाती का दीपक पावि ॥२१॥

मूली रखा जग मां सहु कोइ, घर की दृष्टि ज्ञानन होइ ।
स्वकीय ज्ञान दृष्टि करी देखे, पर की दृष्टि कुं सेहेजे देखे ॥२२॥

एह मन बेरो बोहोत डोलाणो, करी करी जो बिलरी मूलाणो ।
बहु धरुन ज्योही कति करी ध्यावि, अप्या बिखर कही सुख न पावि ॥२३॥

रे जीव मनति जगती सबकायी, करी करी मनति बहु दुःख पायी ।
करी करी भनी बोहो सुखनि ध्यायो, अप्या घर बिखर जोइ न पायी ॥२४॥

उपसम कुं तु काहेनी जुयि, उपसम तेरे घट मा सुयि ।
 अपरणा नता जोति न जाण्यो, पर का सुता सेहज बखाण्णा ॥२५॥
 साची दृष्टि करी कान नीहालि, जे चाहि सो नही देवालि ।
 साची दृष्टि करी अतर न्याहाल्यां, करम कीटउणि तत क्षिण जाल्या ॥२६॥
 राक दृष्टि करी काहे देखे, घर की अंतर काहे न पेखे ।
 घर घर जोत रेहि घर भीतर, घर छोडी उर नही अतर ॥२७॥
 शब्द ज्ञान सब कोइ जाणि, यदित ने नि शब्द पिछारी ।
 तिस की बुधि क्या सहनायु, अंतर छोडीउ रक्या ध्याट ॥२८॥
 जेसो सीघालि तिसो देहालि, असो करी जे नर नीहालि ।
 अप्पा आतम सुख बहु पावि, जनम जरा उठा कु नही आवि ॥२९॥

इति कलस

सोहि जगमा तेह जेह अतर लिलावि
 सोहि जगमा तेह, जेह सुन्य ध्यानि ध्यावि ।
 सोहि जगमा तेह, जेह अप्पा गुण गावि ।
 सोहि जगमा तेह जेह घरी सिव पद पावि ॥
 सोहि जगमा जनु काह्नि सुम बिना असुभवहि ।
 वादीचंद्र नमो कहि अजितमती लब्ध बिना ते नवि लहि ॥३०॥
 इति अध्यात्मि छंद समाप्तः ।



षट् षट्

गुरु नीरजन एकचनेक घातम व्यवहारि
 षट् मोहि सोहि एक, अनेक बहु विचारि
 ध्यान धरे सुभ एक, अनेक न्यानहु विस्तारी ॥
 कर्मि बनेक बहु काहि, न करिए क्या इस रहि ।
 बाहु अजितमति एवं वदति धर्म बिना ति नचि लहि ॥१॥
 भजीप्या नयरी नरेन्द्र, नामनिन्दन हेम प्रथ ।
 मरुदेवी सुत वृषभ, वषभसेन वदति जित वृषभ ।
 उन्वत धनुष सत्तं पंच, पंच कल्याणक सुलाकर ।
 इशवाक वंस विज्ञात, क्षात उदये दीवाकर ।
 श्री घादीदेव आदि जयो श्री वादीचंद्र सेवे सदा ।
 बाइ भजीतमति एवं वदती, जनम जरा नाधि कदा ॥२॥
 वा वडिल विज्ञात, क्षात यिरा सुत सुन्दर ।
 रूप कना चातुर्य, चतुर वादीचंद्र मंदिर ।
 उदयो उदरि वास, तास अनुनी रत्नाकर ।
 वाणी भाजि भेष, भेष सङ्ग जन सुलाकर ॥
 सुलाकर जतीनर जयो, श्री वादीचंद्र वादिद्वर ।
 बाइ भजीतमती एवं वदती सकलसष आणंद कर ॥३॥
 मूल उत्तरगुणसार सार क्रीया सुभ मडित ।
 जय मां जीवर एह, मयण मोहमद लडित ।
 विद्वजन मां एह, एह सोहि सुभ पंडित ॥
 कुवादी भज सिष सिष चउकीह की वदति ।
 श्री वादीचंद्र वादि निपूण श्री श्री प्रभाचन्द्र पट्टाभरण
 बाइ भजीतमती एवं वदती सकलसष आणंद करण ॥४॥
 पंच परम गुरु तेह, जेह पंचमी गइ पामीय ।
 पंच परम गुरु तेह, जेह जन सङ्ग जयकारीय ।
 पंच परम गुरु तेह, जेह मुखाती वर कामीय ।
 पंच परम गुरु एहवा जे भजीतमती नीतक देह बपि ।
 बाइ भजीतमती एवं वदती सब साखर ते नर तरे ॥५॥

राग केदारी

तू तो वृषभ जिनेस्वर वृषभ जन सह कुल
 वृषभ लाक्षण सोवनमि कर्यो करी लोहि राया
 वृष मगट करी राजसहु परहरी मुगति रथरिण मुक्ति चित्त लीर्यो ॥१॥
 कुमार पदवी सलाख पूरबययो, त्रिसिट लाख पूरब काल सुखमि हुयो ।
 एक लाख पूरब काल अब रह्यो, तब जिनवर बैराग भयो ॥२॥
 लोकातिक देव जय जय करतु हि, जीव जीवतु नद नद ।
 तप कुठार करी कर्म कानन वन, तेह नी कीषो स्वामीतिनी कंद ॥३॥
 नृत्य नीलजसा देखी नी मीत करी, संजम भी कृतिवित्त धरी ।
 कर जोडी बाह अजीतमती कहि, मुगति रमसि जिन देव धरी ॥४॥

राग केदारी

तू जेते जेतन चतुर बरा, मेरा बहा भूषो नही चित्त धीरा ।
 कर्म नो कर्म आवसि अज्ञानीयो, ते छुर सुष्ट तू जीत धिरा ॥१॥
 रुदय कमल सेज्यामि तुवतु हि, जागत ऐनस पास नावि ।
 जनम जरा मरण दूरी करी, ते नर सिव धुरी बैने जावि ॥२॥
 दूष दमि जिम कांचन विराजतु हि, तेम देह मां देही तू परम देवा ।
 त्रिकाल जोग धीरी कर्म सह नजिरी प्रगति रमसि तुक करई सेवा ॥३॥
 अतुल बल वीर्य पराक्रम पुरतु, तुक सम नही कोह परक जीया ।
 कर जोडी बाह अजीतमती कहि, तुक समरे मुनी मुगति गया ॥४॥

राग बसन्त

श्री सरसति देवी नमीब पाव, गायु मुण श्री नेमि जिनराय ।
 जेह नामि सोख अनंत आय, धुरी धारिण नर दुरे पलायि ॥१॥
 सीव नारी सु नेम रमि बसंत, अतिसि सबनि बीषो मरणवत ।
 न्यान सरोवर संगत रसि भरयू माहत, मुनी हसी करी सरोवर सोहत ॥२॥

समुद्र विजय सिवायेकी एवं, **मञ्जितमति** के हृदय भासत ।
 तुं जनमि काधो बनें कंद, तुम चरहि **मति** के बंधन ।
 हरिवस नमस्ते, तुं ज्ञानो नर, तेनीमन, तुं के कर्मणु कर ।
 किले बोजन परिण तधि तारी दर, मोह मयस रामसिद्धी **मति** ।
 चरिण सुख सुमद सुखय, सुखी ज्ञान बिन मति मनीषी कवि ।
 क्रम सांवा तीतर, चरसी चंयसि, प्यात मोन बहकन सं उपरि **मति** ।
 ज्ञानबाधा नकरे वि लहु मयस, मयि सांघनी सुखो स्वामी बास ।
 सुख असुन कर्मनो कहे मितस, बाई मञ्जितमति ए बोली **मति** ।

पद

मन बोजन दुकरी बहुत परी । तेह कतीन हने ।
 तीन भुवन के रायवसि क्य सवहि मसीत, मये ॥१॥
 जेतो जेतो रे तहि बापु रे, लख बीरासि कहु लख जाये ।
 कहि न ठाडे मये । मन बोजन ॥२॥
 दरसन ज्ञान चरण तप बहुत बार लहे ।
 मोह मयस रामि जब क्रोपो तब मुक कु न रहे ॥३॥
 हूँ किसको कहि को कहि मेरो, जब सुख ध्यान चरे ।
 कर खंडी ज्ञान मञ्जितमति कहे तेरा के काज सरे ॥४॥

दशमः अक्षरः

हुँ बलिहारी बितन की, जो बितन भु बितलाये रे ।
 बसुकरवंध सि भाँजाये तो ते लहु विकटी जाये रे ॥१॥
 मोह फाँस कलि फाँदीयो, तोह लु कर्मणि कर्म रे ।
 बकल सुखी ज्ञान बांधी, जो हुक मनी कहुहाय रे ॥२॥
 जे बिनासि पदारथ दिती ते उपरि लहु रय रे ।
 मोहनि करमिहु लपटायो, तो फरी फरी पयो नर रे ॥३॥
 बाहु पयास बबहु तर तरी सुन लु वर सीपु ज्ञान रे ।
 कर बोधी ज्ञान मञ्जितमति कहि, सुख ज्ञान करो मन लख रे ॥४॥

राय साभरी

नमो नमो मास जिह्वावह पाय
नील बरणा शुभ सुंदर काय, पूजतां पातिग जय ॥११॥
अश्वसेन वाम्पादेवी नंदन वंदन, जन जन आघार ।
सुर नर करणीपती खगपती वमली करे जिन जय जयकार ॥२॥ नमो॥
नयर बरणासि जनम्यो एह प्रभु, सतगुरु सतसु आय ।
हस्ता नव सोहि उन्नत काय, इक्ष्वाकवस को राय ॥३॥
घाति अघाति कर्म सब नीजनी, पोहोतो मुगतीवास ।
करि जोडी बाइ अजितमति कहि, पूरवो हमारी आस ॥४॥ नमो॥

४. इतिहास परक घटनाओं का वर्णन

श्री वृषभनाथनिवागी मीचि अनेक दर्शन अनेक मतनी स्थापना कीधी ।
भरत चक्रवर्ति ब्राह्मणानी स्थापना कीधी । श्री सौतिलनाथ पछि पर्वलि यागनी
स्थापना कीधी । पहिलि मुडशालामणि दश कु दाननी स्थापना कीधी । श्री
पाण्डेनाथनिवारि पहिलाश्रवम्य शिष्य बुधीकीति ते एणे बुद्धनी स्थापना कीधी ।
मास मद्यना दोष न मानि । श्रीमहावीरनिवारि मसक पूर्ण मुनीस्वरि तर्कनी
स्थापना कीधी । राजा वीक्रम पछि वर्ष १३६ गते भद्रबाहु शिष्य यस्याचार्य तास
शिष्य जितचंद्रेण स्वैताम्बरनी स्थापना कीधी । स्त्रीनि मोक्ष गृहीनि मोक्ष । तीर्थकर
ने आहार न्याहार रोग वस्त्र केवलीनि उपसर्ग गर्भ संचार कहि । तीर्थकरी करी कहि
महावीर ब्राह्मणी गर्भ संचार कहि । मास भक्ष गहे आहारनी छोटिनसानि । वर्ष
२०५ जाते श्री कलसेन आचार्य आपुली गच्छनी स्थापना की थी । पछि वर्ष
५३६ गते श्री पुज्यवाद शिष्य वज्रनंदी ब्रह्मड संकनी स्थापना कीधी । बीज अन्न
पासी सचीत्त न मानि । क्षेत्रा दीसावद्या न मानि । वीक्रम पछि ७५३ विनयसेन
शिष्य कुमारसेन सन्यास भग करीनि काष्ट संकनी स्थापना कीधी । पीछि कठ्या
चमरनी लीधो । स्त्रीनि पुनरपी वीक्षा । क्षुलकनि वीरचरी । छहु अखत्रत कहि ।
वीक्रय पछि २०० जाते मथुराया रामसेने माथुरा गच्छनी स्थापना कीधी ।
नपीछीया । दक्षिण देसे विभ देसे पुष्कलावती नगरे वीरचद्र मुनिना तेम करीष्यति
भीलिसंघ । वीक्रम पछी वर्ष १८०० जाते क्रीया वीपरीत करीस्यती । सबत् १६५०
दई पंचमी दिने लखीत बाई अजीतमती निज कर्मकार्य ॥

कविवर परिमल्ल

परिमल्ल १६वीं-१७वीं शताब्दी के कवि थे। उनका जन्म ग्वालियर में हुआ लेकिन उनकी ब्रह्मणी एवं बुद्धायक ग्रामरा में स्थित हुआ। कवि का परिवार एवं पूर्वज अत्यधिक प्रतिष्ठित एवं राज्य द्वारा सम्मानित थे। उसने अपने पूर्वजों का निम्न प्रकार उल्लेख किया है—

चन्दन चौधरी

रामदास चौधरी

भासकरन चौधरी

परिमल्ल चौधरी

चन्दन चौधरी ग्वालियर के महाराजा यानसिंह द्वारा सम्मानित व्यक्ति थे। सम्भवतः वे मानसिंह के विश्वस्त उच्चाधिकारी अथवा नगर सेठ थे। उनका यश एवं ख्याति सारे देश में व्याप्त थी। उनके पुत्र रामदास जो कवि के बाबा थे अपार सम्पत्ति के स्वामी थे। जीवन में उन्होंने अपार सुख प्राप्त किया। उनके पुत्र एवं परिमल्ल कवि के पिता भासकरन अपने कुल के दीपक थे और अपने परिवार की ख्याति एवं प्रतिष्ठा को पूर्ण रूप से बनाये रखे थे।¹ ऐसे परिवार में जब परिमल्ल का जन्म हुआ तो चारों ओर प्रसन्नता छा गयी। परिवार एवं माता-पिता का उन्हें पूरा लाडल्यार मिला। ग्वालियर में ही उनकी शिक्षा दीक्षा हुई और यहीं अपने पिता की छत्रछाया में उनका बाल्यकाल समाप्त हुआ।

कवि विद्यम्बर जैन बरहिया जाति के श्रावक थे। उस समय ग्वालियर में बरहिया जाति के ब्रह्मणी संख्या में घट रहे थे। सभी वैभव सम्पन्न मर्यादा पूर्ण एवं शक्तिशाली थे। लेकिन कवि के पूर्ण होने वाले महाकवि रघू ने बरहिया जाति का

पोखर निरि गङ्ग उल्लिख बाब, सुरबीर तहाँ राखा मान ।

सा नामे बाबल चौधरी, कीरति सब जग में विस्तरी ॥३५॥

बाबल बरहिया पुत्रे चौधरी, अति प्रतापे कुल राखे और ।

सा नामे बाबल बरहिया, बरहिया भासकरन पुत्रे बीर ॥३६॥

सा नामे चन्दन परिमल्ल, सा चौधरी में प्रतिष्ठित ॥

कोई उल्लेख नहीं किया। १८वीं शताब्दी में होने वाले पंडित बलराम साह^१ ने चौपसी जातिवों के नामों में बरहिया जाति का कोई उल्लेख नहीं किया लेकिन यदि बारहसैनी जाति ही बरहिया जाति का प्रथम नाम है तो इसका उल्लेख तो यत्र तत्र मिलता है। फिर भी संभव १५४५ के एक मूर्तिलेख^२ में बरहिया कुल का उल्लेख मिलता है इससे यह तो स्पष्ट है कि बरहिया जाति दिनेश्वर^३ जैसे धर्मानुयायी थी और उसका स्वालियर एवं आगरा क्षेत्र में अच्छा प्रभाव था।

परिमल्ल को अपने पिता एवं बाबा का कब तक प्यार मिला तथा तब तक उनकी छत्रछाया में स्वालियर में रहे इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता लेकिन वे स्वालियर छोड़कर अपने परिवार के साथ आगरा आकर रहने लगे थे इस घटना का कवि ने प्रथम उल्लेख किया है। आगरा में वे शल्य रहित होकर रहने लगे थे इसका कवि ने निम्न पंक्ति में उल्लेख किया है।

“ता सुत कुल मंडन परिमल्ल, बस आगरे में तधि सरल”

आगरा में उनका जीवन शान्तिपूर्ण था। जब उन्होंने श्रीपाल चरित्र की रचना प्रारम्भ की थी उस समय देखा कि अकबर बादशाह का शासन था। कवि ने अकबर के शासन-काल का उल्लेख ही नहीं किया किन्तु उसके तेज एवं प्रताप की भी प्रशंसा की है। उसने समस्त सुखीतल को अपने ग्रह में कर लिया था तथा उसकी चारो ओर दुहाई फिरती थी। इसी के साथ परिमल्ल कवि ने अकबर एवं हुमायुं का भी उल्लेख किया है—

आबर पातिलाहि होई गयी, तासु साहि हुमाऊं गयी ।
 ता सुत अकबर साहि प्रथम, तो तप तप्यो हुसरी भान ॥३२॥
 ताके राज न कहू अनीति, बसुषा सकल करी जस जीति ।
 न हुदीप तास की शान, हुजी अबरम साहि समान ॥३३॥

रचना का

अधिकतर प्रकृतियों में रचना समाप्ति के समय का उल्लेख होता है लेकिन श्रीपाल चरित्र में कवि ने रचना के प्रारम्भ करने का उल्लेख किया है जो संभव

१. बुद्धिचाल-बलराम साह पृष्ठ संख्या—२६
 २. संवत् १५४५ का मूर्तिलेख पृष्ठ १० पर मिले मूलग्रन्थ में उक्त जिन जिनके नाम बरहिया कुलोकेन कहते हैं वे हैं—कुलुचर, शैल, धनुनेरं धादीश्वर विष्णु स्वपुत्राय नमः इत्यादि । आगराक इतिहास—पृष्ठ संख्या १०४

१६५१ अष्टमः सुदी अष्टमी शुक्लवार है । रचना समाप्त कब हुई और उसमें कवि को कितना समय लगा इसका कवि ने कहीं भी उल्लेख नहीं किया ।

संबत् सोमहरी उपर, सावन इषावदन अषरि ।

मास अष्टमः शुक्ली अरि, अष्टमित को कही बडाइ ॥३०॥

कब उवाली अठै अरि, सुकरवार वार परवालि ।

कवि परिमल्ल युव करि चित, अरिअरि औपल अरि ॥३१॥

श्रीपाल चरित के अतिरिक्त कवि ने और कितनी रचनायें निबद्ध की इसका भी कहीं नामोल्लेख नहीं मिलता और न सास्त्र ग्रन्थारों में परिमल्ल की श्रीपाल चरित की अतिरिक्त कोई रचना प्राप्त हो सकी है । जिसका अर्थ यही है कि प्रस्तुत कृति ही कवि की एक मात्र कृति है जिसको उसने अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में लिखी थी ।

श्रीपाल चरित की पूर्व कृतियाँ

जैन धर्म में श्रीपाल का जीवन अत्यधिक लोकप्रिय है । सिद्ध चक्र पूजा के महात्म्य के कारण श्रीपाल का कुष्ठ रोग दूर हुआ था इसलिये पूरा समाज श्रीपाल और मैना सुन्दरी के पवन जीवन से प्रभावित है और यही कारण है कि प्राकृत, अपभ्रंश, संस्कृत एवं हिन्दी सभी भाषाओं के कवियों ने श्रीपाल चरित को कविता बद्ध करने में अपना गौरव समझा । अपभ्रंश भाषा में निबद्ध जयमित्रहल, पंडित नरसेन एवं पंडित रघू के 'सिरिवाल चरित' पर्याप्त लोकप्रिय रहे हैं । संस्कृत भाषा में भट्टारक सकलकीर्ति एवं पंडित नेमिदत्त के श्रीपाल चरित समाज में चर्चित ग्रन्थ रहे हैं । हिन्दी भाषा में परिमल्ल कवि के पूर्व ब्रह्म जिनदास एवं ब्रह्म रायमल्ल (संबत् १६१५) के नाम उल्लेखनीय हैं । वहीं वहीं चरिमल्ल के साथ साथ अ० वादिवन्ध ने भी उसी वर्ष (संबत् १६५१) में श्रीपाल आख्यायिका लिखकर समाज में श्रीपाल के जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान किया ।

लेकिन जितनी लोकप्रियता परिमल्ल के श्रीपाल चरित को प्राप्त हुई उतनी अन्य कवियों के काव्यों को नहीं मिल सकी । यही कारण है कि राजस्थान के सास्त्र ग्रन्थारों में कवि के श्रीपाल चरित की पाण्डुलिपियाँ सर्वाधिक संख्या में मिलती हैं । सभी तक उपलब्ध पाण्डुलिपियों में साहित्य शोध विभाग (वर्तमान जैन विद्यासंस्थान

१. देखिये—राजस्थान के जैन सास्त्र ग्रन्थारों की सूची पृथी भाग चतुर्थ—
पृष्ठ संख्या ५७९.

श्री महावीरजी) के एक गुटके में संग्रहीत पाण्डुलिपि है जिसका लेखन काल संवत् १६६० द्वितीय वंशाख शुक्ला बीज है।^१ उक्त प्रति के प्रतिरिक्त १७वीं १८वीं शती में लिपि की गयी निम्न पाण्डुलिपियां भी उल्लेखनीय है।

१	शास्त्र भण्डार दि. जैन तेरह पंथी मन्दिर, दोसा	पत्र सं. १८०	लिपि काल सं. १६६६ फागुण सुदी १३
२.	दि. जैन मन्दिर केतनवास बीकान		
	पुरानी डीग	गुटके में है	सं. १७५७
३.	दि. जैन बीस पंथी मन्दिर दोसा	६७	१७७४
४	दि. जैन तेरहपंथी बडा मंदिर जयपुर	१५८	१७७६
५.	दि. जैन मंदिर गोषा का, जयपुर	८५	१७६०
६	दि जैन मंदिर वर (भरतपुर)	१५८	१७६६

लेकिन सवत् १८०० के पश्चात् लिपि की हुई पचासों पाण्डुलिपियां राजस्थान के कितने ही शास्त्र भण्डारों में संग्रहीत है। किसी २ शास्त्र भण्डार में तो ५-६ ग्रंथवा इससे भी अधिक पाण्डुलिपियों का संग्रह मिलता है। राजस्थान के प्रतिरिक्त आगरा, देहली, मैनपुरी आदि नगरों के शास्त्र भण्डारों में भी श्रीपाल चरित्र काव्य की ग्रन्थी संख्या में पाण्डुलिपियां मिलनी चाहिये।

पद्य संख्या

श्रीपाल चरित की विभिन्न पाण्डुलिपियों का तुलनात्मक अध्ययन करने के पश्चात् यह निष्कर्ष निकल सकता है कि उनमें पद्यों की संख्या समान नहीं है। श्री दि. जैन मन्दिर चौबरीमें की पाण्डुलिपि में २२२२ पद्यों की संख्या दी गयी है जबकि राजमहल [टोक] की पाण्डुलिपि २२०० पद्य, बयाना की पाण्डुलिपि में २२६० तथा गोषा मन्दिर जयपुर वाली पाण्डुलिपि में पद्यों की संख्या २३४१ दी हुई है। यह संवत् १७६० की पाण्डुलिपि है। इस तरह अन्य पाण्डुलिपियों में पद्यों की संख्या में अन्तर हो सकता है।

भाषा—श्रीपाल चरित ब्रज भाषा का काव्य है। आगरा ब्रज भाषा का प्रमुख केन्द्र रहा है इसलिये परिमल कवि ने भी अपने काव्य में ब्रज भाषा का प्रयोग किया है।

भाषा में सब मंती कराहि, भाषी बीरबदन मैं जाहि।

जो आईत देहै हन जोन, सोई मानि लेहु सब लोग ॥१४०॥

मोती रत्न घर खरि जाय, सब बिलि जीरकन बं बय ।
आई नैट ता जाय बरी, बाइ सीस बिलती हे करी ॥१४२॥

याकी, कीहू, गरी, आ देल (२०/१५) ताकी (७३/१६) जैसे शब्दों को अधिकता है ।

काव्य की विशेषताएँ

श्रीपाल एवं वैताकुन्दरी पर हिन्दी में अब बड़ा चित्रने श्री काव्य लिखे गये हैं उनमें प्रस्तुत काव्य सभी दृष्टियों से उत्तम है । भाषा एवं बर्णन शैली दोनों ही आकर्षक है । कवि ने नायक, नायिका एवं उपन्यायिकाओं के जीवन में घटने वाली घटनाओं का सरस बर्णन किया है । कवि की बर्णन शैली से काव्य के सभी पात्रों का खरिब विकसित हुआ है तथा पाठकों में उनके प्रति सहानुभूति, कल्याण भववा-रोष के भाव जाग्रत होते हैं ।

काव्य का नायक श्रीपाल है जो कोटिबट है । असंख्य योद्धाओं की शक्ति का प्रतीक है । विपत्तियों एवं संकटों के सामने वह कभी हार नहीं मानता है किन्तु अपनी शक्ति, साहस एवं शूरवीर्य से उन सभी पर विजय प्राप्त करता है । वह युवा-वस्था में ही राष शासन चलाता है लेकिन कुछ ही समय के पश्चात् वह भयंकर कुष्ठ रोग से पीड़ित हो जाता है । वह कुष्ठ रोग उसके साथ ही अनेक रसकों के भी हो जाता है । कलना, पीना, उठना, बैठना, नहाना, खेना, बस्न पहिनना आदि सभी सभी क्रियायें दूसरों द्वारा की जाती है । राष एवं पीप की दुर्गन्ध से सारा वाता-वरण दुर्गन्धमय बन जाता है । नाक एवं अंगुलियां गिरने लग जाती है । कवि ने कुष्ठ रोग पीडा का बहुत अच्छा बर्णन किया है—

वहे राष पीडिनी खरीर, होई दुःखवा बहुत खरीर ।
कोट उबरन बरयो बलि राई, लखि लंगुनी बरि बय पाई ॥१२१॥
रक्षपीत जाके तन बीस, डारें खीर राई कें सीस ।
भर प्रयेनु छत्र सौ यहू, बह बाव मण्जारी रहै ॥१२२॥
स्वाम दाव जाके असानी, ली राखी हि खरबे वाम ।
मरदन करे जाहि खरी कल, कलुषा करवाये असमान ॥१२३॥

श्रीपाल राजा ने लेकिन प्रयासपूर्वक से । अपने कुष्ठ रोग के कारण जब प्रभा को दुख होने लगा, मगर दुर्गन्ध से भर गया, तथा उनका शाना पीना हराम हो गया तब मैन्धियों ने राजा से विस्तार पूर्वक आज्ञा की कथा बतलाई । तत्काल श्रीपाल ने कुष्ठ रोग से मुक्ति पाने तक राज्य का समस्त भार अपने चाचा की-

दमन को सौंपने का निश्चय किया। इस अवसर पर कवि ने प्रसंग के महत्त्व पर बहुत सुन्दर प्रकाश डाला है—

रइयति बिन सोभा नही रहै, रइयति बिन को राजा कहै ।

बिन पंखनि है पंखी जिसी हूं रइयति बिन बीसो तंतो ॥१५२॥

× × × ×

रयति को हून उपर छाह, रयति बसै हमारी बहै ॥१५३॥

भैसे कहे स्वामे जोध, साका प्रया बराबरि दोष ॥१६०॥

मैनासुन्दरी जब सौलह वर्ष की हुई तब रूप एवं सौन्दर्य की राशि बन गयी। जिसने उसके रूप को देखा उसी ने दांतों तले अंगुली दबा ली। मैना सुन्दरी का कवि के शब्दों में सौन्दर्य देखिये—

घोडस सरब चढी परवान, कोउ रूप न ताहि समान ।

ताको रूपसो हेम करंदु, मानौ सरब पुन्यो की बंदु ।

लोचन अरुन सुबनत अति बने, ज्यो चकृत मृग साबक तने ॥२६॥

कटाक्ष दृष्टि मानु बहःबान, कुकुटी कुटिल बनबच कथान ।

भायै भायै बिराजै बार, मानौ नागनि कै उमिहार ॥२७॥

कवि ने मैनासुन्दरी के प्रत्येक अंग के सौन्दर्य का वर्णन किया है जब मैना सुन्दरी को कोठी के साथ विवाह करने के समाचार सुने तो चारों ओर राजा को चिक्कारने तथा मति भ्रष्ट होने, विनाश होने के ताने सुनने को मिले। इसी प्रसंग में अपने २ कर्तव्य का पालन नहीं करने के कारण किन् २ का विनाश होता है इसका काव्य में बहुत ही सुन्दर वर्णन मिलता है।

बिनसै मंत्री संकाबरै, बिनसै राज मन्त्र सो टरै ।

बिनसै भागिनी आइसु सत्रै, बिनसै मूक देखि रसु सबै ॥४०४॥

बिनसै ईसु कीहु परहरै, बिनसै सांगु बागु जो करै ।

बिनसै दासा सबै विधिक, बिनसै बाहन सबै विष एक ॥४०३॥

श्रीपाल का कुष्ठ रोग मिथिलप्रदत्त पूजा के प्रभाव से गया था। मैना सुन्दरी ने पूरा आरुका एवं चिबि के साथ इस क्रम का विधान किया था। अन्तिम तीन दिन तक गन्धोदक से स्नान करने पर श्रीपाल का कुष्ठ रोग दूर हुआ था।

कवि ने इस कृत के सम्बन्ध में लिखा, फिर उसे पर पूजा करने प्रादि क्रियाओं का विस्तृत वर्णन किया है। इससे पता चलता है कि परिमत्स्य कवि पंडित भी थे।

तीन दिवस संकीर्णः शूलः कोपः किञ्चित् बहूनां कष्टकरः ।
 कंचन बरसु भयो तनु ईलो, सोहसु काम देवको चित्तो ॥

श्रीपाल जब विदेश भ्रमण करने लगे तो वेना सुन्दरी यक्षीक धमत्तिया होने पर भी पति विरह के दुख को सहन नहीं कर सकी और पति को अपनी विरह व्यथा निवेदन करने लगी—

यह कहि मजनु कीयो बरवीर, कामिनि व्याकुल नई शरीर ।
 सोचय बरे चित्त उमहारी, ननु गाहो करि प्रचलु गहारी

श्रीपाल की बलि देने के लिये उसे बबल सेठ के पास ले गये। श्रीपाल सुन्दरता की प्रतिभूति होने पर भी बबल सेठ के हृदय में किञ्चित् भी रुपा नहीं पायी। और उसने उसकी बलि देने की स्वीकृति दे दी। लोभ मनुष्य का गला काटता है। इस प्रसंग में कवि ने लोभ रूपी पाप का विस्तृत वर्णन किया है—

लोभ शंभ जो मानसु होई, पाप पुण्य जाई नहि लोई ।
 लोभ शंभ जाई है प्रस्य, मलिन नाथ नहि तबै निवाण ॥६०२१॥
 लोभ शंभ जो प्रहरी चित्त, लो बर शयो न बहै चित्त ।
 लोभ शंभ जाको मन रहै, लो न बली काह को कहै ॥६०२२॥

श्रीपाल का जीवन विदेश में भी पूर्णतः धार्मिक था। जहाँ भी उसे जिन चैत्यालय मिलता, वह दर्शन करके ही भोजन करता। यदि मुनिराज होते तो फिर उनके भी दर्शन करता।

जिन चैत्यालो बंदो जाय, तब हों भोजन करि हों जाय ।
 बह मुनिवर के बड़े पाय, भोजनु करी सवारी जाय ॥

बबल सेठ ने जब रामचन्द्रा के रूप को देखा वह कामान्ध बन गया और पिता पुत्र के सम्बन्ध को भुला बैठा। वास्तव में मनुष्य जब काम का शिकार बन जाता है तो वह भाई बहिन, माता पिता, पुत्रों के सम्बन्ध को भुला खेड़ता है इसी को कवि के शब्दों से देखिये—

काम पुण्य लख्या करहारी, बहोईन कसु किया न करै ॥

सुरा पान ते सुनि सनु आय, तथा होम हूँ कामिनु आय ॥१२३०॥

× × × × × ×

कामी जन बंधे परनारि, कामी जन मन भावै वारि ।

कामी जन छारै गुण सेव, नानै भासै न पुनै बैव ॥१२३१॥

कामी जन जनकै उलटी रोति, उसम तबै मध्यम सौ प्रीति ।

कामी जन के मितु न बांधु, नैननि देखै तथा मिरंधु ॥१२३२॥

श्रीपाल फिर संकट में फँस जाता है। धवल सेठ द्वारा वह समुद्र में गिरा दिया जाने के पश्चात् वह सागर तैरकर दूसरे द्वीपमें आ जाता है। वहाँ सागर तटपर राजा के सिपाही उसका स्वागत करते हैं। शीर सागर तैर कर आने के उपलक्ष में राजा द्वारा अपनी लडकी भृगुमाला से उसका विवाह कर दिया जाता है। वे दोनों कुछ समय तक सुख से रहते हैं लेकिन जब धवल सेठ का जहाज उसी द्वीप में आ जाता है। श्रीपाल को बेलकर खबरा जाता है और एक नयी जाल खोलता है। वह भांडों को बुलाकर राज दरबार में श्रीपाल को भांड पुत्र सिद्ध कर देता है। जिस व्यक्ति के बुरे दिन आने लगते हैं तो अपनी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है तथा वह धर्म का मार्ग छोड़ देता है। कवि ने इसका अन्धा वर्णन किया है—

यह सुनि सेठ विचारै तबै, जिनस हाक होहु नर जगै ।

यहूँ मति ताकी तजि आय, दुर्गै कसुँ जसै छुटकाय ॥१२३३॥

सोबै सनु जसै सुनि सोनु, श्रीपु श्रीनि सेव जगदीसु ।

महिम्न ताकै कास न रहै, जानु ताहि तजि मारगु गहै ॥१२३४॥

संजम सोनु तबै फुलि ताहि, क्या बिबेकु जसै जित चाहि ।

यहूँ दुरमति बैसै प्राप्त, जेरै असुनु बु कंठ लगाय ।

बहौरि होय अदबा सौ प्रीति, बहौरि असत्य करै बसि जोति ॥१२३५॥

भांडों ने राज्य सभा में श्रीपाल को अपनी जाति का तथा अपना महका सिद्ध कर दिया। भांडों द्वारा किये हुए प्रदर्शन को देखिये—

कोट कंठ लागि पोषय, कोट मुनु पीछै बिहसाय ।

कोट ताकै पकरै पाय, कोट बाह गहै अक्रुताय ।

कोट ताकै पीछै कंधु, ताहि देखि हजारी सनु संनु ।

कोट कहै पनि दूपास, बाकी भयी जहाँ प्रतिपासु ॥

भांडों ने विक्रम प्रकार से राजा को समझा दिया कि श्रीपाल उसी का पुत्र

है। श्रीपाल को फिर प्रसन्न करने में धैर्य लिखा। राजा ने कोपित होकर कुंझालों को श्रीपाल को मारने का आदेश दे दिया।

बहु पुत्रि राजे कोष भस्ति भयो, बलिभक्ति की श्रावणु भयो ।

भारो अब लीय मैं लति करी, या प्राप्ति ले करी करी ॥१३५२॥

इसके पश्चात् रजकन्या से श्रीपाल का पूरा परिवर्तन सुनने के पश्चात् राजा ने श्रीपाल से कर्मक भाव की धीर क्रि. से मथर में उसका जोरदार स्वागत किया गया। इसके पश्चात् तो विभिन्न द्वीपों से श्रीपाल के साथ ही विवाह के प्रस्ताव आने लगे और श्रीपाल ने भी सभी प्रस्तावों की स्वीकार कर अपनी उदात्ता का परिवर्तन दिया।

श्रीपाल को राजकुमारियों से विवाह करने से पूर्व उनकी समस्या पूर्ति भी करनी पड़ी। कोकन वट की आठ राजकुमारियों द्वारा रखी गयी समस्या का श्रीपाल द्वारा निम्न प्रकार से पूर्ति की गयी।

समस्या—जहां साहसु तहां सिधि (शृंगार गौरी द्वारा)

पूर्ति—सत सरीरह आपती, प्रसटि अकेर मुहुक्ति ।

सील सुभावन परहरं, जहां साहसु तहां सिधि ॥१७१८॥

समस्या—गो पेलसंह सबु (पडलोमी द्वारा)

पूर्ति—नवि पूजा नवि दान हित, अनिबापो यो दख्य ।

वृथा जनम नवाइयो, गयो पेलसंता सब्ब ॥१७१९॥

समस्या—ते पचायण सिंह (पडलोमी द्वारा)

पूर्ति—सील विहुना जेवि नर, तिन की देह मलीन ।

जे चारिबह निमंसा, ते पंचायण सिंह ॥१७२०॥

समस्या—कासु पिबाउ खीर

रावन विधा सीभिगी, दसमुल एक सरीर ।

तास बाय धरं परी, कासु पिबाउ खीर ॥१७२२॥

इसके पश्चात् और भी देश की राजकन्याओं के साथ श्रीपाल ने विवाह कर लिया। एक दिन अचानक उसे मैनासुन्दरी की याद आ गयी और किया हुआ वायदा। वह तत्काल धूलामाला धीर रजकन्या के पास आ गया और वहां से चलने की तैयारी कर ली, दलपट्टन के राजा ने उसे निम्न प्रकार संबोधित किया—

अस्त रात्र तुज्जी विहसंतु, एक हृदय हर मकरंत ।
 अचारि सहस्र वर हर सुरंत, दोने ज्ञान चर वर संघ ॥

अनेक देशों में होता हुआ श्रीपाल उज्ज्वनी पहुँच गया जहाँ मैत्रा सुन्दरी उस की प्रतीक्षा कर रही थी । उसके दीक्षा लेने के समय में केवल एक रात्रि बाकी थी । मैत्रासुन्दरी के लिये एक रात्रि की प्रतीक्षा भी कठिन हो रही थी । मैत्रासुन्दरी एवं उसकी सस के मध्य होने वाले वार्तालाप को सुनकर श्रीपाल ने शर में प्रवेश किया । दोनों को बहू रात्रि को ही अपने कटक में ले गया और अपनी महता एवं रानी को अपनी विशाल सेना एवं अपनी पत्निया बतलाई । उसने सबके सामने मैत्रासुन्दरी को पट्टरानी—महारानी घोषित किया तथा रैन मन्त्रूषा, भृगुभाला, चित्ररेखा को रात्रियां घोषित की । मैत्रासुन्दरी का हृदय प्रसन्नता से भर गया और उसने श्रीपाल से निम्न प्रकार निवेदन किया—

मेरे पिता करम नहि मन्वी, मानअंत कीजें ता सर्वौ ।
 कंबर पहिरि कुहारी कंध, कर पीनय की मरी सबंध ।
 असी विधि जब मिलि है तोहि, तब ही सुख उपजेवो मोहि ॥

दूत ने तत्काल जाकर राजा से इसी प्रकार के वेश में श्रीपाल से भेंट करने का आग्रह किया । राजा ने क्रोध में आकर दूत को पकड़ लिया । लेकिन मन्त्री के कहने से उसे छोड़ दिया । राजा पट्टपाल ने उसी तरह श्रीपाल से मिलने की बात मान ली लेकिन मैत्रासुन्दरी ने जब राजा का मान संघ होता सुना तो श्रीपाल से पुनः अपने पिता को राजा के तरीके से बुलाने के लिये कह दिया । दोनों में जब परस्पर मिलन हुआ तो चारों ओर आनन्द छा गया ।

राजा पट्टपाल ने जब मैत्रा सुन्दरी एवं श्रीपाल के वैभव को देखा तो उसके आँसों में आसू बह चले और निम्न शब्दों में मैत्रा सुन्दरी की प्रशंसा करके लगा—

ओ पुत्री सबही गुण ज्ञान, सील सुरंवर सुख निवाम ।
 तुं अति दयावत जीय जीय, तो सम दूजी और न कोय ॥
 मैं तेरी देखी अब करमु, अब आराध्यो जिनवर धरमु ।

अभी श्रीपाल को अपना स्वयं का राज्य और लेना था जिसे वह अपने चाचा को दे आया था इसलिये जब उसने अपना राज्य दूत भेजकर माँगा तो उसे निम्न प्रकार उत्तर मिला—

जिनु भुजबल जिनु अरुणप्रहार, जिनु रस सुरै व करै अकार ।
 जौली एहु करम नहि होइ, तौ तौ राज न बावै कोय ॥१६४६॥

श्रीपाल ने एक बार दूत भेजकर अपने चाचा की समझने का प्रयास किया तो वह और भी क्रोधित हो गया और दूत को ही मारने का आदेश दे डाला—
बुझ ही जाती निरुद्ध करी, जैसे जालि कर्ण्ड तुल जाती ॥

लडाई की तैयारियां होने लगी और उसने तत्काल आक्रमण करने का आदेश दे दिया ।

भावे मार मार तिहू बार, हम भय जाती से हथीवार ।

यो संभान मिठे हम पाइ, जैसे जीवत एक न पाइ ॥११८८८॥

यह कहत करी उचरो चढ़्यो, और लै खडग करुपी रिस चढ़्यो,
ता देखत ही सबे बुझार, बाए काल क्य तिहू बार ॥११८८९॥

सैनिकों की पत्नियों जब अपने अपने पति को युद्ध के लिए बिदा किय
उन्होंने निम्न प्रकार अपने विचार प्रकट किये—

कोउ प्रिया भांगे रतिदान, हम तुम कंत जन्म है धान ।

कोउ कहै बुझुं भुज तनी, हरसायी निय बल धायनी ॥११८९०॥

कोउ लौक देखै कुल भांग, बुझ हारि मति जाती धान ।

बहुत घोर जो जाती भाल, स्वामी काज अब करी हलाल ॥१२००॥

कोउ कहै संखिनी मारि, भक्षियी पीय जो जानि हारि ।

एक कहै मुक्तनि के हार, अब पाटबर और अपार ॥१२०१॥

दोनों में युद्ध होने लगा । गज से गज, अश्व से अश्व एवं पायक से पायक
भिड़ गये । शाम हो गयी लेकिन कोई परिणाम नहीं निकला । यन्त्रियों के परामर्श
से अन्त में यह निश्चय किया गया कि श्रीपाल एवं वीरदमन में वरस्पर युद्ध होने
पर जो जीत जायेगा वही राजा पद प्राप्त करेगा । दोनों में तीव्र युद्ध होने
लगा ।

तब ए कोउ बडे दौड राइ, भिरे नल्ल ज्यों दौड पाइ ।

जाचा जाती करै दौड और, जौटे गिरे परे पर और ॥१२०२॥

जैसे बहुत डेर अब गई, श्रीपाल की मति रिस गई ।

ताके दौड भकरे पाय, मति जागुर हूँ लगी उडार ॥१२०३॥

धरतो पडकव जाती जाती, जे जे जे लख कीयो मुर लखे ।

कुसुम नाल लखी लख गई, कौड जगति क्य जो लखरे ॥१२०४॥

वीरदमन ने अपनी हार मान ली और श्रीपाल को राज्य भार सँभला कर स्वयं ने जिन दीक्षा धारण कर ली। श्रीपाल ने सब राज्य सुख भोगा और धर्म नीति के अनुसार राज्य किया। कवि ने धर्म की बड़ी महिमा गायी है। धर्म का प्रभाव एवं तेज अपूर्व होता है जिसके हृदय में धर्म उतरता है उसे चारों ओर से सुख शांति एवं अपूर्व आनन्द प्राप्त होता है—

धर्म एक त्रिभुवन में सार, धरमै कुगति किन्तस्य हार ।

धर्म एक सब सुख को कंडु, धरम एक भवै सुख दंडु ॥२०२५॥

धर्म पसाय नख गुजरै, धरम पसाय हीस हीम धरै ।

धरम पसाय चंचर सिर डरै, धरम पसाय छत्र सिर धरै ॥२०२६॥

अन्त में श्रीपाल एवं मैनासुन्दरी दूसरे सहस्रो राजाओं एवं रानियों के साथ जिन दीक्षा धारण कर ली। मैनासुन्दरी की घोर तपस्या का बहुत ही अच्छा वर्णन किया है—

अब बन मारग तो पगु धरै, शीघम रितु तिक्ता धर जरै ।

सरद सोम सम बहनी बिकातु, पोमनि करती पोष पियास ।

शीघम हल माह धरभात, हो ती मलिन सोत को घात ॥७॥

इस प्रकार श्रीपाल चरित हिन्दी का उत्तम काव्य है। इस काव्य से हिन्दी काव्य जगत् को गतिशीलता मिलती है। महाकवि तुलसीदास की रामायण के पूर्व दोहा, चौपई में रचित श्रीपाल चरित से तत्कालीन समाज में हिन्दी का अध्ययन अध्यापन, काव्य निर्माण में कवियों एवं विद्वानों की रुचि बड़ी थी। परिमल्ल कवि का आगरा केन्द्र था और ब्रज भूमि में हिन्दी का प्रचार प्रसार करने में जैन कवियों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

श्रीपाल चरित में काव्य के नायक द्वारा जिन जिन देशों एवं द्वीपों का भ्रमण किया था उनके नाम निम्न प्रकार हैं—

१. राजगृह—राजा श्रेणिक की राजधानी, भगवान महावीर के बिहार का प्रमुख केन्द्र।

२. अम्दापुर—अंग देश की राजधानी, श्रीपाल के राज्य की राजधानी, भगवान वासुपुत्र्य की निर्वाण स्थल।

३. उज्जैन—मालवा प्रदेश की राजधानी, मैना सुन्दरी की जन्म स्थली,

श्रीपाल द्वारा कुष्ठी जीवन वापन, वन में सिद्ध ब्रह्मरत की पूजा से कुष्ठ निवारण ।
कवि के शब्दों में—

देस आसको सब सुख धामु, मध्यलोक में प्रसद्वी नाम ।
बुझ नबि जिहि है वासर रैन, सुखत बसै तहाँ नबर उज्जैन ॥६॥

४. कौशांबीपुर—श्रीपाल उज्जैन से कौशांबीपुर पहुँचा जहाँ उसको चवल सेठ से भेंट हुई । यहीं से वह सेठ के साथ आये व्यापार के लिये गया ।

५. हंस द्वीप—यात्रा का प्रथम पड़ाव । श्रीपाल ने इसी द्वीप में स्थित जिन मन्दिर के ब्रह्मकपाट खोले थे तथा उसका रैनमंजूषा से विवाह हुआ था ।

६. कुंकुम द्वीप—इलपट नगर—समुद्र को तीरता हुआ श्रीपाल इसी द्वीप के किनारे पहुँचा तथा इलपट नगर के राजा द्वारा अपनी लडकी गुरामाला से उसका विवाह कर दिया । चवल सेठ के आने पर भांडी द्वारा श्रीपाल को अपना लडका बतलाने पर राजा द्वारा श्रीपाल को सूली लगाने का आदेश दिया । लेकिन रैन मंजूषा के पहिचान के कारण श्रीपाल सूली से बचा तथा पुनः सम्मान प्राप्त किया । चवल सेठ की वही मृत्यु हुई ।

७. कुण्डलपुर द्वीप—हंस द्वीप में कुण्डलपुर द्वीप पहुँच कर चित्ररेखा के साथ विवाह हुआ ।

८. कंचनपुर—विलासवती का जन्म स्थान ।

९. कोकल पट्टन—यहाँ श्रीपाल ने पहुँचकर आठ राजकुमारियों की समस्या पूर्ति करके उनके साथ विवाह किया ।

१०. पंडीय देश—कोकण पट्टन से श्रीपाल पंडीय देश में पहुँचा ।

११. मेवाड देश—पंडीय देश से मेवाड देश में पहुँचा ।

१२. तिलिच देश—श्रीपाल की यात्रा का अन्तिम देश ।

१३. सौराष्ट्र देश (सौराष्ट्र)—तिलिच देश से श्रीपाल वापिस कुंकुम द्वीप के इलपट नगर में पहुँचकर तथा यहाँ कुछ समय बिधाम के पञ्चान् रैन मंजूषा, गुरामाला प्रादि रात्रियों के साथ उज्जैन के लिये प्रस्थान किया । तथा सौराष्ट्र में पहुँचा ।

१४. सीराष्ट्र से श्रीपाल वहा के राजाओं से कर वसूल करता हुआ भरहट (महाराष्ट्र) देश में पहुँचा ।

१५. उज्जयिनी—महाराष्ट्र से श्रीपाल उज्जयिनी नगरी में पहुँचा जहाँ मैनासुन्दरी उसकी १२ वर्ष से प्रतीक्षा कर रही थी ।

१६. चम्पापुरी—उज्जयिनी में कुछ समय अपने सबसुर के यहाँ ठहर कर अन्त में वह चम्पापुरी पहुँचा । यहाँ उसका अपने चाचा वीरदमन से युद्ध हुआ और अन्त में विजय प्राप्त करके अपना राज्य प्राप्त किया ।

काव्य की विशेषता

श्रीपाल चरित्र अत्यधिक रोचक काव्य है । कवि ने घटनाओं के वर्णन के साथ और भी ऐसे वर्णन प्रस्तुत किए हैं जिनके कारण काव्य और भी सुन्दर बन गया है । श्रीपाल का पूरा जीवन ही कर्म प्रधान है वह भाग्य के सहारे आगे बढ़ता है इसलिए निम्न मायता में वह अपना पूर्ण विश्वास रखता है —

विषना जो कछु लिख्यी जिलार, शुभ अरु अशुभ अंक शुभ सार ।
जँसो निमित्त जास कँ होइ, ताहि मिटाइ सकँ नहिँ कोई ॥३०३॥

इससे आगे कवि और भी अपने भाव निम्न शब्दों में प्रस्तुत करता है .—

पूरब ते पछिम रबि उर्व, नर फुनि मेरु चूलिका खुवं ।
सायर हू पँ धूरि उडाइ, भाबी तऊ न मेटो जाइ ॥३०५॥

भवितव्यता में इस प्रकार अटल विश्वास के साथ श्रीपाल आगे बढ़ता है । मैनासुन्दरी का भवितव्यता में सबसे अधिक विश्वास है अपने पिता के बार बार आग्रह करने पर भी वह अपने विचारों में दृढ़ रहती है और कुष्ट रोगी के साथ विवाह के अपने पिता के निर्णय को सहर्ष स्वीकार करती है । विवाह मंडप में बैठने के पश्चात् जब उसका सारा परिवार रुदन करने लगता है, मीन हो जाता है तब वह साहस पूर्वक कह उठती है कि जिस प्रकार उसकी बड़ी बहिन के विवाह में मंगलाचार गाये गये थे उसी प्रकार उसके विवाह में भी गाये जाने चाहिये —

तब सुन्दरी उठि ठाडी भई, निज परिग्रन माता पँ गई ।

सुरसुन्दरी को गायो जिसो, मोकी क्योँ नहिँ राजी तिसो ॥३२०॥६१

पुत्री के विवाह में जो कुछ पिता द्वारा कन्या को दिया जाता है उसे हम दहेज संज्ञा देते हैं । मैनासुन्दरी के विवाह में भी श्रीपाल को डेर सारा दहेज मिलता है

लेकिन आज के युग की तरह उस युग में मंग उहराव अंबवा और जबरवस्ती कुछ भी नहीं होता था जो कुछ भी दिया जाता उसे सहर्ष स्वीकार करने की परम्परा थी। और इसी परम्परा से समाज जीवित भी रह सक्य। श्रीपाल को भी दहेज में अपार बल एवं प्रबल सम्पत्ति मिलती हैं कवि ने उसका प्रशंसा वर्णन किया है।

अत्र अजर बीहे भंडार, डीमे मंगल पुरीय ते सार ।

पारंजर दीए बहु और, सिमें तवे निर्मालिक हीर ॥१३४॥

सहस्र वास सुन्दर गुन बेह, दीए सिरीपाल को तेह ।

सेवग भले भले जो भए, बहुस और सेवा को बए ॥१३५॥

पत्नी के लिए पति चाहे कौसा ही क्यों न हो वही उसका देवता कहलाता है। श्रीपाल ने विवाह के पश्चात् मैनासुन्दरी से दूर रहने के लिए कहा क्योंकि वह उस समय कुष्ठ रोग से पीड़ित था। कहां रूप लावण्य की खान मैनासुन्दरी और कहा कुष्ठ रोग से पीड़ित श्रीपाल। लेकिन मैनासुन्दरी ने श्रीपाल को जो उत्तर दिया वह बहुत मार्मिक एवं पढ़ने योग्य है :—

बिबिना मोहि कह लिखि बिबो, सोहि नोको बिबई भयो ।

तुम मेरे प्रीतम भरतार, तुम मेरे माननि साधार ॥१४३॥

तुम अति रूपवंत गुनवंत, तुम हो मुक सागर बलिवंत ।

लोचन मुकी जो सोए चार, तो लीं देखें तुमि निहार ॥१४४॥

श्रीपाल जब विदेश यात्रा के लिए रवाना हुआ। उसके पूर्व इसकी माता ने सुखद यात्रा के लिए कुछ बीज मंत्र दिये। ऐसी शिक्षा श्रीपाल के लिए ही नहीं सभी के लिए हितकारी सिद्ध हो सकती है कवि ने इन सबका बड़ा प्रशंसा वर्णन किया है—

अन दीनो मति लीजहु बिस्, परदारा मति लाबहि बिस् ।

तो ते बड़ी बारि जो होय, मात वरावर जाशिये सोय ॥७७०॥

होय बिबा जो ताहि समान, ताहि जानि जो बहिन समान ।

जो कामिनि तीते लखु प्राहि, पुनी सम जो जासिजो ताहि ॥७७१॥

मुसिअक मन को धरियो मानु, दु की दीन जन दीजी दानु ।

कहत मात का कहे सुजान, बलियो अत संजम बरवान ॥७७२॥

श्रीपाल पुष्यशाली था। इसलिये जब विदेश प्रस्थान के पश्चात् वह पुरपट्टन नगर में पहुँचा तो उसे सहज में ही तीन विद्यायें सिद्ध हो गयी जिसे उसकी विदेश यात्रा में बहुत सहायता मिली। इन विद्याओं के नाम थे क्षत्रु निवारिणी, जल तारिणी। प्राचीन काल में मंत्र विद्याओं पर जन सामान्य को पूर्ण आस्था थी और वह उनके चमत्कारों से पूर्ण प्रभावित थी।

धवल सेठ का जब समुद्र में जहाज नहीं चला तो उसे मनुष्य की बलि देने के लिए कहा गया इससे पता चलता है कि उस समय उपसर्ग निवारण के लिये मनुष्य तक की बलि देने का प्रचलन था। बलि के लिए श्रीपाल जैसे युवक को पकड़ लिया गया।

तातेँ मन मैं उपज्यो सदेह, मत्री मत्र विचारघो एहु ।

एक पुरुष बलि दीजै छाये तब वह चलेँ परोहन चाये ॥७७३॥

प्राचीन काल में समुद्री लुटेरे यात्रियों को लूट लिया करते थे। वे जहाज तक डुबो दिया करते थे। धवल सेठ के जहाज के ऊपर भी लुटेरोने हमला कर दिया था जिसके कारण पूरा व्यापारिक संघ ही संकट में पड़ गया था। यदि श्रीपाल नहीं होता तो पता नहीं धवल सेठ की क्या हासन होती।

श्रीपाल कोटिभद्र था। पुष्यशाली था। इसलिये उसके हाथ लक्ष्मी ही वज्र के किबाड खुल गये। जिनके खुलने का अर्थ था वहाँ के राजा की कुमारी रैनमज्जसा के साथ विवाह। श्रीपाल का भाग्य चमक उठा और विदेश में उसे सफलता पर सफलता मिलने लगी। इसके पूर्व वह जहाज को अपने बाहुबल से चलाकर लुटेरों को पकड़ने में सफलता प्राप्त कर चुका था। यह तीसरी सफलता उसके उजबल भविष्य के लिए वरदान सिद्ध हुई। श्रीपाल ने रैनमज्जसा जैसी सुन्दर राजकुमारी ही नहीं किन्तु विवाह में अपार सम्पत्ति भी प्राप्त की इसका एक वर्णन पढ़ने योग्य है.—

रैनमज्जसा गुणह विसाल, श्रीपाल आही सुकुसाल ॥

सोवो दीयो तूठि कं राय, चौर छत्र हय गय अघिकाय ॥६६२॥

दीनौ मरिण रत्ननि अष्कार, दासी दास ए सुभसार ॥

और बहुत को कहै बढाय, दीनौ नीतन महत्त कराय ॥६६३॥

श्रीपाल के जीवन में फिर संकट छा जाता है और वह समुद्र में गिरा दिया जाता है। उस समय रैनमज्जसा के दुल का कोई बाह नहीं रहता। वह भी

अपने पुत्र कृत कर्मों की रोती है और निम्न प्रकार पञ्चताप करती है :—

कैं मैं पर पुण्यह मन धर्यो, कैं मैं साधु जीयते डर्यो ।
 कैं मैं काहूँ को वित्तु हरयो, कैं मैं भविजन भावन कर्यो ॥११८१॥
 कैं मैं निहो जिनवर धनुं, कैं मैं अशुभ कयायो कर्मुं ।
 कैं मैं जीव दया परहरी, कैं हूँ कहुँ प्रणि मैं जरी ॥१२८२॥
 कैं मैं भिष्या गृह सेदयो, कैं मैं पावही दान न दियो ।
 कैं मैं कहुँ उषार्यो अंगु, कैं मैं किमो वरतु कौं अंगु ॥१२८३॥
 कैं गुरु कष्टो न लीनो मानि, कैं मैं झूठो बोल्थो जानि ।
 कैं मैं परगुण सेदयो पाय, कैं हूँ बूढी नदी मैं जाय ॥१२८४॥

श्रीपाल का व्यक्तित्व पूरा क्षमाशील था । शत्रु को जीतने पर भी वह उसे क्षमा कर दिया करता था । उसने सर्व प्रथम समुद्री डाकुओं को बबल सेठ के जहाज पर हमला करते समय पकड़ कर लाने पर भी उन्हें क्षमा कर दिया । तथा स्वयं बबलसेठ को उसे समुद्र में गिरा देना एवं भांडो द्वारा पुत्र बतलाने के बह्यंत्र का पता लगने पर भी बबल सेठ को क्षमादान दे दिया । श्रीपाल ने अपने जीवन में कभी ऐसा कोई कार्य नहीं किया जिससे उसके जीवन में कलक लगता हो । इस प्रकार श्रीपाल चरित्र शिक्षाप्रद काव्य है जिसमें एक और कर्मवाद (भाव्यवाद) की प्रधानता है तो दूसरी ओर पुण्यार्थ को भी गौरव नहीं किया गया है । स्वयं श्रीपाल राजा होने पर भी वैभव, धन संपत्ति अर्जन के लिए देशाटन करता है । वह अपने सिद्धान्तों पर चलता है और उनका कभी उल्लंघन नहीं करता ।

श्रोगान का अन्तिम जीवन साधु जीवन के रूप में व्यतीत होता है। अपने अग्रार राज्य एवं वैभव, घाठ हजार राणियों के भोगों को हेय समझ कर मुनि दीक्षा धारण करता है अर्थात् अन्तिम जीवन में त्याग को प्रधानता देता है । जो वर्तमान भौतिक जीवन व्यतीत करने वालों के लिए अच्छा उदाहरण है । मानव को अपनी वृद्धावस्था में त्यागमय जीवन अपनाता चाहिये इसी में उनका कल्याण और आगामी जीवन के लिए शुभ लक्षण है ।

विद्याध्यन

श्रीपाल को घाठ वर्ष का होते ही विद्याध्यन के लिए मुनि के पास भेजा गया जहाँ उसने एगोकारमंत्र, अक्षर विद्या, अंक विद्या (गणित), न्यायशास्त्र, सामुद्रिक शास्त्र, व्याकरण, ज्योतिष, वैदिक आदि विद्यायें सीखी । यही नहीं जस में तिर्यग, बुद्धसवारी, हाथी की सवारी, रथ की सवारी एवं संगीत आदि की विद्यायें भी अध्धयन किया; इसी तरह मीनासुन्दरी एवं सुरसुन्दरी ने भी विद्यायें सीखी इतना अवश्य है कि मीनासुन्दरी ने जिन मन्दिर में प्रायिका के पास जाकर जैन धर्म

की शिक्षा प्राप्त की जिससे उसके मन में कर्मवाद की प्रबलता स्वीकार करने का प्रभाव पड़ा और मुरमुन्दरी ने 'शिवपुर' से शिक्षा प्राप्त करने के लिए उसके बूझते ही संस्कार बने। इस प्रकार जैसा शिक्षक मिलता है बालक के उसी प्रकार के संस्कार बढ़ जाते हैं। मैनामुन्दरी ने जिस प्रकार की शिक्षा प्राप्त की उसका एक वर्णन देलिया :—

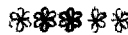
जोतिष पढ्यो इसी परबानि, भागत्र अरु अध्यात्म जानि ।

सीस्यो तिन संगीत पुरान, नाटिक शक्ति करै बखानि ॥

तकें छंद पुत्री पठि लियौ, छह राखन तिन उत्तर दिवौ ।

भाषा सोजु अठारह पठी विद्या करि दिन ही नित बढी ॥२२७॥

इस प्रकार परिमल्ल कवि का श्रीपाल चरित्र उत्तम प्रबन्ध काव्य है जिसका जितना गहरा अध्ययन किया जावे, उतना ही श्रेष्ठ एवं सुखद है।



श्रीपालघरित्र (परिमल कृत)

श्रीपद

मंगलाचरण

श्रीसिद्धचक्र विधि केवल रिद्धि । गुण अनंत फल जाकर सिद्धि ॥
 प्रणामों परमसिद्धगुरु सोइ । भविक संग ज्यों मयल होइ ॥ १ ॥

सिद्धपुरी सिद्धनि को धाम । सिद्धपुरी ध्यानंद निधान ॥
 प्रगट जीति त्रिमुवन में आहि । अलख देव को लखै न ताहि ॥ २ ॥

ध्यान रहित निरंजन जानि । हीन बुद्धि क्यों सके बधानि ॥
 जय जिनंद आधीसुर देव । सुर नर कित पद पंकज सेव ॥ ३ ॥

जय अजितेशुर गुवह निधान । भाक रहित विध्यांतम धाम ॥
 जय जिन संभव हरे विश्वर । सुखिरत अति ध्यानद वल्लर ॥ ४ ॥

जय अभिनंदन नंदन वीर । मुन गरिष्ट भव मंजन भीर ॥
 जय सुमतीसुर परम उदास । सुमय प्रकाशन कुमय विनास ॥ ५ ॥

जय जय पद्मप्रभ पदु जाहि । श्री संजुत कबलासन आहि ॥
 जय सुपात उपहास निकंद । प्रसावत दूरि होइ अन्न फंद ॥ ६ ॥

जय चंद्रप्रभ केवल नाम । होइ कृपाल सब सुख धाम ॥
 जय पुष्पदंत जीस्थी जिहि मार । दुर्धर धर्यी चारित्रह भार ॥ ७ ॥

जय जय सीतलनाथ मुनिह । अक्षुर जय सेई सुर हृद ॥
 जय शीयांस रहित विश्वसे । उचित भक्ति बंधू परमेस ॥ ८ ॥

जय श्री वासपूज्य वत कीर्त । जैन धर्म उपदेश प्रवीन ॥
 जय श्री विमलदेव भति बंध । विमल क्या गुण विमल धर्मग ॥ ९ ॥

जय अनंत जिनकर सुक धाम । मन वच कल जानियी प्रमान ॥
 जय श्री धर्मनाथ सुसंगेह । कंचन कल विराजित देह ॥ १० ॥

जय श्री शक्ति परासिब शक्ति । दुःख हरन पूरति सीशक्ति ॥
 जय श्री कुंभ कुपंभ विनास । केवल उचित नाम परकास ॥ ११ ॥

जय श्री अरहनाथ जगनाह । प्रति बलिष्ठ जिह मोह नसाह ॥
 जय श्री मल्लि मल्यो जिह मान । पुन तीरथ महि जो परवान ॥ १२ ॥
 जय श्री मुनिबुद्ध मुनिदाह । शक्ति शक्ति शक्ति शक्ति पाह ॥
 जय जय नमि रतनत्रय चार । मन के छांटे सकल विकार ॥ १३ ॥
 जय श्री नेमिनाथ गुणखान । कृष्ण राजमती गए निर्बाण ॥
 जय श्रीपारस नाथ जिनद । फनि मनि मंडित त्रिभुवन ॥ १४ ॥
 जय श्री बद्धमान जिनराह । केहरि लंछिन भासन छाह ॥
 चतुर्विंश जिन जे गुनमाल । प्रनवत दूरि होइ भ्रम जाल ॥ १५ ॥
 अरु जे मुकतिपथ मुनिगए । निरभय अलख अगोचर थए ॥
 कीनों नमसकार परिमल्ल । जिनते दूरि होइ भय सल्ल ॥ १६ ॥
 जिनमुख अमुज तैं उखरी । त्रिभुवन मंदि कज्य विस्तरी ।
 द्वादशाय आसन भववती । जस प्रसन्न होइ कहुमती ॥ १७ ॥
 विमल ब्राह्म वेदनि में कही । निज निर्वेद्य अर्बन सारही ॥
 निरमुख ताहि कहैं बहु बंध । मुखताये रागी सरबंध ॥ १८ ॥
 स्वामिनि जिन पर होहु दयाल । बहै कथा ज्यों होइ रसाल ॥
 मूरिष थै पंडित पद लहीं । सारद गुन गाढी करि बहीं ॥ १९ ॥
 घट दंसन मुख मंडन सार । मिथ्या कुमति विनासन द्वार ॥ २० ॥

दोहा

असुख हरव जब बंदनी, वंदी केवल संस ॥
 देहु बुद्धि ब्रह्माइनी, ज्यों होइ उक्ति नमस्त ॥ २१ ॥

चौपई

तोहि सुसरि कर लेखनि सही । सिध बळविधि धारन कही ॥
 ज्यों सारद मसाउ अति लहीं । नवरत्न कथा प्रसट करि कही ॥ २२ ॥
 बुद्ध सौतम मोहि देहु पसउ । बहै कथा होइ मन आउ ॥
 बुद्धि परमेठि पंच गुरजानि 'मन कम करि कही बंदाणि ॥ २३ ॥

पंच परमेष्ठी, शासन

जय जय नमो देव धरिहल । हे प्रसिद्ध मुख जोहि धरनेत ॥
 जय जय नमो सिध वर देव । अलख कृष्ण किमुबन करि सेव ॥२४॥

जय जय आचारिज मुनिराइ । अमर लखर जन बंदहि पाइ ॥
 जय जय नमो परम उरभाइ । उदीयत मुन जा अमनाइ ॥२५॥

जय जय सति सौम्य वर श्रीर : अमृत बुधि-बनौरी करि ॥
 तिनकी नमस्कार कर जोरि । छाती जगमग होइ बहोरि ॥२६॥

पठत सुभक्त मन उरधं बाढ । कहि परमम हीरे करि माउ ॥
 कैसे धीपतल भीतरयो । कैसे कुष्ट व्याधि करि भरयो ॥२७॥

धीपाल के जीवन की उत्सुकता

कैसे बन उद्यानह गयो । कैसे सिद्धचक्र प्रस लयो ।
 कैसे सामर झूझ्यो अश्र । कैसे कोइ गयो तिकुताय ॥२८॥

कैसे दख तिन प्रगटयो धनो । कैसे प्रगटयो वसु आपनो ॥
 कैसे राजकीयो घरबान । कैसे वाको बत्यो पुरान ॥२९॥

२९ ना काल.

संभत सोखहलें जपर । साबन इन्ध्याबन आंगर ॥
 मांस असाठ केहूँ ली भाइ । वषारित को कहूँ कडाइ ॥३०॥

पक्ष उजाली आठे जानि । सुकरवार बार परबानि ॥
 कवि धरमेस्त मुख करि चिंतु । आरंभ्यो धीपाल चरितु ॥३१॥

बाबर पातिसाहि होइ गयो । तासु साहि हुमाउ भयो ॥
 ता सुत अफगन साहि बरानि ॥ ली सध सखी बूसरी मान ॥३२॥

तार्क राफ न कहूँ मनीसि । कसुबा सकसु करी बसि जीती ॥
 अशुदीन कसु ली भाव । झूकी अबर न संहि सेमान ॥३३॥

तार्क राफ सोचो कहूँ करी । कवि अरमन अंकट किमसारी ॥
 कीदुदीप प्रगट सुभयोत । कोसेन लख तासु बरमान ॥३४॥

जा चहुँ फेरि सिध जल बहँ । कोऊ जाको पार न सहँ ॥
तामै भरहवेत परवान । सब ही क्षेत्रनि मैं परवान ॥३५॥

मगध के राजा श्वेशिक का बर्णन

मगधह नाम राजँ तिहूँ देस । भूमंडल में सुजस असेस ॥
नयर राजियर सुबस बसाइ । ताकी सोभा कहीं न जाइ ॥३६॥
भरपुरी भररनि की जिसी । हँ प्रसिद्ध महिबंबल तिसी ॥
सुन्दर बृह सतवने अवास । बाडी बाग जुवा बहुँ पास ॥३७॥
श्वेशिक राज तिहूँ अरिसल्ल । करै राज प्रगट्यौ मुख भल्ल ॥
एक छत्र निवसै इह रीति । बसबा सकल करी बसि जीति ॥३८॥

कथा नाथ हँ ताकी नाम । पुन्यवंत सबकी सुवधान ॥
ताके सत्तुसील जानियँ । धरमातमा बसै बांनियँ ॥३९॥

कोऊ ताकेँ दुषी न लोइ । दया दान पालेँ सब कोइ ॥
ताकेँ बहुत महासुत जान । तामै बारिषेन परवान ॥४०॥

तसु रांगी बेलणा परवान । सत्तसील अरु गुणहूँ निधान ॥
कछु सुन्दरता कहीवन परेँ । दरस होत पापनि कौँ हरै ॥४१॥

मिथ्या दरसन रीति सुजांनि । समकित की परतीति बषांनि ॥
अरु अति जंनधम्म की लीन । दया दान पालन परवीन ॥४२॥

करै राज श्वेशिक नर पार । बहुत राइ सेवै कर बारि ॥
एक दिवस सिधासनि आई वैठ्यौ सिर परि छत्र घराइ ॥४३॥

सेवम लाष सेव ता करै । हय मय गाह चौर हूँ ठरै ॥
तिहूँ अवसरि आयी बनपार । हर्षवत मनमाहि अपार ॥४४॥

श्वेशिक के दरबार में कनकास का आगमन

छह रित के जु फूल भए । अति मनोम राजा कौँ दए ॥
विपुलागिर परवत परवान । आयी समोसरस सिहूँ आन ॥४५॥

अनुविशतमी वीर जिनंद । दरस होत बुद्ध दुरति सिंकंड ॥
कोजुहूँ कछु कही न जाइ । सुर्ष लोक तिहूँ ठाँ दह्यौ आइ ॥४६॥

इंद्र चन्द्र धरनिव कुनेस । सितकी कहतु धरनि कालवेस ॥
 भस्तुति करत ओरि दो हाथ । ठाढे रहत सुनो हो नाथ ॥४७५॥

श्रेणिक द्वारा साहूकीर सम्बन्ध

धरत खबर गन संघुप जिते । सेव करन भावत है तिते ॥
 मीसी वृनि आनंदा राउ । लीघ ताहि तिह किबी पसाउ ॥४७६॥
 कर कंकन धारन धपार । दीनी ताहि न लाई बार ॥
 भासन ते उठि ठाढी भयो , मनकी भरम सबे भजि गयो ॥४७७॥
 तिह ठा उपपयी सुख झसेसु । तीन प्रदक्षणा दर्ई नरेसु ॥
 वाधिसु धरै मनये सुष पाइ । कलि भयो सो भंविन भाइ ॥४७८॥
 भानंद भेरि धाइ सुख लह्यो । परजन सहित राइ उमगह्यो ॥
 पाटबडना गुणनि भांग । नारि खेलसा तार्क संज ॥४७९॥
 गुण बरनत सो पहु ती तहां । समोसरण श्रीजिन की जहां ॥
 द्वादस कोठा देखन लए । धनपति धाइ धाप निरवध ॥४८०॥
 तिनकी सोभा बरनि जी कह्यो । कहत कथा कछु भंत न लह्यो ॥
 मानसधरं देखियो राइ । अति आनंदा चितन समाइ ॥४८१॥
 तव जिनबर वृति लाग्योकरण । जय जय जरा जनम औ हरण ॥
 जय जय उदति नभ जीति जिनेस । जय जय मुकित बधू परमेस ॥४८२॥
 जय जय छियानीस गुणमंड । जय अतिसं चौतीस प्रचंड ॥
 तीन लोक की सोभा जाहि । कोऊ और न उपमा धाहि ॥४८३॥
 जय जय केवलज्ञान पयास । जय जय निर्वासन भव वास ॥
 जय जय योन रहित जिनदेव । नर सुर असुर करै जा सेव ॥४८४॥
 जय जय भस्तुति राव करेइ । बारवार प्रदक्षणा देइ ॥
 नयो प्रतप दुःख भजि गयो । मन बच काय सुष अति भयो ॥४८५॥
 गौतम स्वामी गणहर धाहि । नयस्कार कीयो नूप ताहि ॥
 जिहू ठा अजिकानि की साथ । बंदन करै तहां नर नाथ ॥४८६॥
 अर बुलक तहां पुरै धाहि । सभावांन तिन पुखै राइ ॥
 लोके हई कछु न कुभाष । नर कोद तहां बंद्यो राव ॥४८७॥

श्रेणिक द्वारा सिद्धचक्रवर्त कोया आनेने की
इच्छा प्रकट करना

श्रेणिक पूछे वीर जिनेसु । सिद्धचक्र फल कहि परमैसु ॥
गुण अनंत राजे सरबस । बाणी तब उच्छरी भ्रमंग ॥६०॥
गोतम स्वामी गुणह निधान । लागी परिछन केवलनान ॥
सुनि सुनि श्रेणिक राह प्रवानि । सिद्धचक्र व्रत कहौ बवानि ॥६१॥

कथा का प्रारम्भ

जवूदीप मनोगि उदार । जोबन लछि तास विसतार ॥
छार सिन्धु ता बहुधा बहै । अति प्रथाह को पारन लहै ॥६२॥
ता मै भरह क्षेत्र सो सार । सब ही क्षेत्रनि मै अधिकार ॥
तामहि अंगदेश परवान । भवर देस ता सम नहि धान ॥६३॥

चम्पापुरी का बंजर

तहां नगर चंपापुरी बसे । देखत जाहि चित्त उलहसै ॥
सोहै गृह सतषने भवास । द्वारं कंचन कलस निवास ॥६४॥
घर घर प्रति शीतरा सुठान । अति उज्ज्वल ते फटिक समान ॥
बिचि बिचि हीगुर धन्यौ सुरंग । ते चमकत देबियौ सुचंग ॥६५॥
घर घर सर्व लोग परधान । लक्ष्मीवंत सरब गुन जान ॥
घर घर सुर वेद धुनि करै । सहस्रकृत भाषा उच्चरै ॥६६॥
सामोद्रक व्याकरण पुरान । घर घर कीजे अरथ बधान ॥
जोतिग अरु वेदक गुन लीन । सब नर कोक कला परबीन ॥६७॥
सब को दया धर्म व्यीपरै । परससा नहि कोऊ करै ॥
अति रमेनीक हाट बाजार । बसै तहाँ नर साहु सा बार ॥६८॥
विराजै नग निरमोलिक चुनी । तिनकी बस बोलै सब हुनी ॥
कहुं होइ बालक पेशनी । सो कछु ताहि कहत नहि बनी ॥६९॥
कहुं कहुं नाचक नाचै ठाट । कहुं कहुं जाचै धन्य भाट ॥
कुली छतीस बसै तहाँ लोह । कुल की रीति न छडि कोइ ॥७०॥

अपनी अपनी बिल सब सुखी । तिह पुर कोऊ नाही सुखी ॥
 भास पास क्षांतिका सुवान । बहुत बावरी कुवा निवान ॥७१॥
 घर तिहां बाबर बोने खरे । सचन दाष बाबरौ हुय फरे ॥
 बहुत भांति अमृत कल हल ॥ देषत जिने न लावे मूख ॥७२॥
 फरे नारिबर अंब धमंभ । बहुत करि नारिणि सुरंग ॥
 धमिमत केला और विजूर । रहे विजोरे जहां तहां पूर ॥७३॥
 कुसुम कदम रहे बहु फूलि । रहे अमर तिनके रसमूलि ॥
 तिहकी सीमा कहियन जाइ । जोजन वास रही महकाइ ॥७४॥

बस्तु बन्ध

केवरो केतकी मरभो मोगरी भरु जाइ,
 गुलाब कु जो धवर करणाँ रह्यो तहां महकाइ ।
 मंजरी घर लुही चपी राइ बैलि सुबास,
 पाबर निवारी राइ चपौ देखत बडे उल्हास
 फूली बंबेली सरषडी मचकुंद सोभित मूल,
 धवर एक सुगंध जित कित बहुत फूले फूल ॥७५॥

शौचई

महा फूल फूले बहु भाइ । सोभा कछु कही नहि जाइ ॥
 कोकिल बोलत मधुरी भाष । सारो सूवा धगनति लाष ॥७६॥
 पांडुक धुमरी धवर चकोर । कहूँ क बोले विधि विच मोर ॥
 जो सब पंवी बरनत कहौ । कहत कछु एक सत न लहौ ॥७७॥
 घर तहाँ धुमर अरोवर भले । मानौँ उमति धाम ही बसे ।
 किनाँ धुमरु बहुत विमान । केत दास बुकमे धलिमान ॥७८॥
 चकवी चकवा केलि कराहि । जब कूकरी तहां फहराहि ॥
 जिनकी सोझि मधुरी वास । रहै निकट बहु जूय मरान ॥७९॥
 जलपर जीव रुई तहाँ जिते । तडे कला जो बरती जिते ॥
 हे कानोसि कानोसि विधि करी । मानौँ अंतपुरीसि विपरी ॥८०॥

परिद्वन्द्वन राजा

करै राज परिद्वन्द्वन नरेस । ताको बहुत भाहि अलक्षेस ॥
 वीरदमन लङ्करी ता वीर । कोटी भट यह सहस वीर ॥८१॥
 हय गय पाइक भ्रमन अपार । परिग्रह बहुत लहै को सार ॥
 सूर असंधि रहै दरबार । जे डाबै छत्तीस ह्वार ॥८२॥
 आग्या वेस दिसांतर दूरि । सुखस रह्यो मही मै भरि पूरि ॥
 पट्टण गढ नगर भूपाल । तिनकी भावै बहुत रसाळ ॥८३॥

कुन्वप्रभा रानी

एक छत्र सो आहि नरेदु । मानौ सोहं दुजौ इन्दु ॥
 कुदप्रभा ताकं अरधग । पाटप्रधानि गुणानि आसंग ॥८४॥
 सीलवंति सुंदरि अति सोइ । ता सम और त्रिया नहीं कोइ ॥
 जैसे रामचद्र के सीय । प्रगट पुरांन जनक की वीय ॥८५॥
 जैसे ससि के रोहणि नेह । जैसे कवला हरि के गेह ॥
 समय समये के यह सुष जिसौ । विलसति पियके संगति तिसौ ॥८६॥
 एक दिन सौरनि अवास । सोइ गई करि भोग विलास ॥
 तीनि जाम निसि बीती तबै । चौथी जाम आइयो अबै ॥८७॥
 भयो परफूलत ताको हियौ । अति उत्तम सुपनौ पैषियौ ।
 धवल महागिर कचन बर्न । कल्पवृक्ष देषियौ रवन ॥८८॥
 तबै तहां अंधकार मिटिगयो । पहु फाटी जब पगडी भयो ॥
 बहु वृषिवंत सयानी बरी । नाह पासि भावै सुन्दरी ॥८९॥
 सत्रदवन भयौ सुनि सुन्दरी नारि । सुपने की फल कहौ बिचारी ॥
 भूवर सुरतच धवल जु दिठ । ह्वै सो फल मन की इष्ट ॥९०॥
 बहुर्यौ जंपे राइ सुजांन । महा कुसल अरु बिने प्रवानं ॥
 सकल परिग्रह की सुषकार । ह्वै हँ सुन्दर तोहि कुवार ॥९१॥
 कचन बिर सम ह्वै हँ वीर । सोमस नुंभय होइ सरैर ॥
 कल्पवृक्ष सन हीइ उदार । दुषी बनहि की करै प्रतिपार ॥९२॥

बरमपुरंवर लीनहु जानि । बहुत कहा हौं कही बखानि ॥
 यह बुनि देखति वह सुख भए । निवसत बर्म करत दिन गए ॥१३॥
 स्वर्न बकी सुर चय करि विरयो । राखी बर्म काय संचरयो ॥
 मुह पीठर दीधीबोरवन । पुत्र जोहरा बकी उवर्न ॥१४॥

भीपाल का जन्म

धूल पयोद स्तन पय भरे । अरुता नैन देखिए हरे ।
 दसमास भयो गर्भ वरवान । अति उचित रति किरण समान ॥१५॥

जनम्यो नंदन कुलह पयास । दुर्जन जनको प्रवट्ठी पास ॥
 सज्जन जन मन भयो आनंद । लक्षणवत पद्मी कुलचंद ॥१६॥

ताको मुष देखियी नरेस । मनबंधित सुख भयो ससेस ॥
 कंसाल ताल बाजे अनिवार । वंजन वेद पहेँ कृतकार ॥१७॥

भयो उदार अति फूल्यी गात । घन बिलसत को कहँ कछ बात ॥
 हीन वीन जे दुष निधान । जिनन सुष व्यापँ दिनमान ॥१८॥

हय हाटक मुक्ता मरिधार । बहु धन दीयो मंगन हार ॥
 तब तिन जनम मुफल के चयी । बालक तीस दिवस को भयी ॥१९॥

रानी राधा भयो सुष बंग । बालक लयो उठाइ उखंग ॥
 कीजिन भवन पहौली जाइ । परस सहा मुनीसर प्राइ ॥२०॥

जाकी निधिकार ही हियो । मन सुष समल छांडि तिन दियो ।
 ताके कर्मनि पाएषो बाल । रूपवंत सो सहा मुनाइ ॥२१॥

मुनिवर आन बोखियो लीइ । धर्मवृद्धि दीनी मुस जोइ ॥
 नीके करि मुनिवर सो दीटा । हँ है कह सक ही को ईठ ॥२२॥

प्राप्यो मुनिवर सुषदातार । यहि नाम भीपाल कुपार ॥
 अब यामे गुन है अधिकार । करत सोहि लीइनी कार ॥२३॥

बहु बुनि निवसकार तब करयो । बहुत करि मन को दुष हरयो ॥
 जननी जनक लागियो जानु । करत कस को भयो अपानु ॥२४॥

श्रीपाल की शिक्षा

मुनिवर भास पठन सो गयो । ऊबकार प्रथम ही खयो ॥
 गण अक्षर भस्तह भयो लीन । तर्क वितर्क भयो कोक प्रवीन ॥१०५॥
 सामोत्रिक सीष्यी सुख सार । पढ्यो ग्रंथ व्याकरण कुमार ॥
 सबही विधि सो कला विनान सीष्यी बहु सो अर्थ पुरान ॥१०६॥
 कला बहैतरि प्रगट विनान । नाद करै गंधर्व समान ॥
 ह्य गय ब्राह्मन रथ विधि भाहि । गुन छतीस प्रसिद्ध ताहि ॥१०७॥
 जल तिरिबो सीष्यी तिहू-बडर । तर्क वितर्क पढ्यो अनिवार ॥
 जोतिग वैदक गुन सीष्यी । आगम अध्यातम पठि लियो ॥१०७॥
 हे प्रसिद्ध विद्या पद खिती । पढ्यो कुंवर मुनिवर पै तियो ॥
 जोवन करि आरुढ्यो जबै । राजा चित्त उल्हस्यो तबै ॥१०८॥
 महाबली श्रीपाल सुजान । रुपवंत अरु गुंनह निधान ॥
 अति प्रचंड कोटीमटु सोइ । जाके दरस अथ अथ होइ ॥१०९॥
 कवहू भूलि न भावै कूर । साहस धीर धरम को भूर ॥
 अंसी जुगति काल कछु भयो । राजतिलक श्रीपालह दयो ॥११०॥
 भयो निसल्ल को कहै बडाइ । आप काल बसि ह्यो राइ ॥
 हे हैकार कियो संसार । वीरदमन दुख कियो अपार ॥१११॥
 श्रीपाल राजा दुष लह्यो । हूदै विचारि सौच करि कह्यो ॥
 तीन लोक देख्यो अबगाहि, इहं मारण सबही को भाहि ॥११२॥
 यह विचारि अपने जिय धर्यो । मन को लोक दूरि सब कर्यो ॥
 कुंभप्रभा रानी समझाइ । देखि विचारि रीति यह भाइ ॥११३॥
 जो अथ माता कीजै सेग । तो सब हंसै देस मैं लोग ॥
 छत्री कुल जाको अथतार । श्रीपाल यो कहै कुमार ॥११४॥
 ताहि सोकें पूछिएन जानि । बहोत कहा हीं कहीं अथनि ॥
 मोले कछु होइगी जिवी । मांजी सेवा करिहीं तित्री ॥११५॥
 बाल सुनत सुष ताको भयो । हूदै सोक माता को भयो ॥
 करै राज श्रीपाल प्रचंड । लीयो सब राइन पैदंड ॥११६॥

ताकी सेव सातसे बीर । ते बहु सहै बूक की बीर ॥
ताकी कीरति कई असेस । कीने अति बीर सब देख ॥११७॥

धर्मरूप राजा अयोधरे । परबन परभीय लीक न करे ॥
दुर्जन सकल जीति अति कीए । महा बंड तिग वै से सिध ॥११८॥

जीवात के कुष्ट रोग होमा

कोठ अवर न ता अन्वै । एक सन प्रगदकी बनवने ॥
ऐसी भाति काल कसु पाइ । पूरब पाय उदै ययी साइ ॥११९॥

कुष्ट व्याधि । राजा की कई, हरे हरे सो बरषस गई ॥
भग सातसे है अति नेह तिनहु कोठ बिबापी देह ॥१२०॥

वहै राति पीछिकी सरीर । होइ दुगमा बहुद समीर ॥
कोठ उमारै वेडयी राइ । नासि अमूरी गरि गए पाइ ॥१२१॥

रक्त पीत जाके सन बीस । छारे बीर राइ के सीस ॥
अरे प्रसेदु छन सो गहै । देह दाब बंडारी रहै ॥१२२॥

स्याम दाब जाके असमान । सो राखै हि कबाने फल ॥
मरदन करै जाहि नही काम । बजुवा करवाने असमान ॥१२३॥

बरण फबानी घरे अजेज । मूपति की सु बिछाके लेख ॥
कंठ गुंम सोहै कुतखर । पूरज बरौ सुर अजसार ॥१२४॥

जाकी कहुं कहुं गर्थी सरीर । सो भर वंछी जाहि उबीर ॥
भीर दुरगधि भुष भावे जान । सो निरंद कीहै परबान ॥१२५॥

काक दाब जाके सन जाहि सोदल वै सन देखे जाहि ॥
वहै नाक धरमनी मनि करै । ते राजा के पानी जरे ॥१२६॥

जिनके नाव अए अति सार । ते अइक देखिए असार ॥
ते छिरतेह पाइते असे । ते निसान बजाने असे ॥१२७॥

जाके रक्त लेख विद्य सार । सो भर वैके जाहि कबाल ॥
जाके हरण मिय बहु करै । बहुसक जन ते नउहि करै ॥१२८॥

महा बंड दाब कृतकाने । अरपीनिअ अजाके अर ॥
जाके भापी सारे बीर । बीन बजाने तर मरीर ॥१२९॥

बरै षांषरै गाबै शीत । पातरि नाचै पुर विपरीति ॥
 भंसी तिहां, अचरतौ होइ । सबनि कोठ जाई, सब कोइ ॥१३०॥
 जो सब कोठ वरनि कैं कहौ । कहत कहत कछु अंत न सहौ ॥
 इह सामिग्री राज कराइ । समरी सभा जुहारै आय ॥१३१॥
 कबहूँ न निकरै सैल बजार । गैर महल कैं सभा मझार ॥
 सेवग साह जुहारै जिते । राजै देषि बिसुरै तितै ॥१३२॥
 जनमन कहै सबै सति भाउ । एह श्रीपाल महाबल राव ॥
 अरु यह दया धर्म परबोध । राजनीति पालै कृत जन ॥१३३॥
 ताकौ कहा कर्म यह भयो । कुष्ट रोग जाकैं तन तयो ॥
 कछु कर्म गति कहियेन जाइ, महानीच नीचनि की राइ ॥१३४॥
 उत्तिम कौ मध्यम गति करै । मध्यम कौ उत्तिम पद धरै ॥
 नृपस्त्यौ ते नहि कछु कहाइ । घर घर आपस में पिछताइ ॥१३५॥
 महा कोठ राजा कैं अंग । कोडी अंग सात सैं संग ॥
 बहु दुर्गं घता बडी अपार । फौलिगई सब नगर मझार ॥१३६॥
 जब बयारि बढै नहि घटै । तबै नाक सबही की फटै ॥
 बहुत बात को कहै बढाइ । कोऊ नगर न भोजन खाइ ॥१३७॥
 कोऊ बिनती सकैं न मांडि, बहुत लोग गए घर छांडि ॥
 घर घर एक बुलावो फिरयो । रयति लोग नगर को फिरयो ॥१३८॥
 जो आवैं सो कहौ विचारि । महा दुष बर्यौ सकैं सहारि ॥
 कोऊ कहै भजौ हरिकार । जैसे राजा लहै न सार ॥१३९॥
 कोऊ कहै अंसी न करेहु । आइस मांगि राइ पै लेहु ॥
 बनिये भाजै छांडि धनधाम । मरिहैं दुष देषि बेनाम ॥१४०॥
 आपस में सब मतो कराहि । आवो बीरदमन पै जाहि ॥
 जौ आइस देहै हम जोग । सोई मानि लेहु सब लोग ॥१४१॥
 मोती रतन धार भरि लए । सब मिलि बीरदमन पै गए ॥
 जाइ भेट ता आनै धरी । नाइ सीस सब बिनती करी ॥१४२॥
 महादुष सबको सदेह । स्वामी हमको आइस देहु ॥
 तेरै देश अंत कहूँ रहै । राजा सौ बयो निकसन कहै ॥१४३॥

जाके राज सुख ह्य भयो । दुख दरिद्र सब ही को भयो ॥
 जाके राज धर्म को भाव । सब कष्ट हूँ भोग विना ॥१४४॥
 जाके राज पाप को हानि । जाके हिरण्य क्या की भाति ॥
 जाके राज सुख सब भये । इन सब परिचय परे भये ॥१४५॥
 जाके राज सुखस हूँ भले । कबहुँ दुखने दुखन कैसे ॥
 जाके राज सब जन सुखी । जीव रूप कोऊ नहि दुषी ॥१४६॥
 कुष्ट रोग सब ताको भयो । नासा पाइ प्रभु गरि भयो ॥
 सब जे प्रभु सातसे वीर । तिनहु की गरि भयो सरीर ॥१४७॥
 तिनकी महा दुमंथा होइ । सब ही पुर में फैली सोइ ॥
 दिन हूँ च्यारि अन बिनि भए । कछुक भूए कछु भजि भए ॥१४८॥
 जो प्रैसी कहूँ सुनिए कान । तो भोजन नहि जाई खान ॥
 फँली बास नांक रुधि रही । सब ज्यौं ह्य तुमस्वी नहि कही ॥१४९॥
 महा कष्ट भूले सब पाउ । सब ही नगर भयो कह राउ ॥
 क्यों हूँ कोऊ धीर न धरं । स्वामी ह्य पे रह्यौ नहि परं ॥१५०॥

प्रजा का महत्त्व

सुनि मनमोहि बितवै राउ । सब यहू कीजे कहा उपाउ ॥
 जो घर में श्रीपाल रहाइ । तो मोते सब रइयति जाइ ॥१५२॥
 रइयति बिनि सोभ नहि रहै । रइयति बिनि को राजा कहै ॥
 बिन पंथनि है पंथी जिसी । हूँ रइयति बिनि दीसै तिसी ॥१५३॥
 बिन पाननि तरबर जो चाहि । रइयति बिन जो राजा समहि ॥
 बिन पानी है जिसी तलाव । रइयति बिन है तैसो राव ॥१५४॥
 जैसे है उद्यमन बिनु चंद । रइयति बिन है तिसो तरिहु ।
 बिन रुतनि जैसे वनु जानि । बिन रइयति भूपति त्यों मानि ॥१५५॥
 जैसे सबन भटा बिनु मेह । रइयति बिनि त्यों राजा एह ॥
 बिन हथ्यार ज्यौं सुभट अनूप । तैसो रइयति बिनि है भूप ॥१५६॥
 बार बार बिचारै राउ । सब तैसो कीजिय उपाउ ॥
 जैसे सब रइयति जो चाहै । श्रीपाल सब मगरु गहै ॥१५७॥
 रइयति की ह्य उपरि खंड । रइयति कसै हमारी बंध ॥
 जैसे कही सगने सोइ । राजा प्रजा बरबारी होइ ॥१५८॥

वीरदमन बहु बिलैं बनी राई रदकति राव उपचई ॥
 वीरदमन बंसी बनि साइ । मंत्री लीबे पासि बुवाइ ॥१५७॥
 तुम कही श्रीपाल सौं जाइ । बंसी बाके हिए समाइ ॥
 रदकति के मनकी दुख बिलौ । कहियो भाति भाति करि तिसी ॥१५८॥
 तब मंत्री नृपकी सिर नाइ । बिनबो श्रीपाल सौं जाइ ।
 कछू बात जो कर्म रही । मंत्री जाइ राइसौं कही ॥१५९॥
 सुनत बात धानधी राइ । मनसैं कछू न कियो कुभाइ ॥
 समयो देखि मंत्री छठि गयो । देस बटी को कारण बयो ॥१६०॥
 तीज पान कौं बीरा लयो । आयुन श्रीपाल कौ दयो ।
 वन उद्याननि साहस वीर । जाइ असुभ मुंजो बरवीर ॥१६१॥
 जौलौं कुष्ट व्याधि तुम अंग । जौलौं अंग सातसैं संग ॥
 इह असुभ मुंजो बर वीर बनमैं जाइ मठ देवल तीर ॥१६२॥
 जौलौं उदै कुवर तो पाप । तौलौं नहि कीजिए संताप ॥
 जौलौं शुभ न प्रसिद्धं भाइ । तौलौं घर मति आवैं राइ ॥१६३॥
 होइ पुंन्य प्रगटं तुम तनी । भाइ राज कीज्यो आपनी ॥
 जाकौ राज भार तुम देहु । सोई करैं घरैं जिय नेहु ॥१६४॥
 यह सुनि श्रीपाल उचर्यो । कछु कुभावन जिय में चर्यो ॥
 कर्म तनीं जान्यो सुभ भाव । मनमें बिचार कियो सब राइ ॥
 सुनहु तात भाष्यो ब्यौहार । मेरी ऊहो इहं बिचार ॥१६५॥
 मेरी बढी दुगं घा घनी । होत दूषी नगरी मो लनी ॥
 बिनती करि न सकै को भाइ । मेरें चित्त बीती इह भाइ ॥१६६॥
 मेरी दुःख विद्याप्यो हियो । मैं हूं बन ही कौ मनु कीयो ॥
 मली भई तुम निकसन कस्यो । या कौ सुख बहुव मैं लस्यो ॥१६७॥
 तुम सब लेहु राज कौ भार । परजा कीज्यो सकल प्रतिपार ॥
 न्याय नीति करि कीज्यो सुधी । सुपिनं कोई होइ न दुषी ॥१६८॥

सोरठा

जो उबरैये प्रांन, कुष्ट रोम जो नासि है ।
 तौहूं इंद्र समान, राज करौंगी आइकैं ॥१६९॥
 जो लख पूरब पाप भौ, उदै फिरयो साथ ॥
 तौ लख अयनीं मुंजि ही, राज तुम्हारें हाथ ॥१७०॥

इति श्रीपालचरित्रे महापुराणे भव्यसंय मंगलकरणं ॥
 बुधजन मन रंजन पातिम मंजन सिध्दचक्र विष दुषहरणं ॥१८३॥
 ि भुक्त सुषकारण, भवजल वारण, चोपई बंध परिमल्लङ्घनं ॥
 सातसं ग्रंम तार्क संय, श्रीपाल उद्यान भ्रमे ॥१८४॥

द्वितीय सर्ग

चौपई

श्रीपाल उद्यान में रहै । कुण्ट व्याधि व्यापै दुख सहै ॥
 इतनी कथा रही इह ठौर । अतरकथा सुनी अब और ॥१८५॥
 नीकै करि ही करी बषांन । पंडित भव्य सुनी दै काल ॥
 देस मालबी सो सुषबांम । मध्य लोक मै प्रगट्मी नाम ॥१८६॥

उज्जयिनी बर्षान

दु षनि जिह ठां बासुर रैन । सुबस बसै तहा नगर उजैन ॥
 नी कोसकी बसै चकराइ । बारह कोसो बसै लम्बाई ॥१८७॥
 श्रीनिवास महाजन जहा । चौथी काल प्रवत्तं तहा ॥
 कनय रयण मरिण मंडप जरी । अतिरवनीक मनोहर खरी ॥१८८॥

पुहपाल राजा

राजकरं पुहपाल नरेस । तार्क परिगह बहुत भ्रसेस ॥
 जोषा बहुत सेवता रहै । रण संग्राम जुवै निरबहै ॥१८९॥
 एक छत्र सो राज कराइ । ताकी कीरति कहीय न जाइ ॥
 ज्यो माता सुत उपरि भाउ । त्यों परिजा प्रतिपालै राउ ॥१९०॥
 तार्क कामिनि बहुतक नेह । अति गुनवंत रूपकी रेह ॥
 जो सब नाम नरनि कै कहौ । कहत कथा कछु अंत न लहौ ॥१९१॥

पट्टराजी सुन्दरी

पाट परधान नाम सुन्दरी । मनी आइ रम्भा प्रीतरी ॥
 अति सरूप देवंगनां कही । कामदेव ज्यो रतिपति अही ॥१९२॥

संकर के ज्यो पारवती रती । अति सरूप लीता सभ कती ॥
ताके बरन सुत हं रही । रूपवंत हं योनि सही ॥१६३॥

दो कन्याओं का जन्म —

दोऊ अति पुनग्य बीतरी । अति लाबनि बिराषी बरी ॥
प्रथम कुंवरि सुरसुन्दरि बाहि । बहुत रूप सोनित है बाहि ॥१६४॥
परि सिवधर्म बसै ता चित । कुमुद कुवेव सुध्यावै नित ॥
कछु बिबेक ताहि नही होइ । इकै संसारह सुव सोइ ॥१६५॥

मैनासुन्दरी

लघु कन्या मैना सुन्दरी । रूपवंत अरु सब गुन भरी ॥
अंग अंग की सोभा जिसी । बडे कथा जो बरनी सिखी ॥१६६॥
अरु अति जैनधर्म परबीन । सीलवंत रत्नप्रय लीन ॥
निर्मल जाकी हिरदो जोइ । कपट बचन बोले नहि सोइ ॥१६७॥
बहुत बिबेक चित्त ता रहे । मिथ्या बचन बूलि लही कही ॥
सब सखियन में सोझै करी । ज्यो खरिता मोहै सुरसरी ॥१६८॥
मधुर बचन बोले बिहसाइ । सब कुटव राजे सुबपाइ ॥
आए बाए अिय अकी भरे । रहसि खिलाइ लगावै परे ॥१६९॥
और बहुत को कहे बचन । तिहकी उपज्यो बहुत सबानु ॥
आपन मंत्री विचारै राइ । अरु तिन लीनी प्रिया कुलाइ ॥२००॥
जुगल रवानी लीके एहु । देवत नैलनि उपजे नेहु ॥
मेरे बिब इह कही विचारि । इने पढ़ावै सुनि बरनारि ॥२०१॥
सुनी राइ हन भांवते जहां । दोऊ कुंवरि पडाकी तहां ॥
तिनै बिहसि करि पूछै राउ । दुखी कही धारणी भाउ ॥२०२॥
जो गुर भावहि तुमहि सुबांन । तापै विचारि यही पुरांन ॥
सुरसुन्दरी कही सुनि तात । सखी कही भावणी भात ॥२०३॥

सुरसुन्दरी का विवाहबन्धन

दिन दिन बूझि होइ गुन बडी । अब हं विज सिखपुर में पडी ॥
राजा कनी कनी बरनई । कुंवरि उठाइ उख गइ कही ॥२०४॥

शिवगुर तब धा लियो कुलाय । नाउ कएँ सु कने कहै ब्रह्मज ॥
 बौल्यो निकट कहै तब राज । बिद्या सुरसुन्दरी पढाउ ॥२०५॥
 जितनी होइ कला अरु न्यान । सब सिपाइ ज्यों अरुषेँ पुरैनि ॥
 भली भली पाडे उच्चरी । मी परि कृपा गुसाई करी ॥२०६॥
 जे शीपे सुख हो है राइ । यहि पढाउ सबनिहु ताइ ॥
 सुनी बात तब तुस्यो राइ । कछुक ताको कियो पसाय ॥२०७॥
 तब तिह नूपहि द्रव प्रसीस । जुग जुग जीवो कोरि बरीस ॥
 महिमंडल मै प्रगटौ मान । राज तेज बढौ दिनमान ॥२०८॥

सोरठा

जे को सखि अरु मान, जल बिर बेरु महि उपरं ॥
 तो लगु इन्द्र समान, मगल होहि नरेस घर ॥२०९॥

श्रीपई

विप्र गयो धरि कुंवरि लिवाई । लौग्यो ताहि पढाबने जाइ ॥
 मैनासुन्दरि स्यो नृप कहे । पुत्री कहा तोहि मैनु रहै ॥२१०॥

मैनासुन्दरी की शिक्षा

मुनी तात ही कही सुभाइ । पढिही जिन चैतनालय जाइ ॥
 दक्षति सुख तब भयो अरुंग । पुत्री लई उठरि उखलि ॥२११॥
 रानी राउ श्रीर जनअई । पुत्री सँ देवसँ भई ॥
 पूजा अष्ट प्रकोरी छई । जैसी चरन भुरेनि बरनई ॥२१२॥
 जल गवाअल सुख शून्य । नैहिवि शीमक अरु बूम ॥
 नाना विष कल करे केनइ । बिबौ अरुच मन बच अरु काय ॥२१३॥
 पुनि तिह छै दक्षिणी भुनिसे । जयं जयं तब उबरै नरिद ॥
 वैस्वी सुखमाला पकसैसै ॥ भवसमुद्र तिरन जहाज ॥२१४॥
 ध्यावै चैतल गुण जु अषंड । तीन गुपति पालन सुखकंड ॥
 अव्य कुमुद परफूलण बंध । दरसत ताहि बढै आनन्द ॥२१५॥
 मिथ्या तिमर विनासन मान । जिन निजुकं छाडयो भव मान ॥
 सनु मित्र जाके इकसारं । मने के जिह सब तजे विकारं ॥२१६॥

बाईस परीसा बहुत समय । केहरि हसन पंच मनु मय ॥
 तीन प्रदक्षिणा बई सनीप । नमस्कार सब कियो महीप ॥२१७॥
 हरबन्त मनमाहि अपार । बदे चरन कबल नरपार ॥
 वपति पुत्री मैनासुन्दरी । बंठी कहां बुझ जग कसि ॥२१८॥
 जपे राउ हरष प्रति मात । स्वामी सुनो कही एक बात ॥
 लहु पुत्री मैनासुन्दरी । अपने बिय एह इच्छा करी ॥२१९॥
 पुत्री कहे जोरि ई हाथ । पिछादान देहु जगनाथ ॥
 नरपति कही सुनी सुनि बाम्र । इवा कही ता उपरि नाम ॥२२०॥
 अजिया एक सील की बानि । वया बर्म बिह लीयो बानि ॥
 मन बच काय सुधता बित्त । जानै एक सब प्रथ बित्त ॥२२१॥
 रतनत्रय वत पालन आहि । मुनिवर पुत्ति समर्पी ताहि ॥
 रानी राव हरष प्रति भए । नमस्कार करि घर तब भए ॥२२२॥
 मैनासुन्दरि के मन चाउ । अजिया को ता उपरि भाउ ॥
 प्रथम पढावो बीबकार । दुःख हरन विमुक्त नै सार ॥२२३॥
 पठिया बारह मत्त बिसेस । जातै उपरै बुधि असेस ॥
 पठि लीनो नीकै करि चाहि । लघु दीरमजे अक्षर आहि ॥२२४॥
 जानी लोयह बित्त बिबित्त । पठिया चरित पुरान पवित्त ॥
 गन अर अगल भिखेई जानि । काव्य अनेक सुकही बचानि ॥२२५॥
 जोतिष पद्यो इसी परबानि । आधम अर अध्यात्म बानि ॥
 सीष्यो तिन संवीत पुरान । नाटिक साटिक करै बचानि ॥२२६॥
 तक छद पुत्री पठि कियो । छह हरछत्र तिन उत्तर दियो ॥
 भाषा सोबु प्रठारह पढी । विद्या करि तिन ही तिन बढी ॥२२७॥
 कला बिनान बिबछन बई । पुनि मुनिवरह पढावन बई ॥
 दारि ध्यान अशुबत नु पंच । सौसह कारन आवना संच ॥२२८॥
 रत्नकव विधि कुनह लिखनक । यह लखिन को बरन प्रकान ॥
 जो कहु हावनाम नै कही । सो विद्या सब सुन्दरि लही ॥२२९॥

बोधा

मुनिवर नै सब बुझ पायी, कियो बुझरि आकर ॥
 सब रूप काय विद्वान हूँ, बान्यो पाप निकर ॥२३०॥

मन में पुत्रो कियौ प्रानन्द । जान्यौ तिहूँ पाप निकन्द ॥
श्रीजिन पूजा करि मनु लाइ । मुनिवर के बंदे तिन पाइ ॥२३१॥

दोनों का अध्ययन समाप्त कर आना

निज जननी हू बैठी जहां । सुरसुन्दरि पढ़ती तहां ॥
प्रथम पुत्री वह पढ़ै पुरान । सामुद्रिक व्याकरण सुजान २३२॥
कोक कला नाटक गुन जिते । पढ़े कुंवरि सुरसुन्दरि तिते ॥
पढ़ि मुनि, महा विचछन भई । तब पांडेस्यौ गोहनि लई ॥२३३॥
राजा पासि पढ़ंतो जाइ । पुत्री देखि राउ बिहसाइ ॥
तबहि विप्र बोल्यौ करि सेव । मेरी बात सुनो हौ देव ॥२३४॥
पुत्री के मन को तम गयो । विद्या दात याहि मैं दयो ॥
और कहा हूँ कहूँ बषानि । करी परीक्षा आपुन जानि ॥२३५॥
तबै राउ अति हृषित भयो । बहुत दान पांडे कौ दयो ॥
दैं असीस सिबधुष धरि गयो । पुत्री सभा देखि सुखभयो ॥२३६॥
जो जो बात पयास कोइ । सो सो निरभास कहि सोइ ॥
चपल चित्त जोवन श्रीलही । राजा पासि बात तिन कही ॥२३७॥
अरध सिधासन जाइ बईट्ट । दह दिशि जीबं चंचल दीट्ट ॥
राजा कही समस्या तेन । लहिर्य कहा कुंवरि पुन एन ॥२३८॥

दोहा

पुन्यह लहिए एउ, विद्या जोवन रूप धन ॥
धरि परियन कैं नेह, मनबंछित सुष पाइये ॥२३९॥

बोचई

तब नृप रह्यो मुहां मुंह चाहि । नीके करि मन करब्यौ ताहि ॥
मांगि पुत्री वह जो मन बसै । देखत ताहि चित्त उल्लसै ॥२४०॥

सुरसुन्दरी का विवाह

सुनो तात हौं भाषी तिसी । मेरे मन में बसत तिसी ।
कौसम्बीपुर की नृप जान । बहुत सैन है तुमै सजान ॥२४१॥

ता नन्दन हरिबाहन बरी । कबहूँ रूप मोही सुन्दरी ॥
नीकी वष सो भावी तात । सांची कही आपनी बात ॥२४२॥
सुनि करि राख बिचारै हियै । बाही जौय बनै बा द्विजै ॥
बोल्खी विप्र राइ धौं भनी । शुभ दिन जोग महूरत भनी ॥२४३॥
ताकी बिधि सौं कियो विवाह । सबहूँ जन मन भयो उछाह ॥
उनहूँ सुख मन भयो अनन्त । कौसम्बीपुर गए सुरन्त ॥२४४॥

मैनासुन्दरी का बाविस आना

मैना सुंदरि पहुँती तहां । नंदीसुर की प्रतिमा जहां ॥
पूजा करी सुख मनु कियो । भरि बेला गंधोदिक लियो ॥२४५॥
कछु न चित्त विचारी धीर । यहै तहा राजा जिह डीर ॥
भाव भाव राजा उच्छरयो । गंधोदिक लै आर्य धरयो ॥२४६॥
हाथ हि हाथ अठोत्तर भरे । भाइ जिनेसुर कै सिर डरे ॥
इसी गंधोदिक है अनूप । सुर नर नाम लियो करि रूप ॥२४७॥
कहे राउ कहि पुनि बिचारि । यह कहि आहिसु कहहि कुवारि ॥
मैना सुंदरि उचरै बात । गंधोदिक जिनवर को तात ॥२४८॥
होइ दुर्गंध देह जादमें । सुंदर दिव्य होइ जा लगै ॥
नैन निरंधह नर औतार । नैक लगै देखे संसार ॥२४९॥
नैक लगै अरि कर्म निकंद । जाकी इच्छ करत है इंद ॥
जनम भयो तीरथंकर जबै । साइर तै सुर लाए तबै ॥२५०॥
हाथ हि हाथ अठोत्तर भरे । भाइ जिनेसुर कै सिर डरे ॥
सुर अरु असुर इंदु हरसियो । बारंबार अंग परसियो ॥२५१॥
तात सुनहि गंधोदिक सोइ । करे बंदना परमगति होइ ॥
तब भूपति लै बंदना करी । धरमलीन पुत्री है सरी ॥२५२॥
राजा हषित हूवो जांभ । अर्ध सिंघासन बैठि ताम ॥
मां सिर खुं बि पुच्छि करि नेह । पुत्री कहो परीकषा एह ॥२५३॥
कीजे पुंन्य चित्त प्राइयै । तातै कहां अथधि पाइयै ॥
सुनि सुनि तात परमाद्यौं तोहि । जो नीकै करि पुखी, मोहि ॥२५४॥

श्रीहृ

जिन सासन निरगंध नुब, प्रतहूँ विम्वेल देहु ॥
पुत्रि माथ सब सुख करन, कुबह लगे एहु ॥२५५॥

चौपई

सुनि निरंद अए लोचन भीन । कहुँ साधु पुत्री परबीन ॥
कुंति तिन भाष्यी मन अविबेक । मलिन बचन तिन बौख्यी एक ॥२५५॥

दोहा

अति सुन्दर गुनवंत अरु, जो को भावै तोहि ।
आज सु उत्तर समझिकै दीजे पुत्री मोहि ॥२५६॥

चौपई

इन नरनाह मांहि जो कोइ । मन भायो वरु मागहि सोइ ॥
ताहि समझौ जोगु ज आहि । सूबी सैन देऊ बहु ताहि ॥२५७॥
तात बचन जब सुनियो काम । तब चित्त मांहि गए औसांन ।
मनमें भयो बहुत अनुराज । मानौ भयो बख्त कौ पाउ ॥२५८॥
ऐसी बोल सन्तु नही कही । बहुं दिसी जोवै चुप करि रहै ।
बार बार सो लेइ उसास । बोलि न सकै राइ के त्रास ॥२५९॥
राइ बचन मन अर्यो दिठाइ । तापै कछु कह्यो नहीं जाइ ॥
मनमें दुष्ट दुष्ट उच्चरयो । कहा पाप इन जिय में अरयो ॥२६०॥
अति अविबेक लीन सो जानि । कुल मारण तिह तज्यो प्रबानि ॥
अलिषो बोल बयो मतिहीन । मूरिख कछु लाज नाहि कीन ॥२६१॥
बहुत बात को करै बढाइ । याकौ है सब नीध सुभाउ ॥
जाकै नही कुल मारण देव । जानै नही दह लखिन भेव ॥२६२॥

मैना सुन्दरी की बसा

जाकै गुर निरपंथ न कोइ । ताहि विबेक कहां ते होइ ॥
यह पुत्री बन में किंतई । नीची दिफ्टी न ऊँची अई ॥२६३॥
रही मुरझि मैनासुंदरी । अति विचित्र सबही गुन भरी ॥
तातहि उत्तर कछु नहीं दियो । पिछुन बात तै कापी हियो ॥२६४॥
आपै नैक न बात जिआरि । संसै यह मैं अरि कुआरि ॥
अरती धीरे दुखितो अई । कुंति वर संसो पृच्छत अई ॥२६५॥

सुनि पुनि पर उदार भक्ति । कहां चित्त चितई अकारि ॥
 जैसे सुरसुंदरि बंझियौ । मांयो नाह व्याह करि कियो ॥२६६॥
 त्यों तू काहु राजाहि जानि । परनि कुंदरि अपने सुखगानि ॥
 बार बार तात भौ भनै । पुत्री विरकारे अखयनै ॥२६७॥
 चितै सुख अजायबी खड । अदि निष्टरुदु करिष अमिकाठ ॥
 जिली निराकुस मत बयदु । करे भाप भायो मतिमंडु ॥२६८॥
 जैसे बालक होय अयांन । जो सो बोसै कछु न जान ॥
 जैसे अंधु बहुत दुख दहै । चहुँ दिसि जोबै बंध न लहै ॥२६९॥
 त्यों नृप भाष दई छिटकावह । जौब हचतै सी कहत बनाइ ॥
 निज गुर बचन निपोष्यौ अरबै । संतोषी परिजन सब तबै ॥२७०॥
 इह सुंदरि चितई सुजांन । सील घुरंवर मुनह निधान ॥
 जय तात सुनई करि नेहु । अजुगल बात कही सुम हहु ॥२७१॥
 जिनसूत्रनि मुनिवर तहि भरीौ सुनहु । तात सबही अवनगी ॥
 वर सुंदरि जौ होइ कुलीन । लोक भाष नहि तजै प्रबीन ॥२७२॥
 अयजस नाम आहि जो वात । सोई तुम भविषत ही तात ॥
 लोक विरम आहि अह कम्पु । मन वाञ्छित बर रहै न कम्पु ॥२७३॥
 मन भायो जो करे विवाह । लोक सुहोती हस्य उछाह ॥
 कछु रहै नहि कुल की रीति । सब को भावै महा अनीति ॥२७४॥
 अरु बितही तित होइ विचार कोठ न धरै सील की पार ॥
 यहै फेर सब कोऊ न करे । अस्तु त बंझि बरहि जो बरे ॥२७५॥
 और कहां नो सुनि हो राह । तो सी कही कया समकाइ ॥
 श्री घादीश्वर प्रथम जिनहु । तकरे चारै भाप निकनु ॥२७६॥
 अरु पुराननि मैं बरगए । कछु सुकछु हँ राजा अए ॥
 तिनक भई सुभद्रा दोइ । बंद सुनख जानौ सोइ ॥२७७॥
 जोअबतत कई ते अजल । अयजस अरु मुनह कितारै ॥
 तिनह नै न बंझि बरकिबै । रही अदा कुल रीति कु लियै ॥२७८॥
 तात कुषि उरग्यौ जो बई । आह सुखल राजकी परनई ॥
 ते भई लीन जिनेश्वर पाइ । बहुत बात को कहे बकाइ ॥२७९॥
 सो मारग प्रदह्यौ सुनि बात । मोषे आदये अरु न खत ॥
 पुनि ब्रह्मी सुंदरि हँ मुनि । अदिहि कई सबे मुन सुनि ॥२८०॥

माता पिता नहि दीनी कासु । तिन सब छांड्यो भोग बिलासु ॥
 मन में साज भई अतिगाह । दुहूनि छांड्यो छिन में व्याह ॥२८१॥
 भई अजिका ते सुभ चित्त । जानै एक सनु भर मित्र ॥
 भेदाभेद कछु नहि जानि । जानै सब जिन धर्म बषानि ॥२८२॥
 लोक बिरुद्ध व्याह की लाज । भव सुष छांडि दीयो सुष काज ॥
 घर सुनि उत्तर कही विचारि । जौ बंछी निज नैन निहारि ॥२८३॥
 तुमही देखी सुरसुंदरी । हीन बुधि तिन मनमें धरी ॥
 ताहि दोष नहि दीजे राइ । यह कारन सब गुरू पसाइ ॥२८४॥
 जैसे जीव विचक्षण जानि । है त्रैलोक्य माहि परधान ॥
 पोटें सग करमके रहै । निस वासुर महादुष सहै ॥२८५॥

कर्मों की विचित्रता

छिन में नीच कहावें सोइ । छिन ही में उत्तिम पद होइ ॥
 छिन ही में दुष पावें धनी । छिन ही में सुष हूँ तुम सुनी ॥२८६॥
 छिन ही में सु कहावें राइ । छिन ही में महारंक हूँ जाइ ॥
 छिन ही मूढ महा भय भरें । छिन ही में संका पर हरें ॥२८७॥
 छिन ही में सौ दुर्गति जाइ । छिन में स्वर्ग पहुंचें धाइ ॥
 जितने दुष पावें जड एहु । तितनी कहा कहीं धरि नेहु ॥२८८॥
 वे कछु जीवें खौरिन जानि । कर्म कुसंगति कौ फलु मानि ॥
 सुरसुंदरी कुमति त्यों लही । कुगुरू पडाई तैसी कही ॥२८९॥
 भर सुनि राइ वचन दै कान । जातै सुजस होइ परबान ॥
 माइ वाप जाइ गुन सार । कुल उत्तिम जाको धीतार ॥२९०॥
 जोवनवति देखें राउ । छिन छिन मन चितवें सुभाउ ॥
 मन बंछ्यो वर मांगे सोइ । सीलवत नहि गनिका होइ ॥२९१॥
 वाप विचारै जाको चित्त । पुत्री कौ जब देखें नित्त ॥
 निर्मे होउ यह दीजे कास । कोबर जोय सुकलह पयास ॥२९२॥
 यह चितै परिजन जु महत । सकल बोल कीजे सुधवंत ॥
 उत्तिम कुल सोभिजे प्रवानु । विद्यावंतर आपु सवान ॥२९३॥
 सुज्जन जन सब मंगल करै । होइ व्याह दो कुल उधरै ॥
 कन्या दान भार तब लेइ । सौबी तूठि बहुत करि देइ ॥२९४॥

निचली करे सोचि जो बात । जब कुट्टे सोचि जो बात ॥
 भावें सब होइ मनिहीन । भावें होइ कमा परवीन ॥२६५॥
 भावें कुम्भे होइ सनु बुधै । भावें मूत्र होइ पोषुदौ ॥
 भावें रोषी ज्ञापत पीर । भावें कुटी होइ शरीर ॥२६६॥
 भावें नाचक होइ अवांन । भावें होइ सर्वे नून जांन ॥
 भावें ब्रह्म होइ विकराव । भावें जोषी होइ गवाव ॥२६७॥
 सब परिचय सोचि आ बाह । सबे कुलीनु तात की बाह ॥
 यह कुल कर्म पुनी पित जाह । अह विअनु वै सब छिटकाइ ॥२६८॥

कर्म की पहिचान

बलि ही कुल मारग सुनि तात । हूँ हे कर्म लिखी जो बात ॥
 कर्म ही तें होइ हे राह । कर्महि तें बु रंक होइ जाह ॥२६९॥
 कर्महि तें जत होइ अमंग । कर्महि तें नर बडे कर्मक ॥
 होइ कर्म तें प्राणी भाव । कर्म हि तें पार्वे सुख वाव ॥३००॥
 कर्महि तें बिब होइ सुहाय । कर्म रूप होइ प्रगटे भाव ॥
 अह प्रति सुख कर्म तें लोइ । दुषी दुहाअनि करम ते होइ ॥३०१॥
 कर्म हि तें बु होइ वन बंग । कर्मतें होइ सोभित अंग ॥
 यह परपंच कर्म को सर्व । कोऊ और करी अक्ति नर्व ॥३०२॥
 विचनो औ कछु लिख्यो विलार । अह अह अयुष अंक अज सर ॥
 बेसो निमित्त जासको होइ । ताहि भिटाइ सकै नहि कोइ ॥३०३॥
 अमर अमर अह नख अंघर्वे । भासुर सुर सुर रवि सति सर्वे ॥
 जो ए सख लिखी करे सहाव । कर्मरेव तहि भिटि है काव ॥३०४॥
 सुरभ ते पश्चिम रवि ऊर्वे । नर फूनि मेह बुलिका कुर्वे ॥
 सायर हू वै अरि बहाइ । भावी उऊ न भेटौ जाइ ॥३०५॥
 बबनी बु पहि अंकक पहिहरे । प्राली काज हू वै ऊमरे ॥
 बासुर तें बु निहा कुनि होइ । जाषी लिखी न भेटे कोइ ॥३०६॥

विद्या का अन्तर

जैसे कर्म सब अह राह । सब कोअर कर्मो अजुराह ॥
 बुनि बुनि बुनी सबी अमान । कर्म कर्म तेंरी विजान ॥३०७॥

पंचामृत साल्यो दिन होई । छहरस भोजन ह्य वं सोई ॥
 ते सुष पुत्री भुगतन लेई । तू ती कहै कर्म मो देई ॥३०८॥
 भी कौ आदि बहुत सदेह । तेरे गुरनि पढायौ येह ॥

मैना का प्रत्युत्तर

जब नृप निन्दा गुरु की करी । तब बोली मैनासुंदरी ॥३०९॥
 सुनि अविषेकी तात बिचारि । तो सौं कहीं कथा किसतारी ॥
 मैं सुभ कर्म कमायौ सार । तेरे घरि पायौ अवतार ॥३१०॥
 तातै भोजन भुगतो सुख । पावती नहीं नैकहू दुख ॥
 कियो हौं तो अशुभ मैं कर्म । नीच घरां ती लेती जनम ॥३११॥
 तहां दुख लहती अघिकाइ । सुष तू तथा न देती भाइ ॥
 कहा अमान होइ नर नाथ । शुभ अरु अशुभ कर्म कै ह्यथ ॥३१२॥
 तुमती रूपबंत को देहु । अरु श्री तात सर्व गुनगेहु ॥
 अरु जो होइ महा जड़ मूर । कालहिं कोडि कातर कूर ॥३१३॥
 यह तुम सुनी बात सब ठौर । विध्वानि करै और की और ॥
 माता पिता बहुत हित करै । भावी लिपी न टारी टरै ॥३१४॥

पिता द्वारा रोष प्रकट करना

पुत्री बचन सुनें सब सार । राजहिं रिसि उपजी अघिकार ॥
 मन मैं धरत दुष्ट मति गयो । मुंह करि करि कछु न उत्तर दयो ॥३१५॥
 कवि परमल्ल कहै सत भाउ । मनमें इहै चितयो राउ ॥
 अथ हूं निज कं परषो तिसी । देषीं याहि कर्म फल किसी ॥३१६॥
 जाको कियो बहुत धिठाउ । देषीं तास करम को सहाउ ॥
 जीयमें इसो पिसुनता घरी । मुहं कहि घनि मैना सुंदरी ॥३१७॥

मैना की सुन्दरता

पुत्री उठि चाली निजगेह । करौ पारती वीनी देह ॥
 तात बचन सुनि उठी तुरंत । परफुल्लित मनते बिहसंत ॥३१८॥
 पंथ साहिं सो निकसी जाइ । पुरजन रहे देखिदि कुवाइ ॥
 शोष रहै मुहांमुह चाहिं । यह थीं कुंवरि कौन की चाहिं ॥३१९॥

काहूती भीसी बरनई । सुरकन्या सुरगती गई ॥
 कोऊ कहै नहीं यह कोइ । यह तो वाय सुता भूनि होइ ॥३२०॥
 काहू कहू इम भीसी भनी । यह पुनी विमना भर लगी ॥
 काहू तो यह उपमा दीय । काहू बाहि जस की बीच ॥३२१॥
 कोऊ कहै को देवी बाहि । पटनर कई न सकै ह्य ताहि ॥
 षोडस बरस बढ़ी परवान । कोऊ रूप न ताहि समान ॥३२२॥
 मैना को जस बरनै हँद । ताको मुख सोही मकरंद ॥
 लोचन भवन भवन प्रति बनें । ज्यौं चक्रित मृग स्थावज तने ॥३२३॥
 करै कटाक्ष दृष्टि बनुं बान । अकुटि कुटिल मनमथ कमान ॥
 मायै मंग विराजै बार । प्रति कोमल प्रति स्थाव सुदार ॥३२४॥
 अवननि कुंडल राजत कंब । भागीं बात कहै हँ चंद ॥
 नीकी सोमित अघर भ्रमंग । बिह्वम उपम विराजहि भंग ॥३२५॥
 ऊंची नाक इसी उनहारि । जानी कंचनि धरी सवारि ॥
 दसन पंति दीसं चमकंति । कुंदली दाडिम कीसी अति ॥३२६॥
 छोटी प्रीव मुक्ति की मार । ताकी जोति जसै अचिकार ॥
 उर उपरि हँ सुबनित सुंभ । मानौ मैने के कंचन कुंभ ॥३२७॥
 मृगपति लंक मध्य भलीन । त्रिबलि तरंग सोज करि लीन ॥
 कोमल पान कमलता बाल । काहु जुगल सोभै सुमिसाल ॥३२८॥
 जंघ जुगल कदली के तूल । कोमल पवा गौर बनफूल ॥
 चंपक वनें सुष्य तन जानि । प्रति कोमल को कही कवनि ॥३२९॥
 प्रति सुगंध तामु की सरीर । आवै लपटै बहुल क्षमीर ॥
 प्रति कुल संभ्रमै दिन रनि । चित्तवत चित्तचीरे बह्वनमैनि ॥३३०॥
 महि पर बंध भंद पग बरे । देपत मनमथ को मन हरे ॥
 हस बाल सो बहुती तहाँ । निज घर जननी जोवति बहाँ ॥३३१॥
 दिव्य वस्त्र पहरे सति सची । तब जिनवर की तूजा रची ॥
 अष्ट प्रकारी जिय धरि रेह । मद बच काइ खाकि संदेह ॥३३२॥
 द्वारापेवन अंग तित कियी । मुनि फौज न तहाँ देविणी ॥
 नाबना भाई भूजी भास । फुनि बीजव की नद भापास ॥३३३॥
 स्मल्यौवच अह रस सुभजित । पारनै रस तज्यौ पवित ॥
 प्रति सुंदर मुख सोधि जो लई । तत्रकच सी उठि ठाकी गई ॥३३४॥
 भौसं सुष मुंके बहु बाल । सीलजत अरु सुवह विमाल ॥
 गायलै गीता कंद कविक । परत परत भावै सु भवैक ॥३३५॥

मनवाञ्छित सुख लहे प्रबोन । रहे अति मुनिवर पद सीन ॥
कबहु न बात पाप की कहे । निस दिन दया करे मैं रहे
कबहु बात कलि नधि कहे । सांघी होई सुहिर दै बहे ॥ ॥३३६॥

बोहा

सुख जननी परियन सखल, श्री जिनवर सुमरत ॥
श्रीसे जीते बहुल सीन, निजमुह में निवसत ॥३३७॥
इति श्रीपाल चरिते महापुराणे भव्य संघ मंगल करणं ।
बुध छन मन रंजन पतित गन गंजन सिद्ध चक्र विधि दुषहरणं ।
निम्बन सुख कारण अब जल तारण । चौपई वंघ परिमल्ल कृतं ॥३३८॥

चौपई

राजा की श्रीपाल से भेंट

मैंना सुंदरी प्रति उत्तर दियो । तारी तात निर्भंठ्यौ गयो ॥
राजा के मन अपज्यौ कोह । जयै होनहार सो होह ॥ १॥
एक दिन सब सैन पलानि । हय मय रथ को कहे बषानि ॥
नगर निकास भेल्यौ जाइ । मंत्री लीने संघ लगाइ ॥ २॥
बहुर्यो कथा गई तिह बान । श्रीपाल जहां बन उषान ॥
नासा पाइ गए हरि हाथ । ऐसे संघ सातसै ली साथ ॥ ३॥
भ्रमत भ्रमत सो पहुँती तहां । राजा वर चित्त ही जहां ॥
देखि राज उठि ठाढौ भयो । मंजिन के मन बोझौ गयो ॥ ४॥
देपत मंत्री सबनि भई साज । यह कोठि भेट्यौ किह कांज ॥
सगरे रहे मुह मुंह जाइ । कोऊ पूछि सकै नहि राइ ॥ ५॥
तब तिह ठा बोल्यो यौ राउ । मंत्री सुनी कह्यो सत भाउ ॥
या परि भेरी है अति चित्त । यह भेरी प्रीतम है मित्त ॥ ६॥
याकी दिग तै नेक न टरो । या परि नेह निरंतर घट्यौ ॥
मंत्री कहै सुनी हो राई । गर्यो सरीर हाथ अरु पाइ ॥ ७॥
रही दुरमंथा जित तित प्रीरि । याहि देखिए अजिए दूरि ॥
तास्यो मिले कहा बारि नेहु । याको आहै बडौ सखिहु ॥ ८॥
यह सुजिकै रूपति मों भन । मंत्री मैं सुख मूरपि मन ॥
सुख की कही न समझत बात । क्यों जानौ को है उल तात ॥ ९॥

मा तेरे जाने की कहि कोह । हीने करकी चित्त कोह ॥
 सोली कथा कहत ते रही । कवि बरबलन प्रमति करि कहि ॥१०॥
 मुल की कहि न समझत बात । क्यों जानैये मन की बात ॥
 यह कहि तहां पहुंची राउ । पुनि पुनि प्रबलोके करि भाउ ॥११॥
 पूछे तापहु नृपाल नरेस । को तू चाहि बहुत अलबेस ॥
 हुँदत महि कोली तब अंग । बहुत अरिगह तेरे संग ॥१२॥
 क्यों इह नगर कियो परनाम । सांची कहो धाय धीधार ॥
 तब धीपाल कियो परनाम । हम सुनि आए तेरी नाम ॥१३॥
 दयानंत सब कोउ कहै । अति उदावता तो जिय रहै ॥
 ताते सुनि आये हम राह । बहुत कहा हम कहै बनाय ॥१४॥
 पुर गिरवर सरवर नार्यत । अब हम पहुंचे चाह सुरंत ॥
 चिता रोष सोम सब गयो । तुम्हरी नृप जब दरसन भयो १५॥
 यह सुनि नृप फूली सब नात । सुनि कुण्ठी नृप बेरी बात ॥
 मंगि मंगि अबि तूठी अबी । बहुर्यी त्याग लेह भी कबे ॥१६॥
 विलस न कीये ओसर एह । मयकी छात्रि देहु संदेह ॥
 जोई मू मायेगो दान । सोई देउ राखिही नाम ॥१७॥
 तब तिन जंपी पुनि देह । राजा प्रचट पुहमि जस लेह ॥
 यह सुनि राउ कोय अति भयो । कुनि अपने मनमें चित्तयो ॥१८॥
 यह ती निमत पहुंचीं आए । कहत कहा हूँ कही बडाह ॥
 देवीं सुंदरि को ही कर्मु । चाहि देह अजे सब भम ॥१९॥
 इनि कछु बेरी कानन निकारी । मलिन बाउ कुछ ते उचरी ॥
 यह मनमाहि विचारै राउ । तब तिन जंपी जिय सती भाउ ॥२०॥

धीपाल को मैनासुन्दरी लेने का प्रस्ताव

कुण्ठी राउ जस सुनि कोहि । मैनासुन्दरी कीये लोहि ॥
 तेरे मन की जामे भयो । ती की मुह मायेगे कर दयो ॥२१॥
 बलो लीअहि पर महि कनि । मन बाँझत मुच देखिनि कनि ॥
 अब यह जवन राउ की सुयो । तब सब मलिन भायो सुयो ॥२२॥
 ए नरनाह कियो कहा कहुँ । कियो सुनत न कहियो कहुँ ॥
 यह कुण्ठी तब मंगि निकार । सुनी दे को कहा निकार ॥२३॥

जनम जनम को बड़े कलंक । हसि है सबे राउ अर रंक ॥
 राउ सुनिबि जपे जब तास । मंत्री क्यौ निदल सुपयास ॥२४॥
 यार्क सब सामग्री सिसी । होति और भूपनि पै खिसी ॥
 सिर पर छत्र चंबर छे डरै । भागै सूर खडग कर बरै ॥२५॥
 मंडारी राखे मंडार । बेसर बाहन भवन अपार ॥
 दुखी लोग सेवतहैं पास । भागै नितुं होत है रास ॥२६॥
 गाहा गीत बाद बहु भेद । सौधी बहुत अरगजामेद ॥
 अरु सब भाति देखिये सूर । भूलि न कबहूँ भाषे कूर ॥२७॥
 अरु देखिये दया अधिकार । दान देत है चित्त उदार ॥
 धारपे कोप उदै कछु कीयो । सुष अरु दुःष अचानक दियो ॥२८॥
 यह सबहि विधी पूरी आहि । अंसी बर तजि दीजे काहि ॥
 वारंवार पर्यपे राउ । याहि ऊपरि भेरी भाउ ॥२९॥
 यह सुनि मंत्री उठै रिसाइ । अजुगत कहा कहत हो राइ ॥
 मन में संक वात तुम कहै । बारंवार चरन ते गहै ॥३०॥
 राजा सुनी करी मत कौह । कीजै कछु सुसा की मोह ॥
 तुमती करत कहायौं इसी । काहू मूढ कीयो है जिसै ॥३१॥
 पायो नग निर्मोहिक एक । ताको कछु न कियो विवेक ॥
 काग जिहां जहि बँठ्यो आइ । सो वि डारियो ताहि चलाइ ॥३२॥
 काहू आय भेद जब दयो । ताको पिछताबी रहि गयो ॥
 होत कहानौ तैसां एहु । कन्या मति कोडी की देहु ॥३३॥
 अपजस फैलि देस में जाइ । अंतपि तौ पिछतै हो राइ ॥
 आग्यो सोच काम जो करै । तातै चूक कबहूँ न परे ॥३४॥
 अपजस ताको देइ न कोइ । नीकै करि देषी जिय सोइ ॥
 और सुनौ जपे भूपाल । पाथर ले मति आपौं लाल ॥३५॥
 कहा कर्म पुनी को करै । सोई होइ वातु जिय बरै ॥
 नीकै करि तुम देषी चाहि । वा में कछु न षीखी आहि ॥३६॥
 यह सुनि बौल्यी राइ प्रचंड । एए वचन भो लागत डंड ॥
 तुम मंत्री जानौ उनमान । यह कारिखु हो इहै परमान ॥३७॥
 मति जंपी तुम बारंवार । को समर्थ खु फेरन द्वार ॥
 बहु भोजन श्रीपालह दयो । पुर बाहरि सु कोपि राधियो ॥३८॥

मैनासुन्दरी से श्रीपाल के साथ विवाह करने का प्रस्ताव

मनमें हरषवंत बिकस्यह । राजा देह पहुंची जाइ ॥
 बिह ठाहीं मैना सुन्दरी । तसौं प्रथम बात उच्यवरी ॥३६॥
 पुत्री उत्तर देहु बिधावि । अजहूं अपनी करम निधारि ॥
 पानि गृहन करी तजि जाज । सुन्दरी जंपे सुनि महाराज ॥४०॥
 कहा कहत है हीनी बांत । सुख्य चित्त होइ सुनि ही तांत ॥
 जी मुनि किबावंत श्रति होइ । दरसण भिष्ट कहा कीजे सोइ ॥४१॥
 कीजे कहा धर्म जो गहै । जाकं चित्त दया नहि रहै ॥
 कीजे कहा ध्यान धरि एक । जाकं हिरदै नही विवेक ॥४२॥
 कीजे कहा त्याग बहु दीये । जाकं क्रोध प्रगट है हिये ॥
 कीजे कहा पुत्ति गुन रात । मेटे मातपिता की बात ॥४३॥
 बार बार को करे बषान । तात बचन मेरे परवांत ॥
 निठुर चित्त रानी गह गयो । दुष्ट कहानों तसौं कहाँ ॥४४॥
 मैं दीनी पुत्री पिय जानि । कुष्टी राउ परनि सुषमानि ॥
 सुन्दरि सुनै तात के बोल । तेई मनमें धरे अडोल ॥४५॥
 मनमें कीयो हरिष अपार । विहसत जंपे बारंबार ॥
 विषी निर्मयी हीन गुनवंत । सुनहु तात वह मेरी कंत ॥४६॥
 सुंदर नर नरेन्द्र जे श्रान । ते सब देशी तुमहि समान ॥
 यह तो यिं करम निरजोस । काहु स्वौं कछु राग न रोस ॥४७॥
 शुभ घर अशुभ अजी है संग । कोऊ मति सूली भ्रम रंग ॥
 हरत परत परतीर्थी मुकं । राजा कछु दोस नहि तुकं ॥४८॥
 पुत्री सुनयो जंपे राव । तेरे पीते दुष्ट सुभाब ॥
 अजहूं न तजहि कर्म श्रति गाह । मैत्री लागै हौंन विवाह ॥४९॥
 निग्र एक विधा करि लीन । सामोक्षिक जोक्षिक परवीन ॥
 लीयो बुजय साप नर नाह । हरषवंत पुत्री नै आह ॥५०॥
 दिन सुभ अरि महाराज सावि । लवक धर्यो जोयसि आशवि ॥
 भाष्यो निग्रह तबै निरहा । शुभ करि वासर श्राजि पवित ॥५१॥
 सूर्य अंसि हर सुह मुक आहि । बर कन्या की अंतिय धाहि ॥
 बरस बीस जो सोषो राह । बीसौ अंसि न पहुची आई ॥५२॥

स्वामि लेत ता हाथ न बहै । प्रारंभार विप्र वीं कहे ॥
 बात कहे सो करे न संक । सुनि ही राइ करम के शंक ॥५३॥
 ताको कछु न दीजे धौरि । प्रानी बांध्यो विषी की डोरि ॥
 जित प्रीति त ही लै जाइ । या में कछु न बोधो राई ॥५६॥
 जा परि ताको दुष निरमयी । काहू पै सुष जाइ न दयो ॥
 जौं पुत्री सिरजी सुषकाज । को दुष देखे सुनि हो राज ॥
 अपनी कियो कछु जो होइ । तं काहू को बदे होइ ॥
 बिघनां शंक जु लिष्यो खिलार । ते निरबहै ठोर इकसार ॥५३॥
 भूलि गर्व कोऊ भति करी । करता बली तहां मनि डरी ॥
 तिरास्यो बख पलक से धरै । पलमें बख ताहि बिष करै ॥५८॥
 करते पहल काम चितबै । यह प्रीर की प्रीर कछु ठबै ॥
 सोधे पठित सुने पुरांन । ताको अपजस होइ निदान ॥५९॥
 यह अजुगति कछु कही न परै । राजसुता क्यों कांडी बरै ॥
 जाके रूप जगत माहिए । सो क्यों कुण्डी को सोहिए ॥६०॥
 राजा हीन बात जीय धरी । तेरी बुधि बिधाता हरौ ॥
 शंसो ते प्रारंभ्यो काज । जान्यो बुझ्यो चाहत राज ॥६१॥

बिनासके कारण

विप्र गयो धरि लयो न विस । लामो प्रयटन एहु चरित ॥
 मंत्री बरजे फुनि फुनि तास । स्वामी एतौ धरसे बिनास ॥६२॥
 बिनसे मंत्री संका मन धरै । बिनसे भागिन प्राइस टरै ॥
 बिनसे राव मंत्र जो तजै । बिनसे सुभट देखि रन मजै ॥६३॥
 बिनसे इसुक्रोध परिहरै । बिनसे साथ क्रोध जो करै ॥
 बिनसे दाता जो न बियेक । बिनसे बाढ चलै दिन एक ॥६४॥
 बिनसे अस्ति पंकज की बास । बिनसे रागी रहै उदास ॥
 बिनसे चोर पयासे जेव । बिनसे बिचटे में को वैव ॥६५॥
 बिनसे साह उषारी देइ । बिनसे गनिका जो कत बेइ ॥
 बिनसे अति काम्यातुर बेइ । बिनसे राकर नीरी बेइ ॥६६॥
 बिनसे पाष क्रिया जो हीन । बिनसे तपा लीध करि लौन ॥
 बिनसे रांक राम चित्त धरै । बिनसे रोगी बाढ न डरै ॥६७॥

बिनसे जोषी घर घर फिर । बिनसे पैदा पावस फिर ॥
 बिनसे बँद न मारी बँदी । बिनसे बेबद बाह न लई ॥६८॥
 बिनसे ज्वारी हारिब कही । बिनसे बाह फेर किस रहे ॥
 बिनसे रूप नखी कौं ठीर । बिनसे राधा बिन उखीर ॥६९॥
 बिनसे बाप लखाने पूत । बिनसे जो संके मत बूझ ॥
 बिनसे काजी बालक कर । बिनसे कुल कपूत प्रीतिर ॥७०॥
 बिनसे कीच पीचर भई । बिनसे नाहु जो ऊँच कही ॥
 बिनसे ठन कुठोहर बर । बिनसे धन हनं बालकी ॥७१॥
 बिनसे करिबर काहर हाथ । बिनसे कल्पव दूकी हाथ ॥
 बिनसे चोरी दिन ब्रजमयी । बिनसे घर जो बैठ न खरै ॥७२॥
 बिनसे चोर बाह बित बरै । बिनसे बाह न मारी खरै ॥
 बिनसे बिन को भीषी जाय । बिनसे कालहीन कुतवाय ॥७३॥
 बिनसे बन्धन पुनि पुनि नखै । बिनसे बह जो हकहक हँसै ॥
 बिनसे काजु करस जो कही । बिनसे राज कुमंगी बही ॥७४॥
 बार बार मंत्री बन कही । काहू को बरज्जी नहीं रहे ॥
 बिज मांती बैनल बनि परी । धाकुत रहे न एकी बरी ॥७५॥
 बरज्जी बलसे मंत्र बरज्ज । कब कबु सुब होइ बए बरज्ज ॥
 नंदि बिरुपमनियर बरज्ज । लीपति कुन्दी कौक संवाय ॥७६॥
 मां ी बात कोहु सिद्धकाय । संसह कुल पालोने राह ॥
 तब रातो बोली बलि सं । संगी बलि पूनी बरज्ज ॥७७॥
 मूरिष हिए बिचारी बुधि । केहां गई तिहारी बुधि ॥
 मैं तो बिलक बिकी बरि भीष । केउम हार ताहि भी बीन ॥७८॥
 तब मंत्रीपद कही वीरका । कुवा निर्मल बलि देहु कौक ॥
 बनिष बरज्ज बरज्ज । बरज्ज । जो पुन बरज्ज बरि लखी राह ॥७९॥
 तब मैं कोहु बरज्ज कही । बरि कुल कोहु बरज्ज कही ॥
 बात कबने कही कौं भीरने बरि कबहू बरि मंत्री भीर ॥८०॥
 बुनि करि कोहु कही बरि धर । कुल बरज्ज कोकिली कुलका ॥
 राजरीषि को कर्म ब होइ । मंत्री कुल केही बरि कोह ॥८१॥
 राह जो को शरणी बरज्ज । बरज्ज बरज्ज कही बरज्ज ॥
 जो बरज्ज कही कुल । बरि । बरज्ज कोही कौं कोह ॥८२॥

तब मन्त्री बोलें कर जोरि । स्वामी हूँ न दीजें पोरि ॥
 हम मंत्री बोलें नृप जीति । यहै हमारे कुल की रीति ॥८३॥
 स्वामि धर्म इह बाहर होइ । साची बात पयासै सोइ ॥
 जो हम काज करै सुनि राइ । ती कुल रीति हमारी जाइ ॥८४॥
 अरु राजनि की इह सुभाउ । अब जानत है दसक दाउ ।
 तब मन्त्री लीजिये बुलाइ । । बूझे ताहि भेद निकुताइ ॥८५॥
 जोइ बात कहै समझाइ । सोई करै सब छिटकाइ ॥
 और न मन स्वार्थ अधिकार । ऐसे नृप कुल के आचार ॥८६॥
 तातै बार बार उचरै । कछु जिय की लास्य करै ॥
 चूक हमारी कछु न आहि । नीकै करि देखी बित्त चाहि ॥८७॥
 मनमें समझी कछु इक राइ । मुब करि तिनहीं उठयो रिताइ ॥
 और बात मति ल्यावी बित्त । सामग्री तुम करी बित्त ॥८८॥
 सुन्दरि बर को सीमा बरो । बेगे होह बार मति करी ॥
 सुनत दुःख मंत्री जन भयो । हरे बांस मंडप अर ठयो ॥८९॥

लगन मंडप का बखान

च्यारि धंभ कंधन के बने । चमकी नथ निर्मोलिक धने ॥
 च्यारि कलस इस लीजन जरे । ते लोहे चहुं घूँटहु धरे ॥९०॥
 अरु सोभा तिहु विष प्रकार । मुक्ताहल की बंदरबार ॥
 चोक लवासिन देहि सुधम । अति उज्वल देविणी अमंग ॥९१॥
 अरु तहां निए सुरंग उखार । तिनकी सोभा जगै अपार ॥
 नैन्ही बूनी वई फेसाई । ते अस्सकै कछु कहिमक जाइ ॥९२॥
 सबै सिवासनि रदम कराहि । लोभा भोक संभारति जाहि ॥
 लज्जन लोन धुरै सब धाई । मतिन बित्त को नहि विकसाइ ॥९३॥
 ठांठा घेर करै सब कोइ । अपुनति बात न ऐसी होइ ॥
 बिधना कछु इह निरमई । राख्य की मति जिनु छरि सर ॥९४॥
 राभा राइ धुरै सब जिसे । अमृपात करै तहां लिते ॥
 अरु आजे वाखिन अपार । भेरि अदंग दूर सहमार ॥९५॥
 गहर सबद बाजी नीलान । मतिन सबद अति मुनिधं काम ॥
 विप्र वेद धुनि बढै अपार । नरनारि रोवै अधिकार ॥९६॥

राजा कहे व्याह के बाद । जेगे कचो यहीइ सवार ॥
 मेरी मन को हसत सु-बाहि । वेति बसई लखी जाहि ॥१७५॥
 करौं सेव जो मोते हीइ । बार बार यी शाये सोइ ॥
 मंत्री बये सीस कुनि जहाँ । मकर निकोसह बरही जहाँ ॥१७६॥
 देखी कहीत प्रति विपरीति । तन मन जाकी है मल पीति ॥
 ले आए प्रति सुखी वेह । बहे राशि बस जाकी वेह ॥१७७॥
 जो देवे सो हंसी करे । बिषी को जइ न दाख्यो टरे ॥
 देवत राजा प्रति सुख कियो । कंकन ककस न्हावन बियो ॥१७८॥
 लोखे मर जो बहुत अहीर । लोकी कस न लखे सहीर ॥
 कंकन कर बांध्यो सेहरी । मुरिष राउ भयी बाउरी ॥१७९॥
 कामिनि बोरी शाये बयै । दूल्हा व्याहन बलियो तबै ॥
 बचल तुरी बढावन लियो । मंत्री बाहै हासी कियो ॥
 बहडिठ बाब बही कर पाउ । राधबंस पजी मिटै सुधाउ ॥१८०॥

धीपाल की बारात

बली बरात उठी तहां पूरि । रही तहां बर बंवर पूरि ॥
 रतन जरित सिर जपरि छत्र । इरै छत्र बोमके बहवु ॥१८३॥
 श्रीपाल मन हषित भयो । मंडक द्वारे ठाडी भयो ॥
 पियन सयल देखियो भाइ । तिनके बदन गये कुमिलाइ ॥१८४॥
 मानो मंडुज हुए तुसार । मानो तखर हस कुसार ॥
 प्रेसो भयो बिल धनराउ । मानो भयो बख को बाउ ॥१८५॥
 ते बहु खन करै बहु भरै । राखी की ते मिया करै ॥
 नारी नर अंतेबर बिते । प्रति बिलधाहि बिसूरे तिते ॥१८६॥
 तिनके बिलखे कहु सिराइ । राधा मनमें बरो बधाइ ॥
 मूंड रह्यो भीषी करि मारि । काहु तन नहि बरके मिहारि ॥१८७॥
 माता बहन परी गह बरै । हीनवर कोनु खन करै ॥
 माता महा दुःख तब बनी । पुकी के गह कंठ बानी ॥१८८॥
 हा पुनी दुःख सागर हरी । क्यों है फिर लैना सुदरी ॥
 पूरक कहै कियो लै भाग । जयै जयै गह संताप ॥१८९॥

मैनासुन्दरी द्वारा लखनकांठा

सुन्दरी बोली जिन सब लीन । लखकांठे परिपन परकीन ॥
 कोउ दुःख करो मति सोधु । सुन लख अकृष करै कोनु ॥१९०॥

जो प्राणी ब्रामो संसार । ताके नरे दुख की मार ॥
 जित ही वेधे नैन पसारि । तितही बांधी दुख की पारि ॥१११॥
 बह साइर संसार बखार । बिराही कोऊ पावे पार ॥
 मात पिता सुत बंधन मित । ह्य मय बाहन रथ सु पवित ॥११२॥
 माया और अहि बधिकार । मिथ्या सबे रथी करतार ॥
 काको पिता कौन की माइ । जीब बकेली आवे जाइ ॥११३॥
 बंटे रहे हितु पचास । बार बार बोधे थोपास ॥
 काहू पासि न होइ उपाइ । जब कर केस नहै जम आइ ॥११४॥
 सोई बढी हितु सुनि भाइ । अरबराइ मरघट जे जाइ ॥
 भजे खौरि देहु मति कोइ । हीनहार सोई परिहोइ ॥११५॥
 प्रतिबोधी सगरी परिवार । मंजन कहाँ व्याह की चार ॥
 मापुन हरषि उठाइ सुलियो । सति बदनी सेहर बांधियो ॥११६॥
 मणिमय कुंडल पहरे कन । करकंकन सोहिये रबन्न ॥
 नेवर पहरे अति भुंकार । पहरी बलि मीतिन की मार ॥११७॥
 सूरति बास मरदियो सरीर । पहरेथी अंग कसू मिल बीर ॥
 करि शृंगार पहती आम । सिरीपाल मंडफ गयी ताम ॥११८॥

मैना का विवाह मंडप में होठना

मैना सुंदरी बंठी आइ । परियन रहसि चियो छिटकाइ ॥
 तिहठा रनन करे सब कोइ । टकटक रहे गुहां सुइ जोइ ॥११९॥
 तब सुंदरि उठि ठाडी भई । निज परियन बसता बं नई ॥
 सुरसुंदरी की बायो जिसी । मोकी कयो नहि कापी सिंघी ॥१२०॥
 पुत्री जंपे बारंबार । करी सजाह क मंगलचार ॥
 यह कहि के पुकी बैसियो । माता बहन हियो अरि लियो ॥१२१॥
 डरे चौर दूल्ह के सीस । जे जे सबद करे नर ईस ॥
 बाजे अहां गहर बाजने । जाधिम जन बिरदाबलि भने ॥१२२॥
 बंदन मरबटि दई लितार । पहरे पाटंबर सुकलार ॥
 नांवे गांवहि मंगलचार । बंजन बेद पडे कुंकार ॥१२३॥
 भाबरि सात फिरी दुख जवे । राजा बंधकी लियो लवे ॥
 मैनासु बरि पकरी हाथ । सौपी श्रीपाल नर नाथ ॥१२४॥

कन्यादान लिवी नरनाइ । तब बारि होयो मु की भाइ ॥
मनी जब सब सए बुलाइ । मेरो मुहु मति देषी भाइ ॥१२५॥

राधा द्वारा परभावान्तरण

हे हे हूँ पापी नरवान । हे हे हूँ मतिहीन अर्थहीन ॥
महादुःख परियन को दयो । अपजस सकल लोक में भयो ॥१२६॥

बार बार भैंसो उचरै । भैंस काम नीच नहीं करै ॥
सबै बुबाई कुछ की रीति । नरभी घोयो करी अनीति ॥१२७॥

अब कहां बदन दिबाऊ लोइ । चढी कालिमां भेटे कोइ ॥
हे हे पुमी सब मुन लौन । जैन धर्म पालन परबीन ॥१२८॥

मो निर्मल मति धोटी भई । तू कन्यां कोवी को दई ॥
पुत्री कहेँ सुनौ ही तात । मिटे केम त्रिन भाषी बात ॥१२९॥

कछु धौरि नहीं दीजे तोहि । उदै कर्म प्रायी सुनि मोहि ।
जो कुछ निमित्त होइ जिह काल । तेई अंक लिखे मम भाल ॥१३०॥

पहले विषना यह जीय घरी । पीछे हीं गरम संचरी ॥
जो कछु भाष करै करतार । ताकी बीजे कहां बिचार ॥१३१॥

काहु पास न भाषी जाइ । अजहुं कहा होमयी राइ ॥
भैंसो बचन भूप जब सुन्थै । मम पिछतानी भाषी सुन्थै ॥१३२॥

नीक करि देषी चित्त चाहि । अमनी बूक सुनायो काहि ॥
यह चित्त वीनी ज्योहार । सोबी दीन्ही अगम अवार ॥१३३॥

छत्र चमर दीन्हे भंडार । दीन भेगल तुरीय ते सार ॥
पाठवर दीए बहु धीर । जिन लये निर्बालिक हीर ॥१३४॥

धोइस बर्षनि धीने धर्म । पहरे कंचु सबै सुरंग ॥
अति सुंदरि दासी भनि लई । एक सहस्र सुंदरि को लई ॥१३५॥

वहेक

सहस्र दास सुंदर मुन पैह । धीएँ विरीपाल को तेह ॥
तेक कसे भयो के जए । बहूत कोइ सेवा को कए ॥१३६॥

पुत्री देखि विपूरै राइ ॥ बार बार कन्यां पिछवाइ ॥
कंचु दीन्हे कही न जोइ । बहुत दीएँ आसन बहाइ करिवाइ ॥

बाई सात रबी चहुं पास । नीतन दीए कराइ आवास ॥
 पुर बाहरि राखिगी नरेस । दिए बहुत पुर पट्टन देस ॥१३८॥
 बहुत दीए बाजनै निसान । दियो सुबी बिना उनमान ॥
 राजा दियो धति धन जितो । कबि परबल्लभ भ करखी तिलो ॥१३९॥

प्रजा द्वारा कुंभ प्रकट करव

लाई कुंभरि चौडोर बडाइ । सिरीपाल चरि गयो लिवाइ ॥
 यह सुनि नगर भयो कहराउ । सभी कहैं छुग छुग यह राउ ॥१४०॥
 रोवै परिचन बे उनमान । रोवै मंत्री भरु परधान ॥
 रोवै रइयति कुली छत्तीस । रोबत पशु पंछी सब दीस ॥१४१॥
 तू बिघनां भति षोटी ग्राहि । बुरे भले नहि देवै चाहि ॥
 घर घर घेर करै बिलषांहि । राजइ गारि देहि पिछताहि ॥१४२॥
 बहुत बात को करै विचार । सुष निबसैं श्रीपाल कुंवार ॥
 मैनासुंदरि मन की ईछा । एक दिन एकासन विछा ॥१४३॥
 तब श्रीपाल कहै ए नारि । प्राण पिबारी देषि विचारि ॥
 तू त्रिसुद्ध गुन सील अमग । रूपवंत कंचन मै अंग ॥१४४॥
 चन्द्रमुषी सुनि अभी निवास । मति आकछैं तू मेरे पास ॥
 जोली अहुअ उदै भो कर्म । तौ ली राषि आपनी बर्म ॥१४५॥
 बार बार हू बिनऊ लोहि । सुंदरि भति आखनै भोहि ॥
 ए बलभा तुम सुषदातार । संवति बाई दोष अक्षर ॥१४६॥

संवति का महात्म्य

संवति गुनी निरगुनी होइ । संवति होत कुबुधी लोइ ॥
 संवति तपा भृष्ट ब्रत तजे । संवति पाइ सुरभी बजे ॥१४७॥
 संवति साधु सुरा आचरै । संवति ही चोरी नर करै ॥
 संवति सींह स्यार होइ जाइ । संवति आवक आमिष पाइ ॥१४८॥
 संवति विप्र तजे षट कर्म । संवति से हूँ बर्म अचर्म ॥
 संवति सीख तबैं अरजाति । आभनि मनमै देषि विचारी ॥१४९॥
 संवति कोठ चडै दुष जहै । सिरीपाल सुंदरिस्वयै कहै ॥
 मेरी संघ कुटी बनि आनि । सुंदरि बात हमारी मांकि ॥१५०॥

बोली नारि बिन सुनि एह । मन में उपज्यो अति संवेह ॥

श्रीपाल से बिनसुन्दरी का विवेक

बालम सुनी कहीं धम तोहि । कंकट बचन कही बलि मोहि ॥१५१॥

नीक करि सोबी मन मांह । जो ली उदै कर्म की मोह ॥

तीली सुगती दुष सुष संत । झूलि न काइ रहूँ कंत ॥१५२॥

विधिना भोहहि पट्ट खिचि विधौ । सोई कोकी शिष्य कवी ॥

तुम मेरे प्रीतम भरतार । तुम मेरे प्रांननि आचार ॥१५३॥

तुम अति रूपवंत मुनवंत । तुम हीं सुष सागर बलिबत ॥

लोचन सुबी जो लीए चार । तीलीं बेधे तुम निहार ॥१५४॥

तीलीं पबित रहे शुभ ठान । जो लीं जपीं तुम्हारी नाम ॥

तो ली हाथ धन्य सुनि राय । जो लीं प्रच्छालीं तुम पाइ ॥१५५॥

वाह धन्य कसू कही न भाइ । जो धालंबी कंठ लगाइ ॥

ही जिय धन्य ती लीं जिय धरो । जो लीं सेव तुहारी करौं ॥१५६॥

सील विहूनी नारि जु होइ । पिऊ की निदा करि है सोइ ॥

पतिव्रता सब ही गुन भरी । ही ती सीलवंति सुंदरी ॥१५७॥

शोल की महिमा

सीलहीत्यो मेरी अति बित । सील पिता बंधु बंधु बित ॥

सील परिग्रह मेरी संग । सील रूप मेरी सरबंग ॥१५८॥

सील डाइस आचरण बिचार । सील ही नब सत मृ चार ॥

सील कीबन सील करन । सील कर्म सु सील सरन ॥१५९॥

सील मेरे नग उतमान । तीलीं लजी न जो ली मान ॥

सर्वस जाइ सील जो रह । जिजुवन में सोभा सी लह ॥१६०॥

श्रीपाल का प्रसन्न होना

बहु सुन सिरीपाल हुराबिबी । धनि बिनसुं धरि तेरी द्विबी ॥

धनि बिनसुं तेरी बीतार । जिह दिन धर्यो सील की चार ॥१६१॥

झेली विपत्ति माहि विहसंत । बहुत दिवस बीते निवसंत ॥
 कोठा रूढ रहै बहु पास । सुंदरि वैषै लेइ उसास ॥१६२॥
 ए बिषना दोषन के राइ । तेरी कयलक करनी चाह ॥
 तेरी सरन भाइ जिह लयी । ताकी दुःख बहुत तैं दियी ॥१६३॥
 अरु जे फिर्यो दुष्ट तो साथ । ताकी भले लगाए हाथ ॥
 तेरी भास रह्यौ जिय सोइ । अतकाल ताकी दुष होइ ॥१६४॥
 जिह काहू तो कौ सुष दियी । ताकी बुरी सर्वथा कियी ॥
 जिह तेरी केषी पर छंग । ताकी सदा भयो सुष बंग ॥१६५॥

बोहा

जिह मार्यो तू दुःषदे, रे विचि अष्ट प्रकार ॥
 सो पहुचै वंकुठ की, तेरे मुख दै छार ॥ १६६॥
 जिह तेरी भासा तजी, कीनी मूल बिनास ।
 तिह भव दुषसागर तज्यो, लह्यो मुक्ति घर बास ॥१६७॥

श्रीपई

नद्या बहुत करम की करी । और न काहू ऊपरि घरी ।
 मैना सुंदरि उठी तुरंत । दिव्य अबर पहरे बिहसंत ॥१६८॥
 सीलवंत अरु मुंनह निधान । निज बालम संयुक्त सदान ।
 मनमें उपज्यो सुष असेस । श्री जिन मुचन कियो परसेस ॥१६९॥
 तीन प्रदक्षण उत्तम बुधि । कीनी मन वच काय विष्णुधि ॥
 दंपति लावे अस्तुष्टि कर्न । जे जे मुनिवर भव अरु हर्न ॥१७०॥

मैनासुंदरी एवं श्रीपाल द्वारा मूर्ति के पास आगम

जे मिथ्यातम हरन पतंग । सेवत सुर नर वैचर अंग ॥
 निरहं द निरामय नाहन कोष । अय कीने अष्टादश धौष ॥१७१॥
 अनंत चतुर्दश गुनह निवास । इन्दी वेदन सदा उवास ॥
 मंदित सदा सत्कारय आस । अक्षयं च मोहुरि विनास ॥१७२॥

रत्नत्रय मूषण सुभ चित्त । एकत्रय वेपथु करि चित्त ॥
 शान्तकरण जे जे जननीस । जे जे करमात्तर सिद्ध हित ॥१७६॥
 सुभ चित्त दोळ चिरमाहि । बँडे बरल कमल तट बाह ॥
 तब सुंदरि बोली करि बाह । ही शक्ति मोहि जन्मेबाह ॥१७७॥
 ओ स्वामी कछु ज्ञान प्रदाति । उरै मेरं चित्त की बाकि ॥
 जे जे मुनि शिपास निहास । बाह मीम दे चित्त उदार ॥१७८॥
 कछु धरम स्वामी कहि सोइ । कुण्ड स्वामि जाती जग होइ ॥

मुनि द्वारा संबोधन

मुनिवर कहै पुनि मुनि एह । अमुकत मुंख समकित वू लेह ॥१७९॥
 पुनि सिध्दाचल कुण्ड विवाही । पवन मुनिवर फलाहरि ॥
 मुकुवो धरम प्रगट्ठो जो बाहि । नीक करि मुनि जास्यो ताहि ॥१७७॥
 सुमीरबरोबाच हे पुनी जे यता ।
 धर्म मसिबंरति कि कहुना अतेन ।
 जोवे दया भवति, कि बहुनि प्रदाने ॥
 शांतिमेंनो भवतु कि कुचनीश्चतुष्टै ।
 आरोग्यमस्तु बिभवेन वलेन किवा ॥१७८॥
 बुद्धेः फलं तद्विचारणं च ।
 वेहस्य सारं व्रतचारणं च ॥
 अर्थस्य सारं किल पात्रवान ।
 वाचः फलं प्रीतिकरं नराणां ॥१७९॥

सिद्धचक्र व्रत लेने के विषये कहुना

बीचई

निर्मल सिद्धचक्रक ॥ १ ॥ अमरनिवासी श्री गुरु एह ॥
 तब तापै मुनिप्री विधि साधि । बहु दिन सिद्धचक्र आराधि ॥१८०॥
 प्रथमह मंडल श्रीचंद्र शक्ति । अकार अक्षय वि जाधि ॥
 चहुं कुर्यो विधि सोलह अट्ट । मकि पंच परमेष्ठि मगराट्ट ॥१८१॥
 दल दल ते लिविए बहु धर्म । अ क च ट त प य स ने बहु धर्म ॥
 दल अंतर अंतर कुचनाय । दरसन ज्ञान करिज सुभाय ॥१८२॥

पुनि चक्रीय उपासनामालिनी । अंघ्रि परमेस्वरी पीलिनी ॥
 अम्बुकी विधिजे मुनह विनाय । विधिए उहाँ तहाँ विवपाय ॥१८३॥
 गोमुख जरवेसुर लेविए । बहुरि मानवें बाविह ॥
 द्रव्युच को काविए सारें । वही डार उकोउ चरन ॥१८४॥
 वसु दिन पालही सील बुकाउ । इन्दिनी को उचसवु विवाउ ॥
 मूल जेन वसु दिन भाविए । होउ नचीत आउ राविह ॥१८५॥
 संवेपह विधि यह में काही । पुत्री सुनत गई गह वही ॥
 दुष्ट कुष्ट तन नीकी होह । रोग सोग सब डारें घोह ॥१८६॥
 बितर प्रेत में न कछु करे । बसीकरन मोहन सब हरे ॥
 होई जसु बन बडे बघार । पुत्र कलिच बाडे परिकार ॥१८७॥
 नर अर नाहिं सबै सुख लहे । दुःख पारिरे तहां नहीं रहे ॥
 सुनि पुत्री पूजा विधि जिते । ती सौ बदन काही हीं तिते ॥१८८॥
 कासिन कागुन असाह बघांनि । स्वेत पसा निर्मल प्रति जान ॥
 अष्टमि दिन कीजे उपवास । कीजे इन्द्रिन को सुख नास ॥१८९॥
 वसु दिन ब्रह्मचर्य मंडिह । घर की बिता सब छांडिये ॥
 सिद्धचक्र वसु दिन तजि बाहु । कीजे पूजा मिटे अमसानु ॥१९०॥
 नीक करि यिह मनु राविरे । मूल मंत्र पुनि पुनि भाविरे ॥
 मनबांछित फल पावै जवै । उपापन विधि कीजे जवै ॥१९१॥

व्रतका उद्यापन

कीजे आठ भवन जिन तने । बरिह आठ विधि सौं विधने ॥
 कीजे सिध जंत्र सुभ अट्ट । बापे भुनिवर गुनह गरिट्ट ॥१९२॥
 अलरि मुकट चमर सुभ बांन । कीजे आठ आठ परवांन ॥
 कीजे आठ प्रतिष्ठसारे । कहुं धन बस्वै विस उकार ॥१९३॥
 पूजा आठ करौ बरि भाउ । अथवा एकै मन करि भाउ ॥
 उद्यापन कछु होइ न चाहि । ती दूनी व्रत कीविहै निवाहि ॥१९४॥

जित जोय बहु दीजे दान । बीसबहु भरिए कति धाने ॥
 बौजका नै सारी बहराह । बाढ बंध दीबिए सिबोह ॥१६२॥
 दुषी दीन दाबिदी किते । करि सगमान पोषिये सिने ॥
 सुं बरि भर श्रीपाल कुं वार । सुनि मनमें सुख कियो अपार ॥१६९॥
 गुह की निमतकार करि बर्ये । यह निज तंदिन खेड जये ॥
 रई सुपसु बहु बडे इलहाड । भाव पहुंचती कतिव साध ॥१७॥

कार्तिक की झण्टानिहंका

सति प्रखरु अष्टमी दिन भये । कति निर्बल फासु अरु खये ॥
 न्हाए संग पहिरयो बरु । प्रति उज्जल देखिये समस्य ॥१६८॥
 सब बर्ये लिए बरि भाउ । कति हृषिक मन कान्छी भाउ ॥
 इच्छिमुक्ति गए जिन देखे । बीतराव बांधा सुख देखे ॥१६९॥
 तिहुं गुप्ति मन बंध अरु काय । कलकवि श्री जिन संसख भाय ॥
 थिरमन होब कियो कवि भाह । विविधतां पूजयो श्री सिद्धनाह २०॥
 बसु दिन प्रति विविधो मांडियो । राग रीस दोऊ छाडियो ॥
 जानै सम सो कहु कर किये । कलकवि मालकी कल किये ॥२०॥
 मुनि पै लीन्ही कियो उपास । उपायो दुष्ट कर्म की जास ॥
 नीके सिद्धचक्र पूजियो । सुबभाव गंधोदिक लियो ॥२०॥

गन्धोदक लगाना

प्रति सुबंध को ऊर्दे डिवार । बंछित यह जहां बरतार ॥
 सिरतै त्रहै गुवायो खेद । प्रयसहि दिन कहु बीको होह ॥२०॥
 श्रीपाल भर सातहै सु संग । देवियो पुन्यह कल सु धरंग ॥
 कहु विविध सुभा बरु कलेह ॥ भायो कुरुन नीकैरी वेद ॥२०॥
 डरै पौर भावै कलाम ॥ कलकवि दीन्ही सुमुनेय ॥
 मलिबजिहिर सौं हनु कलकवि ॥ कलकवि विद्वान् जिन सिद्धादि ॥२०॥
 सति सम बंधेस बंछित तिहुं कियो । सुंदर पुं ब कलकवि ॥
 पहुंचे कलकवि भायो कल । प्रति सुबंध देखिये कल ॥२०॥

कङ्क कौन्ही सुन्दर भाल । स्वेत भवन देखिए बिसाल ॥
 कङ्क कुसुम अति छूटे लए । अरि अरि अंबुरि जिन को दए ॥२०७॥
 नइबेदक पकवान अघार । श्री जिन प्रायें रचे अघार ।
 बारि घरे तहां दीप अनूप । बेयी वर कृष्णागर रूप ॥२०८॥
 नाना विधि फल घरे सवारि । मनबंछित को कहे बिचारी ॥
 श्रीपाल पूजा की कह्यो । माठौं ब्रह्म चढाए तहां ॥२०९॥
 कुसमांजुलि दे सिर नाइयो । दुष्य जलाजलि पानी दयो ॥
 प्रथम ज पूजा इक गुनि करी । दूजे दिन दह गुन विद्वतरी ॥२१०॥
 तीजें सौं गुनि पूजा सची । सहस गुनी चौबे दिन रची ॥
 पचम दससहस्र गुन भनी । लक्षगुणी षष्ठे दिन तनी ॥२११॥
 सातैं दिन दसलक्षए गुणी जानि । अष्टम कोटि गुणी परवानि ॥
 ठाढे सब सुर कौतिल हार । मनमे कौयी हरिब अघार ॥२१२॥
 अति सुकठ लीनी जैमाल । उपज्यौ कौतूहल तिह काल ॥
 सुंदरि महा अघरती रचैं । इंद्र इन्द्राइनि दोऊ नचैं ॥२१३॥
 सुर बाजे बाचैं अनिवार । मधुरी बुनि सोभा अचिकार ॥
 जिनके नाम न बरने जाहि । नाचैं किनरि अति मुसकाहि ॥२१४॥
 अमरेसुर सब चढैं विमान । पङ्कचें आप आगने कान ॥
 पूजा करी भरम सब भग्यी । कोटीभट माठौं निसि जग्यी ॥२१५॥

कुष्टरोग नष्ट होना

तीन दिवस गंधोदक न्हाइ । कोब मिट्यौ पर्योषह राइ ॥
 कंचन वनं भयो तनु इसौ । सोहत कामदेव को जिसौ ॥२१६॥
 और जु बली सातसैं भिस । तिनहू के तन भये पवित ॥
 और जु कुष्ट देह हे जितै । गंधोदिक नीके भये तितै ॥२१७॥
 झूत पिसाच निसाचर भंत । नासैं गंधोदिक परसंत ॥
 मोहन बसीकरन जे आहि । बिसहर डांडनि सांइनि आहि ॥२१८॥
 नैननि रघ अवन विधि जिते । नीके अए सब अघ सिद्धे ॥
 अह जे कुष्ट कर्म दुष दने । सुब पावैं गंधोदिक जने ॥२१९॥
 तर नारी मन बच करि कोइ । सिद्ध चक्र आराधैं जोइ ॥
 सो प्रणटै विहुं लोक अकार । को भुंजैं बहु सुख अचिकार ॥२२०॥

बाढे बिभी बिबा उमरान । करे राज सो इन्द्र खमान ॥
 नाना फल मिलीं सुखपात्र । मुरिके बहुरी मुक्तिह जाइ ॥२२१॥
 जाके जल न्हाये कवि कहे । कुष्ट व्याधि नहि तन में रहे ॥
 याकी इचरज कछु न भाहि । जा करि है सो पाये ताहि ॥२२२॥
 मैनासुं दरि पिष की देह । देषत नह भरि भारी नेह ॥
 तव तासौं मुनिबद यौ कछुनी । बह फल तौ जय सुरत ही लखी ॥२२३॥

मुनि की बन्दना करवा

स्वामी तुम प्रसीद सब एह । बहुत विनति कीयी भरि देह ॥२२४॥
 चरन कमल मुनिबर के बंदि । दोऊ भरि घाए मानधि ॥२२४॥
 गयी अशुभ लव धर्म सहाइ । बहुरी सुख को कहे बडाइ ॥
 धर्म एक निमुवन में सार । धर्म दुष विनासन हार ॥२२५॥

धर्म की महिमा

धर्म हि ते नर भी आइए । धर्म हि कुल उत्तिम पाइए ॥
 धर्म हि ते कीरति विस्तारै । धर्म हि ते कोऊ बर न करै ॥२२६॥
 धर्म हि ते बाढे परिवार । पुत कालित रु बिभी अपार ॥
 धर्म हि ग्रह व्यापि नहि कोइ । धर्म हि ते सब कारिज होइ ॥२२७॥
 धर्म हि ते बहि बडे कलंक । धर्म हि ते सबे सुर रंक ॥
 धर्म हि ते नर बर न बहे । धर्म हि ते कोई बुरी नवि कहे ॥२२८॥
 धर्म तिहाई लेइ छिडाइ । जब जय प्राप्त दिपाये आइ ॥
 गहै केस बपयोई जके । धर्म राषि सेतु है तबे ॥२२९॥
 धर्म हि ते सब मिटे किलेस । धर्म हि ते भरि होइ बुरेस ॥
 बहुत बात को कहे बडाइ । धर्म हि के नर मुक्तिह जाइ ॥२३०॥
 कवि परमस्त कहै चित चाहि । धर्म विना को हितु न भाहि ॥
 प्राणी तजि परपुत्र विकार । करहु धर्म ज्यौं उतरै पार ॥२३१॥
 धीर कछु सब दुख को नाम । धर्म एक जु सुख को नाम ॥
 धर्म हि ते श्रीपासह रूप । अकरध्वज सम भयो अनूप ॥२३२॥

कुष्ट व्याधि तै लयी उबोरि । पाइ महा मनोहरि नारि ॥
इह परस्पर सुख भूपार । भोग भोगी विविध प्रकार ॥२३३॥

जिन मंदिर दिन दिन प्रथ भरै । विज गुर की ठे भस्सुति करै ।
बिलसै विभौ देहि बहुदान । गुनी जन गर्व लहै तिहा मान ॥२३४॥

अहि निरिखि निच बंन कुशा भाहि । मूल ब्रंज जय पूर्यै संहि ॥
महासुख उपनौ नौरंग । सेवा करै सात सै भंग ॥२३५॥

इति श्रीपाल चरित्र महापुराखे भव्य संग मंगल करखं ।
सुषजन मन रंजय, पाशिय खंजय, सिखाक विधि सुख हरखं ॥

त्रिभुवन सुख कारख, भवजल तारख, चौपई बंध परिमल्ल कुतं ॥
बच सुं हरि पाई, विधा गुनाई, श्रीपाल सुख राज करै ॥

इति

× × × × × ×

इसके पश्चात् श्रीपाल का जीवन ही बदल जाता है। वह विदेश यात्रा करता है। बारह वर्ष तक विभिन्न द्वीपों में भ्रमण करता है। उसे यात्रा के मध्य में अनेकों विपत्तियों का सामना करना पड़ता है। लेकिन अन्त में वह पूर्ण सफलता प्राप्त करता है। अन्त में पूर्ण वैभव एवं सेना के साथ वह वापिस मैलासुन्दरी के पास लौटता है। कुछ समय तक अपने संसुर के यहां रहने के पश्चात् वह वापिस अपने देश को लौट जाता है।

× × × × × ×

श्रीपाल चरित्र का अज्ञित पाठ

श्रीपद

श्रीपाल की सेवा

वीरदमन तो मुकड़िहू कृषी । परमदिव्य तिरपुई भयो ॥
 श्रीपाल जुंज सुहराज । शिखरक किल को मुकु सल्ल ॥११॥
 सरन जीव की रक्षा करी । दुःख नाम सब जीव में करी ॥
 मनमें परिमह संभव करी । और निरुक्ति सबे अचरि ॥१२॥
 प्राठ सहस्र अतिबर बंत । बीस सहस्र कृषी शिखर ॥
 बीस लाख राधिया दुर्जन । सोलह लाख रव बर बंन ॥१३॥
 पैदल संध्या कहीचन भय । बहुत रिषि को कही बहोड ॥
 संध्या सकलबानि को कही । कहक कथा कहु अंत न खडूँ ॥१४॥

दोहा

प्रशुभ कर्म भयो पूर सब, पुन प्रवृत्तौ बु अर्थात् ॥
 राज कर बिलसै विभो, श्रीपाल बलि बंड ॥१५॥
 कीयो सुजस मुव लीक में, दुर्जन के दर सल्ल ॥
 सकल जीव रक्षा करने, श्रीपाल मुव मल्ल ॥१६॥
 एक छत्र ली भयो नरेस, जाको अतिथन बहुत असेस ॥
 दीपानी ते नृप भाए साथ, बहु सुख दे सम दे नरनाथ ॥१७॥

श्रीपद

सत्त राज पारं बर धीर । दुष्ट जन्मि मर्दे बरधीर ॥
 दयावंत नहीं ताहि समान । कोठि मिटि न सकई प्रांन ॥१८॥
 तिनसीं नेह कियो अस्तमान । बोली श्रीपाल की प्रांन ॥
 सेवन हूँ अपनी करि अए । ते निरर्थ सबही ते भए ॥१९॥
 भरय बकवरि पाली जिगी । राजनीति वह पारं तिसी ॥
 जिनको वांन चहुंमै निर । अतुल सुख ली नुं नित ॥२०॥
 इह जिषि राज करे नरनाथ । सब ही जनमत भयो उभाह ॥
 दीन दुखिहू बह पाले प्राठ । कोठि टका दिन दीवै प्रांन ॥२१॥

पुत्र प्राप्ति

बहुत दिवस यी बीते जाय । रङ्गलै सुन्दर सुन्दरि कीं तांम ॥
 मैनासुन्दरि कै मन चाउ । भयो दोहरी निर्मल भाउ ॥१२१॥
 दान पुन्व परि राषै चित्त । आराधै जिन नाम पबिसुत्त ।
 पुंन दोहरी उपज्यौ किंती । सिरीपाल सब पुरधी तिसी ॥१२२॥
 पूरे भए जबै वस मास । जिन गुन यावत सुष विसास ॥
 भयो पुत्र सब लक्षण सार । कुल ससिहर उमयी कुंवर ॥१२३॥
 सब कुटुंब प्रानंदित भयी । अतुल इष्य अचिग जन वयी ॥
 कही जोषसी सब सुषधान्य । चलपाल है याकी नाम ॥१२४॥
 महीपाल ता पीछै भयी । तीजी पुत्र देवरथ ठरौ ॥
 चौथो भयी महारथ बरी । प्यारि जबे मैनासुंदरी ॥१२५॥
 मंजुसा जाए सुत सात । दुज्जन भजन जिनके गात ॥
 पांच पुत्र जाए गुंनमाल । प्रति बलिंष्ट अरु गुनह विसाल ॥१२६॥
 सब सुंदरी नि सत बर वरे । एक हि एक रूप आयरे ॥
 कोटी भट सब सुत बनए । बारसहस्र आठसँ भए ॥१२७॥
 बाढे दिन दिन सबै कुवार । और ही रूप और व्योहार ॥
 मंडलेश्वर श्रीपाल तरिद । दीसँ मनौ दूसरो इद ॥१२८॥

बोहा

जानै ऐसो फल भयो, भिट्ठी मशुभ सब कर्म ॥
 यहै जानि नरलोक हौं, पाली जिनवर धर्म ॥२०॥

धर्म का महात्म्य

बोवाई

धर्म एक त्रिभुवन में सार । धर्म कुणव बिनासन हार ॥
 धर्म एक सब सुष की कंदु । धर्म एक भंजै दुह दंडु ॥२१॥
 धर्म पसाइ गज गुंजरै । धर्म पसाइ हीस हय करै ॥
 धर्म पसाइ खबर सिर ठरै । धर्म पसाइ छत्र सिर धरै ॥२२॥
 धर्म पसाइ सुष अधिकार । धर्म पसाइ सबै नरपार ॥
 धर्म पसाइ सुजस बिस्तारै । धर्म पसाइ सकल पुष हरै ॥२३॥
 धर्म पसाइ रूप अधिकार । धर्म पसाइ सबै नर पार ॥
 धर्म पसाइ सुजस बिस्तारै । धर्म पसाइ सकल मै हरै ॥२४॥

धर्म पसाह सुरभि तनु होइ । धर्म पसाह जाइ बस मोइ ॥
 धर्म पसाह मिलै बरकारि । सकि बनौ रजा उचिहारि ॥२१॥
 अमृत बन सुष की बांस । सीस सुरभर सेन कांस ॥
 धर्म पसाह होइ ब्रह्म, जने । जिनकी सोख कहत न धर्म ॥२५॥
 धर्म पसाह सेक सुष कसे । धर्म पसाह कर्मज नहि कसे ॥
 धर्म पसाह न बेरी करे । धर्म पसाह सिद्ध नहि करे ॥२७॥
 धर्म पसाह सिध बसि होइ । धर्म पसाह जाय बस मोइ ॥
 धर्म पसाह ज्वाला नहि जरै । सो प्राणी अतुर हूँ परै ॥२८॥
 धर्म पसाह रोर गरि जाइ । धर्म पसाह बरै सब पाइ ॥
 धर्म पसाह न मूर्ख बोर । धर्म पसाह न व्याप्य बोर ॥२९॥
 धर्म पसाह होइ जल पार । नदी सरोवर सागर चार ॥
 धर्म पसाह न दोहै बाढ । धर्म पसाह भिटै बस भाउ ॥३०॥
 धर्म पसाह देव बसि रहै । धर्म पसाह भली सब कहै ॥
 धर्म पसाह उपाटन सबै । धर्म पसाह देखि रिपु सबै ॥३१॥
 धर्म पसाह अथ बुचन लहै । धर्म पसाह लोक सब बहै ॥
 धर्म पसाह अरम भति होइ । माया मोह निवारै सोइ ॥३२॥
 धर्म पसाह देह बहु दोन । धर्म पसाह भिटै अदसान ॥
 धर्म पसाह पंचव्रत बरै । अथ के दुःख सबै परिहरै ॥३३॥
 धर्म पसाह दिव्य नहि चित्त । आराधै विन नाम प्रवित्त ॥
 धर्म पसाह कर्म की नास । धर्म पसाह ज्ञान परकास ॥३४॥
 धर्म पसाह बहुत को कहै । प्राणी मुक्ति जाय बर कहै ॥
 इंद्र आदि सब सेवै पाइ । बहुरि न अथ में आवै जाइ ॥३५॥
 धर्म पसाह मोक्ष गति होइ । धर्म पसाह मुक्ति बर सोइ ॥
 धर्म पसाह अथ पद होइ । जति धर्म बरै सब कोइ ॥३६॥

कोइ

प्राणी सुखी करिष सब । अथ सेवै विन जोइ ॥
 धर्म हिंदू सवार के । काहे सिद्ध पद होइ ॥३७॥

एकह दिन श्रीपाल वरेस । बँठ्यो सबासन प्रलवेस ॥
 वाम भंग मैनासुंदरी । रूपवंत सब ही गुन भरी ॥३८॥
 ढरे चमर सोहे सिर छत्र । हृषित चित्त महा सुम सत ॥
 आगे भाटिक नचै अपार । भीत विनोद हो हि आधिकार ॥३९॥
 बुधजन भाषे जहापुराण । सुनिबै ताको अरथ बचान ॥
 कस्तूरी जीवा अरु भेद । कर्पूर जवादि वासकी भेद ॥४०॥
 कुंकुम सों मर्दो वसु भंग । चहुँषां फँली बास अमंग ॥
 इह सुष आसन बँठ्यो जांभ । आ बनमाली प्रणाम्यो ताम ॥४१॥

मुनि दर्शन

असे भाष्यो मर्यादें सेव । अहे रूपनि ज्ञाननि सेव ॥
 लै फल फूल छहों रितु तनै । जिनकी सोभा कहत न बनै ॥४२॥
 उपवन सब परिफूजित भयो । देवद ही सेरो हुष बयो ॥
 आवागमन भयो मुनि तनी । वा सोभा कैसें कर भनी ॥४३॥
 यह सुनि श्रीपाल तुष्टिषी । सिखासव ते उठि हरषिषी ॥
 सात पैड उसर्यो तब सोइ । प्रोष्यनयो मनमें सुष होइ ॥४४॥
 वस्त्राभरण उतारे सब । बनमाली को दीए तबै ॥
 पुनि बँठ्यो राहनि कौ राउ । सैन समान सु उपज्यो चाउ ॥४५॥
 अति उदार ताको चित्त भयो । बहुत दबै बनपालदमो ॥
 आनदभेरि दिवाई तबै । नगर लोग चलि आए सबै ॥४६॥
 चउरंग दल चल्थी अमंग । अंतैवर सब लीयो संग ॥
 ते परफूलित चली बिसाल । जिन गुन गावत आछी डाल ॥४७॥
 करै सग सब मंगलआार । बहुत परिग्रह चल्थी अपार ॥
 पंथ न सूर्के छिपियो भान । सिरीपाल मनमें रंजान ॥४८॥
 असे दलसों पहुती तहाँ । उपवनअसव मनोहर जहाँ ॥
 कुसमित कुसुम वृक्ष अधिकार । जह तह वासु लेत अलिमार ॥४९॥
 मद पवन अति सीतल नई । अति सुवास अरु को हुष नई ॥
 कछु कदम मोर कछु हरे । कछु रुष फूल कछु करै ॥५०॥

रति बसंत सोहत बन विसी । मुनिवर पुन्य भयी बन विसी ॥
इम असोक सुंदरता मांहि । ताकी अति सुंदर सुम ॥३१॥

सब सुख करि श्रीपाल हि दीठ । ताकी सांग्यो मन की ईठ ॥
ता करि मुझे पिसि सुपहत । मुनिवर बेट्या माहं सहत ॥३२॥

देव्यो श्रीपाल परकेस । मरने उज्जयी सुख ब्रह्मिण ॥
एक परम पद मानं मोह । केवल हुन जगदामोह ॥३३॥

मुनि बरखान

राग रोस नहि जाके वित । संबव केवल वाली वित ॥
तीन मुप्रति बाई बरकल्य । देनभय कृपन समरक्य ॥३४॥

तीन सल्लि फेडव सिक्कांत । यदीन बरन केमुबल्लेन सित ।
भव बलनिधि तारन जिहाज । पंच बहावत भर मुनिराज ॥३५॥

मकरध्वज रंघवी करि बंड । कही परबेमुन जासिन रंड ॥
मद्रु कर्म भावत मय हृष्ट । मद्रु सिद्ध मुनं धारसु सरसी ॥३६॥

नवविधि ब्रह्मचर्य अतिपाल । दसलक्षण गुण धरन येवाल ॥
एकादश प्रतिभा विष्य मोहि । द्वावधानं जसिन जी मोहि ॥३७॥

बारा विधि तप करे प्रमान । द्वादस धनोवृत्त बरन मुजान ॥
बाइस परीसह सहने जकार । पंच सैहावत पासन हार ॥३८॥

देषत उपबं हृषि त्रिसात । सोही मुनि बंधी श्रीपाल ॥
तीन प्रदक्षणा दीनी ताहि । निमसकार कीयो ता चाहि ॥३९॥

भापन अतिवर परबान । नगर लोच संजुठ सफाज ॥
बेट्या ता मुनीस के पास । अति मानचित भयी उलहास ॥
सब मिलि अस्तुति कीयो जवे । धर्मबुद्धि मुनि दीनी तवे ॥४०॥

बहुर्यो निमस्कार करि राज । पुछन लागी मनि धरि भाज ॥
भौ मुनि कथनां सरवर वीर । कही कर्म बुद्धि मुनगपीर ॥४१॥

जार्ते जीवन मरन न छोड । काई कौन सहीपू छोड ॥
दुरप्रति पंच निवृत्तन साज । सोही मने कही मुनि साज ॥४२॥

मुनि द्वारा बर्णोपदेश

यह मुनि मुनि जपें सुम करं । सुनी राइ निज कुलके बंद ॥
 धर्म वृद्धि ही भाषीं पिसी । श्रीजिन आपुन भाषीं जिसी ॥६३॥
 बडो धर्म दस लखान आनि । गुन अनंत को कहै बंधानि ॥
 अरु समिक दरसन सुन जोइ । धर्ममूल है प्रथमह सोइ ॥६४॥
 अमुन लखि समिकत ते सर्व । समिकत ते लहिए सिव दर्ब ॥
 समिकत तीर्षंकर पद करे । समिकत गुन अनंत संबरे ॥६५॥
 सम्यकु सर्व होष सुष नाथ । सम्यकु सबही सुषको करत ॥
 समिकत जिन सुष बाडे सर्व । सम्यक विन भर भवई भर्म ॥६६॥
 सम्यक गुन जाके मन करहि । सबै गुन भावई ताहि ॥
 तपु अपु संजमहुत अरु पुन्य । सम्यक एक किना सब सुन्य ॥६७॥
 अरु सुंति श्यामक ब्रत हो राइ । संघेपीं कहीं लखकाइ ॥
 मन बन्ध काइ निसुध्या विस । जीवै अरु न बीजिए निस ॥६८॥
 धावर विनु कारण ठारिए । प्रथम अनौघत बहु पारिए ॥
 सबै मुष सबै जी रहै । निष्या कवन मूलि नहि कही ॥६९॥
 धलियो बोल बोलिए जबै । जीव विराधत उबरै सबै ॥
 पुरपट्टन कारण मैं काइ । परबन विष्टि परै जो आइ ॥७०॥
 लेइ अदस्तन उत्तिम लोइ । त्रिन समान देखै जिय जोय ॥
 कबहुं न चोर संग जाइए । ताको हर्षीं न अनु साइए ॥७१॥
 परदारा न देखिए नैन । माता बहन सभ बोलहु बैन ॥
 हय गय रय अरु दासी दास । बरनाभरन श्रीर घरबात ॥७२॥
 गाइ नैसि अरु वेत बषांन । इव संख्या कीजिए प्रकांन ॥
 अनौवरत एकादस सार । श्रीर दया गुन पंच प्रकार ॥७३॥

बोद्ध

जो को पारं नाव यदि, सुष मुंई मन सोइ ।
 मय सुष सकल विकारि, मुक्ति अधिक होइ ॥७४॥

पुनि बनोइत सुनि हो राइ । बिसि सब विविदि कोन को जाइ ॥
 इनकी संख्या ही है जोई । एक प्रथमहु न जावी सोई ॥७४॥
 हीन मनेक बसत है जहां । कबहुं भूलिन जरै तहां ॥
 पुन्य प्रभावना जहां न सोइ । तहां विवेकी लोग न कोइ ॥७५॥
 नवी मंजार स्वान मित्र जिले । भोजन इच्छा कहत ही जिले ॥
 तिनपं ते लीजिए सिद्धाइ । बढी एक दुखा है यह दाइ ॥७६॥
 मैन सोह साथ सब रात । महु बाझिए भूत हरिताल ॥
 सब तिन मे बसिए परवांग । धर्मवंत सर्व गुन जान ॥७७॥
 यह उद्यम सबही ते हीन । सर इन बंदिन लेह प्रवीन ॥
 प्रथमहि जिन बैर्यालै जाइ । तब उदिम प्रारंभे प्राइ ॥७८॥
 के प्रतिमां पूरै निज वेह । तब भोजन सौं पोषै देह ॥
 उत्तर दिसि सनमुख सुमथान । पालिक सैन करौ नर जान ॥७९॥
 कीर्ति साम्राजक विन काल । मूलमंत्र जपिये सुविताल ॥
 राग दोत दीजे छिटकाम । पंच परकपुर विरल गुणधर ॥८०॥
 संजम तरवद मैसो छाह । सुभ बावना बरी मनबाह ॥
 तिहता सासक मंडौ सार । पौन न जहां बड़े वैकार ॥८१॥
 एक मांस के बंधह कार । कीर्ति कृत मन सुभ विचार ॥
 बसा भरल रैन बरबांध । पान कुंभक मोय बभिराम ॥८२॥
 इंद्री पोषन कीजे भाव । इनकी संख्या कीर्ति राव ॥
 मंती विधि ते बाडे धर्म । नासै सकल पाप हरि कर्म ॥८३॥
 पुनि अजिवा बाकक बहुवास । सब जे रोन लीन जन पोस ॥
 च्यारि प्रकार पान जो वेइ । समसाक्षित कर सोक लहेइ ॥८४॥
 द्वारपेधन करे निहारि । लीं लीं कबै बहुर परि च्यारि ॥
 करे सोचि कर सीतारि जोइ । लोई जांवी बाकक जोइ ॥८५॥
 सबे सोच करवा साधिवी । अलिप्त जिन लोकीं साधिवी ॥
 जीनीं मरनीं कहुं कसाइ । जीव विराकक लेहुं सिद्धाइ ॥८६॥
 तीं कसल मनबाहि कनाइ । समकित करिके लीकीं जाइ ॥
 हाइ हाइ मुनीं कपटो । इना भाव हर संतप बरो ॥८७॥
 निराधर भरत करि कने विवेइ । काल यह भावै मित्र दे ॥
 ए बारह कर विविध प्रकार । वा संसार मंदि जो सार ॥८८॥

कहै सुनिद सुनी श्रीपाल । इतते बर्मा बडे इनिवार ॥
हरष्यो नृप इह सुनियो जबे । पसाबिबि मुनिवर पूछयो तबे ॥१७॥

श्रीपाल द्वारा प्रश्न

बोला

भो ज्ञान दिवाकर परमगुरु, गुन रत्नाकरि जौनि ।
हमें भवातर है जिसे, तैसें कहीं बषानि ॥१८॥

बोपई

कोन कर्म करि कोढ़ि भयो । क्यों मैं सिद्ध बरु बूत लयो ॥
क्यों हूं पर्यो समद मैं जाइ क्यों भुजबल तिरयो निकुताइ ॥१९॥
कही कर्म स्वामी सो तनी । भांड विगोबी कीनीं घनीं ॥
कवन कर्म ते भेटियो सौहि । यह संसो भेरै मन होहि ॥२०॥

मुनि द्वारा प्रश्न का उत्तर

यह सुनि मुनिवर जै तबे । सुनि श्रीपाल कर्म निज सबे ॥
भरत क्षेत्र सब कुबह निधान । जर्म कोटियम परधान ॥२१॥
तामै रत्न बषापुर जौनि । बन उपवन करि सीमित मौनि ॥
जह श्रीकेतराठ बलि बंड । विद्याकर सोहिबै प्रबंड ॥२४॥
विद्या जानै अति अनुबंध । कुल बल रूह सौर्य धर्मग ॥
तसु मामा श्रीमती सुजाण । सब अंतरेर मैं परधान ॥२५॥
अह निजि पिय मन रंजन करन । रूपवति सोभति भति हरन ॥
जैन धरम पालन परबीन । पश्यहि दान अक्ति अति जीन ॥२६॥
अनह दिन नृप ताहि समान । ययो जिन मन्दिर मंग कल्याण ॥
महामुनिस्वर बंछी जाइ । फिर ताडिन बैठ्यो सुख पाइ ॥२७॥
मुनि सु प्रसन्न भयो सिहवार । लाग्यो बाधन बर्मे बिचार ॥
पुन्य पाप जेही फलु कछि । कह्यो प्रथम राखल सो कछि ॥२८॥
सुनि नृप मनमै हरष्यो जौनि । जंतो सुनिवर कही बषानि ॥
आनंदी राजा बर कियो । जैन धरम पारै सुख कियो ॥२९॥
बहुर्यो अशुन उदै भयो भाइ । आवक बूत दीए छिटकाइ ॥
जोवन यह धीमद भयो राउ । भयो विकल कै कहै बडाइ ॥३०॥

मिथ्या कर्म उदै भयो तास । कैवै सुर मिथ्या की पास ॥
 कपहुं जैन पति बुद्धि जाइ । जिनकर साधन सुनि विव साइ ॥१०३॥
 कर्म बौद्ध साधन कर्म । कर्म बौद्ध कर्म की पास ॥
 मुनिवर एक वैकुण्ठ साइ । कर्म केवल सुनि है कियो ॥१०४॥
 सहे प्रसीदा बहैक साइ । कर्मिन देह बीनी कर्मिजाइ ॥
 हेम पटल सी रहिही साइ । कर्मि साकार न कर्मि जाइ ॥१०५॥
 धर्मसाधन सुख कर्मिजाइ । देह कोन जाही कर्मिजाइ ॥
 ताहि देवि तिव साधुपुत्र कियो । कर्मि कोही जपन कियो ॥१०६॥
 सागर है इरकाको जोइ । ताकी मन प्रभु केक व होइ ॥
 पुनि कस्वा बसुषी मन साइ । जवने के निकसासी साइ ॥१०७॥
 कछु पाप को बंध हूँ कयो । किज मन्दिर सो साधन कयो ॥
 अंनह दिन मन प्रयी सुरन्द । देष्यो तिव मुनिवर समस्त ॥१०८॥
 पर मत नु जाही मुनिराज । राग लेख सांख्यी करि साइ ॥
 घोर बीर तइ बीनी प्रभु । भरयो घुरिसी वीर वंशु ॥१०९॥
 रत्नत्रय वत ध्यावै जित । मांस एक विज साधार विषित ॥
 धावत ही सो नगर मकार । देवि राइ दुष कियो अपार ॥११०॥
 बोल्थो मुनिवर सी तिहवार । ती कत धौई लाज गंवार ॥
 नांगी भयो फिरत बेकाज । काया मैली भति बेसाज ॥१११॥
 मार मार करि उठियो चाहि । घसिबर से सिर काटो चाहि ॥
 बहु कर्मसे तास की करयो । बार्बर कर्मि कर्मिजाइ ॥११२॥
 प्रति हास्य कियो ता तनी । कर्मिन कहै कहानी मनी ॥
 बहुपुत्री कर्मिजाइ भति मनी । ताहि कर्मि जाइ कर्मिजाइ ॥११३॥
 महा पाप बंध हूँ कयो । कर्म के बीचसी सी कयो ॥
 प्रभुपुत्र कर्म कर्मिजाइ की कर्म । मुनि कर्मिजाइ कर्मिजाइ ॥११४॥
 कर्महुं जलमे देत कर्मिजाइ । कर्मिजाइ कर्मिजाइ कर्मिजाइ ॥११५॥
 यह हूँ नि कर्मिजाइ कर्मिजाइ । कर्मिजाइ कर्मिजाइ कर्मिजाइ ॥११६॥
 कौन पाप को कर्मिजाइ । कर्मिजाइ कर्मिजाइ कर्मिजाइ ॥
 महा कर्मिजाइ की कर्मिजाइ । कर्मिजाइ कर्मिजाइ कर्मिजाइ ॥११७॥

बोधा

यह कर्मिजाइ कर्मिजाइ कर्मिजाइ कर्मिजाइ ॥
 निदा कर्मिजाइ करत ही, पीदि रही सुरबाइ ॥११८॥

वीरचरित

राजा आब यकी तिह बार । पहुरी सी रांकी बंधार ॥
 जो देवं तो बिलसी आह । बागी बूझन अनुभवत ताहि ॥१२१॥
 प्रान पिपारी ए बरनारि । करवें कहा सु कहूँहि बिचारि ॥
 हसइ न बीरें जी मुरझाइ । रांकी कहि निरतंत सुझाइ ॥१२७॥
 बोली एक चेटिका तबै । राजा बात सुनों वह भबै ॥
 तुम भावक वृत्त दीयो कांठि । तुम मुनिवर निदे मजमोहि ॥१२७॥
 अर जल में दीने डरवाइ । करि उपनं तबोलिए कडाइ ॥
 काहू मोसो कहिबो आह तातै । बौंठि रही मुरझाइ ॥१२६॥
 यह सुनि राउस लज्जित भयो । अपनीं बूक जानि परनवौ ॥
 बार बार अपैं हे क्रिया । नौ पापी अकमुं सब किया ॥१२०॥
 जो तैं अशुभ उदय भयो आह । सेए मिथ्या गुर के पाइ ॥
 ताकीं सीध नीकै सुंनि लई । नांठी सुमति कुमति अति भई ॥१२१॥
 हूं पापी पातिक की मूर । हौं गुन हीन महा अड़ कूर ॥
 हौं अभिमान महा मय भरो । देवत अंध रूप में परो ॥१२२॥
 तुम सौं कहा कहीं हो साबि । नकं पथ तैं लं मो राबि ॥
 रांणी बचन सुणें ए जबैं । दयावत हूं बोली तबैं ॥१२३॥
 स्वामी तुमी सब अनुसती करी । अयंकया मन तैं बीखरी ॥
 मुनिवर निदे अति दुषययो । सुंनि के मोहि महा दुष भयो ॥१२४॥
 अब तुम सुंनहु अर्थ की रीति । बहुत न्याई मति राख्यो प्रीति ॥
 जिन सारथ्य भूत निबै सोइ । अवनै अनुभवति अनि है सोइ ॥१२५॥
 जो पापी निदे बहु आह । जो इतिहसैं करि नकंहु जाइ ॥
 पंच प्रकार सु बेचहि दुष । किंचित कहुन पावैं तुज ॥१२६॥
 सो प्रांनो पीडिबे दुषाइ । कंचित सुली दीजे जाइ ॥
 पुंनि उचल मैं अरिबैं सोइ । मूर भेट जब ताकी होइ १२७॥
 बहुदूरी उपजे ताहि सरीर । बहु दुःख पावैं प्रांनो कीर ॥
 लंकासनी तम तोरैं मारि । नीदैं ताहि देइ बहु मारि ॥१२८॥
 माली रांम ताकी मुख जरें । कुंठ्याइनि मुहुं कूं पीकरें ॥
 बहुवहाति अति पुतरी साइ । जेअबैं पर कंठे मयाइ ॥१२९॥

परन्तु एतन् वेदु सुख एह । भोह करहु सखी करि लेह ॥
 कसु जीव भति करहु संताप । सो कहि गीत कियो वी पाप ॥१३०॥
 ते त्रिष अह मेदुकी बल करुकी । ते अणयन ह्वित ओ हरुकी ॥
 ते मुनिवर निवे जनिवार । निज कारण मुन बने कथिकार ॥१३१॥
 ते पर हरुकी सीलवत भाणि । सु केवल पापिय की भाणि ॥
 यह दुष मुनि जाह संसार । करहि बरन रूप बांछि सवार ॥१३२॥
 सुनि स्वामी वरकह दुष इसी । तो सी में सु प्रकल्पयो तिसी ॥
 या भवमें कसु पुन्य उपजाह । मुनि वी जिनवर वत ले जाह ॥१३३॥
 यह सुनि राधा त्रिया समान । पदुखी जह जिनेसुर बान ॥
 तहो मुनीसर देखी बीर । सुष की निधि भरु मुन संधीर ॥१३४॥
 ग्यान बरख किमुष उदास । बने करख कल्प सुष जल ॥
 जंये राउ जोरि हँ हाथ । ही पापी भति मुनि ही नाथ ॥१३५॥
 बहुत पाप ये कियो बिचारि । तरक पढते लेह उवारि ॥
 धर्म पयासि पंचवत बरन । भबहु भायी तेरी सजन ॥१३६॥

श्रीपाल द्वारा पूर्वभव में सिद्धचक्र वत ग्रहण

यह सुनि मुनिवर भयो बवाल । सिद्ध चक्र वत ले भूपाल ॥
 तासौ होइ पापकी खेद । ताकी जुगति सुनी यह भेद ॥१३७॥
 कातिक फामन नास असाठ । स्वेत पत्र सब सुष की बाड ॥
 अष्टमी दिन उपवास कीजिए । कसु दिन सिद्ध चक्र पूजिये ॥१३८॥
 अतह निसि जापरन करेइ । दान सुपावहि सो पुन वैइ ॥
 बहु दिन शील बरत पारिए । सेवासेव चिस करिए ॥१३९॥
 पुनि उजोवन करे बरि भाउ । करे प्रविष्ठा घाठ बनाउ ॥
 अथवा सांतिक विधिकी करे । बी जिन पूज करे सो इरे ॥१४०॥
 अजिया सारी दीर्घ भाणि । पुस्तक दीये मुनिवर साणि ॥
 भुंवार तारकाल दीये हो । घाठ अर्घ्य कहे हँ जिये ॥१४१॥
 श्रीनखहर भाष्यो वत एह । करे जोइ सुख नू ये जिये लेह ॥
 यह सुनि राउ जिनेस्वर बनि । निज संसुक गृह कनी घेनदि ॥१४२॥
 गहरी वृत्त जन बरु बरु कस्य । पुन सिद्ध चक्र सुष नाथ ॥
 तीन बार सो वैइ अर्घानि । जन्म जरा वासन सुष भाणि ॥१४३॥

कुंकुम अरु कपूर बर गारि । चंदन लेइ पबित्तनिहारि ॥
 अरु अखंड अक्षत बहु लेइ । उज्जल पुंज मनीहर देइ ॥१४४॥
 धर कैवरी केतुकी माल । चंचेली अरु बेली गुलाल ॥
 चंपक जुही मालती अरु । अविस्ससुगंध अंबुज मन्दार ॥१४५॥
 नाना विधि के बहुप अपार । पूजै भरी अंजुरि सुम सार ॥
 पटरस नईवेद सुभ जोइ । बहु अकवान चढावै सोइ ॥१४६॥
 कपूर दियो तहां धरै प्रजारि । बहु क्रिस्नानर सेवै वारि ॥
 नानाविधि फल पूजै भाउ । जल गंधाक्षत बहुप बनाउ ॥१४७॥
 नईवेद दीपक अरु धूप । सुंदर फल तहां धरै अनूप ॥
 देइ अर्घ्य पूजै सुभ चित्त । सिद्ध जत्र आराधै नित ॥१४८॥
 पुनि उजबन करै धरि भाउ । करी प्रतीष्या धर्म सहाउ ॥
 पूज्यो निमत्तअइइकै जबै । संन्यासह तनु आइयो तवै ॥१४९॥

बोहा

दिव्य देउ सुरपह भयो । मुंज्यो सुष अधिकार ॥
 भाउ मुक्ति चै आइयो, सो तू है श्रीपार ॥१५०॥

चौपई

सुनि श्रीमती अनोवत पारि । पहुती सुगं देह तजि नारि ॥
 तहा तै चै आइ गुन भरी । सोई है मैनासुन्दरी ॥१५१॥
 अरु ए देषि सात सै अंग । पूरब मित्र जु रहते संग ॥
 मुनिवर सौं तै कुष्टी कह्यौ । तातै कुष्टी व्है दुष सह्यौ ॥१५२॥
 तै मुनि जलबोरन उचरयो । तातै तू सागर में परयो ॥
 दयावन्तह्वै काठयो सार । ताही ते तै पायो पार ॥१५३॥
 जो तै भिष्ट भिष्ट करि चयो । तातै भाइ बिगोबो भयो ॥
 असिवर सौं मुनि मारन कह्यौ । तातै त्रास महा तै सह्यौ ॥१५४॥
 पुष्य भवातर सुनि हो बाइ । दुःष सुष यहै भ्रम छिट काय ॥
 यह सुनि मुनि बंधो श्रीपार । व्रत आचरयो सुष अधिकार ॥१५५॥

उपदेश के बाद गृहागमन

आदि अंत पूरब भव सरन । दुःष बिनासन सुभगति करन ॥
 बारंबार नवायो सीस । धर आपनै भयो नर ईस ॥१५६॥

सिध बरक धारायें बिस । जेन बरज प्रतिपाल निर ॥
 पुत्र कविज निर सुम ठान । करै राज बरक सवाल ॥१५७॥
 इच्छित कामे तीगरस सोइ । मैनासु बरि मान बरैइ ॥
 नाटिक नरै बेद बुनि होइ । सत्र राज पारै नृप सोइ ॥१५८॥
 दुरजन बसि कीए बसि बंइ । हय वय तत्र तीरै बहु बंइ ॥
 इन्द्र तुल्य सुष जाइ न निन्वी । महाराज सब ही विधि बन्वी ॥१५९॥
 बहुत काल ययी इह रीति । बसुषा सकल करि बसि जीति ।
 यत्र मुंजरै महामदमंत । हय हीसं देविबै धनन्त ॥१६०॥
 खेवं पाइ बहुंत नर पाल । निति प्रति धारै सरस रसाल ॥
 अष्ट संहस सुं बरि भोगवै । जा प्रताप महि मंडल तवै ॥१६१॥
 बाबै बुधजन काव्य पुरांन । मुनियन जन को राबै मान ॥
 मुनियन जन राबै दरवार । पावै हय गय विभी अपार ॥१६२॥

दीराज्य भाब उत्पन्न होना

एकह दिन भासन विहसंत । मोहूवा नीकिमी मोजंत ॥
 उलकापात भयो बति जांम । देवत ही चित चित्वाी ताम ॥१६३॥
 ज्यो चितत मह ययी विजय । त्योही सो विमुसि सब जाय ॥
 राज भोग धन जोवन बर्क । प्रिये ही मी जैहैं बर्क ॥१६४॥

पुत्र को राज्य देना

यह मनसै चितसै नरेस । ली उदास मन भयो असेस ॥
 धनपाल सुत लबी कुलाय । कलौ राबभाब सै सुष पाइ ॥१६५॥
 र त राब पाली बरबीर । हन निज काज सवारै बीर ॥
 यह सुनि किलम्बो नृवन कुंवार । एहु बचन ती कलौ असार ॥१६६॥
 बालापन सुष लहमी न जानि । हय सुष बर सुष लहो न जानि ॥
 व्हे निर्हासत न कीवी योग । राज बार ही नही योग ॥१६७॥
 तुम निज राज न सोपे होय । अहंरुप को देखे जोइ ॥
 तासौं राब कहै सुनि बीर । कुल बारष प्रगटौ बर बीर ॥१६८॥
 पूत न बहै पिता को राज । कइ सरबै तिक जाइ काब ॥
 जे सुत पिता सुष जहि वैहि । बर सुष को नाब व कोहि ॥१६९॥
 धर जे पुत्र कलंन नहि हरी । वे सुष लहौं राज न सोकरै ॥
 ता सुत अरे हो बर सुष । तासै असारै ययो असार ॥१७०॥

जननी भार धरै दस मांस । दुर्जन डरै न ताकीं त्रास ॥
 बाधिग जाकी आस न करै । ते सुत धर्म चाहि किज धरै ॥१७१॥
 तुमतो सब लायक गुन सार । सीध लेहु राज को भार ॥
 लज्जित रहे जु नवावी सीस । अति रूपो देख्यो नर ईस ॥१७२॥
 यह सुनि कुंबर किशो धिर चित्त । राज भार तब लयो पवित्त ॥
 राइ हरष सुत को भुष चाहि । राज पट्ट बांध्यो सिर ताहि ॥१७३॥
 कहै राऊ सुनि कुवर सुजान । नीकं करि सिख लै परवान ॥
 सील भार जे अंचहि बंध । पररब नीकों देखत अंध ॥१७४॥
 मिथ्या दरसन देषन चाहि । लोचन सफल सदा सरमाहि ॥
 विषै राग कबहु नहि सुनै । मिथ्या कथा न मनमै सुनै १७५॥
 धर कबहु न सुनै परपीर । तेइ सफल अवनसुनि बीर ॥
 नाना विधि के पहुँ अपार । जिन की अति सुवास अघिकार १७६॥
 तिन ते प्रमुदित होइ सुचित्त । नासा सफल जानियो नित ॥
 कबहुँ हीन बात नहि चर्ब । कबहुँ गुन धाताप न तर्ब ॥१७७॥
 स्वाद प्रमाद न मानै सोइ । रसना सफल मानियै जोइ ॥
 सुरत संग नहि बंधै चित्त । इंद्रो सफल महा सुचि नित ॥१७८॥
 दया भाउ मनमै राधियो । मधुर बँन सबसौं भाधियो ॥
 न्याय पंथ पर लिए न जानि । तजिए नही धर्म की बानी ॥१७९॥
 सुष रहियै माया के पास । पुन्यबंत सो रहै उदास ॥
 पिमुन बात सुनियै नहि कान । जीबै न न दीजियै जान ॥१८०॥
 पर उपहार कीजिए प्रीति । बोलै सांच राज की रीति ॥
 कबहुँ लोभ न कीजे चित्त । परधन परदारा परमित्त ॥१८१॥
 बहुत देस पुर पट्टन जिते । भुजबल जीति कोए बसि तिते ॥
 सुत संतोष चित्त अति करौ । बैरी बिभौ त्रषा मति धरौ ॥१८२॥
 बहुत सीष दीन्ही अधिकार । आपन बन पग धारै सार ॥
 बन गछत जानियो नरेस । धायो धुरजन सकल असेस ॥१८३॥
 कोऊ रुदन करै बिलषाह । कोऊ बिलसै अति सुषपाह ॥
 कोऊ कहे बुरी अति भई चंपापुर की सोमा नई ॥
 ध्यावंत सब सुष को आश । केषवंत मानै सुर काम ॥१८४॥
 महाबली मुंबलिन उदारि । दस सुधीन दछ करै बिचारि ॥
 राजरीति श्यवसी राम । यहि बंवलमै जाकी नाम ॥१८५॥

जाके राज सबे सुख तहै । कबहुं पुनै धारिब न गहै ॥
 जाके राज दान ठक कर । कबहुं मन हीन कहुं न कर ॥१८५॥
 जाके राज झूठ अद मये । जाके राज भोग रस रते ॥
 जाके निबन्धी कुल भा गर । भांमिनि, बुरषी खीन की भाइ ॥१८७॥
 जाके राज न मुसै घोर । जाके राज न व्यापै घोर ॥
 जाके राज बहधौ परिवार । दुषी दीन जनको धार्यार ॥१८८॥
 जाकी कहे कथा सब कोइ । घैसी दूबो भवो न होइ ॥
 ये गुन सुनिरं घर लालिबाहि । नरनारी घर घर निखताहि ॥१८९॥

मैनासु बरी द्वारा बोझा पहार करमा

मैनासुन्दरी किष्प कज । चक्रियो घरी जिनेश्वर ताज ॥
 घाठ सहस्र भाग्नि जे धान । तेऊ संय भई परवान ॥१९०॥
 सकल परिवसह सुख छिटकाइ । चाली शीमल की भाइ ॥
 पुरवासी और नरनारि । दिप्या धारन चली निचारि ॥१९१॥
 कोटीभट बन पहुच्यो जबै । महा मुनिस्वर देख्यो तबै ॥
 बंधो म्यान धरम परवेश । साम्यो मस्तुति करन नरेख ॥१९२॥
 जय मंत्रिबन जलकह के भांग । जब दुर्बति धारन परवान ॥
 जय जय सिव रवनी बलहार । जय जय रत्नप्रय इत धार ॥१९३॥
 विषयन बन भूरत मज संत । जय जय मुसु रत्नकर संत ॥
 जय जय सब दीप सुख हरन । जब भद्र जलनिधि तारन तब ॥१९४॥
 जय जय मोह पर पग राज । जब जय कल्पतरु सुख राज ॥
 जय जय कोइ बन्धुमल नीर । जय जय निनिसन भवनीर ॥१९५॥
 जय जय कोइ पाक हत नीर । जय जय नभ कुंजर हरि नीर ॥
 जय जय भद्र कम्प कुल वस । जय जय केवन ज्ञान प्रवास ॥१९६॥
 जय जय सुर सर सेवै काम । जय जय केवल मयन राइ ॥
 जय जय सुर मर सेवै इंद । जय जय कल्परा रस विनसाइ ॥१९७॥
 जय जय सुक सुफल मुक्ति राइ । जय जय सुर कर सेवत प्रसाइ ॥
 जे जे धर्याकांत मुज, कंत । जे जे प्रभु नरयन सुर सेव ॥१९८॥

बोझा

भो गुन सावर परबसुन, सरस्य काइयो सोहि ॥
 या सवर सपुत्र भै, कुकत पायो मोहि ॥१९९॥

चौपई

मो कौ वृत्त दीजै सुभसार । जो चहुंगति कुल खेदन हार ॥
यह सुनि मुनिवर जंपं एह । धनि सु जिन यह कीयो नेह ॥२००॥

श्रीपाल द्वारा मुनि दीक्षा ग्रहण करना

बहुरयो तू भव दुष न लहै । जामन मरन सबै भौ दहै ॥
यह सु नि श्रीपाल जीय धर्यो । सिमां सिमंतर सबस्यो कर्यो ॥२०१॥
मित्र भाव सबसौं परगासि । राम रोस बोज जिय नाषि ॥
पुनि सेहुर मणि वृषित सीस । छिनमै लयो उतारि नर ईस ॥२०२॥
ककन कुंडल दीए डारि । मूके वस्त्राभरण उतारि ॥
पंच महाव्रत पर चित्त दियो । पंच मुठि सिर सुंचन कियो ॥२०३॥
वाह्याभ्यतर श्रुष सभयो । अति निर्गंध भयो गधु गयो ॥
जो हौं सब सुष सेवन जानि । तिन दिष्या लीनी परवानि ॥२०४॥
कुदपहू रानी सुभ चित्त । अजियौ कौ वृत्त लियो पवित्त ॥
मैनामुंदरि सब सुष कनं । दिष्या लीनी जिनवर सनं ॥२०५॥
बछाभरण भोग सब गवुं । छिनमै छांडि दियो तिहू सवुं ॥
रैनमंजूसा अर गुन माल । तिनहू दिष्या लई गुनाल ॥२०६॥
नि तरेहू पीमा परधान । और ज अंतेबर कछु आन ॥
दीक्षा सवनि लई धर भाउ । माया को सब लक्ष्यौ उपाउ ॥२०७॥
और जु हुते सातसं अंग । दिष्या तिन हूं गही अर्चंग ॥
जो कछू राज भित्त है और । दिष्या सबनि लई तिहू ठौर ॥२०८॥
तब श्रीपाल अमै बनराइ । महा मुनिसर भयो शुभाइ ॥
ताके सिर परि शीषम भोन । महा तपै को कहे बधान ॥२०९॥
बर्षा सीत परं असरार । सहै दुष मनमै अधिकार ॥
कृष्णागर बहु कुंकुम बारि । तन चरबतो निहारि निहारि ॥२१०॥
सीत तुसार छाया ता देह । तपमै ती जान्यौ अति नेह ॥
चालै महाहृता की छांह । इन्द्री बन डाल्यौ छिन भाह ॥२११॥
दिड चरित्र धर्यौ जिय जोइ । अठाबीस गुनै वारं सौई ॥
निज पद आरावै गुन राउ । अमै अकेली चित्त शुभाउ ॥२१२॥
देह जोग बन भीतर जाइ । बहुत सई उपसमं सुकाइ ॥
धरं ध्यान अति धीरी चित्त । ठाडी आनौं मेर पवित्त ॥२१३॥

मास एक दिन कहै बहोर । सही परीसा बाईस सोर ॥
 पावत रिति द्युम तरि सो रहै । शीघ्रम रिति गिर परि कुय सही ॥२१४॥
 सीत कास बाबर के लीर । जोस देह दुष सही सरीर ॥
 बहुत भई अति कीनी देह । छांटे सब सुष भव नेह ॥२१५॥
 हिम पटल तन छावी ताहि । सब सुष लहिए तास न चाहि ॥
 एक ध्यान ठाडी ली रहै । कोऊ तकी भेद न कहै ॥२१६॥
 कोऊ कहै चित्र निरमयी । काहु तनु पाहन की चर्षी ॥
 कोऊ कहै काऊ की देह । मन बच क्रम प्रीत गिर नेह ॥२१७॥
 बनचर जीव न सी मन घरै । तासी देह पसै सुष करै ॥
 पंथी बैठे मर उडि बाहि । ताकी संक न कछु कराहि ॥२१८॥
 हंस तूल्य की सेप्या बीर । जो सोवंबी साहस कीर ॥
 गिर कंदरा लैन सो करै । कछुन दुष अपने मत घरै ॥२१९॥
 जो चलती बहु दल बड साधि । ह्य उपरि जो चलती गडि ॥
 बिनहि सुखासन चलती राड । छत्र छांह चलती गरि बाड ॥२२०॥
 ताके सिर से शीघ्रम मान । महा तप की करै बखान ॥
 वर्षा सीत परै प्रसरार । कहै दुःष मनरी अतिकार ॥२२१॥
 कुम्भाकार बहु हूँ कम गारि । तन चर्चती निहारि निहारि ॥
 सो तुमार छावी ता देह । तबले प्रब मासी अति नेह ॥२२२॥
 यह सहेन चित्त रमती जीव । सही परीसा बाईस सोह ॥
 मन बच काम बिचारी निर । जानै एक सस बच निर ॥२२३॥

बोहा

जीवान् मुनि को कं बल्य प्राप्ति

तप कर्तुं मन सुकर, किन्ही करय की करस ।
 ताकी उपमासी विषय पद, केवल ग्यान पत्राड ॥२२४॥

जीवान्

बंशकृती की रचना

धासन को देवनि तपै । ज्ञान सब सर जै जै बने ॥
 बनपति निर्माणा सुखान । बंशकृती रचिबो परबान ॥२२५॥

कंचन मनि रतननि सौं बरी । अति रबनीक विद्याजै बरी
 उग्रय अमर वीरै छिर छत्तु । चौ संपह बंधिबौ महत्तु ॥२२६॥
 तीन प्रदक्षिण दे सुर राइ । भयो करन अस्तुति बरि अउ ॥
 जै जै अष्ट कर्म निरदखन । जय जय प्रभु विष्णुवन के सरव ॥२२७॥
 जय जय श्री मंडल परमेस । जय जय मुनिवन व्रत उपवेश ॥
 सिद्ध चक्र फल पावन देउ । जै सुर नर असुरनि कृत सेउ ॥२२८॥
 जनम जरामृत नासन हार । जै मिथ्यामत बंधन हार ॥
 जै जै सीतल बाधन धीर । जै जै प्रभुनासन भव भीर ॥२२९॥
 जै जै काम कंज हीम पूर । जै जै अक्षतम नासन सूर ॥
 जै जै पंच महाव्रत धारन । जै जै मोहबली बल हारन ॥२३०॥
 जै जै कोह सिध हत बीर । जै जै घम्भ सुराधर धीर ॥
 जै जै चोगय कंद निकंद । जै जै जगमंजन दुह दंद ॥२३१॥
 जै जै धारज तन सुभ संत । जै जै मुक्ति बधू बरकंत ॥
 जै जै चरन धराधर सेस । जै जै भासुर मन हर नेस ॥२३२॥
 जै जै ग्यान कोस मुनिराइ । जै जै त्रिभुवन जीव सहाइ ॥
 जै जै सम्यक दरसन सूर । जै जै लोह महीषह चूर ॥ २३३॥
 इह बिबि स्तुति करि अनिवार । इन्द्र आदि सुर नरअपार ॥
 पन बिबि सुरलोका गण सबै । निज यानहु मुनि बँट्यौ तबै ॥२३४॥
 लोयालोय पयासै सोव । निरमल बानी ताकी होव ॥
 भव्य जीव प्रति बोके जैन । मिथ्यातिमर बिनाखी केन ॥२३५॥
 सिद्ध चक्र व्रत प्रगट्यौ करयी । राव रोस तिन सब पर हरयी ॥
 धर्माधर्म प्रकासक संत । भाष्यौ जिन व्योहार महंत ॥२३६॥

निर्वाण प्राप्ति

सुर नर पसु पंथी मन जिते । जिनवर मंगल गावै तिते ॥
 कर्म धातिया चूरै तबै । दीरघ काल भयी कछु तबै ॥२३७॥
 पुंनि श्रीपाल निमल पद गयी । धमर मुक्ति सिध सौं भयी ॥
 अठु महा गुन पाई सिद्धि । परब्रह्मचरि भवी लहि रिधि ॥२३८॥
 जन्म जरा तिन चूर्यौ मर्न । सो भयी स्वामी त्रिभुवन सुर्व ॥
 समकित शाण दसै बीर्य सुमंहत । अकगहण अगुदमहु अर्थाहृत ॥२३९॥
 सिद्ध विराजै जीति निर्वाण । सुख अनंत निवसै तिहु बाण ॥
 सुर नर मन मंडव बरि भाउ । धाराचै मनमै करि भाउ ॥२४०॥

दीहा

सिद्ध चक्र व्रत प्रगट करि, पंच सङ्गहात न हि ॥
 श्रीपाश मुक्तिह भयो, सब सुह सबल विह्वलि ॥१५१॥
 इति श्रीपाल चरित्र महापुराणे अथ्यसंघ मन्त्रन करण ।
 बुधजन मन रंजते, पातिय पजन सिद्धचक्र विधि मुखहरन ।
 त्रिभुवन सुख कारण मन्त्रजल तोरण चौपई बंध परिमल्लङ्घते ।
 वह राजकि क्लिप्तस भग जस निजउ बहु विभूति को करनि कहै ।
 पुर पट्टन सब परहरिगव्यं पञ्चमहाभुव सार काव ।
 सुम ग्यान उपायी त्रिभुवन गावो कोटीभट्ट सो भुक्ति भव्य ॥ ११६५॥

चौपई

मैनासुन्दरी को लखलखा

पुनि मैनासुंदरि अत लीन । करै महातप वन प्रति वीन ॥
 तही परीक्षा कही न जाइ । जानत विधि को कहै बनाइ ॥ १॥
 कंधन बरन देह प्रीतरी । कूंकम मंडित ही पल घरी ॥
 कामातुर रहती प्रिय संग । सो बन बसे सहै दुष भंग ॥ १॥
 प्रति सुबास कूंकम रस गारि । मूषन बहुत पहरली गारि ॥
 सरद महल रहती सुषबास । कुमुम सेज सोवती जलहास ॥ ३॥
 दीपन जोति बहति ही जाहि । सुष रहती रैन बिन काहि ॥
 मंद पवन बहती हिन राति । कुमुमनि को बीजको सुहति ॥ ५॥
 प्राप प्राप कोकरे सुजात । कसी सेवतिही दिन जान ॥
 भिन बदन बहकी करीर । बहती तहां स्नेह की खीर ॥ ५॥
 धंजल मंजन मूषन साव । तन मुखही प्रीति प्रिय काज ॥
 धंजुज दल रहती कर लय । रहती पासकनि परि पय खई ॥ ७॥
 साती प्रति सुहंघ बंध सार । तज लपति कसती कतिनार ॥
 सो ठाडी गिर परि सुकमाल । विर पर तपे जैन तिहकाल ॥ ७॥
 पातिक पर रहती मन चाउ । बुधि परि बूझि न बरती पाउ ॥
 कोवक कमल नैन अचिकार । पम नेवर पहरे मूँकेकार ॥ ८॥
 वहि उपरि सुकती कुमबोस । तउ पन वेती जनी घरास ॥
 स्वामि ज्ञान विनती तिह काह । बरलाह बहती बहु भाह ॥ ९॥

इह विधि जिन चैत्याल जाइ । मुनि बंदती सयल सुबपाइ ॥
 अब सो बन भारत पग धरै । ग्रीषम रिति सिकता पर जरै ॥१०॥
 सरदै सोमवदन बिकास । मल निवारती देषिय पास ॥
 ग्रीषम महल महा परभात । हो ती मलिन सीत कै घात ॥११॥
 हिम पटलनि करि छायाँ सोइ । पंडुर वरन कहै सब कोइ ॥
 इह विधि कष्ट सई वर नारि । नाना विधि को कहै बिचारि ॥१२॥
 संन्यासहि तिन तज्यो सररीर । तिज बरजाइ छेदियो कीर ॥
 अच्युत स्वर्ग देव भयो तेह । अपछरि कोटि भई ता गेह ॥१३॥
 वाईस सागर घाउ प्रधान । विलसै सुष को कहै बषान ॥
 बहुर्यो चै जैहै शिव थान । हूँहै सो परमेस प्रवान ॥१४॥
 कुंद प्रभा रानी सुभ बिल । वंही विधि तप चर्यौ पबिल ॥
 तप छांडघी केवल पद जोइ । तै ही सुरग भयो सुर सोइ ॥१५॥
 रैनमज्जसां तप प्रति कर्षी । पहती सुरग बहा सुभ धरषी ॥
 करषी महातप भीर ज नारि । सुभ गति सब को भई बिचारि ॥१६॥
 इह सिरि सिद्धचक्र फल सार । सोभब दुःख विनासन हार ॥
 सब ही जीवनि कौं हैं सन । जनम जरा नासन सुभ कर्न ॥१७॥
 भो मगधेस सुनीं धरि भाउ । जहां श्री सिद्धचक्र ब्रत घाउ ॥
 झंसी विधि श्री शिक नर पार । गनहर पै सुनियो सुभसार ॥१८॥
 मनमै कछौ वृत्त धरि साउ । नाना विधि मन उपज्यी जाउ ॥
 मन बन्ध क्रम बंधी जिन नाहु । पहुंची नगरी बघ्यौ उछाहु ॥१९॥
 हुय गय रथ भर दासी दास । अतुल लखि बहु जोग बिलास ॥
 करै राब सौ इन्द्र समान । कीरति महि भंडल परवान ॥२०॥

बोहा

चुंज्यो सुष संसार कौ, श्रीपाल इन्द्र समान ॥
 सिद्ध चक्र ब्रत पसरि करि, अमर्यो मुकति मिलान ॥२१॥

श्रीपई

सिद्ध चक्र ब्रत का महारम्भ

भरु नर गारी उत्तम लोइ । सिद्ध चक्र अमर्यो जोइ ॥
 मन कौ भरम देइ छिट काइ । पुनै जंजहि बिर कल लख ॥२२॥

जस मंचालत पुहुप अनूप । नेकेय दीपक अरु सुन चूप ॥
फल नामा विधि अरुष बढाइ । अष्ट प्रकारी पूज कराइ ॥२३४॥

ताके रोष कोष कहि रहै । अग्नि रूप धारिनि रहै ॥
पुत्र कलित्र वियोष न होइ । भूह पिताच हुक्यै कोइ ॥२३५॥
बाइन साइन जोवन जाति । के असांन गावै दिन राति ॥
इनको मै न ताहि संबरै । जो को सिद्धचक्र व्रत धरै ॥२३६॥

नैन निरंघ नैन द्वै लहै । रसना हीन बेद भूनि कहै ॥
भवन हीन सब सुनै सरूप । कुष्टी तन सीं होइ अनूप ॥२३७॥

कनक बरन तन ताकी होइ । मन बच क्रम व्रत पासै सोइ ॥
सुष धपार मुंजै ससार । पावै ह्य गय अगम अपार ॥२३८॥

पावै रतन हीर मनि बंद । पावै हेम पेम सुष कंद ॥
अंतेवर अपछरा उनिहारि । पावै इच्छ जु मनह मकारि ॥२३९॥

होहि वास अरु वासि घनै । सेवै पति कहि मंडल घनै ॥
दत गहै तिन मानै हारि । आइस नैक न सकई टारि ॥२४०॥

मुंजै सुष जो मनमै धरै । इन्द्र समान राज सो करै ॥
अति महिमा को कहै बढाइ । निहचै सो नर मुक्तिह काइ ॥२४१॥

श्रीपाल जैसे फल लहौ । कवि कटिबल्ल भवट करि कहौ ॥
भविजन सुनौ सुफल तिय जाति । यह व्रत आरक्षै परबनि ॥२४२॥

एक चित्त राखै मग ध्यान । सुष विधि उपजै सीम्यान ॥
या संसार सयल सुख लहै । बहुदयी मुक्ति पाइ हुन कहै ॥२४३॥

काव्य

उभं बोधरी संकटसंगतं तत्त्वं चरं भूमितं
जं धीरं हृत्तिमदरं ब्रह्मलं साधानं सुखकथं ॥
तन्मध्ये श्रीमानसिंह अचिपते पुलोकधर संज्ञते ।
अन्त्यायं सुरनाथ सुखवर्षितं तत् क्रम संकथते ॥२४४॥

सुजस रजत कुसुमो नामेन चंद्रिणम् ।
तत्पुत्रो बुधै रामिवास विपुल मुक्तं तं ज्ञानं सदा ॥
तत् सुसुफलदीपकस्तु प्रकट नामा लकरलो मुक्तः ।
तत्पुत्रं श्रीरामलक्ष्मण धर्मसंग्रह ग्रन्थं ह्यं कीयते ॥२४५॥

।सालि

।बीपद

गौधरि गिरि गद्गु उत्तिम आन । सूरबीर तहां राजा मान ।
 ता धाने चादन चौधरी । कीरती सब कामे बिल्लरी ॥३५॥
 जाति बरहिमा गुन कामीर । अति प्रताप कुल राजे धीर ॥
 ता सुत, रामदास परबीर । नंदन आसकरन सुभदीन ॥
 ता सुत कुल मंडन परिमल्ल । बसे आगरे में अरि सल्ल ॥
 ता सम बुद्धि हीन नहि आन । तिन सुनिषी श्रीपाल पुरान ॥३७॥
 ताकी छांह कछु मति भई । तब श्रीपाल कथा बरनई ।
 कीनी बीपई बाध बषान । नवरस मिश्रित गुनह निधान ॥३६॥
 हीइ अशुद्ध जहां पद हानि । फेरि संवारो कवियन जानि ॥
 बार बार जंपोकर जोरि । बुध जन मोहि देहु मति पोरि ॥२२२२॥
 मंदी गुरु जे गुण के मूर, जिन ते होयमान आपूर ।
 मंदी जिनबानी सोहनी, जाते सुरगति होय अति छनी ॥
 नंदी कविकुल गुनह निवासु । जिहि पुरानु प्रगट्यो सुखवासु ॥
 नंदी पण्डित करै बषान नंदी श्रोता लोग सुजान ॥
 नंदी जैन समा चिरकाल, नंदी जीवदया प्रतिपाल ।
 छेव कथा को अश्री असे, जिनकर बरम आराधी सबे ॥
 जो अब बुद्ध विनासन हारु, जो त्रिभुवन के जीव सिंगारु ।
 जो त्रिभुवन बर मंचल करन, आदि अत धीन को सरन ॥
 जो शिव रमसै कौ बरु भयो, जो जिनदेव समा को अयो ।
 ताकी कथा निरन्तर भई, कवि अक्षिमल्ल कथा वरण ॥
 धिर मनु कथा सुने जे कोई, मरु वांछित कल पावै सोई ।
 अरु जो पठे पढावै सोय, कसके बोतै अशुभ न होय ॥
 अरु जो नरु नारी व्रतु करै, सो बहु मति को भ्रमणु हरै ।
 अखनको उपदेश बताय, निहचै सो नरु मुक्ति हि आय ॥
 इति श्रीपाल कथा परिमल्ल कृत भाषा श्रीपादबोध संपूर्ण ॥

। यह पाठ मूल प्रति में नहीं है ।

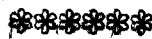
सुन्दर

नगर आगरे मधि रहे आसमबंध गाँही ।
संबति बंसकि साल जेठ सुदि दसमी-गाँही ।
सिष्ठी बरिज जीबल मीस एक ब ।
निजु घर हेत की काज मिटै कोषादिक बी कै ।
यह नरंघ बाँची सुनी, सील छिमा पीरज गइ ॥
सुख नति बाँची बेवही, कर्मकाटि निरपण कहै ॥

॥ श्री ॥

मिति पौस बुधि १० दीतबार सं. १८८६ ॥

समाप्त



कवि धनपाल

धनपाल कवि अब तक हमारे लिये अज्ञात एवं अज्ञचित हैं। कवयित्री भाई अजीतमति के समान प्रस्तुत पुष्प में ये दूसरे कवि हैं जिनका यहां परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है। धनपाल कवि की रचनाओं का संग्रह टोंक जिले के प्रमुख बैंगणव तीर्थस्थल डिग्गी नगर के दिगम्बर जैन मन्दिर के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत एक गुटके में उपलब्ध हुआ है। लेखक ने जून १९८३ में जब नगर के शास्त्र भण्डार के सूचीकरण का कार्य किया तब इस महत्वपूर्ण कवि की रचनाओं का पता लगा सका।

धनपाल प्राचीन कवि देल्ह के सुपुत्र थे। ये वे ही देल्ह कवि हैं जिनकी अब तक बुद्धि प्रकाश एव विशाल कीर्ति गीत नामक कृतिया उपलब्ध हुई हैं। दोनों ही लघु रचनार्य हैं। इनके एक पुत्र ठक्कुरसी बड़े अच्छे कवि थे जिनकी अब तक १५ कृतियां प्राप्त हो चुकी हैं। कविवर ठक्कुरसी का विस्तृत परिचय एवं उनकी कृतियों के मूलपाठ हम श्री महावीर ग्रन्थ अकादमी के दूसरे पुष्प में देख सकते हैं। ठक्कुरसी के परिचय के आधार पर धनपाल कवि संभवतः देल्ह कवि के दूसरे पुत्र थे। इसलिए ये भी दू डांड के प्रसिद्ध नगर चम्पावती के रहने वाले थे। कवि जाति से खण्डेलवाल दि० जैन एव गोत्र से पहाड़िया थे। धनपाल कवि ने अपनी अधिकांश कृतियों में अपने बड़े भाई ठक्कुरसी के समान अपने आय श्लो "देल्ह नंदन लिखा है।

समय—कविवर ठक्कुरसी का समय हमने संवत् १५२० से १५६० तक का माना है धनपाल ठक्कुरसी के छोटे भाई थे इसलिये इनका समय संवत् १५२५ से १५६० तक का माना जा सकता है। स्वयं कवि ने अपनी कृतियों में रचना काल का उल्लेख नहीं किया इसलिये उक्त समय ही ठीक जान पड़ता है।

कृतियां—धनपाल कवि की ठक्कुरसी के समान अधिक रचनार्य तो उपलब्ध नहीं हो सकी हैं लेकिन एक ही गुटके में उपलब्ध कवि की रचनार्य निम्न प्रकार हैं—

1. दोकये—कविवर बूचराज एवं उनके समकालीन कवि

लेखक एवं सम्पादक—डा० कस्तूरचंद कासलीवाल, पृष्ठ सं. २३८—२६५

१. मुनिसुव्रत जिन बन्दना
२. वैश्वामित्र बन्दना
३. वर्धमान गीत
४. भादि जिन गीत

इस प्रकार मुटके में कवि की चार लघु कृतियों का संग्रह मिलता है। राजस्थान के अरब शासन भग्दारों में हो सकता है प्रथम कवि की और भी रचनाओं की उपलब्धि हो जावे। उक्त चारों कृतियों का परिचय निम्न प्रकार है:—

१ मुनिसुव्रत जिन बन्दना :—

कवि की यह एक ऐतिहासिक बन्दना है जिसमें राजस्थान के कश्मीर में स्थित केशोराय पाटन के प्रसिद्ध जैन मं में विरा. भगवान मुनिसुव्रतनाथ की बन्दना का वर्णन है। वर्तमान में केशोराय पाटन नाम से प्रसिद्ध नगर वहिले पाटन नाम से और इसके पूर्व आश्रम पत्तन नाम से प्रसिद्ध था। स्वयं कवि जनपाल ने पाटन को अतिशय क्षेत्र जिखा है जहां भक्तमण बन्दना के लिए धाते रहते हैं और अपनी मनोकामना पूर्ण करते रहते हैं। ऐसे पाटन नगर में मुनिसुव्रतनाथ का अतिशय क्षेत्र है जिसकी बन्दना के लिए मुनि आर्यिका, श्रावक श्राविका सभी धाते रहते हैं। इसके पश्चात् कवि ने भगवान मुनिसुव्रतनाथ के पिता सुमति राजा, माता पद्मावती एवं उनके लक्षण कछुवे का उल्लेख किया है। इसी तरह उनके शेष जीवन का भी अन्वय में उल्लेख किया है। पूरी बन्दना अरब शब्दों में पूर्ण होती है और अन्त में कवि ने अपने पिता एवं स्वयं के नामोल्लेख के साथ भगवान मुनिसुव्रतनाथ की कृपा की याचना की है :—

पद्म कमल श्रेष्ठि देखे बहस बन्धनपन्न किया करते ।

मनसुव्रतों के अंत धारं सदा मन्त्र लखत चरो ॥१॥

कवि ने अपने कवि के अन्वय में भी भगवान मुनिसुव्रतनाथ के दर्शनार्थ सपरिवार जाने की प्रार्थना की कवि ने उक्त बन्दना को राय मन्दा/मल्हार में लिखा है।

२ वैश्वामित्र जिन बन्दना—

कवि की यह दूसरी ऐतिहासिक कृति है जिसमें भगवान वैश्वामित्र की बन्दना की गयी है। इस गीत में जयपुर राज्य की प्राचीन राजधानी धामेर के वि० जैन मन्दिर साबला बाबा के (नेमिनाथ स्वामी) स्वयं के पश्चात् नेमिनाथ स्वामी के माता पिता, जन्म स्थान, तोरण द्वार के जीटने की बन्दना, जयपुर के स्वयं

विरनार पर्वत पर तप, कंबल्य एवं निर्वाण कल्याणक का वर्णन किया है। १५वीं शताब्दि में धामेर के सांबला बाबा के मन्दिर में स्थित लेश्वरदेव स्तव की मूल नायक प्रतिमा अत्यधिक प्रसिद्ध एवं सतिशय युक्त मानी जाती थी। कवि ने जिसका निम्न प्रकार वर्णन किया है :—

जाहि नाम लीया दुरित नासौ, गुणह गणत न पार ।

भंभावती प्रतिव्यंब, शोभिता स्याम बरौ गहीर ।

बन्दहु सुभ वियहु नेमिं जिराबर, दोइ अट्ट शरीर ॥१॥

इस बन्दना मे पांच छन्द हैं। कवि ने इस गीत मे अपने आपको देह तनय लिखा है।

३. बर्षमान गीत :—

यह कवि का तीसरा ऐतिहासिक गीत है। इस गीत में कवि ने जबपुर से १२ किलो मीटर दक्षिण में स्थित प्राचीन नगर सांगानेर के संघी जी के मन्दिर मे विराजमान महावीर स्वामी की स्तवन के रूप मे भगवान महावीर का बांती पिता, गुरु, तप कंबल्य एवं निर्वाण स्थान पावापुरी का उल्लेख किया है तथा गौतम आदि ग्यारह गणधरों का एवं अन्य षट्नामों का वर्णन किया है। गीत में पांच छन्द हैं। सांगानेर मे संघी जी के मन्दिर का निर्माण १२वीं शताब्दि में हुआ था। मन्दिर अपनी कला एवं शिल्पों के लिए पूरे राजस्थान में प्रसिद्ध है।

४. आदि विन गीत :—

यह कवि का चौथा गीत है जिसमें प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ का स्तवन किया गया है कवि ने टोडारामसिंह के दि.जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी की प्रतिमा को अपने युग में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण विभाष्य है। गीत के शेष भाग में इसी तरह का वर्णन है जैसे उक्त तीन तीर्थंकरों के गीतों में वर्णन किया गया है।

इस प्रकार चारों ही गीतों मे कवि ने स्थान विशेष के मन्दिरों में विराजमान प्रतिमाओं का नामोल्लेख करके उनमें इतिहास का पुट दिया है। कवि का मुख्य निवास चम्पावती था लेकिन वहां के किसी मन्दिर की प्रतिमा का उल्लेख नहीं करके पाटन (केशोराय) धामेर, सामानेर व टोडारामसिंह के मन्दिरों के महात्म्य का वर्णन किया है।

भाषा—गीतों की भाषा अपभ्रंश प्रभावित राजस्थानी है। कवि का मुख्य कार्य क्षेत्र दू.डा. प्रवेश था इसलिये गीतों की भाषा में दू.दारी भाषा का भी प्रयोग हुआ है।

गौतों के मूल पाठ

मुनिमुक्ता जिन बन्दना

रागु मसार

सकल जिहोसर पणउ सरसैं बरि ध्यानो जी ।
 ए जह पाठखु नगर भलें तहं अतिसय भानो जी ।
 इक भानु अतिसय वेनु जाणिवि भविक जन बंदे बख्सा ।
 ए तुरिय संघ भानंद उपर्ज होइ महोछा जिरा तणा ।
 परत्यासु पूरैं विषन चूरैं प्रमट जिहोवरु जाणि जे ।
 पाठख नामकि सुधिरु बैठैं सुव्रता जिन बंदिजैं ॥१॥

ए जो सुमति नरेसर नंदण पदबावती मातो जी ।
 तसु लछनि काछिव सोहैं स्याम सरीरो जी ।
 इक स्याम बर्याहि अति मनोहर देखतां मनु मोहिए ।
 इंद्रादिकह जामण महोछा मेर सिहरां सोहिए ।
 गायति किन्नर अवर अछरि आणि माय सम्भपए ।
 वीसमै जिहोवरु वादि सखी हे मनह बंछितु अण्पए ॥२॥

ए जहि आर्यो हो जोबनु अंतु भयै गैयरगो जी ।
 ए जहि जीतैं हो मदन भयंकक उपसम रागो जी ।
 उपसम रागां मदन जितैं पंच भावव टालए ।
 दसण एाण चरित्तमय जीय एाण केवल पालए ।
 दश अठ गणहर मलि आविहि समोअरखैं छज्जए ।
 मनसुव्रतां जिन चरख जंदे दुरित रायलां मज्जए ॥३॥

ए जो बसु बुख भंडित जिहोवरु मुकति दातारो ।
 चउठीसति अयरां शोचिता गुणह अपारजजी ।
 अपार गुणह न पार खाम विविध जीव हितंकरे ।
 मनबच क्रम तरनारि सेवै जनमि जनमि सुखंकरो ।
 पद कमल सेवित देहह मन्वव भन्नपास क्रिया करो ।
 मनसुव्रतां जे जात भावै सदा संपसु त्पाह करो ।

२. नैमीदिन बंनना

राम सौरठी

पराश्रो आदि जिरांदो जहि पराश्रो होइ भनंदो ।
 गुण प्रगट करे निशिचंदो, है गाउं नैमिजिरांदो ।
 गुण गाइसै श्री नैमि जिरावर, सयल सुख दातार ।
 जहि नाम लीया दुरित नासै, गुणह गरात न पार ।
 अबाबती प्रतिव्यंब शोभिता स्याम वरां गहीर ।
 बंदहु सुभ वीयहु नैमि जिणु, दोइ अठु अनुष शरीर ॥१॥

सूरीपुरह उपभो, राइ समव बिजै सुत धनो ।
 वर लक्ष्मण गुण सपुन्नो, सिवदेवी कृषि रतनो ।
 सिवदेवी माता उरि उपनो, सयल सुरपति आइया ।
 ले मेर सिहरां करि महोछा, इंद्र भागं नचिबया ।
 तिहु ग्यान करि संजुत्त, दीसै सुन्दरा आकार ।
 बंदहु सुभ वीयहु नैमि जिरावर, जादम अस सिरागर ॥२॥

हलि सम्बविर्षं गोबिंदो, तुमे उपसेणि धी मंगो ।
 राजमती खरीम सुचंगो सा परणं नैमि जिरांदो ।
 नैमि जिरावर व्याहरण चढिया, तोरणि ताम पराइया ।
 हकारि सारथि वेमि पूंछां, जीव काइ पुकारिया ।
 ए भगति होइसी तुम्ह तरणी राय उपसेणी असाइया ।
 रथु मोहि पाछै चलै जिरावर, जाइ चढै गिरनारिया ॥३॥

सो जाइ चढै गिरनारे जहि तजीये राजमती नारे ।
 सब अथिख जाणि ससारो, मुणि धरं महान्नत भारो ।
 व्रत भार ले छद्मस्तु रहिये लोयती यह पसंसीयै ।
 वरदत्त धरि पारणं कियै, प्रथम गराहस आइयै ।
 बाणीय सरस विसा कोमल, भवि जनहु नमंसीये ।
 बन्दी हु शुभवियी नैमि जिरावर, सम्बजीव अमो दियो ॥४॥

छायल गुणह संजुती, वाइसमु जिरावर पत्तो ।
 दश अठ दोश थे चत्तो, पुणु अठ गुणह संयुरी ।
 तिहु लोक बंदित चरण जिरावर, संख लक्ष्मण सोभियो ।
 गिरणारि गिरि निर्वाण थाएक अठमी पुहबी गयो ।
 नरनारि जे गुण कहहि स्वामी, सफल जन्मह त्या तना ।
 कवि बेल्ह तन बनपाल प्रणमि ते भेटियो नैमि जिरा ॥५॥

३. वर्धमान गीत

राघु अकार

सकल जिरासर ध्याउं, सरसं आचारे जी ।

गुण गांउ श्री बीर जिरासर बुद्धि अनुसारे जी ।

गुणा गाइसं श्री बीर जिरावर, बुधि कै अनुसारि ।

तसु नाम लीया होइ नव निधि भेटिया भवपार ।

सांनानवरि प्रतिबिंब सोभिता, हेम बस्यं वहीर ।

बंघहु शुभ वीरहु बीर जिरावर, सस हव सररीर ॥१॥

ए जो कुंडल पुरिहि भवतरं भयंकु अनंदी जी ।

रागी तिमला दे उवरि ऊपनी सिधारय नंदो जी ।

तिमलादे माता उरि उपर्न राय सिंढारण नंदरगो ।

तसु इन्द्र भागैं आइ मर्चं देव दुंदमी वाजराणो ।

जिम भेष गजित मोर नाषित चापिन करति अनंदु ।

तिम पेलि भविमहु बीर जिरावर, चंद्रसमउं जिरांहु ॥२॥

ए जो तीस बरस लघु जिरावर, मृज्यी ग्रिह बाछो जी ।

पुणु ज्जुण तिसा समु जासिरु, लीयं वन बासो जी ।

वनवासु ले व्रत भार धरिये, लोपतीमहु जु हारीये ।

दश अहु दोअहु रहितु स्वामी, जीव गणु सा धारीये ।

दोइदश वरिस छद्मस्त रहिये, इन्द्र आसणु कपिये ।

सौ वर्धमान जिरांद बंघहु, सब भव लथ कारिये ॥३॥

ए जो केवल ग्यानु ऊपाया, मुनिजन भाया जी ।

तह गोत्तम आदिहि ग्यारा बलाहर आयय जी ।

गोत्तम श्रोत्तम अरु निरोत्तम सयल मणहर आइया ।

वाणीय कै परनासु हुचो, अमरणज जय कारिया ।

सो अतिमै जिणु नमो भवीयहु चैतीशंती रायक ॥४॥

ए जो तीस बरस फिरि जिरावर संबोध्या मानो जी ।

पुणु अंत कालु आयं जासिरु पूरा सुभ ध्यानो ।

शुभ ध्यान पूरा कर्म चूरा पंचमी नति पाइया ।

पावापुहि निर्वाण थानकु भव्यजन नसातिया ।

कवि बैरुह नदणु मनि अनंदणु वन्नपाल भाइया ।

महु सयल बंघितु होऊ स्वामी बीर जिणु जै कारिया ॥५॥

॥ इति श्री वर्धमान गीत समाप्ता ॥

५. आदि जिन गीत

राम गीतो

सो जिंगुसमरहु भावधरि जहि सु चाहो भवपार हो ।
 भव दे माता उरि धरै नाभि घरा भवत्तार हो ।
 सो नाभि नदनु भविक बंदै, तोड़ा नयरि मझारि ।
 पंचसै घनुष प्रमाण काया त्रिष लाखण धारि ।
 सर्वार्थसिद्धि थे आइया ईसाक बंशह जाणि ।
 अजोच्या नगरी भयो जिणु रिषभ गुण की खानि ॥१॥
 जनम चैत्र वदि नवमी को कवनवरण शरीर हो ।

इन्द्र महोछे आइया, मेर न्हयो बीर हो ।
 इकु मेर सिहरां हयो जिणबरु इंद्र नाचै बहु परे ।
 सचीसइहथां हलेबिणु, आणियो माता घरे ।
 कुमरै परे बसि लख पूरब, तेसठि रजु करेइ ।
 निवेउ पायो देखि अपछरे लोयंतीय हसरेइ ॥२॥

आस्तातिजाहा पारणो धरि श्रैयांस नरेसहो ।
 वरस सहस छदमस्तु भी केवल फागुण ग्यासिहो ।
 फागुण ग्यारसी हुबा केवलु समोसरण बिराजये ।
 त्रिषभ सेणह आदि मराहक वारिण दुंदभी गाजियो ।
 तपु लख पूरब जेरिणपाल्यो छहै हरिहि नमसियो ।
 सो आदि जिणबरु बंदहु भवियहु धम्म मारग दसियो ॥३॥

डडक पाटक पूरणा पूरया ध्यान चियारिहो ।
 गिरि कयलासह सिष हुवा अठ गुणाह बिचारिहो ।
 कंलास गिरि निर्वाण थानकु अठ गुण सजुतीया ।
 जीति में जीति समाय पंठा पठहि सुणहि ति घनुजिया ।
 कवि देल्ह नदण सुगति मांशे धनपालहु गाइया ।
 श्री आदि जिणबरु नमी भवियहु तुरिय संघ मनि भाइया ॥४॥

भट्टारक महेन्द्रकीर्ति

महेन्द्रकीर्ति नाम वाले एक से अधिक भट्टारक हो गये हैं लेकिन भट्टारक पट्टावलियों के अनुसार अब तक निम्न प्रकार परिचय मिलता है :—

- | | |
|----------------------------|--|
| (१) भट्टारक महेन्द्रकीर्ति | (१) अजमेर गादी के भ० देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य (सं० १७६९) |
| (२) " " | (२) अमेर गादी के भ० देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य (सं० १७६०) |
| (३) " " | (३) " भ. देवेन्द्रकीर्ति (द्वितीय) के शिष्य (सं० १६३६) |
| (४) आचार्य महेन्द्र कीर्ति | (४) सूरत गादी के भट्टारक मल्लिभूषण के शिष्य (सं० १५७०) |

उक्त चार महेन्द्रकीर्ति नाम वाले विद्वानों में से कौन से महेन्द्रकीर्ति प्रस्तुत पदों के रचयिता हैं। जिस गुटके में इन पदों का संग्रह मिला है उसमें भी कोई लेखन काल नहीं दिया। लेकिन गुटका १७ वीं अथवा १८ शताब्दि में लिपि बद्ध हुआ लगता है इसलिए प्रस्तुत महेन्द्रकीर्ति भ. देवेन्द्रकीर्ति (द्वितीय) के शिष्य तो नहीं हो सकते क्योंकि वे तो अभी १०० वर्ष पूर्ण ही हुए थे। सूरत गादी के भट्टारक मल्लिभूषण के शिष्य आचार्य महेन्द्र कीर्ति भी इन पदों के रचयिता नहीं हो सकते क्योंकि पदों की भाषा एवं शैली १६वीं शताब्दि जैसी नहीं है। अब शेष दो भट्टारक रहे एक अजमेर गादी के, दूसरे अमेर गादी के। डिण्डी नगर जिसमें प्रस्तुत गुटका संग्रहित है वह अमेर गादी के भट्टारक का नगर न होकर अजमेर गादी के भट्टारक के अन्तर्गत आता था इसलिए प्रस्तुत पदों के रचयिता भट्टारक महेन्द्र भट्टारक विद्यानन्द के शिष्य थे जिनका पट्टाभिषेक संवत् १७६९ में हुआ था।

संवत् १७५१ में भट्टारक रत्नकीर्ति ने अजमेर में पुनः स्वतन्त्र भट्टारक गादी की स्थापना की थी और अपना पुनः पट्टाभिषेक महाशिव रासोजित किया था। भट्टारक रत्नकीर्ति के पश्चात् विद्यानन्द (संवत् १७६९) में और भट्टारक

महेन्द्रकीर्ति स० १७६६ में भट्टारक गादी पर अभिविक्त हुए थे ऐसा उल्लेख भट्टारक पदाब्जियों में मिलता है। महेन्द्रकीर्ति के चार वर्ष पश्चात् ही संवत् १७७३ में भट्टारक अन्तकीर्ति का पट्टाभिषेक होने का उल्लेख मिलता है जिसमें महेन्द्रकीर्ति का समय संवत् १७६६—१७७३ तक (सन् १७१२ से १७१६) तक का निश्चित होता है और इसके आधार पर उनके सभी पद १८वीं शताब्दि के प्रथम चरण में निर्मित लगते हैं।

महेन्द्रकीर्ति भट्टारक थे। पदों के मूल्यांकन से पता चलता है कि वे आध्यत्मिकता की ओर अधिक रुचि रखते थे। अभी तक इनके जितने पद उपलब्ध हुए हैं लेकिन वे सभी पद भाव भाषा की दृष्टि से उत्तम पद हैं।

- (१) अमर्यु भूलि रह्यो ससार—प्रस्तुत पद में कवि ने प्रत्येक अन्तरे में उदाहरणों द्वारा यह प्राणी मोह भग्न होकर आत्मा को किस प्रकार भूल बैठता है इसका अच्छा वर्णन किया है। यह प्राणी व्यर्थ ही मोह के बन्ध होकर अपने आपको परतन्त्र कर लेता है और उलटे कार्य करने में ही सुख मान बैठता है। यह मानव बन्दर, तोता, स्वान, सिंह, हाथी, हिरण आदि के समान विपरीत कार्य करने पर भी अपने आपको सुखी मानने लगता है और मृग तृष्णा के समान दिन रात फिरता रहता है।
- (२) मेरो मन विषयाही स्युं राच्यो—पद में कवि ने मानव की वास्तविक स्थिति प्रस्तुत की है कि वह जीवन भर मृत्यु के अन्तिम क्षण तक स्त्री, कुटुम्ब, धन संपत्ति आदि में ही मग्न रहता है और अपने आत्म कल्याण की ओर तनिक भी ध्यान नहीं देता।
- (३) साधो अद्भुत निधि घर मांही एब साधो अद्भुत निधि घरि पाई—इन दो पदों में मानव को अपनी निधि को पहिचानने का आग्रह किया है। यह मानव अपनी आत्मा को भूलकर उसे अन्यत्र ढूँढने का प्रयास करता है। जब कि आत्मा का शरीर में तिलो में तेल, काष्ठ में अग्नि के समान वास रहता है।
- (४) देखो कर्म की गति न्यारी—इस पद में कवि ने रावण, मन्दोदरी, राम सीता, यमोक्षर राजा अश्रित देवी राणी, माता चन्द्रमती आदि के जीवन में घटित घटनाओं की ओर पाठक का ध्यान आकृष्ट करते हुए कर्मों की विचित्र लीला का अच्छा चित्र उतारा है और अन्त में अवमान जिनेन्द्र की आराधना में ही कर्मों के जाल से छुटकारा मिल सकता है इसका वर्णन किया है।

- (५) सेवत विषय तृपति नहि मानै—प्रस्तुत पद में कवि ने संक्षिप्त रूप में मानव स्वभाव पर प्रकाश डाला है कि वह संसार में विषयों के सेवन करते रहने पर अपने आपको अतृप्य मानता है और दिन रात उन्हीं के पीछे दौड़ता रहता है ।
- (६) सब दुःख मूल है मिथ्यात—इस पद में कवि ने मिथ्यात्व को ही मानव के जग में भ्रमित होते रहने का प्रधान कारण माना है तथा पच्चीस दोषों को छोड़ने एवं पंच परमेष्ठी का ध्यान ही मिथ्यात्व को दूर करने एवं सम्यक्त्व प्राप्ति का उपाय बतलाया है ।
- (७) कर्ण्य करौ भगवंत जिनेश्वर पय नबुं—यह पद भक्ति परक है जिसमें प्रभु भक्ति से सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है इसका वर्णन किया गया है । जिनैन्द्रदेव की महिमा वेद भी बखान करने में असमर्थ रहे हैं इसलिए उन्होंने “नेति नेति” शब्द के द्वारा उनके महात्म्य को प्रगट किया है । वेदों के नेति नेति शब्दों का वैष्णव कवियों ने भी वर्णन किया है ।
- (८) “चेतन काहे भरम भुलाना” एवं चेतन चेतत क्युं नहि मनमै—इन पदों में कवि ने बहुत ही रोमांचक शब्दों में मानव को सावधान रहने का आग्रह किया है । वह प्राणी आत्म स्वभाव को छोड़ कर पर स्वभाव में लग जाता और रतन को छोड़ कर कांच के टुकड़े में ही लुभाता रहता है ।

इस प्रकार उक्त पदों के मूल्यांकन से पता चलता है कि भट्टारक महेन्द्र कीर्ति प्राध्यात्मिक संत थे जो अपने प्रवचनों एवं साहित्य रचना केद्वारा सर्व समाज को नैतिकता एवं आत्म स्वरूप को पहिचानने का पाठ पढ़ाया करते थे । उनके सभी पदों में आत्मचिंतन एवं आत्मज्ञान की जो धारा दिखायी देती है वह अत्यधिक स्वाभाविक है । ऐसा मालूम पड़ता है जैसे महेन्द्रकीर्ति को रात दिन आत्मज्ञान प्राप्त करने की चिंता सताती रहती थी और उसी चिंता को उन्होंने अपने हिन्दी पदों में व्यक्त किया हो । कवि के पदों में महाकवि बजारसीवास के पदों की छाप दिखायी देती है तथा कबीर एवं दूसरे निर्गुण पंथी कवियों की अलक वृष्टिमोहर होती है लेकिन इतना अवश्य है कि कवि ने इन पदों में अपने सैदान्तिक ज्ञान का भी सम्झा उपयोग किया है ।

भाषा—महेन्द्रकीर्ति के पदों की भाषा राजस्थानी के समीप है । १८वीं शताब्दी में जिस प्रकार भाषा में निखार आने लगा था वही रूप में हमें इन पदों की भाषा में दिखाई देता है लेकिन फिर भी राजस्थानी के शब्दों की बहुलता है स्तुं, राख्यो, दाख्यो वैसी क्रिया पद शब्द राजस्थानी भाषाके साथ अपनी अधिक विकटता प्रदर्शित करते हैं ।

भट्टारक महेंद्रकीर्तिरचित पद

१

राग आसावरी

अमस्यू भूलि रह्यो संसार ।

मोह मगन आतम गुण भूल्यो, भज्यो न जिनव्रत सार ॥अ०॥१॥

सीत व्यथा पीडित ज्युं मरकट, ताप गु जा हार ।

ऊं घं मुख नलनी को सुवटा, कुंरौ पटक्यो डार ॥अ०॥२॥

ज्युं नर भूढ रात्रि विसयामिष, मगन भयो तिहुं काल ।

सुष को लेस कहू नहि सुपनं, नरक निगोछामार ॥अ०॥३॥

जैसे स्वानं भूसै मंदिर मैं, केहरि कूप गुंजार ॥

फटक सिला मैं देषि आप गज, कीन्हो दशन प्रहार ॥अ०॥४॥

ज्युं मृग वन मैं देषि भाडली, मानि सरोवर झार ॥

चहुं दिसि फिरघौ न पायो जलकण, फूल्यो कांस गवार ॥अ०॥५॥

पायकुटंब भयो ग्रह घोरी, सब सिर धारघौ भार ॥

एकलडौ दुष सहै निरतर, जामण मरण अपार ॥अ०॥६॥

२

राग आसा

मेरो मन विषयाहीं स्युं राच्यो ।

सुष को साज नही सुपनामैं, परत्रिय देखि देखि नाठघी ॥

धनकी त्रिषा प्रीति वनितास्युं, देषि परिग्रह माच्यो ॥मे०॥१॥

जब लग पत न करूं भवि प्राणी, अशुभ कर्म नहिं पाच्यो ॥

महेन्द्रकीर्ति तव कहा करीये, नरक निगोदिनि पांच्यौ ॥मे०॥२॥

३

राय सारंग तथा पौर

देषो मोह तरणी अघिकाइ, सो मोपे कहियन जाइ ॥
 जिह दुष दीयो अनादि ही कालहि, फिरि फिरि तिह लपटाई ॥दे०॥
 इहै दुष्ट दुर्गति दुखदाता, नरक निगोदि निसाई ॥
 छेदन भेदन ताडन तापन, सूला सेज लुटाई ॥दे०॥२॥
 बहुगति भ्रम्यो महा दुष पायो. पराधीन भयो भाई ॥
 पर की संगति प्रापी छीजै, निज गुण सबै घटाई ॥दे०॥३॥
 तातै सम्यक दर्शन सेवो, मय्य जीव सुषदाई ॥
 महेन्द्रकीर्ति तव होइ निरंजन आवाचमन मिटाई ॥दे०॥४॥

४

राय आसावरी

साधो अद्भुत निधि घर मांही ।
 इत उत फिरै करै नहि सोधी, भ्रमतै जानत नांही ॥सा०॥१॥
 जैसे मृग कस्तूरी कारण बनमै हिबत डोले ।
 मोह मिथ्यात विकल भयो प्राणी, परम सबै नहि लोले ॥सा०॥२॥
 घर पुरकारम भोजन सीडा, घरमै बसि कुं भटकत धंधा ॥
 त्युंघ्यौ जीव भ्रमत सुष कारण, स्वानि रज्जो रह धंधा ॥सा०॥३॥
 सत्तर कोडाकौडी साधर, मोह महाधिति साधी ॥
 कारण तीनि करि सम्पत्ति राध्यी, तव आसम निधि जायी ॥सा०॥४॥
 सप्त प्रकृति उपक्रम करि राखी, अथ तै धार्मिक राई ॥
 वेदक तै निज पर नुसु वेदै, यही मोक्ष की साई ॥सा०॥५॥
 सर्वान मोह लीयो सत धूरसु, जेसठि प्रकृति निनस्यी ॥
 महेन्द्रकीर्ति प्रभु जयी जिनेश्वर लोकसोक विकस्यी ॥सा०॥६॥

५

राग आसावरी

साधो अद्भुत निधि धरि पाई ।
 तीं विनु भ्रम्यो अनंत चतुर्गति, श्री जिनराज बताई ॥सा०॥१॥
 ज्यु अपना पुरुषों की शूली, घणा काल की राषी ॥
 बीजक सहीत पत्र ज्यों निकस्यो, सांप्रत भयो सुसाषी ॥सा०॥२॥
 ज्यु परमात्म देह भूमि में, ल्यु कचन पाषाणे ॥
 अग्नि काष्ठ तिल तेल ही वासो, यूं आत्म निधि जाणो ॥सा०॥३॥
 अष्ट कर्म रज भू आछादी भेद विना नहीं पावै ॥
 सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण बल, सद्गुरु यतन लषाबै ॥सा०॥४॥
 सौ गुरु चौतिस अतिसय जाके अनन्त चतुष्टय सोहै ।
 अष्ट प्रातिहार्य प्रभु सोभित, भव्य जनन मन मोहै ॥सा०॥५॥
 निकट भव्य सो महा उपसमी, भद्ररूप परिणामी ॥
 महेन्द्रकीर्त्ति आत्म निधि परसै, मुकति नयर पदगामी ॥सा०॥६॥

६

राग आसावरी

देवो कर्मन की गति न्यारी ।
 नही टरत कहौ नहि टारी ॥
 रावन सरीखे सुभट महानर, कहै मंदोदरी राणी ।
 सीता सती देहु रघुपती कौ, राज करी अती जाणी ॥दे०॥१॥
 अतेवर जाकैं सहस्र अठारा रूप कला गुण सोहै ।
 विद्याधर पुत्री अति सुंदर, अहनिष पिय मन मोहै ॥दे०॥२॥
 राव यशोधर विष दे मारधो अन्नित देवी राणी ।
 चद्रमती माता की सगति, मिथ्या बुद्धि बषाखी ॥दे०॥३॥
 श्रीर असध्य भए महागजा, तेहु कर्म बसि हारे ।
 सम्यक् भाव विना जीव जेतै, अहुगति मांही मारे ॥दे०॥४॥
 इसी जानि जिन धर्म आराधो, हितू न दूजो कोई ।
 महेन्द्रकीर्त्ति जिन चरण शरण तैं जन्म मरण नही होई ॥दे०॥५॥

७

राग कानरौ

परमेश्वर निस्तारो ।
 कष्टणा करि मोहि तारो हो प्रभु ॥परमे०॥
 परमदयाल परमपद गामी, अघमोचन अघटारो ॥
 वीतराम अरहंत जिनेश्वर, मुकति रमनि वर प्यारो ॥हो प्रभु०॥१॥
 अघम उषारस सिव सुषकारस, भव्य जीव आचारो ।
 महेंद्रकीर्ति कर जोरि वीनबै, आवागमन निवारो ॥हो प्रभु०॥२॥

८

राग कानरौ

क्युं करि भक्ति करौ प्रभु तेरी,
 अष्ट कर्म घन बैरी ॥हो प्रभु०॥१॥
 मोह मिथ्यात महा रिपु बेरघो, छाडत सार न नेरी हो ॥
 अहंगति माहि अम्यो चिरकाल,तुम सरणागत हेरी हो ॥हो प्रभु०॥२॥
 जिन अनंतगुण स्मरण,आत्म शक्ति सुं सेरी हो ॥हो प्रभु०॥३॥
 महेंद्रकीर्ति अरहंत प्यान तै,मुकतिबधू अति निपरि हो ॥हो प्रभु०॥४॥

९

राग कानरौ

भव सागर भ्रमती दुष पायी, मोह मिथ्यात महाचित लायी ॥
 जो संसार समुद्र अपरमित, अघ जल अरघौ पार नही पायी ॥
 काम श्लेष मद लोभ महापद, अन्धकारण नक चक भरायो ॥अ०॥१॥
 अहंगति बडवानस अति तापै, अरक पवास माहि संतायो ॥
 जैन अरम सह अरन परीहस, भव्य जीवति मन भायी ॥अ०॥२॥
 आत्म विशेष पाह जिह रावै, समकित हित अति प्यान सुहायी ॥
 महेंद्रकीर्ति सिव राम वीपकुं, श्री जिनराज सुपंथ अताये ॥अ०॥३॥

१०

राग कानरो

सेवत विषय तृपति नहि मानै,
 मदन महारिपु कै मदपानै ॥
 जैसे स्वान अस्थि चर्चण तैं चाटि रहिबर मनमै सुष जानै ॥
 भ्रम वसि भूलि गयो आत्मनिषि, मूढ और की और ही ठारै ॥से०॥१॥
 निज स्वभाव तजि परसग राच्यो, मोह विकल ममता चित्त आरै ॥
 महेंद्रकीर्त्ति प्रभु सेइ जिनेश्वर, पूजै तीनि भूवन के राएँ ॥से०॥२॥

११

राग केदारी

सब दुष मूल है मिथ्यात ।
 जाके उदं जीव नही चेतै करै आत्मघात ॥स०॥१॥
 मोह दर्शन नाम जाकं धरै अति उतपात ॥
 छाडि दोष पचीस तम घन होइ समकलि प्रात ॥स०॥२॥
 पंच गुरु पद नाम ध्यायो, द्विड ह्वै रहै तात रमात ॥
 महेन्द्रकीर्त्ति सेइ श्री जिनवर, होबौ निर्मल गात ॥स०॥३॥

१२

राग केदारी

महिमा अपार जाके गुणको न आरापा
 जग को अघार इसो देव जिण देव घ्याइये ॥
 इन्द्रादिक देव जाकी, मन बचकाय करै सेव,
 तीस च्यारि अतिसय बिराजमान नाइये ॥
 अनत चतुष्टय प्रगट प्रतिभासै सदा,
 आठ प्रातिहार्य महाविभूति पाइये ॥
 अहो भव्य वृन्द तजि मोह भान माया फंद,
 बीतराय पद बंद नित्य चित्त साइये ॥

१३

राग धनाधी

करणा करी भगवंत जिनेश्वर पय नवुं ॥
जिनमुणु सिधु अपार, पार कहि कैसे पावुं ॥
इन्द्री बुधि मनहीन कही प्रभु क्युं करि गावुं ॥
नेह चढरण कुं पांगुलो उदधि तरण भुज हीन ॥
पंछी उडै आकास में ताहि गिरणें द्विग छीन ॥जिने०॥१॥

गूंगो मुखि कुबरं, आलसी नभ की पासं ।
मूढ हलाहल भषै, अगनि ज्वाला मुख ग्रासै ॥
ज्युं सूर्य जल कुंड में, पकडपौ चाहे बाल
इसो सुभट नर कोन है जो गहि राखें काल ॥जिने०॥२॥

वीत राय सर्वज्ञ सिद्ध परमात्म स्वामी ।
निबिकार निर्दोष सुद्ध पद मोक्ष के गामी ।
निज भाषा स्तुति ये करै समबसरणु तिरजंच ।
ज्यु जलनिधि जल तै भरपौ चिडी लेय भरचू च ॥जिने०॥३॥

दोष अठारह रहित देव अरहंत जिनेश्वर ।
अतिसय बर चौतीस दिव्य सौमं परमेश्वर ।
अष्ट प्रातिहार्य भसे अनंत चतुष्टय पाय ।
त्रेसठि प्रकृति विनासिके भए त्रिमुवनपति राय ॥जिने०॥४॥

जिनवर रूप अनंत कही क्युं मनही समावै ।
नेति नेति कहे वेद नाहि कछु अंत न आवै ।
अपनी ममता मारिको रहे अंतरि ली लाइ ।
मैतै मिटै कुबुद्धी की तब दरसन दे आइ ॥जिने०॥५॥

आकी सम्यक् ज्ञान ध्यान रज कर्म विनासै ।
सकल तरु को रूप परम हीए परकासै ॥
विद्यानंद सिद्ध पहुँचि विद्विषास विदबास ॥
महेंद्रकीर्ति मनि नित बसौ सिध पावै विसराम ॥जिने०॥६॥

१४

राग सारंग

चेतन काहे भरम भुलाना ॥टेक॥
 सहज स्वभाव राचि निज अपनी छिन मैं सिव पुरि जाना ॥चे०॥२॥
 छाडि प्रमौलिक रतन अनोपम, काच की किरच लुभाना ॥चे०॥३॥
 दुष्ट अनिष्ट मिथ्यात महा विष, रचि रचिभेष घराना ॥चे०॥४॥
 स्वपर विवेक महा सुष कारण, सेवो समकित राना ॥
 सहज यत्न परगट होइ अंसे, ज्युं कचन पाषाना ॥चे०॥४॥
 जन्म जरा कहु मरण न क्यापै, सुद्ध रूप उहराना ॥
 महेंद्रकीर्ति तब अंतर कैसे जल कण सिधु समाना ॥चे०॥५॥

१५

राग सारंग

चेतन चेतत क्युं नहि मनसै ।
 मोह प्रमाद महापद पीयो छक्यो घरणि घर बन मे ॥
 यो जड रूप कर्म को दाता, राचि रह्यो तू तनमे चे०॥
 षट्स भोजन बहुविधि पोषो, तो हू नही गुणगनमैं ॥
 प्रबल मिथ्यात घटा है झाडी, सूर्य लपै ना बन मैं ॥चे०॥२॥
 बिनु समकित ज्यु तख न भासै, कहा भयो जोजनमैं ॥
 महेंद्रकीर्ति कस्तूरी कारण, ज्युं दूँडत मृग बन मैं ॥चे०॥३॥



देवेन्द्र कवि

१७वीं शताब्दि में जितनी संख्या में हिन्दी के जैन कवि हुए उतने इसके पूर्व कभी नहीं हुए। देवेन्द्र कवि ऐसे ही कवि थे जो १७वीं शताब्दि के प्रारम्भ में हुए और जिन्होंने हिन्दी काव्यों के लेखन में अपना नाम प्रसस्त किया। वे इस भाव में जिस प्रकार बाई अजीतमति, घनपाल, एवं भट्टारक महेंद्रकीर्ति अब तक अर्चयित रहे हैं उसी प्रकार देवेन्द्र कवि भी नामोल्लेख के अविरक्त शेष दृष्टि से अर्चयित कवि ही रहे हैं जिनका विस्तृत परिचय यहाँ प्रथम बार दिया जा रहा है।

देवेन्द्र कवि का प्रथम बार नामोल्लेख मैने राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डार की ग्रन्थ सूची पंचम भाग में किया था और उनकी अब तक उपलब्ध एकमात्र कृति यशोधर रास का उल्लेख किया था। इसके पश्चात् किसी भी विद्वान ने उनका कहीं परिचय दिया हो वह मेरे देखने में नहीं आया। अभी जब मैं नवम्बर ८३ में परमपूज्य आचार्य धर्मसागर जी महाराज के दर्शनार्थ एवं वहाँ के शास्त्र भण्डार की खोज में प्रतापगढ़ (राजस्थान) गया तो जूना मन्दिर के शास्त्र भण्डार यशोधररास की एक प्राचीनतम पाण्डुलिपि मिल गयी जो अपने रचना काल के ६ वर्ष पश्चात् ही लिखित की गयी थी। इस प्रकार देवेन्द्र कवि ऐसे चौथे अर्चयित कवि हैं जिनका यहाँ परिचय दिया जा रहा है।

देवेन्द्र कवि के पिता भूवेक विक्रम थे जो स्वयं भी कवि थे तथा अपने नाम के पूर्व कवि उपाधि लमाते थे। वे जैन ब्राम्हण थे इसलिए भूवेक शब्द का प्रयोग करते थे। देवेन्द्र के पूर्वज अनन्त पंड्या थे जो भट्टारक सकलकीर्ति के अनुज एवं सिद्ध ब्रह्म जिनदास द्वारा सम्बोधित हुये थे। अनन्त पंड्या का राजाघों की तरह सम्मान था। उसने सम्यक्त्व की धाराधना की थी तथा जीवदया वस का पालन किया था। कुतुबुखान की सजा में उसने जैन धर्म की प्रचारना तथा सर्व को धर्म में आश्रय दिया था। यही नहीं धर्मिक विन भन्दिरों का निर्माण

तथा जीर्णोद्धार कराया था ^१ तथा प्रतिष्ठा विधान कराये थे ।

घनन्त पंड्या के कउजी पुत्र हुए जो अत्यधिक उदार स्वभाव के थे । इसकी एक पुत्री पद्मावती थी जिसके पति का नाम धरणीधर था । ब्राह्मणों के चौबीस कुलों में वह विशिष्ट माना जाता था । धरणीधर के दो पुत्र थे जिनमें ज्येष्ठ पुत्र विक्रम तथा कनिष्ठ पुत्र गंगाधर थे । गंगाधर जैन न्याय के विशेष ज्ञाता थे तथा सम्यक्त्व से सुसोभित थे । उमें सौभाग्य से जगत से विरक्ति हो गयी जो बादमें भट्टारक बिसालकीर्ति के पट्ट में देवेन्द्रकीर्ति के नाम से विख्यात हुए । उन्होंने कर्नाटक प्रदेश में जैनधर्म की बहुत प्रभावना की थी और जैन राजाओं द्वारा पूजित हुए थे ।

विक्रम ^२त्रिविध प्रागमो के ज्ञाता थे इसलिए वे विक्रमभट्ट के नाम से विख्यात थे । महीपाल कीर्ति उनके विद्यागुरु थे । विक्रम की पत्नि का नाम गजबाई था जो शीखवती एवं गुणवती थी । देवेन्द्र उमी का पुत्र था । भगवान् जिनेन्द्रदेव का वह परम उपासक एवं जैन शास्त्रों का परम ज्ञाता था ।

देवेन्द्र कवि थे । उन्होंने कितने ग्रन्थों की रचना की थी यह तो अभी ज्ञात नहीं हो सका है लेकिन उनकी एक मात्र रचना "यशोधर रास" का रचना काल

- १ घन घन जिनदास ब्रह्मवारी, सा० प्रतिबोध्या ब्राह्मण राज तो ।
घनन्त पड्या नाम भलू, ।सा०। जाणो जेह ने राज समान तो ॥५६॥
तीणों आदरयो समकीत रत्न ।सा०। यज्ञ जीवदया प्रतिपालतो ।
षट सर्प दीव्य करधू ।सा०। कुतुल्लक्ष्मण सभा विसालतो ॥६०॥
- २ जैन धर्म तिहा थापीयो ।सा०। व्यापीयो जस अपार तो।
बिब प्रासाद उद्धार करथा ।सा०। तस सुत कउजी उदारतो ॥६१॥
तस पुत्री पद्मावती ।सा०। धरणीधर तस कंत तो ।
चौबीसा ब्राह्मण कुलि ।सा०। सोहि महीमावंत तो ॥६२॥
तस पुत्र दोये पवित्र ।सा०। विक्रम गंगाधर नाम तो ।
जैनवादी विद्या तिला ।सा०। समकित रतन सुहामनो ॥६३॥
गंगाधरे तप उद्धारयो ।सा०। भाग्य सौभाग्य समुद्र तो ।
बिसालकीर्ति पाटि हंवा ।सा०। देवेन्द्रकीर्ति सुरेन्द्रतो ॥६४॥
अकलक सूरी सीघासने ।सा०। कर्णाटक देस प्रसीध तो ।
जिनधर्म तीहां उद्धारयो ।सा०। जैन राजादिक पूजा कीधतो ॥६५॥
- ३ विक्रम भट्ट विज्ञात तो ।सा०। सील समकित गुण साख तो ।
तस बि पुत्र बीशारद ।सा०। देवेन्द्र वासुदेव जाण तो ॥६६॥

संवत् १६३८ आसोव सुखी २ शुक्रवार है । रास की रचना महूभा नगर (गुजरात) हुई थी और वह ३० बादिचन्द्र आदेश से लिखी गयी थी^६ ।

देवेन्द्र कवि भगवान् भुनिसुवत्त नाम के परम उपासक थे इसलिए शंभु का प्रारम्भ उन्हीं के संवत्ताचरण एवं समाप्त भी उन्हीं के स्मरण से किया है । यज्ञोचर रास ६ अधिकारों में विभक्त है तथा वह प्रबन्ध काव्य के रूप में है । कवि ने रास का प्रारम्भ भगवाचरण से किया है इसके पश्चात् सरस्वती बन्दना की गयी है और "गासू यज्ञोचर रास" के रूप में रास रचने का संकल्प व्यक्त किया है । स्वाहाद प्रकासिनी जगन्माता भारदा के स्तवन के पश्चात् चौबीस तीर्थकारों का २४ पद्यों में स्तवन किया है और फिर तीर्थकारों के गणेशों की संख्या का उल्लेख करते हुए भगवान् महावीर के निर्वाण के पश्चात् होने वाले तीन केवलियों^७ एवं पांच श्रुतकेवलियों^८ केनामों का स्मरण किया है^९ ।

श्रुत केवलियों के पश्चात् विशाखाचार्य आदि दस पूर्ववारी एवं नक्षत्रादि ११ भ्रग के पाठियों का भी स्मरण किया है । इसके पश्चात् आचार्यों को स्थान दिया है जिसमें कुन्दकुन्दाचार्य, उमास्वामि समन्तभद्र, पूज्यपाद, जिनसेन, अकनक, एवं गुणभद्र जैसे आचार्यों का उल्लेख एवं गुणानुवाद किया है ।

एकादशांग सुजाण नक्षत्रादि सोहामणाय ।

भनुक्रमि श्री कुन्दकुन्द पंच नामि कोडामणीए ॥२०॥

जिन चरण कमल सेवि ।सा०। करि जिन शास्त्र ग्रन्थास तो ।

४ संवन् १६ आठ त्रिसि ।सा०। आसो सुद तीज बीजि शुक्रवार तो ।

रास रच्यो नवरस भरघो ।सा०। महूभा नगर भकार तो ॥

५ अन्ननी अनोपम रूप, बादीच द तस परट सोहिए ।

वादी सयल सणगार । भवी अण जन तरां मन मोहिए ॥२६॥

सोहा

एह गच्छपती आदेश थी, रास रचेवा भाज ।

उन्नम मांड्यी मन रली, सजन भानन्दह काज ॥१॥४॥

६ भनुक्रमि भीतम स्वामि, सुधर्माचारव केवलीए ।

अतिम केवली आस, जंबूस्वामि कीरती बलिये ॥१६॥

७ श्रुत केवली बली पंच, पंच संसार दुःख हरए ।

विष्णुमंदि मित्र होय, अपराजित विजित स्मरणे ॥१७॥

वीररथन गुणवत्त, वाणी भवी अण उदरेए ।

भद्रबाहु बहु भेद, चन्द्रमुपती संसय हरेए ॥१८॥

उभास्वामी मुनि संत सम्मत्तभद्र भवि धाँतिलोए ।

प्रतिबोध्या सिवकोटि कीध स्वयभू गुणानिलोए ॥२१॥

पूष्यषाढ प्रसीध जिनसेन सासने चंदलोए ।

अनोपम अकलक वीर धरि बीध जीतवा भलोए ॥२२॥

गुणभद्रावि अनेक पूर्वाचारज बहु हुवाए ।

हो व्याऊं धरी भाव काम बाँछित सिद्ध थवाए ॥२३॥

कवि ने धाचार्यों के पश्चात् भट्टारको की परम्परा का उल्लेख किया है जिनमें भ० पद्मनन्दि, विद्यानन्दि मल्लिभूषण, लक्ष्मी चन्द्र, बीरचन्द्र, ज्ञानभूषण, प्रभाचन्द्र, वादिचन्द्र के नाम गिनाये हैं। ये सभी भट्टारक बलात्कार गए की सूरत शास्त्रा के भट्टारक थे। इस प्रकार यशोधर रास ऐतिहासिक तथ्यों का भाग बन गया है।

भगवान महावीर का समवसरण जब विपुलाचल पर्वत पर आया तो श्रेणिक महाराज पूरे प्रजाजनों के साथ उनकी बन्दना को गए। उनका हृदय से स्तवन किया श्रीर गौतम गणधर से यशोधर के जीवन दूत जानने की अपनी इच्छा प्रकट की इस प्रकार कवि ने प्रथम अधिकार काव्य की भूमिका के रूप में प्रस्तुत किया है जिससे पता चलता है कि कवि में काव्य निर्माण की विलक्षण प्रतिभा थी।

दूसरे अधिकार से नवम अधिकार तक यशोधर की जीवन कथा दी हुई है जो अत्यधिक काव्य-मय भाषा एवं शैली में लिखी गयी है। कवि के पूर्व में जितने भी यशोधर के जीवन पर काव्य, रास एवं चरित्र लिखे गये थे उनसे कवि परिचित था या नहीं इस सम्बन्ध में तो हम कोई प्रकाश नहीं डाल सकते क्योंकि स्वयं कवि ने अपने पूर्ववर्ती किसी भी कवि का नामोल्लेख नहीं किया जिन्होंने अपभ्रंश संस्कृत एवं हिन्दी में यशोधर काव्य/रास/चरित्र लिखे थे लेकिन कवि ने यशोधर की जीवनकथा लिखते समय उसी परम्परा का निर्वाह किया है जो उसके पूर्ववर्ती कवियों ने किया था। लेकिन सभी प्रसंगों का वर्णन करते हुए कवि ने अपनी काव्य कौशल का प्रदर्शन अवश्य किया है। इससे काव्य मधुर एवं सरस बन गया है। वैसे भी स्वयं कवि अपने रास को नवरस युक्त रचना कहा है। श्रीर "रास रच्यो नव रस भूयो" जैसे शब्दों का प्रयोग किया है। यहाँ हम कुछ उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं :—

नगर म नारी की सुन्दरता का वर्णन करते हुए कवि ने कहा है कि सुन्दरिय पर भवरे भूमते थे श्रीर जब वे उन्हें उडाती तो उनकी करवनी शब्द करती थी। उनके मधुर शब्दों को सुन कर स्वयं कोयल लज्जित हो जाती थी।

प्रमद भारंला कंकशु बलके, सारस सरस सुर्भत ली ।

कोबल नारी शबद सुणीमिगु, लाजी वचन वर्णत तु ॥६७॥

कवि ने एक और शमशान का जहाँ बीभत्स वर्णन किया है वहाँ उद्यान का बड़ा ही मनोरम वर्णन हुआ है। इससे पता चलता है कि कवि की वर्णन शैली सामान्य रूप से प्रच्छी थी।

बीभत्स वर्णन :—

बीहाबकाए उठ्या बहु ब्रूस, अर्ब दग्ग कलेबर पद्याए ।

ठाम ठाम ए पद्या बहुत, मली यगू मांस एह्णां मडाए ॥२॥

बिकसयाए मुल दीसि दांत, तू बली ए बली रडबडीए ।

सीभालीयांए ताग्ये तास, आकामे गुष लेई उडैए ॥३॥

कूतरा एक लायी अपार, बडता माहो माहि इह डहिए ।

वायस ए करके बडठ, कागिए, बणू कस बली रहिए ॥४॥२०॥

प्राकृतिक सुन्दरता —

वाडी बन ठाम ठाम, कपूर कदली कोमल विसी हेलो ।

नालकेर खजूर, पूग तरां तरु भर ही सेहेल ॥८॥

ताल तमाल हे ताल, सरल सोहि सज्जन समाहेल ।

कोमल मध्य रसाल, देवदाह प्रादि उत्तमा हेल ॥९॥

तज पत्र नाबबेल एलची लची फले करी हेल ।

जायफल लंबगह मेल, मरी बेल छि भूमके भरी हेल ॥१०॥

कवि ने यशोधर रास में सूर्यास्त एवं चन्द्रोदय दोनों का वर्णन किया है। जिनके वर्णन से प्रबन्ध काव्य की महत्ता में वृद्धि होती है। सूर्यास्त वर्णन का एक उदाहरण निम्न प्रकार है :—

प्रस्ताबले रे सूर भावंतो जाणीयो ।

निब सीर परि रे मुकुट समो बरबायो ॥४॥

यश्चिन्न चिन्नि रे रबी भाविहू भारातडी ।

पंथी तस्य रे सोल सति करे वानडी ॥५॥

निर धंतरे रे रवि बसुं मान पामबू ।

उत्तम नैरे की शि एक सीस नंनोमबू ॥६॥

व्यभचारिणी रे गगन रोष रीसि कही ।
रवि उपरि रे देखाडि भालि रातडी ॥७॥५३॥

उक्त पद्यों में सूर्यास्त होने पर वह किसको कैसा लगता है इसका सामान्यतः प्रच्छा वर्णन मिलता है ।

इसी तरह कवि ने चन्द्रोदय का भी प्रच्छा वर्णन किया है ।

पूरब दिसी रे गुफा बको ए नीसरी ।
गगन वने रे संचरयो शशी कैसरी ॥२२॥
किरण नखे रे भ्रमकार मज बिदारयो ।
जाणी तारा रे मुक्ताफल विस्तरयो ॥२३॥
शशी सीतल रे समृत मय कहि वाड तो ।
लांछन मसि रे हर दह्यो काम जीवाड तो ॥२६॥

इस प्रकार यशोधर रास में और भी कितने ही प्रच्छे एव काव्यमय वर्णन हैं जिनसे रास के काव्यत्व में वृद्धि होती है ।

लेकिन यह भी कहा जाना चाहिये कि कवि की वर्णन शैली अन्य कवियों से एकदम भिन्न है । वह प्रत्येक वर्णन में अपनी छाप छोड़ना चाहता है लेकिन इसमें वह पूरी तरह से सफल हुआ है यह सन्देह युक्त है ।

भाषा—कवि गुजरात का रहने वाला था और गुजरात में ही रास की रचना की गयी थी इसलिए रास की भाषा पर गुजराती भाषा एवं शैली का पूरा प्रभाव है । छन्दों का प्रयोग एवं शब्दों का चयन दोनों में गुजराती का प्रभाव द्योतित है । महाकवि ब्रह्म जिनदास ने जिस शैली का प्रयोग किया था और उसी शैली को यहाँ कवि देवेन्द्र अपनाया है । १६वीं १७वीं शताब्दि में गुजराती शैली का हिन्दी कवियों पर पूरा प्रभाव रहा । इसीका नमूना यशोधर रास में देखा जा सकता है ।

छन्द—रास में दोहा छन्द के अतिरिक्त और भी भास छन्दों का उपयोग किया गया है । हमें आज एक भास में कितने ही पद मिलेंगे साथ ही दूसरे भास आणदानी भास हेलानी (१३), भास नारे सुभानी (१५), भास ब्रह्म गुणराजनी (१६), भास चौपई (२४) भास भमारुलीनी भास रासनी (३१), भास साहेलीनी (३६), भास वसन्त फागुणी (४६), भास भूपाल रागनी (५३), भास भद्रबाहुनी (८१) भास पटुलसडीनी (८४) भास जीवडानी (९८) आदि भासों का छन्दोंके रूप में प्रयोग किया है । कवि

ये भीषई जैसे स्वतन्त्र छन्द को भी भास खोपई कर छन्द का प्रयोग किया गया है। हाँ दीहा के भागे पीछे अस्स का प्रयोग नहीं किया है।

रचना स्थान—जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है कि यशोधर रास की रचना महुषा नगर में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में की गयी थी। नगर बनवान्य एवं सुवर्ण से श्रोतप्रोत था। वहाँ वणिक समाज के पर्याप्त संख्या में घर थे। बड़े बड़े बाडी एवं बगीचे थे जिनमें विभिन्न प्रकार के फलों वृक्ष थे। नगर में श्रावकों की अच्छी बस्ती थी जो दान पूजा व्रत अभिषेक करने में बड़ी रुचि रखते थे। वहाँ बड़े २ विमाल जिन मन्दिर थे इस प्रकार जिस नगर (महुषा) में कवि रहते थे वह अपने समय का उत्तम नगर माना जाता था।

तेह देस माही सोहि महुषा नवरी बसततो ।

वन कण कणयर तने भरी, महाजन नवसय महंततो ॥७॥

ब्राह्मण वेदने भ्रम्यासे नाहि पूर्ण नदी मांही तो ।

प्रवर वरण चरमा बसि सां नित नित होय उछाहतो ॥८॥

सिंहपुरा कुल मंडण वहि बारिया श्रावक बसंततो ।

दान पूजा व्रत अभिषेक, बहुयरि चरम करंततो ॥१२॥१३२॥

महुषा नगर के मन्दिर की मूलनायक प्रतिमा चन्द्रप्रभु स्वामी की थी। मन्दिर में धरणेन्द्र पद्मावती की प्रतिमा भी थी जिनके दर्शनमात्र से भूत पिशाच की बाधा दूर हो जाती थी मन्दिर के बहार क्षेत्रपाल भी पूजे जाते थे।

महुषा नगर में अनेक श्रावक थे जिनमें संघवी नाकर नन्दन, संघवी शिवदास सघवी दाभाई, साहू नाहानकुल चादलो, सघवी जना, जयवंत सघवी, हंसराज सुत साहू कंभारी, नाहन शत मांघजी, भाणजी आदि के नाम विशेषतः उल्लेखनीय थे जिनके नाम कवि ने ग्रंथ प्रकाशित में गिनाये हैं। इन सबने यशोधर रास की रचना में विशेष प्रेरणा की थी।

सघवी नाकार नंदन ।सा०। संघवी वाहि शिवदास तो ।

मूपाल कुल सोहावर ।सा०। संघवीदा भाई मुखराम तो ॥३१॥

साहा नाहा नकुल चादलो ।सा०। दा भाई दान दातार तो ।

संघवी जना कुल मण्डण ।सा०। जयवंत सघवी उदारतो ॥३१॥

हंसराज सुत साहा कुंभर जी ।सा०। नाहन सुत मांघजी सुबंगतो ।

भाणजी आदि संघ आदरणी ।सा०। रास रच्यो मन रंगतो ॥४०॥

१ तेह स्वतन्त्र छन्द भी, महुषा नगर बजारतो ।

चन्द्रप्रभ चैत्यालय रास रच्यो मुख आरतो ॥

देवेन्द्र कवि भट्टारक सकलकीर्ति के भ्राम्नाभ में होने वाले भट्टारकों— सकलकीर्ति, मुवनकीर्ति ज्ञानभूषण, विजयकीर्ति, शुभचन्द्र, सकल भूषण, सुमति कीर्ति एवं गुणकीर्ति जैसे भट्टारकों एवं ब्रह्म जिनदास एवं उनके शिष्य शान्तिदास व. हंसराज एवं व. राजपाल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से बड़े प्रभावित थे इसलिए कवि ने उनका साभार उल्लेख किया है। कवि के समय में ब्रह्म शान्तिदास थे जिनके उपदेश एवं प्रेरणा से कवि की धर्म एवं साहित्य रचना की ओर प्रवृत्ति बढ़ी।

यशोधर के जीवन की लोकप्रियता

यशोधर राजा का जीवन जैन समाज में अत्यधिक लोकप्रिय रहा है। द्रव्य हिमा के स्थान पर भाव हिंसा भी कितनी पाप बन्ध का कारण बनती है यही इस काव्य का मुख्य मदेश है। इसलिए महाकवि पुष्पदन्त से लेकर देवेन्द्र कवि तक निम्न कवियों ने अपनी शैली एवं भाषा में यशोधर काव्यों की रचना करके यशोधर के जीवन का एक कीर्तिमान प्रस्तुत किया :—

१	जसहर चरित्र	महाकवि पुष्पादन्त	अपभ्रंश	६ वीं शताब्दि
२.	यशस्तलक चम्पू	सोमदेवसूरि	संस्कृत	शक संवत् ८८१
३	यशोधर चरित्र	भ. सकलकीर्ति	,,	१५ वीं शताब्दि
४	यशोधर रास	ब्र. जिनदास	राजस्थानी	१५ वीं शताब्दि

मूल सध भारती गच्छ पद्मनदी गच्छ राय तो ।

तेह पाटि सोहे दिनकर सकल कीरति गुण ठायतो ॥५०॥

मुवनकीर्ति भूवि विज्ञात, तस पाट सार सगुणार तो ।

ज्ञानभूषण ज्ञानदायक, गोयम सम आचार तो ॥५१॥

विजय कीरती गुरु गच्छपती, वचन सीधी मुनि हंसतो ।

तस पटोवर सुभचन्द्र वादीस्वर वर वंसतो ॥५२॥

हूवड कुन बडे साजन, सकल भूषणो नुत पायतो ।

वादीय मान मर्दन षट् दर्शण वादी रायतो ॥५३॥

तेह पारि सुमती कीरती सूरी, तेह पाटि उदयो भाण तो ।

भवीया कमल विकासवा, गुणकीरती गुण जाशतो ॥५४॥

एह गच्छपति तणि अन्वय, ब्रह्मचारी जिनदास तो ।

मानिदास तम पट वर, ब्रह्म हंसराज मुखवासतो ॥५५॥

राजपाल ब्रह्म तेह पाटि, सांमति श्री शान्तिदास ।

नेह उपदेश धनपोर श्री जिनधर्म उल्लुख तो ॥५६॥

५.	यशोधर चरित	आचार्य सोमकीर्ति	संस्कृत	संवत् १५३६
६.	यशोधर रास	"	हिन्दी	"
७.	जसहूर चरित	पं. रघु	अपभ्रंश	१५ वीं शताब्दि

कविहर देवेन्द्र के पश्चात् संस्कृत एवं हिन्दी कवियों की श्रौर भी यशोधर काव्यों की रचनायें मिलती हैं जो उनकी जीवन कथा की लोकप्रियता की द्योतक हैं। देवेन्द्र के यशोधर रास की वही कथा है जिसका हम अकादमी के पंचम भाग में सार दे चुके हैं फिर भी पाठकों की जानकारी के लिए यशोधर रास का संक्षिप्त सार यहां भी दिया जा रहा है।

कथासार

भारत क्षेत्र के आर्य खण्ड में योष देस था जहां की प्राकृतिक सुषुमा निर्गली थी तथा प्राणीमान निर्मय होकर विचरण करते थे। राजपौर नगर में महलों की पकितया एवं मन्दिरों के शिखर दूर से ही नगर की भव्यता एवं सुन्दरता का प्रदर्शन करते थे। नगर में सभी जाति के लोग रहते थे। योष देस के राजा मारिदत्त था जिसका राज्य वैभव निराला था। वह अत्यन्त प्रतापी राजा था। एक दिन उसी नगर में शैरवानन्द नाम का एक जोमी आया जिसके हाथ में त्रिशूल था। वह डमरू बजाता तथा वनचरों की हिंसा करने में आनन्द मानता था। उसने नगर में आते ही अपने ज्ञान विज्ञान के सम्बन्ध में अनेक बातें बतलाई तथा कहने लगा कि उसे राम लक्ष्मण, पाण्डव आदि दिससायी देते हैं और वह वनता को भी दर्शन करा सकता है। जोमी को राज दरबार में बुलाया गया जहां उसने राजा को प्रभावित कर लिया और जब राजा ने आकाशगामिनी विद्या प्राप्त करना चाहा तो उसने ऋद्धमारी देवी की भक्ति एवं उसके आगे पल्लवर जलधर एवं नजधर जीवों के युवनों की बलि आकाशगामिनी विद्यासिद्धि के लिए आवश्यक बतलाया। राजा ने अपने सैनिकों को तत्काल सभी प्राणी युगलों को लाने का आदेश दिया। ऋद्धमारी का मन्दिर पशु पक्षी युगलों से भर गया। हिंसा का घोर वातावरण बन गया। मन्दिर में चीरहार एवं चिल्लाहूठ के अतिरिक्त कुछ भी नहीं रहा। इसके पश्चात् शैरवानन्द ने कहा कि जब तक मानव युवक को बलिदान के लिए नहीं लाया जायेगा तब तक विद्या सिद्ध नहीं होगी। राजाके आदेशानुसार उसके सैनिक चारों ओर दौड़े और मार्ग में जाते हुए एक बहूधारी एवं एक बहूधारिण को पकड़ कर देवी के मन्दिर में ले आये।

राजा मारिदत्त वहीं था। मानव युवक और वह भी सधु के केश में तथा सुन्दर तथा कान्तिमान देह युक्त शरीरधारियों को देखकर राजा आश्चर्य चकित

हो गया। नगर के बाहर तीन दिन पूर्व ही दिसम्बर जैन मुनि सुदत्ताचार्य का संघ आया था। आचार्य के तपोबल से चारों तरफ हरिवासी छा गयी थी। उसी संघ के वे दोनों साधु एवं साध्वी थे जो आहार के लिए नगर में जा रहे थे।

राजा मारिदत्त जैसे ही नर युगल का बंध करने के लिए तलवार सम्हालने लगा, दोनों साधु साध्वी ने राजा को आश्रीर्वाद दिया तथा उसके दीर्घजीवन एवं यश की कामना की। राजा उनके वचन सुन कर उनसे अत्यधिक प्रभावित हुआ और अल्प वय में ही साधु जीवन अपनाने का कारण जानना चाहा। ब्रह्मचारी ने राजा से कहा कि वह इनके सम्बन्ध में जानकर क्या करेगा क्योंकि वह स्वयं तो पाप बुद्धि में फसा हुआ है। राजा ने तत्काल तलवार छोड़ दी और उनसे पूर्व भाव जानने के लिए आतुर हो उठा।

मारिदत्त तब उपसम्यो, खड्ग मुक्थो तेणि वार ।

कर युगम जोडी करी, करी कोपनो परीहार ॥३॥२४॥

इसके पश्चात् ब्रह्मचारी ने निम्न प्रकार कथा प्रारम्भ की :—

भारत देश के आर्य खण्ड में अरबंती प्रदेश था जो अपनी प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए सर्वत्र प्रसिद्ध था। उज्जयिनी उसकी राजधानी थी जो सभी तरह से सम्पन्न नगर था। जिसका कवि ने बहुत ही विस्तृत वर्णन किया है। वहाँ का राजा था यशोध जो क्षत्रिय वंश भूषण था। रागी का नाम चन्द्रमती था जिसकी देह का निर्माण मानों स्वयं विशाला ने ही किया था। कुछ समय पश्चात् उसको पुत्र रत्न की जब प्राप्ति हुई तो चारों ओर आनन्द छा गया। राजकुमार का नाम यशोधर रखा गया।

नाम जसोधर तेह वीऊए, बहु पिरि करि उछाहतो ।

रतन जडित भूषण भलाए, पहिरवी बरि ऊमाहतो ॥२३॥३२॥

पाच वर्ष का होने पर राजकुमार को पढ़ने भेजा गया जहाँ उसने सभी विद्याएँ सीख ली। न्याय, व्याकरण, छन्द, अलंकार तर्क संगीत, ज्योतिष, आदि सभी शास्त्रों में पारंगता प्राप्त की। युवा होने पर उसे युवराज पद से सुशोभित किया गया। युवराज के विवाह का प्रस्ताव लेकर बराह देश के राजा सालिवाहन के पास भेजा। उसकी पुत्री का नाम अमृतमती था। जब अमृतमती का लग्न लेकर वहाँ का मंत्री उज्जयिनी आया तब अनेक प्रकार के उत्सव किए गए। पत्नियाँ लिखी गयीं और सहस्रों कुटुम्बी जन एकत्रित हुए। नाच गान एवं संगीत समारोह सम्पन्न किए गये। उज्जयिनी से बाराह बाराह देश गयी जहाँ उसका इतना अधिक स्वागत एसा कि लोग आश्चर्य करने लगे। दहेज इतना अधिक दिया गया जिसका

री क हि मा हा वी र । श्री सु गी ग ति सं चार क हि । मां स न के श्च दे आ दार नो छे ति न
 मा नि । वर्ष र ५५ जा ते । श्री क न से न आ नो श्री आ प्र ली ग छे नो स्था प ना को धी । वी किं
 म प छि । वर्ष ५३ ६ ग ते । श्री पु ज्य या द शि स्य व ज्ञ नं री ज्ञो व दे सं ध नी स्था प नी को धी ।
 बी ज्ञ नो पा सी म नो त्र न मा नि को नो दी मा व थ न मां श्री वी के म प छो वर्ष ५५ ३ ।
 वि नू म ते न शि ष्य के मार से न । स न्या स नं ग क री नि को कृ सं ध नी स्था प ना का श्री
 श्री कृ क ठ ग । च म र नी लो धी । श्री नि पु न र पी दा दा । नू ल क नि वी र च री ।
 श्री पु श्र त क हि । वी के म प छि । वर्ष २० । जा ते । म यु रा यां । रा म से ते म्मा थ री
 ग छे नी स्था ॥ ना की श्री ने मी छी या । द श ए दे से । वि कृ दे से । पु क्रि लो च ती ने
 रे । बी र च द्र मु नी ना । ते न क री ष्य ति । श्री लि सं ध या बी के म प छी । वर्ष १२००
 ते की या वी प रा त क री स्व ती । सं व त् १६५० वर्षे सं व मां ६ त्रे ले स्तो तं व
 इ अ जी त म ती नी ज क र्म दोः या इ ।

बाई यजीतमति द्वारा संवत् १६५० में लिखित मूल पांडुलिपि के एक पृष्ठ का चित्र

य सुयज्ञः प्रकीर्त्तितो । श्रीसिधने मंगलकरे । शान्तिस्तोत्रे ॥ ३ ॥ ब्रह्मजिन्यो वीसत
गाम्भतीमातृप्राथम्ये । रासुर्यो मेसार नीर्मल । सरस्वतीमायप्रसादाशी ॥ श्रीय
ज्ञानोपदिमायुगला । अक्षरमात्रपदस्वर ॥ कोकोइकोहोया । आदुर्यो कश्चि सुचकरी । कामाकर
योमहोलाया ॥ २ ॥ श्रीरुद्र । समदानस्यो लगुण मते । सद्यः यतु र्यासनेनेदत्ते तदनेतवर्त्तनिभिदि ॥
नरे देवसर्वोत्साहना । अविवक्षयवाक सुभाक्षितरतातपीः कवीशः सतो सद्धर्मः किं सवद्धसंश्रियु
नये जेतोदयोत्सवः ॥ १ ॥ ॥ इति श्री ध्यावाश्रमहाराज शरित्रे । रत्नाचूडामहोकाव्य प्रतिष्ठेदे स्तरेवने
नी श्रीब्रह्मसुतदेवेंद्र विरथीति । यशोधयशोधरराजादि ऋषीः । तस्यथाक्रम स्वर्गगमनो नामनद
मोऽधीकसायशोधरराससंघर्षैः । अरहेवः ॥ सवती ६४४ वर्षे जाडवासुदि २ ऋगो । अथोत्सवः ।
पुरवीसव्ये । उदीव्यमानियराउलसोमनाथसुनवीश्वनाथा । लीखते ॥ शुर्मनवतु ॥ । अथसेरवा
योत्रीससिधया । श्लोक ३५०० ॥ का । छा । पाठ । छा । नाना । बालंवा । छ ॥ नो । छ ॥ न । छ ॥ ३ ॥ ३ ॥ श्री

कोई पार नहीं था। किन्तु के पश्चात् राजा यक्षोध ने राजकुमार यक्षोधर को पूर्ण रूप से बोधय मान कर उसका धपने ही हाथों से राज्याभिषेक कर दिया।

राजा यक्षोधर राज्य करने लगे। रानी अमृतवती भी जीवन का आनन्द लेने लगी बसन्त ऋतु आने पर बसन्तोत्सव मनाया गया तथा राजा एवं रानी बन क्रीड़ा करने गये। कवि ने बसन्तोत्सव का सूर्योदय एवं सूर्यास्त दोनों का अचछी तरह बर्णन किया है। कुछ समय पश्चात् रानी का महलों नीचे रहने वाले कुबड़ा से प्रेम हो गया और वह एक रात्रि को राजा को सोता हुआ जानकर पूरे भुंगार के साथ अकेली ही उसके पास चली, राजा भी जग गया और उसके पीछे पीछे चलने लगा। वहाँ राजा को यह देख कर महान् आश्चर्य हुआ कि किस प्रकार एक रानी दुर्गन्ध युक्त कुबड़े की मिश्रत कर रही है। एक बार तो राजा ने अपनी तलवार से उसे मारना चाहा लेकिन बाद में उसने स्थिति को देख कर वापिस पलंग पर सो गया। कुछ समय पश्चात् रानी भी वहीं आकर सो गयी।

यक्षोधर राजा को जब दुस्वप्न की शान्ति के लिए एवं सुख समृद्धि के लिए देवी के सामने जीवों का बध करने के लिए उसकी माता चन्द्रमती ने बहुत समझाया लेकिन राजा ने कहा कि हिंसा करने से पाप लगता है, नीच गति का बंध होता है। उसकी माता ने एक घाटे का कूकड़ा बनाया और उसी का बध करने का आग्रह किया राजा ने माता की बात मानली और घाटे कुकड़े का बध कर दिया। इससे यक्षोधर ने बहुत पश्चाताप किया और गृह त्याग कर तपस्वी बनने का निर्णय लिया। रानी को जब यह मालुम हुआ तो वह रोने लगी और बिना पति के जीना ही अर्थ समझा। उसने राजा से प्रार्थना करी कि वह एक बार उसके यहा आहार लेवे उसके बाद दोनों ही तपस्वी बन जायेंगे। रानी ने राजा को एक माता चन्द्रमती को विष के लड्डू खिला दिये जिसके कारण राजा वैद्य २ करता हुआ मर गया। इसके पश्चात् रानी ने रोना पीटना प्रारम्भ किया। और प्रजाजनों को ऐसा आभास करा दिया जैसे राजा की प्राकृतिक मृत्यु हुई हो। यक्षोधर की मृत्यु से सारे नगर में शोक छा गया। राजा की १०० रात्रियों से से कितनी ही स्वतः ही मर गयी। कुछ ने वैराग्य धारण कर सिद्ध-ः राजा का दाह संस्कार कर दिया गया। ब्राह्मणों को सब दान दिया गया।

ठाम ठाम थी ब्राह्मण बाग्या, बहूबेर दान देबाय।

वन कांवन कस सुत कस्या, मशी कस्यादि अंधार ॥१॥

बध अथवा रथ को नहींसी, धादि कू दीर्घ दान।

बद्ध बाकर भीने बाहेमा, ब्रह्म भोजन विधान ॥२॥

इसके पश्चात् राजा यशोधर एवं माता चन्द्रमती के भवों का क्रम प्रारम्भ होता है। राजा यशोधर मर कर स्वान हुआ और चन्द्रमति मौर हुई। एक दिन मौर चन्द्रमती रानी के महल की छत पर था। वहाँ से उसने रानी एवं कुबड़े को कुकर्म करता हुआ देख लिया। मौर ने कुबड़े को अपनी चौचों से शायल कर दिया यशोमती ने मोग को पाला था जिसने लपककर मौरनी की गर्दन दबोच ली जिससे वह तत्काल मर गयी। कुत्ते को बनमे दौड़ते हुए बाघनीने खा लिया। इसके पश्चात स्वान मर कर सर्प हुआ तथा मौर मरकर सेहलु हुई। जब सेहलु ने सर्प को देखा तो उसकी पूछ पकड़ कर चबा लिया। अगले भवमे सेहलु मर कर बड़ा मगर हुआ और सर्प रोही (ससुमार) हो गया।

एक दिन राजा की नर्तकी तलाब पर नहा रही थी तभी उस मगर ने उसे पकड़ लिया। जब राजा को समाचार मिला तो मगर को पकड़ने का आदेश हुआ। अन्त मे उस ससुमार ने मगर को पकड़ लिया और लकड़ी मूसल आदि से उसे खूब मारा। वह अत्यन्त वेदना के साथ मर गया और नगर के समीप ही बकरी हुई। कहा यशोधर राजा की रानी और कहाँ बकरी का जीव। लेकिन यह सब कुकड़े को मारने से गति प्राप्त हुई। रोहित मर कर बड़ी मच्छली हुई। जिसे तल २ खाया गया फिर वह मर कर बकरा हुआ। बकरा मर कर पुनः उसी बकरी के गर्भ से बकरा हुआ। बकरा मर कर पुन मीसा हुआ। जिसे बरदत्त बजाजारा भार लादने के काम मे लेने लगा। वे फिर दोनों मर कर मुर्गा मुर्गी की की योनी मे पैदा हुए। उन दोनों को मुनिराज से धर्मोपदेश सुन कर जाति स्मरण हो गया तथा व्रत ग्रहण किए।

तव अहमे बेहू कूकड़े, सुणयू धरमनि भवतार सार।

जाति समर उपनू सही, अहमे परण लीखा बरत भवतार ॥२६॥१०२॥

दोनों मुर्गा मुर्गी प्रसन्नता से कू कू कर रहे थे तभी राजा ने दोनों को शब्द भेदी बाण से मार दिया। फिर वे ही कुसुमावली रानी के गर्भ से पुत्र पुत्री के रूप मे पैदा हुए। जिनका अभयकवि एवं अभयमति नाम रखा गया। कवि ने यशोधर एवं चन्द्रमती के भवों का निम्न प्रकार वर्णन किया है —

अमृतायि जसोधर चन्द्रमनी मारणा, मौर कुतरा भव भव भागो ॥२४॥

तीहा थी मरी सिहिलो सांप हवां, बली रोहीत ससुमार।

चन्द्रमती छाखी हवा तेह गर्भीराव छाग हवी के बार सा०॥२५॥

चन्द्रमती महीव थोनि पइया तहां थी कूकड़ां हवा बेहू।

कुतीम जीवहि साफल पाग्पा, भवि भमतां नही छेह ॥सा०॥२६॥

यशोधर एवं चन्द्रमती की पूर्वभवों की कहानी सुनकर कोटवाल एवं मारीदत्त राजा भयभीत हो गए और उन्होंने जैन धर्म स्वीकार कर निम्न प्रकार विचार प्रकट किये :—

आज चिन्तामणि रत्न में पाम्पू, पाम्प्यो धर्म कल्प वृक्ष ।

जिनबासी जिनदत्त सासन, जिरिण जाण्यो ते दक्ष ।सा०॥३६॥१०३॥

राजा यशोमति एक दिन वन में गया जहाँ सुदत्ताचार्य मुनि ध्यानस्थ बैठे थे राजा ने मुनि दर्शन को अपसक्तुन समझा और मुनि के ऊपर ५०० कुत्ते छुड़वा दिये । लेकिन मुनि की तपस्या से कुत्ते शान्त होकर बैठ गये । तब राजा तलवार लेकर मुनि को मारने चला । उसी समय उसे कल्याणमित्र मिला जो मुनि की वन्दना के लिए वहाँ आया था । राजा से उसने मुनि वन्दना के लिये कहा लेकिन राजा ने कहा कि उनके दर्शन तो अपसक्तुन है । कल्याण मित्र ने राजा की बहुत समझाया तथा कहा मानव तो सरल स्वभावी, त्यागी एवं शुद्ध परिणामी होने का लक्षण है । उसने कहा कि ये कलिंग नरेश सुदत्तराज हैं राजा और कल्याणमित्र ने उनकी वन्दना की तो मुनि ने धर्मवृद्धि ही ऐसा आशीर्वाद दिया । राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ तथा वह अपने किये पर पछताने लगा । उसने अपना घात करना चाहा लेकिन आचार्य श्री ने उसकी मन की बात जानकर रोक दिया । राजा मुनि से बड़ा प्रभावित हुआ ।

इसके पश्चात् मुनि ने यशोधर राजा एवं चन्द्रमती के पूर्वभवों की कथा कह सुनायी तथा एक घाटे के मुर्गे का बंध भी कितने जन्मों के लिए दुखदायी होता है । इसका प्रत्यक्ष उदाहरण उसके पुत्र पुत्री हैं बतलाया । राजा को तत्काल वैराग्य हो गया तथा भ्रम्य रुचि को राज्य देकर पांचसी राजाघों के साथ मुनि वन गया । इसके पश्चात् भ्रम्यरुचि एवं भ्रम्यमति ने श्री जिन दीक्षा धारण करली मारिदत्त राजाको उक्त सब वृत्तान्त सुनकर वैराग्यभाव उत्पन्न हो गए । सुदत्तचार्य ने उसके भी पूर्वभवों का वृत्तान्त सुनाया । इसके पश्चात् मुनि दीक्षा धारण कर स्वर्ग प्राप्त किया । चण्डमारी देवी के पुजारी ने भी हिंसापूर्वक छोड़ कर जिन दीक्षा धारण करली । देवी के मन्दिर को स्वच्छ कर दिया और जीव हिंसा तथा के लिए बन्द कर दी सुदत्ताचार्य ने समाधिपरण करके १६वां स्वर्ग प्राप्त किया । भ्रम्यमती एवं भ्रम्यरुचि ने भी कठोर तप साधना द्वारा स्वर्ग प्राप्त किया ।



यशोधर रास

1. रचयिता — देवेन्द्र कवि
2. रचना काल — संवत् १६३८ (सन् ११८१)
3. रचना स्थान — महुष्ठा नगर (गुजरात)
4. लिपि काल — संवत् १६४४ (सन् १५८७)
5. पाण्डु लिपि
प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर प्रतापगढ़ (राज०)

ॐ नमः सिद्धेश्वर्यः । श्री सारदाई नमः । श्री मुष्ण्यो नमः ।

बस्तु छन्द

मंगलाचरण

श्री मुनिसुव्रत जिनवि नभेवि, शेष करे जसु सुर निकर ॥
गणहर मुनिवरे जेह पूजिय, तीर्थकर बीसमो जयो ॥
नवीभ्रण जेह वचनेहि रंजिय, छयतारतीस गुणि मंडियु ॥
खंडीयो कुषत प्रसार ।
सो जिनवर भगलकरो, त्रिभुवन तारण हार ॥१॥

बूहा

श्री जिन वदन कमल थकी, प्रगटह वीस प्रसीध ।
सरसती सरस वचन दीयु, हंसगामिनी मति बुद्धि ॥१॥
गुरागुरुणा गुरू ध्यायसूँ, पायसु सुमति सुभास ।
समल सजन ध्यानन्द करो, गायसूँ यशोधर रास ॥२॥
त्रैनयन पूजित त्रिभुवने, विष्णुता त्रिनेत्र ।
बेला पुस्तक बारिणी, जयमाली भक्त सुविचित्र ॥३॥
विविध वाञ्छित वरदायिनि, स्याद्वादिनि जगमाय ।
शेवक जननें सारदा, वाञ्छित करो पसाय ॥४॥

भास जसोबरोजी

भवीअण जण भानंद काज, तीर्थकर देव ।
चोवीस जिनस्तवूं जूजू आ बहु भावसूं हेव ॥१॥

चौबीस तीर्थकर स्तवन

प्रथम जिनेश्वर रूपभलाय, नाम्यो जेशि काम ।
धर्म कर्म प्रगटी करी, पाप्यो सिव ठाम ॥२॥

अजित जिनाधिप विजित कोह, मोह मछर वारण ।
केवल बोध सुवचन दिव्य, भव्य दुरित निवारण ॥३॥

सभव संभव्यु भव्य पुष्य, पुष्यम ज्ञानि सभ मुख ।
त्रिभुवन जन उदारी करी, करी शिवबभू सुख ॥४॥

शवनी मनोपस श्वतरचू, हरचो मिथ्याअन्धकार ।
अभिनन्दन जिन जाणो भाख, बाणो कमल विस्तार ॥५॥

सुमति तीर्थकर सुमति दान, मान सार्तप केसनी ।
तत्त्वप्रकाशी सिव बयो, जयो सो जिनि बहुवरी ॥६॥

पद्मप्रभ जिन पद्म भास, भाषा जित जलधर ।
धर्मासुत रसि सींचीवा, भवीयाकस्योत्कर ॥७॥

मरकत काति सुपाश्वदेव, देवेन्द्रवी बंदीव ।
नभ्यकाल असु तिसुपणि, बशि सुवरणें भूषीव ॥८॥

चन्द्रप्रभ जिन पति हवो, सबो शवनी चन्द्र ।
कुमति कमल कोमलाणो साधु, वाभ्यु हरल समुद्र ॥९॥

पंच कल्याणो पूजीयो, जयो जिन पुष्यदन्त ।
तनु जीत नारद चन्द्र वृंद, कुंद को कसी दंत ॥१०॥

सीतल सीतल बचन बंब, बंब सप्त तरंग ।
बाणी बंगा प्रसालया, भवीघां अंतरंग ॥११॥

अबह दायक बी अयोध, हंस एणण सरोवर ।
सुर नर फलधर करी प्रसंग, संसार जगकर ॥१२॥

बसुआयक बहुपुजंत, पूषीम पितृवास ।
वासुपुष्य अम पूजीत, बीतु काम विलास ॥१३॥

विद्यकजिन प्रभु विमल बलराज, इतरा सुखदायक ।
वपवत भाठ सहित धनुष, बी बंध जनाधिक ॥१४॥

अनंत अनंत सुकुरा मीलो, तिलो त्रैलोक सोहें ॥
 अनुदिनु बिहू अनुभवुं, तहां बहुत उछाहें ॥१५॥
 धर्म धोरंधर धर्मनाथ, पाथो निधि मभीर ।
 अनंत चतुष्टय मन्दिरो, भेद र राग र धीर ॥१६॥
 ज्ञातिकरण जने ज्ञातिदेव, सेबि सुर विद्याधर ।
 षट् संडाधिप कोटि काम, मयी रूप मनोहर ॥१७॥
 कुंथु भादि जीवह दयाल, जिन कुंथु समर्थ ।
 मिथ्यामत तम विषटथो, प्रगटथो परमार्थ ॥१८॥
 धर धर्म्यंतर बाह्य लक्ष, लक्ष्मी कगी मंडित ।
 चतुरानन चतुरपणि, धनुं सेव पडीत ॥१९॥
 सुर मुकुट स्थित मल्लिमाल, पूज्यो पद पकज ।
 काम मल्ल प्रति मल्ल मल्लि, जिनगत सत्य व्रज ॥२०॥
 सुवत संयुत सुवत जिन, दिन दिनपती मसी ।
 करय प्रदक्षण मेरू समो, सम दम कीयु बसी ॥२१॥
 नमि जिन नमीत सुरेंद्रचंद्र, कुंद चंद्र असोज्ज्वल ।
 तप्त सु कांचन सदसु वर्ण, कर्ण सुखद जेह स्वर ॥२२॥
 धर्म महारथ जैसो नेमि, नेमि जदुकुल मंडरण ॥
 सामल वर्ण जिनाभिराम, काम कुमति बिहडरण ॥२३॥
 नील वर्ण तनु पार्श्वस्वामि, कामिनि रती दूर ॥
 फणपती पूजित जित मदाष्ट, बुष्ट कमठह धूर ॥२४॥
 वर्धमान जस वर्धमान, त्रिभुवनि विस्तरयो ।
 कलियुग माहि सीस रूप, उपकारज करयो ॥२५॥

वस्तु

ए चोबीस जिन. जिन त्रिभुवन ईश ।
 शरीत अनागत सहीत सदा, धावू हूं हैये भाव आणिय ॥
 संसार साधर तारण, कारण सह मंगलह जाणिय ।
 वेहेरमाण बीसे सहीत, सहीत वचन सुखदान ॥
 श्री संघह मंगल करो, देवेन्द्र नुत विधात ॥१॥

भास बीनतीनी

गणधरों की बन्दना

भाव भगत सहीत, हित भवीअण तणुं मनिबरीइ ।
 गणधर बरणुं सार, संज्ञा सहीत भली परिए ॥१॥
 वृषभसेन छें आदि आदि जिनह चोरासी हवा ए ।
 अजीतह गणधर नेऊं, लेऊं भुए सिहसेन अवाए ॥२॥
 संभवनि सत पंच, सहित चारुवेणादिक ए ॥
 व्रजनाभि आदि होय अभीनंदन मतत्री अचिक ॥३॥
 सुमति एक सो सोल, चामर भुष्य गणाधिप ए ॥
 पद्मप्रभ सत एक, दस सुवज्ज चामर भू स्वामी ॥४॥
 पचारां छे सुपार्श्व, गणपति बलपूर्वक सखी ए ॥
 त्राणं चन्द्रप्रभ देव, दत्त प्रमुख सवा भणो ए ॥५॥
 अठयासी पुष्पदत्त, संत विदभार्दिक सहीए ॥
 अणगारादि गणेश, सीतलनि एकासी कहीए ॥६॥
 कुंभु प्रधान श्रेयांस, सत्योत्तर सत्यें भणोए ॥
 छासठ श्री वासुपूज्य, पूज्य धर्म आदि गणुए ॥७॥
 विमल पंचावन मेहु, धीरा मेरु आदि कहाए ॥
 गणोन्द्र अनंत पंचास, प्राणाजवि जयार्थ लहाए ॥८॥
 त्रयतालीस गरीष्ट, अरीष्टसेनादिक धर्मनिए ॥
 छबीस शांति चक्रेश, चक्रायुध आदिधर्मदे ए ॥९॥
 ध्याऊं, पांतीस गणोन्द्र, कुंभु संभू स्वयं प्रमुख ।
 भरनि त्रीस गणेश, कुंभ मुसुज्याइ होइ सुख ॥१०॥
 अठ्यावीस विसाच, पूर्वक गरिमल्लिनि भलाए ।
 मुनिसुवत नि अठार, मल्लिमूक सही भुए निहाए ॥११॥
 गणधर सत्तर होय, सुप्रभादिक भविनायक ए ।
 नेमि जिननि अठवार, बरदत्तादि बरदायक ए ॥१२॥
 दशदिशि यज्ञ कीय वास, पासनि यज्ञ स्वयंभू मुख ए ॥
 गौतम आदि अणवार, जीरनि विस्तारित मुख ए ॥१३॥
 एवं करों जाणि, गणधर संज्ञा चौदसो ए ॥
 बावन पावन होय, जोई ध्यान निठ अभ्यासो ए ॥१४॥

जिम लहौ सौर्य अवार, पार पान्यौ संसार तसौ ए ॥
रोग बियोग बिरास, भास ए कवि वैवेन्द्र भरिए ॥१५॥

केवली एवं श्रुतकेवली

अनुक्रमि गौतम स्वामि, सुधर्माचारज केवलीए ॥
अंतिम केवली जाणिए, जबू स्वामी कीरती भलीए ॥१६॥
श्रुत केवली बली पंच, ससार दु ख हरिए ॥
विष्णुनंदि मित्र होय, अपराजित विजित स्मर ए ॥१७॥

अंग व पूर्व के ज्ञाता

गोवरधन गुणवत, वाणी भवी अग्य उद्धरे ए ॥
भद्रबाहु बहूभेद, चन्द्रगुपती ससय हरे ए ॥१८॥
दक्षपूरव धरधीर, विसाल अदि मुनीवर हवा ए ॥
जिनशासन उद्योत, सबल मिथ्यात निवारवाए ॥१९॥
एकादशांग सुजाण नक्षत्रादि सोहामणाए ॥
अनुक्रमि श्री कुंदकुद, पचनामि कोडामणाए ॥२०॥

आचार्य वन्दना

उमास्वामि मुनि संत, समन्तभद्र भविष्ठा तिलो ए ॥
प्रतिबोध्या सिव कोटि, कीष स्वयंभू गुणानिलोए ॥२१॥
पूज्यपाद प्रसीध, जिनसेन सासनं चंदलो ए ॥
अनोपम अकलंक वीर, धीर बीष जीतवा भलो ए ॥२२॥
गुणभद्रादि अनेक, पूर्वाचारज बहू हवा ए ।
तं ध्याऊ घरी भाव, कामवांछित सिद्ध भवा ए ॥२३॥

अट्टारक वन्दना

अनुक्रमि श्री पद्मनंदि, पुष्यकंद पदीबरु ए ॥
वैवेन्द्रकीर्ति सुभूति, भवीअणनि उल्लव करो ए ॥२४॥
विद्यानंदि मुनेन्द्र, तेह पट कमलदिवाकरु ए ।
अल्लिभूषण माहंत, वचन सिद्धगुण आकर ए ॥२५॥

लक्ष्मीचंद्र मुनिचंद्र, तसु वद जलधि कृति करु ए ॥
 वीरचन्द्र विरुवात, अन्न त्यजि जस विस्तारु ए ॥२६॥
 ज्ञानमूषण सुरूप, मूप सह मानि वरुं ए ॥
 लाड न्यात सणगार, शरति मूर्ति गीषम अरुं ए ॥२७॥
 तस पाटि उदयोचन्द्र, प्रभाचन्द्र सोहामरु ए ॥
 बादि सरोमणि वीर, हुंबड कुल कोडामरु ए ॥२८॥
 प्रवनी मनोपम रूप, वादीचद तस पट सोहि ए ॥
 वादी सयल सणगार, भवी प्रस जग तणां मन मोहि ए ॥२९॥

रास रचना का संकल्प

वहा

एह गछपति भादेसथी, रास रचेवा भाव ।
 उद्यम भाडयो मन रली, सजन भानंदह काव ॥३०॥

लघु गुण देखी पर तणो, गिरि सम लेखि जेह ॥
 बहू नीज गर्बह नही, कहीभि सज्जन तेह ॥३१॥

सज्जन प्रशंसा

सुजना मन माखण समूं, जे कहि तेह भजाण ॥
 पर संतापि सज्जन तपि, माखण एह गुण हांण ॥३२॥
 सजनासा करसेलडी, सुनूं सुगंध सुभूप ॥
 वाटीय पीलीय छेदीयु, दह्यो नदाधिक रूप ॥३३॥
 सज्जन नेंबली बांसली, मलां उपना भलि बंश ॥
 छेवा मेळां बहु परी, मधुर वदि सु अलंस ॥३४॥
 सज्जन रचतां कर बकी, करयां जे परमाणुं ॥
 ते परमाणुं करी रच्यां, मेघ बंदन चंद्र बाण ॥३५॥
 पावस क्यु बन जपयरें, ब्रीधे बन्धन बन ॥
 सज्जन सदाए कपसरि, सहू बन नवबानंद ॥३६॥
 सज्जन करीछी बोडेकी, दिन दिन कीड केव ॥
 दुज्जण हूरे वीसि रचे, छानम पडो एक केव ॥३७॥

सज्जन सरीसो क्षण भलो, नही बरस खल साध ॥
 आंबा भसी क्षण छाहुली, न भसी बाउल बाध ॥८॥
 साधु साथि सादज सुखद, नहीं चिर खल खल सूं बाद ॥
 अमृत तणो स्पर्स छु भलो, न भलो बिल्ल आस्वाद ॥९॥
 दुज्जण भलि नीपाईउ, अरे विधाता जाण ।
 काच बिना मणि केम सहे, तम बिरण दिवस बख्साण ॥१०॥
 दुज्जणा भूहड दोए समा, दोखो दय संतोष ॥
 अघारो अघगुण गमि, ऊखोति होइ रोष ॥११॥
 मात थकी दूज्जण भलो, रवे बखोडो कोय ॥
 मात घोयि मल करी करि, दूज्जण जीभय घोय ॥१२॥
 मने नलो मुख मीठडो. भूक्यो दूज्जण दूर ॥
 कठिण सिला सेवा लसू, लपसि भागू ऊर ॥१३॥
 भण्यो गण्यो पण अघगणो, दुज्जण घणूं घणूं दूर ॥
 मणि मंडित सूं नभ्यहरि, प्राण फणी भति दूर ॥१४॥
 नीचु न मणो दूज्जणो, देखी बिस्वास म आण ॥
 जिम नमतो नीचो भीलडो, बाण भूंकी हरि प्राण ॥१५॥
 विनय करो अट्टंभन्द्र करो, तेह पण खल नडे सोय ॥
 सिर पर धरो पाए हण्यु, पण फणी डसतो जोय ॥१६॥
 घणूं सीखव्यो विनइस्तव्यो, खल न भूंकि दुष्ट भंस ॥
 दूषे घोईयि जोहू घणूं, काम न होइहं हंस ॥१७॥
 खल पुखतो गरडो हवो, तोहू दुष्ट पणूं न जाय ॥
 फल पाकां इन्द्र बारणीतां, किमे न मीठा थाय ॥१८॥
 दुज्जण जीवो बरस सो, जेह तापि सहू कोय ॥
 सूधि मारण संचरि, उत्तम मज्जम लोय ॥१९॥
 सूकर दुज्जण दोए जणूं, उपकारी महि मज्ज ॥
 सूकर सेरी सूकवि, दूज्जण दोख बिसूऊ ॥२०॥
 गुणग्राही सज्जन सदा, दुज्जण दोख न जोय ॥
 ए एह नोछि सभावडो, दोषम देसो कोय ॥२१॥
 सज्जन दूरथी बिन दुहि, खल मलघो दहिक्काय ॥
 बेह दाहक गुण सम वृथा, कुहो किम भेद कहिवाय ॥२२॥

भूतल उपकारी सवा, सज्जन दुग्जन भेड ।
 तेह भषी समता आणीयि, मला बट नाभि भेड ॥२३॥
 दोष लीखितो तैव जो, करो कवित कवि लोय ॥
 जूजका तणि अर्थे करी, वस्त्र न मूकि कोय ॥२४॥
 सुकवित सुकवी करय, सुणी, को एक पाभि उल्लास ।
 कामिनि नयन कटाक्ष थी, करय असोक चिन्नास ॥२५॥
 तुछ छे मुक्त मति अति धरूं, धरूं प्रेरयो गुण भास ।
 रास रचूं एह तेह भली, को मम करतो हास ॥२६॥

द्विनय प्रदर्शन

श्रोता मन सुध धिर करी, सुणायो त्यजी प्रमाद ।
 जोडंतां पद दोहलूं, मम धरसो अनुवाद ॥२७॥
 सुध समी श्रोता भणो, गुण किहीयो एके जाण ।
 दोष त्यजे दूर करी, गुण आदरि बचाण ॥२८॥
 चासणी समबली जाणीयि, श्रोता बीजा भेद ।
 दोष राखूं हवि दुड करी, गुणकेरो करूं छेद ॥२९॥
 एक नर काई लहि नहीं, सभा मांडाहो धाय ।
 मिहित पडयो जिमि मादसि, आछूं नीरडोहो बाय ॥३०॥
 गुण आणह आमत गुणी, करे ते विस्तार ।
 दूर यो अलि कंज गुण लहि, भेक न लहि विचार ॥३१॥

भास रासनी

जन्म द्वीप भरत कोज दर्शन

जन्म बृकि उपसलीयो ए, लस भोजन जंबूदीपयु ।
 दोए थंदा दोए दिनकरा ए, करय उद्योत जेम दीप तु ॥१॥
 समस दीप सागर माहें ए, महीन भर्ष्ये एहतु ।
 लस भोजन उन्नत भणो ए, कसय धिरि नाभि तेहनो ॥२॥
 नाम सुप्रसन्न तेह कछु ए, च्युं हो भले सोई के हतो ।
 अपधरानुं सुरि सेवयो ए, अयो एक सोल जिन तेहती ॥३॥

पंचोत्तर योजन उन्नत ए, सत योजन आयाम तु ।
 योजन पंचास विस्तारं कश्चो ए, तारव भवीष्ठा सुठम्भु ॥४॥
 कनक कलस करी खंडीयो ए, खंडीयो कुमतिनौ मानतो ॥
 मानस्वभ आयल भसाए, भली घटा निबान तो ॥५॥
 सिखर ध्वजा वृषरी घणं ए, घमकि पवन संयोग तो ॥
 सहलर्हि गगनें दूरपी दीसे ए, दीठि दुरति वियोग तो ॥६॥
 कनकमय रतने जड्या ए, अष्टमंगल सहित तो ।
 रतनवेदी रली भ्रामणीए, मणीमय बिब समेत तो ॥७॥
 पंचसे घनघ ऊनत सगो ए एक सु भ्राठ प्रमाशु तो ॥
 पचवरण किरणें करीए, जी कीया कोटी भाण तो ॥८॥
 अमर असुर विद्याधर ए, चारण मुनी करे सेवतो ।
 पच चूरण स्वस्तिक करीए, करय पूजा नित देव तु ॥९॥
 पचामृत अभिषेक होइ ए, होइ त्थांहा नाटारंभ तु ।
 अमरी किनरी जिन गुण गायत्रिए, भांवि नांवि रभ तो ॥१०॥
 ताल कसाल मादल भला ए बाजि अनेक बाजित्र तो ॥
 भवीभरण जन भावि भावनाए पूजय जिन जग मित्र तो ॥११॥
 तेह मेरू दक्षर दसिए, दीसय भरत सु क्षेत्र तो ।
 गगार्सिधु विजय करीए ए, सोहि खट खंड विचित्र तो ॥१२॥
 भारख खड तिहा जालीमिए, जाणो स्वर्गह खंड तो ।
 मगध देश तिहा भलो ए, सहू देश भाहि प्रचड तो ॥१३॥

अगध देश घर्णन

पुष्य तीर्थे करी अलकरघो ए, गंगा यमुना मध्यतो ॥
 ठाम ठाम मुनि तपि बलिए बने वनचरछि अबध्य तो ॥१४॥
 सरोवर छे जीहां सोहामणाए, भामणा कमल विस्तार तो ॥
 परिमलें बाध्या भमरलाए, करयते रण भरणकारतो ॥१५॥
 निरमल जलि करी पूरीयांए, हस करें स्वर सार तो ॥
 सारस चक्रवाकी सणो ए, कलीरव करय अपार तो ॥१६॥
 वनवाडी विवध परी ए, पिरपेर तरु अर जुक्त तो ॥
 आंवा आबली भ्रामलीए, अक्षोक अदती अति मुक्त तो ॥ १७॥
 बोलो वकुल बली बलसरिए, कदंब चंपक कुरंट तो ॥
 वाडी सींचे वा बालकाए, नांबती हाके अरहित तो ॥१८॥

रैहेंद भीतरकार भीरिण सरो ए, खुत पूरेहि एह तो ॥
 कबख चतुर तर भावता ए, पावि विक्रंती न वेह तो ॥१६॥
 जाई जूई जासू अलीए, सोबन केतकी कोड तो ॥
 मोवरा मालती मचकु द ए, चागोलीनि धवोड तो ॥२०॥
 नालिकेर नानारंग ए, नागेंग नें नागबेल तो ॥
 कमगख कोठां केवडा ए, केवडां बनिधि केल तो ॥२१॥
 दिक्ति विस द्राजा मंडप ए, उपि छाया प्रचूर तो ॥
 पधोयडा पंथ चालतां ए, संताप नें करि चूर तो ॥२२॥
 लींइ जांइ जंबीरडांए, बीजोरा बहुभेद तो ॥
 रायण आदि अनेक तरु ए, देसता जावि छेदतु ॥२३॥
 क्षेत्र दीसि ध्यान्य तस्राए, नीपना अनेक प्रकार तो ॥
 रावय कुणबी कन्यकाए, गावइ सरस अपार तु ॥२४॥
 ते सुरों बनि अली हरणलीए, वेधी नचरि समार तु ॥
 बीस्य वेध्यांवली हरणाला ए, तुह जाइ बनह मभार तु ॥२५॥
 बालकाने नयने बीकीया ए, लाजीया तेही वार तो ॥
 पथी भा गान सुणी करी ए, सांभरी आये नीज नार तो ॥२६॥
 वदन नीहाल जतां बापुडाए, जुही नवि सकय लगार तो ॥
 एहवी गति विषई तलीए, बीसरि विवेक विचार तु ॥२७॥
 नगर पांडरखपुर अती भलाए, छेटक कबंट नाम तु ॥
 भरया अख कलि करी अखूं ए, कणय रयण अभिराम तु ॥२८॥
 अनेक लोक तीहां बसिए, हसए ते देवनी अपार तु ॥
 रूप सपदा चतुर पणिए, महाजन विविध प्रकार तु ॥२९॥
 बन कम विरि विरि पुर पुरे ए, कचक तस्रां अतीचतु ॥
 जिन प्रासाद सिकरबंध ए, वेसी हरषें मज्ज जीव तु ॥३०॥
 ठाम ठाम मुनीचर दीसिए, देवता उपदेस तो ॥
 नरनारी सखामार करीए, जिन पूषी सुबिसस ते ॥३१॥
 बांदि मुनीने नीरमलाए, स्वामी बखल करि सार तु ॥
 च्यार चरख लोक पूरवी ए, देस सुवर्मे विस्तार तु ॥३२॥

इस

कटक नदी सिमर लखी, मंग नही अख एक ॥
 कटक अंजित कर नर तस्रां, स्त्री सिर मंग विवेक ॥३३॥

नीत राखें नृप अति धरां, लोक अनौत विकार ॥
 ए आचार्य मोटूँ भछे, डाहा लहि बिचार ॥२॥
 इत्यादिक सोभा सहीत, सङ्ग सुहीतकारी देस ॥
 भवी अण जन सहू सामलो, नयरह सुगुण कहेस ॥३॥

भास भमारुलीनी

राजगृह नगर बरणेन

राजगृह नगर छि हवडूँ तो भमारुली ।
 तेह देस माहि वीसालतो, पाषल फरतो ऊनत तो ॥भ॥
 सोनातणो सोहितालतो ॥१॥
 राता रतन को सीसे जडघां तो, गगन किरण विस्तार तो ॥
 मध्या नें रबी तावडतो ॥भ०॥ रातडो होयि जीहां सार तो ॥२॥
 नील रतन करी वेधीडं ॥तो भ०॥ कही एक नीलो होय तो ।
 रबी जाणो नील गिरि परी ॥तो भ० ॥ ऊम्यु एक अण तेय तो ॥३॥
 जलि करी पूरी खातीका ॥तो भ०॥ बीटी रहि पोर मान तो ॥
 जाणो लोभ्रिणी सापिणी ॥तु भ०॥ राखी रही एक निघ्यान तु ॥४॥
 पिर पिर पेखीयि पेषणा ॥तो भ०॥ पोडी पोल पगार तु ॥
 मोटी मेडी मतबारणां ॥तो भ०॥ बारणां बष्य सूं सार तु ॥५॥
 हाट श्रेण सोहामणी ॥तो० भ०॥ साहि मेडी श्रेण तो ॥
 धवल हर ऊन न घणा ॥तो भ०॥ सत छणा कोहि देख तो ॥६॥
 नर सु दर सुरपति समा ॥तो भ०॥ भूषण पिहिरि चडावनु ॥
 लीला लिहिर बहि बारीभा ॥तो भ०॥ दान पूजा करि भावनु ॥७॥
 कल्पवृक्ष जिम सोहीभा ॥तु भ०॥ भला भोग भोगवें बंग तु ॥
 घरि घरि मोहुछव होय ॥तु भ०॥ होइ नित नबारंग तु ॥८॥
 मोटां मेडी मालीया ॥तु भ०॥ विस्तरि अगुरु सुधूप तु ॥
 जूभा चंदननि कस्तूरी ॥तु भ०॥ परिमल महे महे रूप तु ॥९॥
 बरास कपूर बली एलची ॥तु भ०॥ पान बीडा अखंड तु ॥
 भोगी भलां सुख भोगवि ॥तु भ०॥ नही त्याहां पाप पखंड तु ॥१०॥
 मंदिर नारी पदमनी तु ॥भ०॥ रूप सोभाग सोहंत तो ॥
 हाव भाव अनेक परी ॥तो भ०॥ कंतह चीत हरंत तो ॥११॥
 मलपती चालि गजमामिनी ॥तो भ०॥ बीखीभा मेडर नाव तु ॥
 करकंकरा घूडी रुडी ॥तो भ०॥ कासकती बांडघोबाव तु ॥१२॥

कटी मेखला चिरि धूषरी ॥तो म०॥ वमकि बहीही अपार तो ॥
 बाखे छूटो हाथीवी ॥तो म०॥ उरवर लसकिहार तो ॥१३॥
 कोटि बंधा टोडर तुभमावली०॥ भूमखं भूलकि रसमत्त तु ॥
 नाके मोती बनोपन ॥तो म०॥ काने भ्रुकुकि भाव तु ॥१४॥
 खरो चांदलो मोती भरयो ॥तो म०॥ पीप्रल सोहिवाल तु ॥
 सेसफूल रूडी राखडी ॥तो म०॥ प्रांसडी छिपखी घालि तु ॥१५॥
 दान सील तप भावना ॥तो म०॥ करय मंगल बीत मान तु ॥
 पात्र विविध नें मनरगि ॥तो म०॥ दे विनीत दान मान तो ॥१६॥
 जिन भुवन तिहा भामणां ॥तो म०॥ सिखरबद्ध उत्तम तो ॥
 धज तोरण कनक कसस ॥तो म०॥ वाजिन वाजि सूरंग तु ॥१७॥
 जिनवर बिन सोहामणा ॥तो म०॥ महोद्यम होधि युष्माल तो ॥
 मृनीवर तत्व पुराण सू ॥तो म०॥ कहिचर्म कथा विशाल तो ॥१८॥
 वाडी बन तीहां सोहीघां ॥तो म०॥ फल फूल सहित अपार तु ॥
 सुडा साद सोहि घणा ॥तो म०॥ भमरा रसभूषणकार ॥१९॥
 बाड बडा सेलडी तणा ॥तो म०॥ यंत्रे पीत्या रस देसनु ॥
 भापेचा सही उपगारि ॥तो म०॥ कृपण तस्या एह भेयतो ॥२०॥
 भावा रान रली भामणा ॥तो म०॥ सोहि तांहा सुखकारतो ॥
 कोएल करय टहकडा ॥तो म०॥ विरहीनि दुःख अपार तु ॥२१॥
 सरोवर सोहि जल भरया ॥तो म०॥ कमल कुमुद सहीत तो ॥
 हृष सारस सरस बोलि ॥तो म०॥ चकवा चकवी सुमति तो ॥२२॥
 ते नकरीनु राजीउ ॥तो म०॥ श्रेणीक राय सुजाण तो ॥
 रूपि मनमथ जीतीउ ॥तो म०॥ परतापिज सुभाज तो ॥२३॥
 समय सजन आनंद करू ॥तो म०॥ बाखे पुरण चन्द्र तु ॥
 राज लीला लक्ष्म करी ॥ तो म०॥ जासों वृजो इन्द्र तु ॥२४॥
 न्यायवन्त गुण भागलो ॥तो म०॥ वाजिज सो कल्पवृक्ष तु ॥
 समकित रसखं बंडीयो तो म०॥ ऊपपुद्गल गुलि बलि तु ॥२५॥
 तस मन रंजन स्वामी ॥तो म०॥ राखी चैवस्था मान तु ॥
 सीलवती कुष कजली ॥तो म०॥ रूप सोभावतो ठाम तो ॥२६॥
 समकित व्रत करी बंडीव ॥तो म०॥ बोध नु मोडयो मान तो ॥
 एक जिह्वा हूं किय कहु ॥तो म०॥ सह गुण तयो विभाव तु ॥२७॥

जिम रुकिमणी सूं भाषवो ॥तो भ०॥ रोहिण सूं जिम चंद्र तो ॥
 तिम चेलणा सूं श्रेणिक ॥तो भ०॥ राज करे सुख कन्द तो ॥२८॥
 जिम रती सूं मकरध्वज ॥तो भ०॥ इन्द्राणीसूं जिम इन्द्र तु ॥
 तिम चेलणा सूं श्रेणिक ॥तो भ०॥ राज करि सुख समुद्रतो ॥२९॥

बस्तु

श्रेणिक राजा २ करे तिहा राज, भोगवि सुख सोहामणी ॥
 धर्मवन्त बली न्याय पालय, पर उपकार करय घणो ॥
 प्रजा तणों सन्ताप टालय, जिनबर घरम करि भलो ॥
 अनेक भूप करि सेव, समकित गुणो करी मंडीयु । सेवे श्री गुरुदेव ॥१॥

भास मालहंतडानी

एक बार राजा श्रेणीक ए महालंतडे । सभा बित्री गुणवत ॥
 सुणो सुन्दरे । सामंत क्षत्री मडयो ए ।मा० सहित विद्वज्जन सत ।सु० ।१॥
 चमर डालि वारंगनाए ।मा० जाणिए गय कल्लोल ॥
 करवली कंकण रणभुणिए ।सु० नयण चालि अती लोल ॥२॥
 गज अवागाह गजगामिनिए ।मा० आंदोलि वारोवार ॥
 सिर वरि छत्र सोहि भलूए ।मा० नीमल यस विस्तार ॥सु०।३॥
 अनेक क्षत्री नृप परबरयो ए ।मा० नक्षत्र सू जिम चन्द्र ॥
 मालि भाव समातणो भलो ए ।सु० सहश्राक जिम इन्द्र ॥सु०।४॥
 सांभलि कवीनी कवि कला ए ।मा० काव्य कतूहल चग ॥
 कण एक षटदर्शन तयाए ।मा० वादीघां वाद नारंभ ॥सु०।५॥
 सा री ग म प ञ नीसप्त स्वर ए ।मा० तान मानाधि संगीत ॥
 सूषा गगावती नृत्यकी ए ।मा० नृत्य जोवि थीर जात ॥सु०।५॥
 बदी जन वीरव बोले ए ।मा० छद प्रबंध कविज्ञ ॥
 दान देवि मनवांछीत ए ।मा० धन धन ए नृप रीत ॥सु०।६॥

बनपाल का आगमन

तीणिए धवसिरि एक आविमो ए ।मा० बनपाल रज्ज दुधार ॥
 राज आदेशधी हृषीधी ए ।मा० पीडितो सज्ज ॥सु०।७॥
 फल फूल भेट सूं की करीए ।मा० वीरभ्यु राध सीर नाथ ॥
 धन धन तह्य पुष्पि करीए ।मा० संमीसरण अभिराम ॥सु०।८॥
 बिपुलाबल अति रूबडो ए ।मा० महावीर जिन भवतार ॥
 आख्या अतीह सोमणाए ।सु०। नवीमण तारणहार ॥९॥

वनमाडी सङ्ग बहगहीए ॥मा०॥ ऋ वदु तस्यां बहु कूल ॥
 एकि न्नारि प्रगट्याए ॥सु०॥ वाय सुगन्ध अनुकूल ॥१०॥
 कोयल करि टहुकडाए ॥मा०॥ हुकडा अमर बुजार ॥
 अमरि किनरी अपहराए ॥सु०॥ रासडा वासि सार ॥११॥
 साडी वार कोडी बाजीत्रए ॥मा०॥ मादल ताल कंसाल ॥
 भेरी भूंगल वण् बहगहीए ॥सु०॥ सरसगई साव रसाल ॥१२॥
 अमर किनर सग फलपराए ॥मा०॥ करय ते जय जयकार ॥
 विमान बिठा विद्यापराए ॥सु०॥ प्राबया जान अपार ॥१३॥

राजा श्रेणिक की प्रसन्नता

ते बाणी सुणी नृप हरबीए ॥मा०॥ सीचीउ अमृत पार ॥
 सिधासण बकी उठीउए ॥सु०॥ चाल्यो सात कम सार ॥१४॥
 बीर देखि विवेकसूँए ॥मा०॥ नमयो राय उदार ॥
 वनपालनि पसाय दीयोए ॥सु०॥ सह भूषण गलिहार ॥१५॥
 आनन्द भेरी उछलीए ॥मा०॥ बाँदवा बीर जीरोंद ॥
 राजा चाल्यो कटक सूँए ॥सु०॥ अंतउरी सूँ आरांद ॥१६॥

श्रेणिक का समबसरण के लिये प्रस्थान

हाथी आ बहु सरानारीयाए ॥सु०॥ अमचमि भूषर माल ॥
 घंटा वण् टकार करीए ॥मा०॥ सूँडि मोती जाल ॥१७॥
 कानें हेम अमर बर्माए ॥मा०॥ अंबाडी अजा फार ॥
 पंच बरण वस्त्र पहिरिआए ॥सु०॥ सुँअट हाथी हथिआर ॥१८॥
 जगमग भाला फल हलिये ॥मा०॥ बिठा अंकुश धरी हाथ ॥
 कनक लगाम मोती जडयाए ॥सु०॥ कंठ अमर सोहि साव ॥१९॥
 सुरण चालि अमकलाए ॥मा०॥ रतन अडीत पलाए ॥
 नजबिसी राय चालीयुए ॥सु०॥ बेलसा सहित सुबास ॥२०॥
 कानें हेम अमर बर्माए ॥मा०॥ अर नारी धरीय उछाह ॥
 कानें हेम अमर बर्माए ॥मा०॥ उछक हवा माहो माहि ॥२१॥
 एकि न्नारि प्रगट्याए ॥सु०॥ सेरी समई उतां ॥
 हाथि सवण विद्यापराए ॥सु०॥ बीडासि अंबो अंग ॥२२॥
 अर वूँटि देखि छूँटिए ॥सु०॥ फाडि बीरयो रंग ॥
 घाट पडि मोती अडेए ॥मा०॥ गोटेडी बकीय सुचंग ॥२३॥

भवि भोला भला भवीआए ॥सु०॥ आवी आवांदा काज ॥
 बीर स्वामीनि मन रलीए ॥सु०॥ साये सामग्री समाज ॥२४॥
 भोशिक राजा भि देषियो ए ॥सु०॥ समोसरण भवतार ॥
 गज यको हेठो उतरघोए ॥सु०॥ जाणि विनय भवतार ॥२५॥

दूहा

सनि सनि राय चालीयो, आनद भंग न माय ॥
 छत्र चमर बिण गुणानिलो, सुधो यन वच काय ॥१॥

मानंस्तम का बीज

मानस्थम्भ शोभा धरणी, मान निवारण दीठ ॥
 बीस सहस पग घारीया, चढता हरष पईठ ॥२॥
 गढ सरोवर बली लतीका, फलवाडी बहु फूल ,।
 कांचन गढ वारु वापिका, जन्तु रहित भतूल ॥३॥
 भमरी किनरी भपछरा, करय ते नाटक साल ॥
 उपवन वाडी फूल फली, रतन वेदिका बिसाल ॥४॥
 पच वरण घज लहलहि, मणीमय गढ उत्तम ॥
 कल्पवृक्ष पकति भली, उन्नत भावा भमग ॥५॥
 रत्नस्तूप तेज भ्रममगि, मगमगि भूपह कुंभ ॥
 हमबिली हरषडीयि, दीसि नही किही दंभ ॥६॥
 नीर्मल फटक तरणो सुणो गढ उन्नत भमिराम ॥
 बार सभा तिहां रूवडी, भवीआं करे विआम ॥७॥
 प्रथम सभा मुनिवर तरणी, कल्पनारी बीजी होय ॥
 भ्रजिका सभा त्रीजीसणो, चोयी योतिक स्त्री जोय ॥८॥
 पचमी बितर कामिनी, छठी नागिनी जाण ॥
 नागतणी सातमी सभा, आठमी व्यतरनी बषाण ॥९॥
 नवमी योतिक सुरतणी, दसमी सुर कल्प बास ॥
 अय्यारमी तरवर सभा, बारमी तिर्यंच निवास ॥१०॥
 बाघ गाई गज सिंह सू, सर्प नकुल सुविचार ॥
 ग्राम सिंह मृग हय महिष, करि हंस मार्जार ॥११॥
 बालर मीढा मोरडा, गरुड भेरग भतीव ॥
 समली सिचाणा सेहली, नेहू लाग त्वाहां जीव ॥१२॥
 जात वंर छाडी करी, क्रूर जीव तहां शात ॥
 भूष तरस पीढा नही, नही आणी मन भ्रंति ॥१३॥

श्रीमता नयने देविए, पायला पावि पाय ॥
 पूषा सुवा बालिए, मूका जिल्लु सुख बाय ॥१४॥
 रोमीधकां निरोग होइ, कोडी निर्मल काम ॥
 बिहिरा गुण अचल सुखी, समोसरण मही बाय ॥१५॥
 पोल छत्रीस सोहामणी, अखी तोरण सुखमाल ॥
 ठाम ठाम मोती कूबकां, मेडी मालीयां सुखिसाल ॥१६॥
 सूत्रधार तिहां बनपती, सुरपती आका तास ॥
 एक जिह्वा केम वणोवू, समोसरण सुख बास ॥१७॥
 बार सभा मध्ये सही, त्रय्य सिंहासन रय ॥
 विठा जिनवर निर्मला, चतुरांगल उत्तम ॥१८॥
 वीठा स्वामी सोहामणा, चौबीस अतिसयवंत ॥
 प्रातिहार्यज कोडामणा, हरषु राम महत ॥१९॥
 त्रय्य प्रवलणा देई नम्यो, पूजेवि अष्ट प्रकार ॥
 कर जोडी जिन वीरनि, स्तवन करि विस्तार ॥२०॥

मास अष्टचौबीसनी

महाबीर स्तवन

वीर जीनिस्वर त्रिभुवन तार । जय जय स्वामी जगदाधार ॥
 पाप संताप निवार ॥ १॥
 नाथ वंस तणो संलगार । सिंघारय राय सुत अणि तार ॥
 प्रीयकारणी मल्हार ॥ २॥
 कुंडलपुर धरयो अजतार । बरस मेव कनक मणिधार ॥
 नवषटमास अपार ॥ ३॥
 सुरपतीई जिन अके धरघो । बोखी काय देवि पर धरयो ॥
 सुरगिरि फिर संबरघो ॥४॥
 अनेक उज्जाह मंदरगिर पानी । बाया पंडु सिला पर स्वामी ॥
 सुर सुरपति सिर नामी ॥५॥
 एक बोधन मुख मणिमिवाध । आठ योजन वंशीर बन्हाल ॥
 बायन कण्ठो प्रयाल ॥६॥
 सहस्र अष्टोत्तर कुंभ सज करवा । बीर सागर निर्मल जल भरवा ॥
 इंद्री तैठलि करे धरवा ॥७॥

जय जय करंता जिन सिर ठाल्या । जनम जनम ना पाप पखाल्यां ।
 सहल नयणे नीहाल्या ॥८॥
 एक सहश्र भाठे सुभ लक्षण । सणमारि इन्द्राणी विचक्षण ॥
 ईक्षण सुखद सरूप ॥९॥
 स्तवन गीत नर्तन सुखदात । वीर नाम त्रिभुवन विज्ञात ॥
 पूजा जिन मात तात ॥१०॥
 कही व्रत्तांत आय्यो तब बाल । बाजि मादल ताल कसाल ॥
 नाटक रच्यु रसाल ॥११॥
 नित नित सुरपति सेवा गावि । त्रय काल भूषण पहिरावि ॥
 अमरी किनरी गुण गावि ॥१२॥
 तनु अब भोग विरक्ते जाणी । लोकांतक देवे स्तव्यु बषाणी ॥
 जय जय करंता बाणी ॥१३॥
 सुरपति सिबकां सूं लेई चाल्यो । वनि वसी सिद्ध नमन सभाल्यो ॥
 स्वामी संजम पाल्यो ॥१४॥
 घात कर्म गिरि बध्न समान । प्रगटघो निर्मल केवलज्ञान ॥
 तनु तेजि जिस्थो भानु ॥१५॥
 धनदत्त रचित तह्य सभा सुसोहि । त्रिभुवन जन केरां मनमोहि ॥
 जगि तुह्य सम नही कोहि ॥१६॥
 असोक वृक्ष सोहि सुखकार । पुण्य वृष्टि सुर करि उचार ॥
 दुंदुभी नाद विस्तार ॥१७॥
 चोसठ चमर अमर तुळ ठालि । दिव्य ध्वनि धमंने अजू आलि ॥
 भामंडल सुविज्ञाल ॥१८॥
 रतन जडित सिंहासन दीसि । छत्र त्रय सुर धरि जेहे सिसे ॥
 दीठी सहं मन हीसि ॥१९॥
 छाया रहित तनुमुख स्वामी । पुण्य फलि तुळ महुरति वामी ॥
 रक्ष राक्ष शिबगामी ॥२०॥
 मोह राक्षस मुखधी मुळ राची अनेक जीवने वसय जे आलो ॥
 मुकती मारण मुळ दालो ॥२१॥
 राग द्वेष मोटा बिसाण । वसया दीय आप संताप ॥
 टालो तेह बिष व्याप ॥२२॥

- मन उडयो मिथ्यात महाराह । संसार रूपे नासो धाराह ॥
निवह तेहनो कीचि ॥२३॥
- काम पारवी मुक्त मृत ने रंजाणि । नारी नवख शर केरे संजाणि ।
मुक्त विस कोण राखी जाणि ॥२४॥
- भासा नदी सागर संसार । लोभ मगर मुखे पडयो ममार ॥
राज तूं जगदाधार ॥२५॥
- विषय महन इन्दी गज रुच । तुष्या भवन ज्वाला भ्रति कुड्ड ॥
तिहां वी राख सगुच ॥२६॥
- दोष कंटक भव जन मकार । धर्म विसाच भमाडि धपार ॥
ते मुक्त केरो निवार ॥२७॥
- डाकिनी साकिणी भूत बिताल । बाध सिचन नाडि बिकलाल ॥
मुक्त नाम ज्यांता दयाल ॥२८॥
- जगि मंगल कारी वीर जीखेंद्र । प्रभाचन्द्र बादीचन्द्र गखेंद्र ॥
स्तवि विक्रम देवेन्द्र ॥२९॥

ब्रह्म

- एसी पिरि वीर ब्रह्मचर तखूं, स्तवन करी सुजाण ॥
गणधर गीतम भावि करि, मुनी बांधा सुबलाण ॥१॥
- मनुज समा माहि बीसिड, भाव सहित गुणवंत ॥
धर्म कथा रस सोभली, दीव्य बुनि जयवंत ॥२॥
- भोजन मान सु विस्तरी, वाणी अमिन्न समान ॥
प्रगटी वीर बदन बकी, निर्मल जिन हिय भान ॥३॥
- तख पवारय संभली, पाय्यो परमानन्द ॥
पुनु वझाय सजा बकी, बंदीजा भोक्त मखेंद्र ॥४॥
- भाव धरी मन माहि पखूं, पूछि कथा विचार ॥
राय असोचर तेहनी, कहो स्वामी दया मंडार ॥६॥
- श्रीमंतो जिननायकाः शुभ चतुर्विंशन् महाराज्यैकाः ॥
शैलोकेश्वर पूजिता, जितभवाः सत् पंचकव्याख्यकाः ॥
अहंन् श्री परमेष्ठिनः सुखकराः सत्प्रतिहाराष्टकाः ॥
श्री देवेन्द्र सुविक्रमस्तुतयवाः कुर्वन्नु वो मंगलं ॥१॥

इति श्री यशोधर-महाराज-चरित्रे रासभूषामासी काव्य प्रतिच्छन्दे भूदेव कवि
श्री विक्रमसुतदेवेन्द्रविरचिते श्रेणिक समवधारण ग्राममन महावीरस्तवन श्रीगीतम
प्रश्नकरणो नाम प्रथमोऽधिकार ॥१॥

द्वितीय अधिकार

मास हेलीनी

यशोधर राजा की कथा

गीतम स्वामी देव । मञ्जरीय बाणी उचरया हेल ॥
वंत किरणें करी हेव । जनमनना तिमिर हरया हेल ॥१॥
सुणी श्रेणिक सुविचार । राय जसोधर कथा तरुणो हेल ॥
एछि दया भडार । छेदहसि मिथ्यातनी धरणी हेल ॥२॥
प्रगटि दया अपार । पुष्य होथ एह सांभलि हेल ॥
पाप तरुणो निरवार । मन तरुण संसय सह टले हेल ॥

योष देस वर्णन

जंबूद्वीप मझार । भरत क्षेत्र भावि अणो हेल ॥
भारज सड तेह ठाय । योष देस कोडाभणो हेल ॥४॥
कुकुट पाति गाम । ठाम ठाम सोहि खड्डा हेल ॥
अनेक लोक विश्राम । सजन बसि बर्मी अणा हेल ॥५॥
गिरि कंदरा वनमाहि । हाथी हींडि तिहा मलयता हेल ॥
सीतल तरवर छांहि । हाथरी सूरहींडि खेसता हेल ॥६॥
कहीं एक हरीणा रान हरी नें भय नाहा ठां फरि हेल ॥
मुनीवर धरयां ध्यान । तेहि तरुणो आश्रम अनुसरि हेल ॥७॥
वाडी वन ठाम ठाम । कपूर कदली कोमल दीसि हेल ॥
नालकेर खजूर । पूष तरुणां तह अरही से हेल ॥८॥
ताल तमाल हें ताल । सरल सोहि सजन समा हेल ॥
कोमल मध्य रसाल । देवदारु प्रादि उत्तमा हेल ॥९॥
तज पत्रज नागबेल । एलची खची फलें करी हेल ॥
जायफल लवंगह भेल । मरी बेलछि भूमके भरी हेल ॥१०॥
द्रास मंडप बिसाल । छाया फल करी लंक हेल ॥
पंथीयडा तीण काल । भूष तरस तह विसरयां हेल ॥११॥
सरोवर नीर्मल नीर । कवल पोयणे घणूं मडीईयां हेल ॥
आबां वनह गंभीर । देवी माननी मान छंडीया हेल ॥१२॥

बमरा रण अक्षकार । होइ कोएल ना महुकवा हेत ॥
 कामनी कंत सहीत । सुखतां अमृतना बूँटवा हेत ॥१३॥
 खेलि कंत सूं तेह । नेह बखरि तेजवा हेत ॥
 रूप सोभासह नेह । यावत सरस गीत गोरडी हेत ॥१४॥
 ता अनेक तागे देत । निपजी सरस सोहामखा हेत ॥
 याम नाम सुबिसेस । गिर सरवा ध्यान ठव बखरि हेत ॥१५॥
 जिणवर तथा प्रसाद लील रे । बजा बणू सहलहि हेत ॥
 बंटा मसैकरी साह । गर्ब न करे स्वर्ग इम कहि हेत ॥१६॥

राजपोर नगर वर्णन

तेह देस मझार । राजपोर नगर छि अति मनू हेत ॥
 अमरावती जिम सार । काही पासल करी संकल्पी हेत ॥१७॥
 सात खण्ण प्राचास । रास रमे रामा रुवडी हेत ॥
 कत सूं गोठ बिलास । हाथ बालतां खलाके चूडी हेत ॥१८॥
 रतण तणी छि भीत । नीज प्रतिबिंब ने देखीयो हेत ॥
 कंत सूं मांडि कंत । अबर नारी सूं प्रेम लेखियो हेत ॥१९॥
 प्रायणू रतममि भूमि । निज तारा प्रतिबिंबिया हेत ॥
 मोती ऊपनो भ्रम । हंस चरता बिलसा यमा हेत ॥२०॥
 दीसि पढवा मोती । तेहनें बण हंसनव्यचरि हेत ॥
 बुधुणि छे तर्वां होति । सहिते सखननें ते हेचो बणि हेत ॥२१॥
 आवक सुजन अपार । दान पूज करि सणी हेत ॥
 पाव अतीसय सार । पंचाचर्य होइ बखो हेत ॥२२॥
 उपवनछि उत्तम । सडो कली निमैस जलि बरी हेत ॥
 पीठी परिवस रंग । फूल महिमहि तिहा बहूं परी हेत ॥२३॥
 जल क्रीडा करि नार । कंत करीसी सोभागिणी हेत ॥
 ते नवरी अकारि । दीसि नही को दो भागिणी हेत ॥२४॥
 नर तिहा काखे इन्द्र । रूप संपदा भोगने मुखि हेत ॥
 गुण लक्षण समुद्र । बरस बखो छि तेह तणो हेत ॥२५॥
 अबर मिथ्याते लोक । बरख अबर तीहूँ बसि हेत ॥
 नही कोहनि दुःख शोक । धन कख तेस तनि उत्ससि हेत ॥२६॥
 राजमुखन उत्तम । कवक कलक बजा सोहीयो हेत ॥
 फाटक मंडप बहु रव । राखोरसक बनि कोहीयो हेत ॥२७॥

जाखें नृप जस एह । प्रगट प्रतापि धीर बरघो हेल ॥
लाल रतन तया तेह । तोरख सोभालंकरघो हेल ॥२८॥

भारीवस्त राजा

मारिदत्त बाहां राय । राय अनेक बखूं सेवीयो हेल ॥
पुण्य प्रताप सुठाय । जिणिए प्रजा लोक निर्भय कीयो हेल ॥२९॥
गज घोडा असंख । रथ पाला पार नहीं हेल ॥
चौदह बिछा सुलख । ब्यार नीति तेहनीछि हेल ॥३०॥
सौम्यगुणिए जिम बद्र । प्रताप गुणिए सूर जाखीयि हेल ॥
सीला गुणिए यम इंद्र । रूपि कामबलाखीइ हेल ॥३१॥
मनें बखूं मिथ्या भाव । क्रूर मतीछि अति बखी हेल ॥
तेह तणी नारी सुभाब । रूपवंती नामि सही रूपली हेल ॥३२॥
तेह सरीसो राय । राजपालि वयरी विण हेल ॥
विषयासक्त सभाय । धरम न करि एक क्षण हेल ॥३३॥

दूहा

नगर में भैदवानन्द जोगी का आगमन

तेलि अबसरि नयरी माहि, जोगी आब्यु प्रबंध ॥
जैरअनव नाम तेह तखूं, बोलि बाल बीतंड ॥१॥
अनेक जोगी बीहामणा, दीसि तेहवि साथ ॥
शक्त त्रिगूल आदि करी, आमुष छि तेह हाथ ॥२॥
डम डम डमरू डाकला, बजावें बीकराल ॥
सिर सीडूर लाबी जटा, कहावें ते क्षेत्रपाल ॥३॥
जोगी नागाछि केटला, राखि बरह्यां अंग ॥
हरण चमर पिहिरि केटला, बाघ चर्म पिर रंग ॥४॥
कछोटी यावली केटला, बजरी आंठ जटाल ॥
हाक दीइ एक दूरंधरा, जीव तया तेह काल ॥५॥

भास नारेसूधामी

जोगी का रोग रूप

जीव हंसक से पापीया । नारे सूधा ॥ हीडिवन खेवंत ॥
चक्रनासे बखूं फेरबी ॥ना०॥ बमबर प्राण हरंत ॥१॥

मड्डं चंद्र फरसी कडि ॥ना०॥ जाणो यम तखी डाड ॥
 मन्मथान् करि बखूँ ए ॥ना०॥ हाक कडि बनी नाड ॥२॥
 हाथे भयनना खापरां ॥ना०॥ लोह कडली करि उन्ही ॥
 जीत्रि चारि अवाला पीत्रि ॥ना०॥ मानी आकाहावि छेद ज्ञान ॥३॥
 गुपत लडय के तावहि ॥ना०॥ बरन केतला भीडमाल ॥
 लोह जुडीला कडी धरि ॥ना०॥ बली छरी निकराल ॥४॥
 कोटें शीमी बजावता ॥ना०॥ दुर्बर शींगडां नाद ॥
 मंस बजावि ते सधि ॥ना०॥ मांहो माहि करि नाद ॥५॥
 मखि भांग घतुरडो ॥ना०॥ राता नेवखि तेह ॥
 तूंबडी पत्र घरां धरि ॥ना०॥ मीच मनि मेह मेह ॥६॥
 केतला कोट कांयडी ॥ना०॥ शीबरां माला हार ॥
 शीषडायु टोप शिर धरि ॥ना०॥ केतला शिर जटा भार ॥७॥
 काली मूद्रा धरि केतला ॥ना०॥ फटक मूद्रा बेहू कांन ॥
 लडयडता हींडि बखूँ ॥ना०॥ गावि करि भीत मान ॥८॥
 हाथें दोरपां कूचरपां ॥ना०॥ रीछडा केतलां हाथ ॥
 शीत्रा वाध बचां धरषा ॥ना०॥ केतला मांकडा साथि ॥९॥
 किनरी जंत्र बजावता ॥ना०॥ लेतां गोरख नाम ॥
 विखय बाह्या भूला भमि ॥ना०॥ पाप मिध्यातनो ठाम ॥१०॥
 जोयणि साथि साकोतरी ॥ना०॥ डाकिणी सांकिणी जेद ॥
 जाणो चालती व्यंतरी ॥ना०॥ नाक तखां तस छेद ॥११॥
 अस्थि तणां काने कुंडल ॥ना०॥ संखलाना धलि हार ॥
 अस्थि तणां हाथे कडा ॥ना०॥ कोट सीमी सखुमार ॥१२॥
 अंताल काल पंचाक्षरा ॥ना०॥ वेडा घेटक अनेक ॥
 कामख मोहख उच्चाटणा ॥ना०॥ कूड कपट अकिंकि ॥१३॥
 विषयी विखनी बुधारीया ॥ना०॥ जूठा खोला अघाट ॥
 धार्यें मूला पर भोलवि ॥ना०॥ ते किम वासि सुवाटि ॥१४॥
 एह तर जोषी जोयिख मली ॥ना०॥ वेजो जैरवानंद ॥
 लोकमानि मिध्यातीघा ॥ना०॥ विवेक नहीं यतिमंद ॥१५॥

जोगी द्वारा रावस्य विभीषण प्राप्ति को देखने की पर्वोक्ति

लाङ्गं कूँक्षं नल मोटेरडा ॥ना०॥ मोरख पीछनां छत्र ॥
 लोक पूछि वात ते कहि ॥ना०॥ फाकल बोलि विचित्र ॥१६॥
 रावस्य सका राजियो ॥ना०॥ दीठो बभीषण साधि ॥
 बह्ना ईश्वर देखीआ ॥ना०॥ जमीयो लक्ष्मी साथ ॥१७॥
 हरी सूं मीठी करी शोठडी ॥ना०॥ कोधी बलभद्र साधि ॥
 पांचे पाँचवा मानता ॥ना०॥ मन्त्रबद्धिमाहारी भाख ॥१८॥
 रामलक्ष्मणसे वषाणीयो ॥ना०॥ सीतासि पूजा कीष ॥
 प्रनेक राणा राय राजीया ॥ना०॥ ते मूढ बादि प्रसीष ॥
 मारीबस्तं बात सांभली ॥ना०॥ तेंडाब्युते ततकाल ॥
 ते भाव्यु ऊतावलो ॥ना०॥ साथ जोगी बिकराल ॥२०॥
 रायि भावंतो देखीयो ॥ना०॥ साहामु चाली लागु पाय ॥
 कर जोडी राय बीनवि ॥ना०॥ आससि करो पसाय ॥२१॥
 जोगी किहि राय सांभलो ॥ना०॥ सयल बीघामू पाण हू ॥
 तूसूँ तो राज देऊ ॥ना०॥ कसूँ तो सबि बीणास ॥२२॥
 तत्र मत्र यंत्र घणा ए ॥ना०॥ पिर पिरभाऊवदि ॥
 विद्या आकाश गामिनी ॥ना०॥ विद्या अडुसीकरसाधि आद ॥२३॥

राजा द्वारा आकाश गामिनी विद्या प्राप्ति की वृत्तिका

तब राजा आचभीयो ॥ना०॥ बोल्यु मधुरीय बाण ॥
 आकाशगामिनी मुऊ दीयो ॥ना०॥ विद्या तम्हे सुजाण ॥२४॥

जोगी द्वारा उपाय बतलाना

जोगी किहि राजा सांभलो ॥ना०॥ विद्या सीऊवा ऊपाय ॥
 बहमारोत्रे देवता ॥ना०॥ तेहनी भगत जो पाय ॥२५॥
 थलचर जलचर नभचरा ॥ना०॥ जीब जुवम प्राखेंवि ॥
 देवी आगलि हिंसतां ॥ना०॥ ततक्षण सूसि देखि ॥२६॥
 दीइ विज्ञानभ गामिनि ॥ना०॥ अवर थखेरी रथ ॥
 दुर्मक्ष रोष मरकीटलि ॥ना०॥ सकटटलि प्रसीष ॥२७॥
 रायते बचन प्रमाण यूँ ॥ना०॥ मूढपरिण अपाय ॥
 कुगुरि भोलन्था जीवडा ॥ना०॥ कुरा न पडि संहार ॥२८॥

ते मचरी बक्षस दिसा ॥ना०॥ चंडमारी विख्यात ॥
 देवीकूर कुरुपिण्णी ॥ना०॥ बाहलो तेहनि जीव चात ॥२६॥
 हिंसा विण ते पापणी ॥ना०॥ करि अनेक उत्पाद ॥
 रामादिक भिष्यातिया ॥ना०॥ समय करि जीव चात ॥३०॥

पशु पक्षियों के युगलों को लाना

देवी मठ राय बाबीयो ॥ना०॥ लोक सहीत अजास ॥
 देवीनें पाए पडयो ॥ना०॥ मनसाउ चली मार ॥३१॥

जलचर जीव

तीन जुगम तिहां घ्राणीयां ॥ना०॥ कूकड खान बराह ॥
 हरण रोज ससा सांवरं ॥ना०॥ महेस मतंगज चौदु ॥३३॥
 रीख चीता बरु भावक ॥ना०॥ मेहेला नकुल सीधाल ॥
 साप सरड पल्ली बामणी ॥ना०॥ माजरि स्वान विकराल ॥३४॥
 खर करमा भुषभादीक ॥ना०॥ बनधर घाण्या अनेक ॥
 समलि सीचांणा सारसा ॥ना०॥ हुंस बायस बली भेक ॥३५॥

नमचर गीत

मोर चकोर लबारडां ॥ना०॥ कोयल कीर कपोत ॥
 चकवा चकवी पारेवडां ॥ना०॥ टीटिम वूहड बोत ॥३६॥
 महूसी सोलीभा खडगीभा ॥ना०॥ फोंच भेंरड मुकड ॥
 एह घादि नमचर घणा ॥ना०॥ बांधवानवास किऊड ॥३७॥

जलचर गीत

मछमघर जलमांणसां ॥ना०॥ करबला काचवा मूर ॥
 जलहूस्ती घादि जलचरा ॥ना०॥ बहू घाण्या ते मूर ॥३८॥
 मठ पाबलि ते बांभीया ॥ना०॥ बापडा करि पोकार ॥
 मूष तरव घति पीडीयां ॥ना०॥ भयकरी कांपि अमार ॥३९॥
 घुरघुंदासि जस्यी मही ॥ना०॥ साड पाडया ठाम ठाम ॥
 पापी हुंस कलोकनि ॥ना०॥ नरक आवाये काम ॥४०॥

बूहा

खडग ऊवाडो भलकती, बीज तरणो भत्कार ॥
केश कलायद्धि भोकला, जलघर सोभा वार ॥१॥

मानव युगल लाने की आशा

कोटवाल राय तेडीयो, चंडकर्मा तस नास ॥
मनुष्य युगम आष्युं नही, ए हबूँ सूँ तुभकाम ॥२॥
राय नम्यो भयभीत तदा, कोटवाल ततकाल ॥
मनुष्य युगमनि काररिण, जण मोकत्या जिम काल ॥३॥
ते चात्या ऊताबला, दोहो दशघामि धीर ॥
तीणि भवसरि तिहां भावया, मुनीसागर गभीर ॥४॥
भास साभेरी माहिपण कहीयि, केदारा माहिपण कहीयि

सहीनो

मुनीचर्चा

एक आत्मा ध्यान मन धरे । राग द्वेष दोए परहरि अनुसरे ॥
त्रय रत्न अति नीरमलाएँ । सहीए ॥१॥
त्रय गारव त्रय सत्य टालि । त्रय गुपति मुनिबर पालि ॥
अजुआलि । त्रय आगमि करी त्रिभुवन ए । सहीए ॥२॥
च्यार कषाय विहडणो । च्यार ब्रह्म कीय लडणो ॥
मंडणो च्यार संव तरणो घणू ए ॥सहीए ॥३॥
पंच आचारिज रंजीउ । पंच आश्रव वल मजीउ ॥
गंजयो पंचइंद्रिय दल दुरधरोए ॥सहीए॥४॥
पंच संसार दु ख वारण । पाचमी गति सुखकारण ॥
तारण पंच परम गुरुनित ध्याइए । सहीए ॥५॥
षटकाय जीवरक्षण । सटत्रव्यूनुं कहि लक्षण बिचक्षण ॥
षटदर्शन जन जन प्रतिबोधवाए ॥सहीए॥६॥
षटकालनी स्थिति लहि । आबकनां षटकर्म कहि ॥
मन माहि सात तत्व चिंतन करे ॥सहीए॥७॥

सात भय बकी बेधलो । सात गुणस्थान ऊबलो ॥
 नीरमलो सांत दांत दांत गुण जेहनाए ॥सहीए॥८॥
 घाठ ध्यान करे धागलो । घाठ धूकि भद कसमलो ॥
 सोहो जलो भीतवे आतमा निश्चि दिन ए ॥सहीए॥१॥
 घाठ महा सिद्धि बायक । घाठ महा रिद्धि नायक ॥
 गायक अमरी किनरी गुण जेहनाए ॥सहीए॥१०॥
 नभ नयनि नीरमल जाणि । नवविष सील धरि सुख खाणि ॥
 मन धाणि केवल लम्बि गुण ए ॥सहीए॥११॥

मुनि का उपदेश

दस लक्षण धर्म प्रकाशि । दस धर्म ध्यान अभ्यासे ॥
 प्रति भासे । दस बिसि जस विस्तोरो ए ॥सहीए॥१२॥
 अग्यार प्रतिमा उपदेति । लहि अग्यार अंभ बितेसि ॥
 नीसेसें बार अ न श्रुत पाठक ए ॥सहीए॥१३॥
 बार भेद तप धारि । बार अनुप्रेक्षा मनधरि ॥
 विस्तारि । बार बरस श्रावक तयाए ॥सहीए॥१४॥
 तेर प्रकार चारिभ धारी । चौद मल तयो निबारी ॥
 क्षयकारी । पनर प्रमाद नो धति बखू ए ॥सहीए॥१५॥
 भावे सोले भावना । सतर संयम पालि पावना ॥
 सोहामणा । यम नीयम धार धुर लनि ए ॥सहीए॥१६॥
 अठार सहस्र भेद सील राखि । उनसीस जीव समास भाखे ॥
 नाशेय । दुष्ट दोष बीहामणाए ॥सहीए॥१७॥
 बीस मार्गला भेद कहि । एक बीस कोणुण सख गुण बहि ॥
 अंये सहि । बाबीस पटीसह धुरंधराए । सहीए॥१८॥
 बीबीस जिन बिन दिन ध्याइ । पंचबीस कथावनि न बीठाय ॥
 कविनाथ अनुदिन मुख एह मुनी तयाए ॥सहीए॥१९॥
 धरब मूलगुण अठबीस । पाठक मुख धरे पंचबीस ॥
 अबीस । के धरधारण मुख ससंकरषा ए ॥सहीए॥२०॥
 एह भादि मुख अति बखो । एह मुचने के सोहामणा ॥
 भावणा । मुख मुख धामे केकेन्द्र कबीए ॥२१॥

ब्रह्मा

पाँचसौ मन्त्रियों के साथ सुवत्साचार्य का आगमन

पाँचसौ मुनीवरों परवरधी, बरघो संयम श्रीचंग ॥
 सुदत्ताचारज नाम तेह तरण, तप संयमे अभंग ॥१॥
 नगर समीपें भावीया, मृनिबर स्वामि सुभाण ॥
 अनेक दृक्ष करी धलंकरधो, दीठो तब उखान ॥२॥

वन की शोभा

भांवा ऊनत अति घणां, मोरघा तेहां अपार ॥
 कोएल कुह कुहुका करें, सुणता काम बिकार ॥३॥
 मालती मंदार भोगरा, फूल तरा मकरद ॥
 गूंजता भमर भर्मि भला, वायु वाय अति मंद ॥४॥
 सेवती सोवन केतकी, पाडल परिमल पूर ॥
 बेलतरा घर पिर पिरह, करन पसारय सूर ॥५॥
 भूल दुखीया दुःख बीसरि, सुखीया होइ सुख मूर ॥
 हुइ ब्यरहणी दुखि दुखणी, जेह भरतारछि दूर ॥६॥
 फूल पगर पसरयां घण, फलबली पत्र ठाम ठाम ॥
 नीरतरां नीभर तिहां, व्यापय विषयने काम ॥७॥
 ए मुनिनिजु गत्तू नही, वन बहुराग सचीत्त ॥
 अपर स्थानक नीहालवा, भाल्या मुनी सुषचित्त ॥८॥

भास ब्रह्मगुप्तराजनी

सकाम बर्णन

ते मुनीए । चालया जाम । ताम मसाण दीठो चणोए ॥
 मडा तिहां ए बलि अपार । रीद्र दीसि बीहामणो ए ॥१॥
 बीहायकाए । ऊठ्या बहु भूम । अर्धदण्ड कलेवर पडयां ए ॥
 ठाम ठाम ए पडया बहुत । गली नयू भास एह्लां मडाए ॥२॥
 विकसयाए । मुलदीसिदांत । दूंबलीए चली चलीरड बडी ए ॥
 सीधालीयांए ताणो तास । आकासे वृष लेई उडे ए ॥३॥
 कूतरा एक लम्बि अपार । बडता माहोमाहि डहडहिए ॥
 बायस एक रंके बडठ । कामिण चर्यां कसगली रहिए ॥४॥

अचबस्तां ए काष्ट कंडाह । हाड प्रडमं शवी अचभीयो ए ॥
 देवीउ ए अति बरणी रौह । काबरनो मन कापीयो ए ॥३॥
 तिहां बहुए धरी करी लोक । लोक बहु बापडारडे ए ॥
 बाही आए मोहना तेह । बाप बाप कही मही पडिए ॥६॥

इमशान की भय नकता

बीर बीर ए । एक कहंत । माता सुत नारी नाम लीबिए ॥
 तेडोए साथि सज्जन । बाहालाने इम नहीं मूंकीइ ए ॥७॥
 एणी पेरें ए । ए करीअबिलाप । मोहीया रहेते बापडा ए ॥
 करता ए अती धरुं, रीब । पामये अतीही संतापडा ए ॥८॥
 निअसमे ए मूतजोटींग । क्रूर रूपि हाक जु करि ए ॥
 डम डम ए डमरु ग्राडा हांक । डह डहि नाव काबर डरें ए ॥९॥
 वाध सिध ए महिस्वना रूप । बाबरी कांट बीहामत्या ए ॥
 भज भजे ए खडग तेह हाथ । स रमतां मूत भूमि बरणा ए ॥१०॥
 डाकणी ए व्यंतरी क्रूर । सीकोतरी हीडे बसमसीए ॥
 देवीअ ए कलेवर भूर । हडहडाट हेडंबाहसें ए ॥११॥
 सिरबिए ए बड बाड घासंत । भएवख सिर बखू ऊछलिए ॥
 ठाम ठाम ए ऊढता जाएण पूला अरानी तखां बलें ए ॥१२॥
 जोंगटा ए साथि व्यंतास । तु मलीअण्य टोली करी ए ॥
 राधिए अनेक नैवेद । होम करब बह्नि परी ए ॥१३॥
 एहबू ए अति विकराल । मसाण वीठो मुनीवरि सहीए ॥
 होइए बंराग्य वृधि । अपवित्र भाटि रहि नही ए ॥१४॥

इमशान में ध्यानामयन होना

ज्याहां धी ए पडिले वृष्टि । प्रासुंक ठाम ते जोईयो ए ॥
 सोमसीयि ए रडिते साव । साधु संघाष्टक होहीयो ए ॥१५॥
 मोटीए सिला अपार । तेह ऊपरि आशय करयो ए ॥
 पडिकमें ए सडू सूजास । ईबाबहि कासब धरयो ए ॥१६॥
 पडले ही ए बेठा ठाम । आबश्यक करे आपखो ए ॥
 कोइ भखें ए अंब ने पूर्व । आबस भिबिध कोडोमखो ए ॥१७॥
 हिंसा तखो ए जारणीय दीस । चोबीहार सबे उबरयां ए ॥
 संतोष ए बरी निस्त्य । ध्यान मौनकरी अवंकैरया ए ॥१८॥

अभयरुचि एवं अभयमति का गुण के पास आना

तोणे सने ए मुनीवरे दीठ । अभयरुची अभयमती ए ॥
 नाहा नडां ए नव दीक्षत । भूखे कोमलाखां अती ए ॥१६॥

आणी अए करुणा भाव । वदय बचन सुदत्तगुरु ए ॥
 तेडीय ए दीयि आदेश । वछ वया सुख तम्हे करो ए ॥२०॥

लागीयाए तेह गुरु पाय । काय स्थीती काज चालीयां ए ॥
 जोडली ए ब्रह्मचारी तेह । ईरीयापंथ नीहालीया ए ॥२१॥

तेणें समिए सेवके तेह । ब्रह्मचारी युग देखीया ए ॥
 रूपि ए सोहि अपार । काम रती समलेखया ए ॥२२॥

युगल को देखकर विभिन्न विचार

माहोमाहि ए । करयते बात । प्रात आपणा वषा अम टल्याए ॥
 लक्षण ए रूप विधात घात कारणि जोइता मल्या ए ॥२३॥

पामसे ए देवी बल आज । काज राय तणूं सीभसे ए ॥
 देखीयाए युगम सरूप । भूप आपण प्रति रीभसे ए ॥२४॥

सांभली ए किकर भास । भाषा कोमल अभयरुचीए ॥
 बोलीयो ए बेहेनर साथ । हाथ रासो मन करो सूची ए ॥२५॥

सह गुरु ए कणूं बहू पेंर । परीसह जीकवो तप फल ए ॥
 तेह भणीए धरीअ समाध । बाध त्यजी बाउ नीमलए ॥२६॥

संसार स्वल्प

जीवनें ए भमतां संसार । पार रहित दुःख अपनि ए ॥
 नरके ए शार्ते भाहि । काहि सुख नहि नीपजे ए ॥२७॥

भूल तृषा ए पाडिए रीर । नीर अन्न रती नवि मल्योए ॥
 छेदें तनू ए नारकी पाप । बापडो जीवडो टलबल्योए ॥२८॥

बली भम्यो ए बार अनन्त तिबेंच गती जीवडो ए ॥
 विहितो ए भार अपार । सार बहूणो रडबडयो ए ॥२९॥

भूलिए तरसें उ बुली उदास । भास आकंद करि बलीए ॥
 छेदन ए भेदन आद । दुःख जाणे तें केबली ए ॥३०॥

१. अन्य रचनाओं में ब्रह्मचारी के स्थान पर भूल्लक क्षुत्तिका पाठ मिलता है ।

मानव ए गते मऊर । आरत रीद्र ध्यानं पढ्यो ए ॥
 दारीद्र ए रोग बियोग । भोग नूचो कामें नड्यो ए ॥३१॥
 देवगतीए माहूँ अयाख । मानसीक दुःख ब्यापीयो ए ॥
 देवी सुख ए अवरहरीष । नींतीयो मन अती कांपीयो ए ॥३२॥
 एसी पिरिए चोगती माहि । एह जीव भमयो दुखि भरयो ए ॥
 भोलो ऐ भोलव्यो मूर । कुगुए कुदेवन ऊचरयो ए ॥३३॥
 पुण्यनिए योगि जाण । बाणी जिन तणी पामीयो ए ॥
 श्रीगुरु ए तणें पसाय । तेहनें सीर नामयो ए ॥३४॥
 पामयो ए आवकाचार । सार लखु दीक्षा भलीए ॥
 प्रतीमाए भेद अग्यार । चारक हवा मनें रलीए ॥३५॥
 भव भव ए लहीइ प्राख । पण समकित व्रत नवि मनें ए ॥
 इम जाणीए तिभ करो मात । भ्रात भय जिम टलिए ॥३६॥
 ले से ए जीवराय दीक्षा । दीक्षा सीक्षा लेसे कोनहीए ॥
 ते भणीए । देहेन सुजान । आणो मन जिनपदे सहीए ॥३७॥
 तब बोलीए बिहिनी बोल । बह्य सुणो वाणी मुऊ तणीए ॥
 पूरव ए भवे सणो भ्रात । हिंसा कीषी बीहामणी ए ॥३८॥
 पीठनो ए कूकडो एक । देवी आगल हण्यो ए ॥
 तेह फलिए । पांमयांए दु ख अतीव । भव सातिते मुऊकले ए ॥३९॥
 एक हवि ए लाधु धर्म । कल्पद्रुम चितामणी जसो ए ॥
 समीकीत ए कर सूँ जतन्न । मन्न एहनो संसय कितो ए ॥४०॥
 इन चींतीए मन दुठ कीष । लीष अणसण दोए परीए ॥
 जीबू अए तो पारणूँ जाण । नही तो आ अणसण अनुसरीए ॥४१॥

ब्रह्म

सिवाहियों द्वारा अपने ज्ञाने करमा

हूक देई आगल करघा, तेहि सेवकें तेनी बार ।
 वेहु आलतां चींतवे, अनुप्रोक्षा भेद बार ॥१॥
 क्रूर काल नकरे षणू, चीत्या सोहि सार ॥
 भेष प्रदले जिम चीटीयो, काति सूँ अन्न चकार ॥२॥

भास हीदोलबाजी

देवी मठ की भयंकरता

दूर धो देवी मठ तवा । धीठो दूरंग बिसाल ॥
 पाषल करतो उपवन । हीदोलबाजे । अनेक तरु छिरसाल ॥१॥
 केसू जासू वन तीहां । रातडा असोक अपार ॥
 जाणो भयभीत वसंतडें । ही०। भेटणू मांस विस्तार ॥२॥
 महुडां मोरघा बहू त्यहां । फलगलि बारबार ॥
 जाणें रडि देवी भयें । ही० । वसत भूके घासू धार ॥३॥
 काला जावू फले करी । काला वृक्ष तमाल ॥
 देवी भेटणू आवीया । ही०। जाणें पिशाच विकराल ॥४॥
 ताड तणा तरु उन्नत । ताड फल स्याम विशाल ॥
 देवी मलभ्रा बहु रूप धरी । ही०। जाणें ईस गलि रुडमाल ॥५॥
 खजूरी नारी भली । भ्रडीयां बांध्यां छेवैय ॥
 देवी मलबा सजधीया । ही०। मद्य घडा सिर लेय ॥६॥
 पूला दीसि 'मधू' तणा । माखी भमे अपार ॥
 जाणें देवी कारणें । ही०। सूका मांस तणा भार ॥७॥
 ठामे ठाम चणोठडी । रातडी दीसि भोय ॥
 देवी पूजवा कारणें । ही०। अभक्ष याल भरयो जोय ॥८॥
 फूला तिहा वनी चांपला । पीला पेखीया जेहू ॥
 देवी कोपि कांपता । ही०। जाणो पिंजर हवा तेहू ॥९॥
 कोयल सूडा सारसा । बोलि भमर गुंजार ॥
 जाणें बीहना भयकारी । ही०। स्तवन करिज अपार ॥१०॥
 मठ गढनिको सीसंडि । माणस माथां माड ॥
 जाणें जाता जीवने । पी०। खावने जूहलें राड ॥११॥
 अनेक जीव मठ पासलि । बांध्यछि बडी वार ॥
 भूख तरस पीडघा घणू । ही०। करय पोकार अपार ॥१२॥
 मद्यपान करि जोकटा । जंगोटा गलि चंग ॥
 वायि संख सींगी सींगडां । ही०। कली कली करिय उतंग ॥१३॥
 डम डम डमरू डाकलां । ही०। तवली ताल कंसाल ॥
 रणभेरी रण काहल । ही०। तुर बाजि विकराल ॥१४॥

मठ का ध्यान

दीठो देखी मठ कागरी । बाँस हबखि ठाम ठाम ॥
 अनीसो बाणो देखी बनी । ही०। मासी तखा विसराम ॥१५॥
 रघीर तखा दीधा छडा । मठ फरती भब बार ॥
 जीव मस्तके नोक पूरवा । ही०। रघीर हावा मठ बार ॥१६॥
 अस्तकर्ना तोरण रघ्या । भीमनी बानर बाल ॥
 पंखी पीछ पक्षू पूंछडा । ही०। ठाम ठामे बाँव्या विकराल ॥१७॥
 रायनि नकरे दुगम दीयो । दीठो राय बम काल ॥
 मोकले केस कोपि भरघो । ही०। भबकि हाबे करवाल ॥१८॥
 राति आबि जाखे राक्षस । जाखी केर वमकूत ॥
 बल बसतो जाखे ब्यतरो । ही०। जाखे भयंकर भूत ॥१९॥
 जाखे क्रोधनो पूंजलो । जंखो अबरमी विस ॥
 जाखे पापनो पोटलो । ही०। दीठे होय भबनीत ॥२०॥

भैरवानंद जोषी

भैरवानंद जाखे भैरवो । बसयो बीर बंताल ॥
 खडग काली मोटी गडो । ही०। नवण जाखे अग्नि उवाल ॥२१॥

देवी का रूप

देवी दीठी श्रीहामखी । सकत निमूल छि हाथ ॥
 रुंढमाला गलि ललकती । ही०। बिठी छि संघनाथ ॥२२॥
 लंबी जीव छि रातडी । राता मोटा दांत ॥
 उह उहती मुख पसारती । ही०। बाबेख नी होइ प्रति ॥२३॥
 कोडां सय मोटे रडे । फाटे डोले जोय ॥
 अनेक जीव हस्यावती । ही०। परतज भरकी होय ॥२४॥
 हाथ काती मद्रुं कापती । कापती कोपि अपार ॥
 मख पीइ नरनू बली । ही०। सीकोतरी भयकार ॥२५॥

अन्यकवि अन्यमति को देखकर राजा द्वारा विचार

ब्रह्मचारी राय देखीयो । लकीयो काम स्वरूप ।
 केए हंद्र स्वयं तयो । ही०। के मही माहि मद्रुं भूप ॥२६॥
 के पैदातनो राबीयो । के बनपती के अष्ट ॥
 के ब्रह्मा के ईश्वर । ही०। के हरी के ललमद्र ॥२७॥

के मंदी के नल कहूं । नलहूं रूपह पार ॥
 सक कहूँ के सुरगुरु । ही० । सुरबीर उदार ॥२८॥
 बालिका जाणें सरस्वती । रोहणी लक्ष्मी होय ॥
 इन्द्राणी उर्वसी कहूं । ही० । नागकुमरी के जोय ॥२९॥
 कि सावित्री सीता कहूं । तारा मंदोदरी एह ॥
 गौरी के अंजनी कहूँ । ही० । रूप न लाभि छेह ॥३०॥
 रूप लक्षण बहु गुणानिलो । कला अनेकह ठाम ॥
 मारीदत्त नृप पूछए । ही० । कहो तुह्य कवण सु नाम ॥३१॥

राजा द्वारा प्रश्न

कवण गाम थका आवीया । मात तात कुण ठाम ॥
 अकल रूप ए अनोपम । ही० । कवण मो हो साल सुषाम ॥३२॥
 दयाधर्म तुह्य जय करो । त्रिभुवन माहे जे सार ॥
 आशीर्वाद दें उच्चरे । ही० । मारिदत्त अवधार ॥३३॥
 काम तम्हारू तम्हे करो, मम पूछो अह्य बात ॥
 अह्य वृत्तात दयामय । ही० । तह्यने गमे जीवघात ॥३४॥

साधु युगल द्वारा उत्तर

प्र वा आगलि नाच वु । बिहिरा आगलि गीत ॥
 पापी आगलि धर्मकथा । ही० । कर्हिता होइ विपरीत ॥३५॥
 गिहेला सूं गुण गोठडी । उसर भूमे बीज रोप ॥
 गिर सिर नील पेर खेडवूं । ही० । तिम अह्य वचन निरोप ॥३६॥

दूह

मारिदत्तके हृदय में दयाभाव आना

दया भरी अह्य गोठडी, रुचे नहीं राय मान ॥
 पीतज्वरी मन रुचि नहीं, साकरनि वूष पान ॥१॥
 हम जाणी निज हित करो, अह्य ने म पूछो आज ॥
 जेहनि जेहवी गति सही, तेहेनि तेहवी मति राज ॥२॥

खड्ग का त्याग

मारिदत्त तब उपसम्यो, खड्ग मुक्यो तेणी बार ॥
 कर युगम जोडी करी, करी कोपनो परिहार ॥३॥
 बह्यचारी प्रति बोलियो, विनय सहीत उदार ॥
 कहो कथा तह्यो रुबड़ी, स्वामी दया संभार ॥४॥

ब्रह्मचारी तब बोलीयो, वाली अमी समान ॥
 भी ओ भूप भलो भलो, साधु साधु तह्य बाण ॥५॥
 धर्म बुद्धि सही जीवनें, पुष्य बिना नहीं होय ॥
 सुरग भुगति सुखकारणी, राय बिचारी ओय ॥६॥
 कथा कहूं राय खवडी, म्यानी कहो विस्तार ॥
 तेह प्रहारे पण्य अणखरी, भव साते मकार ॥७॥

भास चौपई

भरत क्षेत्र वर्णन

एहज जबूदीपज मांहि । सुरमहीयो मंदर तूं चाहे ॥
 पाडुसिल्या चीहो सही तनुं जोय । जिनवर जनम कल्याणक होय ॥१॥
 चीहो वनें व्यतर किनर वास । देवी देवी रमये बिहां रास ॥
 परदक्षणा योतकी करें सदा । सास्वतो अचल चले नहीं कदा ॥२॥
 तेह दक्षण दिशि भरतह क्षेत्र । आरज खंड मांहि सुपवित्र ॥
 देश अछि तीहा मोटो घणो । नाम अमती छि तेंह तरणो ॥३॥
 अनेक गिरी गहबर पर बरघो । अनेक महा नदीयि अनुसरघो ॥
 मोटी अटवी वृक्ष असख्य । आछेकूर जीव तिहा लक्ष ॥४॥
 चमरी गाय अछे ते घणो । पूंछि भोम्य बूहारे तेह तणो ॥
 ऊर मर मेघ छडो तिहां देय । देस महारायह पब लेय ॥५॥
 चमर चक्षरीया मृग डालंत । पाटला तरु फूल्या जे महत ॥
 पंच बरण जाणो छत्र भरंत । अनेक ठाम दीसे जयवंत ॥६॥
 किनर गध्रव जाणो गीत गाय । देव अनेक सेवें जेम राय ॥
 सूडा सारस साबजां साद । जाणो बदिवन करें स्तुतिवाद ॥७॥
 अनेक फूल रचना तिहां होय । खोक पुरंता देवता जोय ॥
 पोढा फल जाणो भेटखूं । बन देवता मूके नित घणूं ॥८॥
 भोज पत्र आदि बलकल जाण । विचित्र बस्त्र सोभा बखारण ॥
 विविध खेल मंडप घर भला । अमरा भूमि किंकर केटला ॥९॥
 कपूर बेल के लदीयि कपूर । कस्तूरीया मृग खीर कस्तूरि ॥
 विचित्र रूप नही सोभिनार । देश राय सभ सोमे सार ॥१०॥
 बखि ठाम ठाम बहु नाम । दूकडां दूकडां अति अचिराम ॥
 गाय तखो नवि जाभि वार । जाणो मूषह जस विस्तार ॥११॥

अध्यात्मो देस बरलन

दीसि दस दिन बरती फिरे । गोवाला साधि अनुसरें ॥
 पूंछ उलालि बाबि बसि । अबर कोहने न व्यथायि बसि ॥१२॥
 महिषी मोटी बणी छिबली । जल दीठि पोहोषि मन रली ॥
 भिस कुभायिनी भोला जीब । सही पाणी देखि हरषे अतीव ॥१३॥
 गोवालिया सिर सोहि घूघडी । मयोर पीछनी मनोहर बडी ॥
 गले लिलकि गूंजानो हार । सोमें लाकड़ी हाय उदार ॥१४॥
 फूस मुकुट सिर रहयो लली । मुख मञ्जरी बायि बांसली ॥
 नीत गायि नाचि मन रली । सांभले हरख बणी हरखली ॥१५॥
 बंस नाद सुरी डोलि सांप । भूस तरसनो न लेखे व्याप ॥
 विशय बलूबो जीव गमर । न व्यलेखें सुख दुःख विचार ॥ १६॥
 पाछली राति तीहा गोलणी । दीही बलोणूं घूमे बणी ॥
 कंकण खलकि ललके गोफणो । कटि बालि मटकां तेह तणो ॥१७॥
 राते रच्यो जे काम बिलास । रखे वीसकूं जाणी करय अम्यास ॥
 विलोणां गंभिर सांभली साद । जाणो मेध तणो ते नाद ॥१८॥
 नाचे मोरडा रची कलाप । मेहो मेहो अज्वह करि व्याप ॥
 बन माहि मोरडी साथें रमे । जाणो अाव्यो वरखा सभे ॥१९॥
 साल क्षेत्र भरघां नमी रहि । स्थल कमल ऊग्यां तेह महि ॥
 वायु बसि हलावि सीस । परीमल जाणो बलाखि ईस ॥२०॥
 सूडा साद करें सोहामणा । बनफल त्यजी तिहीं भावि बणां ॥
 बहू फूलत्यजी त्यहां अमर अमंत । रणभरण करता साल सेवंत ॥२१॥
 अबर धान्य तीहा नीपजिइ बणां । परबत सम ठव ह्योयि तेह तणा ॥
 राखि कोय नही तेहन । सेई जायि जोईयि जेहनें ॥२२॥
 ग्रीषमे कठण कर सूरज तणो । राजा कर न कठिण तिहीं अणो ॥
 नारी पयोबर करें पीडाय । नही वाम राय करिसी वाध ॥२३॥
 छत्रि दड नव्यलोक दडीयि । फूलें बध व्यलोक बंधीयि ॥
 नारी अबर कामी करें खंड ॥ जीबहू खंड नही परखंड ॥२४॥
 अवन राय सरणावत तणो । न कोई गाम बन पाखि अणो ॥
 जीहा अला अमरा दीसिअपाट । नही लोक को हीडें कुषाट ॥२५॥

लंपट सम्राट कमल बंशाय । नहीं लंपट को लोक कहिवाय ॥
नर माहि और नहीं कुवटी । छिनारी बखू मन खेरटी ॥२६॥

द्राक्ष संदप दीसि ठाम ठाम । नामबेल बाडी अभिराम ॥
अरही जननि व्यापि काम । नारी सम कीसि आराम ॥२७॥

तीलक मंडीत पत्र बल्ली साय । पातलडी दीयि तरुणा बाय ॥
प्रवाल सूं उचै स्तन भूषका । विभ्रम छे प्रथ तारी प्रथिका ॥२८॥

मदन संदित भोगी सेवए । फूल रेणु ऊढणी सेवए ॥
पखी सावें जाणै गाबे गीत । दीसे सह नामोहि चीत ॥२९॥

नाय केसर नारंग अंबीर । बीजोरा रायण बहु खीर ॥
फणस खजूरी नें नारकेर । फूलफल दीसि बहु पेर ॥३०॥

मालती भोगरो ने मचकुंद । मंदार मरठ बकुलह वृंद ॥
एह प्रादिछि तरु अर लाल । पिर पिर पंखी बोलि नाय ॥३१॥

जाणै दीन दुखी भूखीया । तेडि तरु करवा सूखीया ॥
बाली नदी बहि तीहीं पाट । अनेक क्षेत्र सींचिया माट ३२॥

सरोवर बाब कुषा मभीर । भरीया ते बहु नीर्मल नीर ॥
कमल नथण जाणै जूयि समृद्ध । हसा नार्दें बसाखै सबृद्ध ॥३३॥

नीत राबे राय लोक अनीत । देश अभय लोक प्रमयाबीत ॥
लोक माहि को खल न कहिवाय । तिल पीलतां सही खलयाय ॥३४॥

कौतकमाल तराणो होयि युद्ध । कटक युष तिहीं नहीं होयि सुष ॥
फल सम समार्यें तक अरछे विरुद्ध । तिहीं नहीं लोक माहि क्रोध ॥३५॥

जिन प्रसाद दीसि अति जंन । गिरी गिरी नगरे नगरे उत्तंन ॥
कनक कलस सोना दंडधरि । धूषरी सहीत बजा फरहरि ॥३६॥

अनेक लोक तीहीं आवि पात्र । त्रण्य काल नाचै तिहीं पात्र ॥
हुनि हुनि प्रदल ताल कंसाख । होइ नफेरी नाव रसाल ॥३७॥

अनेक फूल फल मेई पकवान । जित पद पूजि सुजन सूजाण ॥
अनेक अंत विधान आचरि । अकसावर ते हेमांतरि ॥३८॥

चतुर्विध दास देवा सुपात्र । पर उपकार सफल करि नात्र ॥
वन कव्य रक्षस भाषणवें देव । लोक सख स्तनैत्रि निदेव ॥३९॥

धनद तिहां एक अहां अनेक । इंद्र अर्शा नर अहां सुबिवेक ॥
 चतुर घणा नर सुर गुरु समा । घणी घणी भोम तीक्ष्णोत्तमा ॥४०॥
 सवे नार अर्शा उर्बसी । घिर घिर नार सुकेसी अली ॥
 रंभा जणी ऊर घणी माननी । रंभा वन मंडिल अरुनी ॥४१॥
 सजल अपधरा भूमि भावि भली । रसा कल्पवृक्ष छि घणावली ॥
 मदारंभ साधर्मी घणा । पारजातक तिहां जोतकी भणा ॥४२॥
 विबुध विट्ठासन जाणू पार । सहू घरि सुख संतान अपार ॥
 हरीचंदन चर्या बहु लोय । स्वर्गो तो एक एक सहू जोय ॥४३॥
 अई.रावण सम गज नही मणा । ऊचाअबासरखा ह्य घणा ॥
 सर्व लोक कवि कला निवास । नित मंगल गावें सुभ भास ॥४४॥
 चन्द्रमुखी मंदहयति नार । गाम नगर पुर पाट मभार ॥
 आदित तेज अनेक छे सूर । सवे सुबध अती नही कूर ॥४५॥
 नारी प्रति अबोडे राहु । गूथी वेण केतु बहु चाहू ॥
 अनेक नवेग्रह मडीत लोक । स्वर्ग स्वर्ग करे ते फोक ॥४६॥
 एक सुर गुरु एक रवि एक चंद । राहु केतु एक बुध सुकेन्द्र ॥
 एक मंगल माटिए देस । ऊंचा स्वर्ग नेंहसि बिसेस ॥४७॥
 ठाम ठाम धली सतकार । भूसा ने जमाडि अपार ॥
 केटला वस्त्र भूषण देयंत । भागण भावणें गुणवत ॥४८॥
 नागवेल दल बीडी अखंड । नारद तुंबर अनेक प्रचंड ॥
 नमण कटाक्ष नारी चालवि । मयण भूजग मडस्या पालवे ॥४९॥
 अघर अमृत रस देई अपार । मधुर वचन मंत्रोषधी चार ॥
 अमृत भरधा स्तन कुंभ बहु सार । अमललेलि भुगता फल हार ॥५०॥
 वृष्णा भीठा गीत गाहा कवे । अमरीनि नीज गुण हारवे ॥
 सहू जन वदन सरस्वती वसे । स्वर्ग नें देस तेह कारण हसे ॥५१॥

वस्तु

देसह सोहि देस सोहि । अती बहु एह । सवे देस माहि अलो ।
 मध्यम छे पण अति ही उत्तम । मध्य मेरु यम मिरिपती ॥
 तारा माहि जैम चंद्रसत्तम । तिम सहू देस माहि अचंती चंम ।
 धन कण कण्य रयणि घणू । मंडित अतहि उत्तमा ॥१॥

भीमंतः स्रवन्तबोधविभवाः सम्भक्तमुक्यैर्दुःखैः ।
 मुक्तबोऽष्टाद्विरष्टः सिद्धिकरवाः पूज्याः सुसाधनिकाः ॥
 श्रीसिद्धाः परमेष्ठिनो व्ययवनि श्रीव्यायऽनन्तोत्तवाः
 श्रीद्वैतसुधिकमस्तुतपदाः कुर्वन्तु वो भवत् ॥१॥

इति श्री यमोदर महाराज चरिते राज बूडामखी काव्य प्रतिच्छेदे
 भूदेव कवि श्री विक्रमसुत द्वैतेश्वर विरचिते मारिदलनृप
 देवीमठानम इत्या श्री मद्रभयवधि प्रकृषिताऽसंती देश वर्णनो
 नाम द्वितीयोऽधिकारः ॥२॥ ॥३॥

तृतीय अधिकार

भास नमास्लीनी

उज्जयिनी नगर

तेह देश माहि सोहि । तो नमास्ली । नामे नगरी उजेण तो ।
 नबतेरी नगरी भली । तो भ०॥ अक्षर नगरी जीके तेण तो ॥१॥
 उन्नत गढ सूना तणों । भ०॥ रत्न जडीत को लीस तो भ०॥
 जगा जोति करी जाणीयि । तोभ०॥ तिलक अरुनी कोसीस तो ॥२॥
 पाखल फरती सातिका ॥तोभ०॥ निरमल अरु छे नीर तो ॥
 जाणें नमनी नावर नारी ॥तोभ०॥ वेहरयो नीजे चीर तो ॥३॥
 रातां नीलां कमल भला ॥तोभ०॥ जाखे भरत भरी भास तो ॥
 उपवन उयें अनोपम ॥तोभ०॥ फूस्याद्धि तथ बहु जात तो ॥४॥
 फूल रेणु पचर तिहां ॥तोभ०॥ आकासे ऊढाडे वास तो ॥
 जाखे पीलो पीछोडलो । तो भ०॥ जाखे नमरा कालीभास तो ॥५॥
 जाखे नगरी नायका । तो भ०॥ ऊर्ध्व स्तन गढ भार तो ॥
 साजी आपणू आचरे ॥तोभ०॥ करें करी बाखे राष तो ॥६॥
 पेरवीयि पोनि पोडां पेरवलां तोभ०॥ कमक संकल लस काय तो ॥
 मोटा माटा हार्थीया । तोभ०॥ संकल्पा अनेक बंधाव ती ॥७॥
 तलीया तोरखू अममसि ॥तो०भ०॥ रत्न तणा बुबिसाल तो ॥
 मेडी मोटीं कूबका ॥तो०भा॥ मोहोल मोटे मोती आल तो ॥८॥
 पोनि पाखली वृत्तलो ॥तो०॥ विद्यामण छि अनेक तु ।
 चौरांती आसन अनी ॥तो० भ०॥ रूप कास शास्त्र अनेक तो ॥९॥

विकट सुभट बिठा राषि । तो० भ०॥ आधुष अनेक प्रकार तो ॥
 कोतक करता कामीयां । तो० भ०॥ केता कोडि जूइ सार तो ॥१०॥
 नगर मध्य राय बबलहरा । तो०भ०॥ एक बीस खणा उन्नत तो ॥
 कनक कलस कोडामणा । तो०भ०॥ सोभा दीसि अती चग तो ॥११॥
 रातां रतन रंग मंडप उपरितु । तो०भ०॥ फटकत तणो सोहि धम तो ॥
 पाखलि फरती पूतली । तो०भ०॥ करय ते नाटा रभ तो ॥१२॥
 जाणो प्रतापराय तणो तु । भ०॥ यश मंडिन सोहंत तु ॥
 रतन मोती भूवके करीतु । भ०॥ सभा मंडप सोहंत तो ॥१३॥
 मुहुल मोटा माननी तणा तु । तो०भ०॥ पाखल फरती अनेक तु ॥
 रतन मेडी रलीभा मगी । तो०भ०॥ रचयछि अती सुबिवेक तो ॥१४॥
 मुपेउ राउ रडी । तो०भ०॥ कनकें घडी जडी रतन तो ॥
 रतन पेटी प्रति उरडि । तो०भ०॥ वस्त्र भूषण नही यत्नो तो ॥१५॥
 अत पुर घर अती घणू । तो०भ०॥ भरया सामग्री अपार तु ॥
 गुरव प्रवाली जालीया तु । तो०भ०॥ अगुरु सु घूप विस्तारतो ॥१६॥
 मणिक चोक चतुर चहू टा । तो०भ०॥ चुरासी दीसि दीसि च्यार तु ॥
 हाट श्रेण सोहि सारी । तो०भ०॥ भरा क्रीयाणा अपार तु ॥१७॥
 उपलबद्ध मेडी घणी ॥ तो०भ०॥ पंचवरण मणी चग तो ॥
 चित्रामण मोती सिर ॥ तो०भ०॥ रगत छि बहू रंग तो ॥१८॥
 नाणोद श्रेण छि नवरणी । तो०भ०॥ ताणा अनेक प्रकार तो ॥
 जह विरीउल जाणीइ । तो०भ०॥ रतन तणा भूलकार तो ॥१९॥
 सोहू ठसामणी । तो०भ०॥ सोना घडिया घाट जगाद्योत तु ॥
 जडीया उत्तय मलि जडि । तो०भ०॥ वप्राहे दोसी अट दीसि भली ॥२०॥
 वस्त्र अनेक छिभीण तो । तो०भ०॥ बहू मूलक सेसां साजू ॥
 पटकोल आदि अरवीण तो ॥
 गधी अटे बहू पामीइ । तो०भ०॥ अनेक क्रीयाणां सार तो ॥
 नेसटीइ नव नीध्य जाणो । तो०भ०॥ अनेक ध्यान अपार तो ॥२१॥
 अनेक वस्त व्यापारीया । तो०भ०॥ ठाम ठाम छि बखारि तु ॥
 एणी पिरि मोटा चोहटां । तो०भ०॥ मूलि चतुर नर नारि तो ॥२२॥
 अनेक वस्त्र विवाहादीया । तो०भ०॥ वारवा दारीद्र जेश तु ॥
 मागणिनि बाधीत दीयितु । तो०भ०॥ लीयि कीरत तु गुणंण तो ॥२३॥

सात बरखा बरखास तु । बगडली । राता रतन ती भास तु ॥
 हवी करी कहि कस ने । तो०ब०॥ साडी पिहिरवा बम् पीत तु ॥२४॥
 फटिक कंबोलि बंदन । तो०ब०॥ राते किरण बेष्णु जीबतो ॥
 कंत भामनि बरषु ऊमटनि । तो०ब०॥ कुं कुं बालीय बिलोमतो ॥२५॥
 नीस रतन बगडली तो ब०॥ मोरडी ससुभारिक कायतो ॥
 नीस बिरखे सामती बाली । तो० ब०॥ भोली बली बली पीडी लाय तो२६
 फटक कटां भर भीखरे । तो०ब०॥ नारी बीडी प्रविजाय तो ॥
 मोठ करिते मोरडी । तो०ब०॥ सही भरघखी तेणि क्य तो ॥२७॥
 दीस करिते ऊपरि । तो०ब०॥ ऊतर नहीं होयि काय तो ॥
 किरिसाणी सुभ ऊपरें । तो०ब०॥ के कतेनू दूहवीमाय तो ॥२८॥
 कहीं राता रतन तखो । तो०ब०॥ उरेडि रमबा बई बाल से ॥
 रात जाणी रंम रस भरी । तो०ब०॥ बाळि कत रसाल तो ॥२९॥
 पीला रतन नी सुरडी। तो०ब०॥ सामती कंत प्रति जाय तो ॥
 परनारी करी लेखवी । तो०ब०॥ कस्य आदर तो संकायतो ॥३०॥
 चन्द्रकांत गोलक बडा । तो०ब०॥ चंद्र किरण मलि जाय तो ॥
 भरमर धार भ्रमृत भरे । तो०ब०॥ सारद मेव चखास ती ॥३१॥
 फटिक मोखतणि बालीयि । तो०ब०॥ चन्द्रना किरण प्रसारतो ॥
 भोली भामती लेवा धमि । तो०ब०॥ जासी मोतीहार तो ॥३२॥
 हार बिना बलपी हवी । तो०ब०॥ हासु करि तब काय तो ॥
 हार देखी बली सांचला । तो०ब०॥ बाबरि नहीं तहाँ हाय तो ॥३३॥
 प्रामास ऊचा पेडी उलीयां । तो०ब०॥ बिडी चंद्रमुखी वाहि तो ॥
 पुण्यब दिन ग्रहसु कालि । तो०ब०॥ भूलो गवनें भमें राहतो ॥३४॥
 छत्र हास कडवेपी तो । तो०॥ संसि बडुपो लेख छत्र तो ॥
 तवेह बी चन्द्र तखु तो । तो०॥ कस्य एक ग्रहसु न पाय तो ॥३५॥
 किर बिर कडवी मोरडी तो । तो०॥ मोदी रमें सही भर बाय तो ॥
 हास करे सामती बीयि तो । तो०॥ प्रेम पोडि पीडि बाय तो ॥३६॥
 हीडोलि बसु हीनकितो । तो०॥ पावती पीडि रसाल तो ॥
 ललित बेशी भोयसी तु । तो०॥ हार नहि किनुसबाय तो ॥३७॥

नाह बेठोहि मही बोला रितो । भ०। हीचती भबला बाल तु ॥
 भगती करती भामनी तो । भ०। मला भोग भोगवि रसाल तो ॥३८॥
 चूआ चवन कस्तूरी तु । भ०। पीठी परीमल घंघतो ।
 रमत करि रत्नी भामणी तु ॥ भ०। नर नारी बहु रग तु ॥३९॥
 को गोठ करे कर लेहेकते तो । भ०। बिबूके घरनी हाथ तो ॥
 नयण कटाक्षे गोरडी तो । भ०। रिभूवि तेह निज नाथ तु ॥४०॥
 बालाकते करे करी तु । भ०। नीवी छोडंता लाजी नारि तु ॥
 रतन दीवा नव्य उलवाय तु । भ०। करे जेहू कमल प्रहार तु ॥४१॥
 एणी पिरि भोग भोगी भला तो । भ०। भोगवता जाणे इन्द्र तो ॥
 रतन सोगठे खेलतां तो । भ०। बोहोत्तर कला समुद्र तो ॥४२॥
 बत्तीस लक्षणें लकरा तो । भ०। नगरी तरणा सहू लोक तो ॥
 रोग शोक दीसि नही तु । भ०। पुण्य तरणा फल जोयतो ॥४३॥
 नारी दीसि पदमनी तो । भ०। बोलती मधुरी वाणि तु ॥
 मुख परिमल भमरा भमितो । भ०। नयणें सलणी ज्ञान तु ॥४४॥
 बीछीया सोहि रतने जडघा तो । भ०। भंभरनु भमकार तु ॥
 रतन मेखला कटि खलकती तु । भ०। घूघरीनु घमकार तु ॥४५॥
 चपकली मोतीहार तु । भ०। पतकडी जडी भ्रतूल तु ॥
 मुख तबोल अघर राता तो । भ०। नासिका मोती भ्रमूल तो ॥४६॥
 भालकाने खरी खीटली तु । भ०। फूली राखडी सिसफूल तु ॥
 बेणी गोफणो आसि अरणी आली तु । भ०। भमेरते काम भ्रसूल तु ॥४७॥
 कर ककण चूडी लडी तो । भ०। बिहरवा बीटी हाथ तु ॥
 घाट ऊडी चाली मलपती तो । भ०। सेरीये सही घर साथ तो ॥४८॥
 भगर ठाम ठाम धूपतो । भ०। अगुरू न दीसि लोक माहि तो ॥
 अवीनय नही बली को दीसि तो । भ०। अविनय अगनी तू चाहे तो ॥४९॥
 अवीभव नहीं को बसि तीहा तो । भ०। अवीभव भेरवज होय तो ॥
 मलीनाबर कुमती नही तो । भ०। मलीनाबर निसि जोय तो ॥५०॥
 द्विज दृष्टि खंडज नही तो । भ०। द्विज खंडनी नारी उष्ट तो ॥
 वादि बडबू नही तु । भ०। वाद्य वीणा सही गोष्ट तो ॥५१॥
 राति चोर नभवि नही तो । भ०। नारीनां वस्त्र हरि नाहू तु ॥
 केली करता को जन नही तो । भ०। कंतसू निसी माहि तु ॥५२॥

कठन पशु स्त्री स्तन विधेतो । भ० । नहीं ते कठिन बचन तो ॥
 बांके भमरैकि कामीनी तो । भ० । बांके नहीं तेह मय तु ॥१३॥
 मंथमति छी मानवी तु । भ० । मती मंथ नहीं तेह तु ॥
 जठर कठी छि दूबंवी तु । भ० । नीतंन हूबले नहीं बेह तो ॥१४॥
 काला केअं भंभर सभा तु । भ० । काला कुण नभ्य होइ तु ॥
 नीची नात्रि छि नार नी तु । भ० । नीची रमत न भ्यजोय तो ॥१५॥
 बेल घासंवि बिटपी सूं तो । भ० । नारी बीट सूं न संभ तो ॥
 कुमार्नि जाय पंथी पशु तो । भ० । नभ्य नर नारी कुमग्ग तो ॥१६॥
 भनेक लोक तीहा वसि तु । भ० । धन कए रखण मडीत तो ॥
 भनेक कला कुसली कार तो । भ० । बोलता चतुर पंडीत तो ॥१७॥
 वनवाडी सूं सरोवर तो । भ० । कमल छाया भरघां नीर तो ॥
 पालिनी हाखि कतूहली तो । भ० । चतुर नारी बंभीर तु ॥१८॥
 सही समारही साहैमडी तु । भ० । गोरडी करती नीर तु ॥
 सिर घट घट एक बाय सुं तो । भ० । घावती भरवा नीर तु ॥१९॥
 कनक कुंभ बायु वसि तो । भ० । भों भो भासय भासतो ॥
 सही नारी संनें रसीमा तो । भ० । कोखुनो हि बिकृत नीवास तु ॥२०॥
 नारी ठबण गमन तथी तु । भ० । उभा जूइ हंसराज तो ॥
 मोतीमडां चरवा त्पजीम तु । भ० । जाने बस्य सीसबज काज तु ॥२१॥
 पेखि पंकी माखा बिइठ तु । भ० । नारी नयण बितान तो ॥
 फल खाते ते बीसरघां तु । भ० । ते सोभा सेबा भरि ध्यान तो ॥२२॥
 बेसी नारी मुख चांदसी तु । भ० । दिवसि कमल मेलाय तो ॥
 नारी नयण कमलें बीबज तो । भ० । बाधे जाने कोमलाय तो ॥२३॥
 नारी नयण चपल परां तो । भ० । बली बली मासलां जोय तो ॥
 चंचल परां छापरां छाडीमत्तु । भ० । पावें जावतीं जोय तो ॥२४॥
 बीहीनी बोलि कैटली बाला तो । भ० । ऊपसी बचन अपार तो ॥
 सास बंके कमल त्पवी तो । भ० । भकरें बीटीं तैली नार तु ॥२५॥
 भंभर भरंतां कंकण बसके तो । भ० । सारंल सरस सुखंत तो ॥
 कोबल नारी भाबं सुखीय तु । भ० । साजी बचन न भलंत तु ॥२६॥

भ्रमर बारंता कंकण खलके तो । भ०। सारस सरस सुखंत तो ॥
 कोयल नारी शब्द सुणीय तु । भ०। लाजी बचन न नखांत तु ॥६७॥
 चतुर नरनि नीहालती तु । भ०। भरतां घट न भराव तु ॥
 निज शब्दगुण नविलेखती तो । भ०। घट पेर रोख कराय तो ॥६८॥
 नारी भरी करी चालती तु । भ०। चालती नयण विचित्र तु ॥
 जाणो लक्ष्मी चालती तु । चालती चतुरमां खीस तु ॥६९॥
 हसिते उत्तर बालती तु । भ०। भालती कंभूह जोड तो ।
 ताली देकरि बालडी तो । भ०। हीडनी बाहुडी रोखती तु ॥७०॥
 सोना ऊंढण फूमती भालीतु । भ०। पातली मक्का मोडती तु ॥
 भारन लेखती सही साहामीतु । भ०। बडी वार बात करि कोडतु ॥७१॥
 वीथ्य घरणी कमलें भरीयतु । भ०। सामला रतन ना शंभ तु ॥
 नीलरतन पगवारीया तु । भ०। भरी छि निर्मल शंभ तो ॥७२॥
 देखी नारी मुख चंद्रमां तो । भ०। रोखि चकवी अपार तु ।
 बियोग भय राति लेखती तो । भ०। श्याम किरणि प्रंचकार तु ॥७३॥
 कूपि कूपि यंत्र नाटां नडा तु । भ०। नीर नि फेरावि नार तु ।
 करि चीतकार फेरा भाटि तु । भ०। जाणो ते रीवै गमार तु ॥७४॥
 कणु कुण नर फेरव्या नहीं तु । भ०। नारी नयन विसये तो ॥
 कर घरया कोण नव्य फरें तु । भ०। एखिवात संजोव तु ॥७५॥
 जीहां कुभा कूपण गुण तु । भ०। कले वच देई श्रीर तु ॥
 दोरें बांधी काडीपितो । भ०। हठि करी तेह नीर तो ॥७६॥
 लोक मांहि को तेहवा नहीं तो । भ०। कूपण घन संपि बाय तु ॥
 पीडया स्नेह न को त्यजे तो । भ०। तिस पील्या स्नेह जाय तु ॥७७॥
 जिन शैल्यप्रानं सिहां शशां तो । भ०। उन्नत सीखर छि तास तु ॥
 कमक कमस घज मह लहि तो । भ०। बिब छि कोट रवि भास तु ॥७८॥
 शिखर पासि सिह देखी तु । भ०। चंद्रनो हरण डरत तो ॥
 तेह भाटि शंभ नमी करी तु । भ०। दसण ऊत्तर फीरत तो ॥७९॥
 संत सजन श्रावक मला तु । भ०। तित भासि जिन जाय तु ॥
 सस्यमार शारी शबे वारी तु । भ०। सुखी सफल करि गात्र तु ॥८०॥
 पंचबरण लखके वण तो । भ०। नयरी मांहि प्रज कोड तु ॥
 जाणो शयीनें तेवती तो । भ०। नाखूं शारिद्र मोड तु ॥८१॥

३३

एशी पिटि ककरी खेहान्खसी, उजेही-मुज नाम ॥
कलक त्वखें मंडार, भरखा, सबत तखी विभाव ॥१॥
पापनि फरलां पुरां वखां, खाखा नमर कही तास ॥
फुलें चहोवनि बहूदहां, कुजत तखे मखो भास ॥२॥

मास रासवी

उज्जयिनी का राजा यक्षोव

ते नबरीनु राजीए । माजीयो ज्वाखें कुजेन्द्र तो ॥
प्रबल प्रतापि मंडीयो ए । सेवी अनिक बरेंद्र तो ॥१॥
नाम जलोप तेह जाणीमिह । क्षणीय बंभ विहात तो ॥
हस्ती ह्य रथ छि चला ए । लखि अनेक बहू भीत तो ॥२॥
सामंत क्षत्री बीटीवोए । सुभट सेवता कोउ तु ॥
रण भीन्व जय लखी बरयो ए । बैरीतला मान मोड तो ॥३॥
सोमगुणि जाणे चन्द्रमाए । प्रताप गुणि जाखें सूर तो ॥
वैरी मद भङ्गर त्वजिए । सांभलतां रण तूर तो ॥४॥
सहस्त्राज आनि गुणि सही ए । क्रूर गुणि यम रूप तो ॥
दान गुणि बनपती समोए । रूपगुणि रती नूप तो ॥५॥
जाखे इक लोकपाल तखा ए । निष्कृता रण्यो लेह अंजलो ॥
देश विवेक बज विस्तरभोह । सोहाय्य क्षत्री बंधु ॥६॥
लख भट कोटिमट्टिय । परवरणो राम सोहंख तु ॥
बहू वारादि खोहीयो ए । जाखे अन्न महंख तो ॥७॥

रानी अन्नमती

तस कामिनी बजयामिनीए । यामनी कवक कुवेह तु ॥
चंद्रयिनी मामि अन्नमती ए । रूपतशि छि रेह तु ॥१॥
गोरखी कोनाय करही ए । कही बीबातादि बीज हाम तो ॥
मेह सरीती बीजवीय । तिम प्रीत छि रस्य हाय तु ॥२॥

हरीचंदन बिलेपन समीए । हरीती राख संताप तु ॥
 मली सम हृदय बरिजवए । होइ कामफली बिषय व्याप तु ॥१०॥
 अनेक शृंगार करि वणुं ए । बेलाडि मवन बीकारतु ॥
 जाणो मोहरण बेलडी ए । मोहती रायनि अपार तु ॥११॥
 जिम नि धान ना कुंभने ए । भोगी नभूं किलगारतु ॥
 तिम रागानि राजा भोगीयोए । मूकीन सकि बडी वार तु ॥१२॥
 चन्द्रमती गुण वा हालतीए । बालती नूं जाणो फूल तो ॥
 बहुगुण जाण राणो सणोए । भमर समो भनूं कूल तो ॥१३॥
 चन्द्रमती जाणो पदमनीए । राती नृप गुण वृंद तो ॥
 कनक बरण अती कोमलोए । राय जणो मकरंदतु ॥१४॥
 चन्द्रमती आंवा मांजरीए । मस्त कोकिल समोराय तो ॥
 रंग रमंतो रस भरपो ए । कुंजि मधुर सुठायतो ॥१५॥
 चन्द्रमती जाणो सुभ मती ए । संपदालाभ सम भूपतो ॥
 सुख संतोषि पूरीयोए । भोग्य सोभाम्यनु रूपतो ॥१६॥
 चन्द्रमती जाणो सिधि समीए । भाव समो जाणो नर नाथ तु ॥
 प्राण योगि प्रेम अती वणोए । राज्य भोग बि राखी साथ तो ॥१७॥
 न्याय प्रजानि पालतु । सुकवि बिद्वान्स विश्वाम तो ॥
 कामधेनु कल्पवृक्ष समोए । पूरतो वांछित काम तु ॥१८॥
 नबरस नाटक नव नवाए । नित नित जोवि प्रसाद तु ॥
 हस्ती भूज्जावि अति बलीए । मेघ महीष विकराल तु ॥१९॥
 एणी पिरि राखा सुख भोगविए । करम ते पर उपकारतु ॥
 मान मोडी बेरी तराए । धन मली भरवा भंडारतु ॥२०॥
 धर्म करि जित्खबर तणोए । दान पूजा भवतार तु ॥
 सह गुरु वाली सुखि वलीए । करि खडो आचार तु ॥२१॥

बुध जन्म

ते बेहू फूलि हूं ऊपनो ए । कुंजर सुलभरा बलाण तु ॥
 बीज चन्द्रयम सोहीयो ए । दिन दिन वाण्डु सुजाण तु ॥२२॥
 जनम समय दान दीयुं ए । कनक रतन नीधान तु ॥
 पक्षी पशु बहु छोडयाए । छोडया बहु बंधी वान तु ॥२३॥

जसोधर नाम रत्नम

नाम जसोधर तेह दीऊए । बहु पिरि करी उच्छाह तो ॥
 रतन अकीत भूषण भलाए । पहिरावि मरी ऊमाहूँती ॥२३॥
 क्षण इरौं कस्यइ हसिए । मोडि क्षण क्षण भासती ॥
 राम राखी नीज मन रलीए । बेलावि लेइ बास तु ॥२४॥
 रतन तखु रुद्धं भागखुं ए । पूरखु नीती थोक तु ॥
 बसमसहीइ रीसती ए । थोक अंजी कहुं फोकतु ॥२५॥
 बली बली रबे मोडि बलीए । मोती साथीया भरघां रत्न तो ॥
 अनेक सजन लीवि करिए । करय ते अती बखुं बल तु ॥२६॥

कुमार का बाल्य काल

कुंभर सहीत हीइं खेलतु ए । जाणो नागकुमार तु ॥
 अमर बणो जाणो परवरघोए । इन्द्रनो अयंत उवारतो ॥२७॥
 पंच वरसनो भेडो हबो ए । कुंभर इं जसोधरावि तो ॥
 महोखब करी पाठक करिए । मुंख्यो जखना काज तो ॥२८॥
 अनेक प्रकारि शास्त्र अथवाए । अस्त्र तखो अथीकार तु ॥
 अनुष विद्या आदिक करीए । शीषवीयो अपार तु ॥२९॥

विद्याध्ययन

व्याकरण छंभ अलंकारए । तर्क छह वर्सन खेव तु ॥
 सामृद्रिक कंभीत सहीए । सालिहोत्र पत्र छेव तु ॥३०॥
 न्याय नाटक नृपनीत अरीए । वास्तु शास्त्र सूत्रधार तो ॥
 जोतीक वैदक रुबडी ए । रत्न परीक्षा बीचार तु ॥३१॥
 काम शास्त्र कोक कतुहल ए । आसन थोरासी प्रकार तु ॥
 अनुविद्या शास्त्र बालवाए । वर्मशास्त्र तुलकार तु ॥३२॥
 बंडनीती प्रयी सहुए । अरुणकी तनुराजो ।
 बार्ता बीक्षा विवेक बहु ए । गूढ भंभ अंकीट बसतो ॥३३॥
 राजनीति निपुण बयोए । अनेक कला विद्वान तु
 कुंभर तखा कुण बेसीया ए । सहु अथ हबो उत्सास तु ॥३४॥
 काला कीटली आला कुंसाए । सेहिक तीही अथार तु ॥
 बदन कबज विर अथार सार । जाणो करयं प्रसाव तु ॥३५॥

अष्टमी ससी सभी सोहीयोए । भालस्थल भलकेय तो ॥
 मल्लयुगल विषिये रष्योए । ससि दो खंड करेय तो ॥३६॥
 नवन जाणे दोष माछलां ए । लावण्य जलिकरि खेलतु ॥
 अथवा अपल गुणि करीए । भमरा तराँ,ए बोल तु ॥३७॥
 कर्सा दीसि कोडभरणा ए । जाणे अनोपम राय तो ॥
 नयराह सीम चापी रक्षा ए । मोती धरयण्णने ठाय तो ॥३८॥
 सुक अचू सम नासिकाए । अथवा जाणे तील फूल तु ॥
 भमरी मयरा धनुष सभीए ॥ हर हायनूँ असूल तो ॥३९॥
 कठ जाणे हरी ह्यय नो ए । शख मडीत त्रय रेख तु ॥
 हृदय वीशाल कूअर तराँ ए । लक्ष्मी वसवा वीसेष तु ॥४०॥
 अमलक मुक्ताफल तराणे ए । उर वर हार लसत तो ॥
 राजलक्ष्मी विवाहनें ए । वरमाला सम सोहंत तो ॥४१॥
 लाबा भुज भुजग समाए । जाणे पराक्रम रूप तो ॥
 भुज अद्भुत बल पीडीआ ए । बीहीना सेवे बहू भूप तो ॥४२॥
 रतन जडीत कंकण धराँ ए । कनक सांकला संजुसततो ॥
 उन्नत खंड खमा भराँ ए । भूषरा धरण अद्भूत तू ॥४३॥
 कटिलंके जीत्यो सिंहलो ए । वली भृगराज अमीमान तो ॥
 महाराज राज प्रताप जारणी ए । लाजीयो नीयो तेहरात तो ॥४४॥
 जंघा कनक थंभा जसी ए । वाटली कोमली खंग तु ॥
 कमल जीत्यां धरण तलेए । लाज्या जल करं संसतो ॥४५॥
 रूप सोमनि हू भागलोए । लावण्य जस तराणे रूप तु ॥
 जसोष राजा मरु देखीयो ए । मनोहर मनोहर रूप तो ॥४६॥

दूहा

युधराज पद प्रदान करना

तब राजा मन रीझीयो, चीतवे बलुर सुजाणु ।
 धनेक मोहोछवि थापीयो, युधराज पद बषाछु ॥१॥
 वीवाह मोहोछवि कारखों, उखम करी अपार ।
 मंत्री पाठव्यो आपणो, देश वराड मभार ॥२॥
 एलापोर नगर भजू, अमरावती यम जाणु ॥
 राज्या राज करि तीहाँ, सामल बाहन सुख खाणु ॥३॥

ब्रह्मा

सालकी राखी तेह तराई, रूप सोभा बनि रेह ॥
 ससी बकशी भृगलोचनी, अनेक कला गुरु वेह ॥४॥
 ते वेह कूलि अपनी, अच्युतवती तेह नाम ।
 कुंभरी घटीही कांडामणी, रूप मोवन गुरुठाण ॥५॥
 ते मंत्री रायनि मल्यो, राय दीषो बहुभाव ।
 कीषी वात बीबाहनी, प्रापी लेष नीधान ॥६॥
 लेख वांषी भाव बाखीयो, छाखीयो राय धानंद ॥
 बंदिका सम ए कुंभरी, यज्ञोत्तर कुंभर ते चन्द्र ॥७॥
 इम बोली महोद्धव धरिण । नीश्वय वचन ते कीष ॥
 कुंकुम केसर छांटणां, श्रीफल फोफल दीष ॥८॥
 बाने मंत्री पूजियो, लगन लेई करी चंग ॥
 मनी उजैली प्रापीयो, रा प्रति काह्यो सह रंग ॥९॥

भास बीबाहनानी

सूरराज का बिबाह

रंगधरी बीबाह भनी । घत बरयो भावयो उकाह ॥
 धवल मंगल धरुं गावता । सूरत नीचां बरी उगाह ॥१॥
 मंडप चंभ रतना तरुण । असी बर्या वीसि महंत ॥
 फटककरणा कली खोबता । पाट बीचीन दीसंत ॥२॥
 पंच बरया रतना उला । कल त्रितीरुं बीबाह ॥
 परदाणी ठायां नालीया । बालीयां मोली नाल ॥३॥
 तोरण नील रतन तरायां । धमबनि घटीही अवार ॥
 चसर ठाम ठाम बांषीया । सोहि ताहां फूलहार ॥४॥
 चोक रतन तरायां अनेकि । लखनि मोरीनी धाम ॥
 कनक कलस बहु ललकि । बहुकि अन्तर ठाम ठाम ॥५॥
 नील उरपस रचना कली । जोरीना बांषीया सार ॥
 पहकोलि धरुं, काह्यो । सोहीउ पंचकरण कुबीवार ॥६॥
 ठाम ठाम कंकोनी ससी । अनेक तेजावप राय ।
 पकवान मिर पौडी वीसि । जंघेई बखारनी धाम ॥७॥

खनेम प्रकार जमण तणी । सामग्री भरघा भंडार ॥
 कामनी मंगल वावती । कुंभर तणा गुण बिस्तार ॥५॥
 सजन सगा भावि घणा । राबाराण नही पार ॥
 साहा मां मानदेई करी । भाणे ए नगर मकार ॥६॥
 वाजिभ वाजि बहू परी । ताल कंसाल रसाल ।
 मादल दुमी दुमी बाजिए । डम डमि डोल बीसाल ॥१०॥
 सरणाई साद सोहामणा । भाभीणी बंध बाजत ।
 भीमी भीमी भल्लरी सुंगल । नफेरी गगन गाजत ॥११॥
 भण भण करि वेणा घणूं । तण तण रबाव समाज ।
 तत भानंद सूरिवर घन । बाण चतुर्विध वाज ॥१२॥
 संगीत शास्त्र प्रमाण ए । गायण मायसो छाजि ।
 तान मानदीक सुं मूर्छना । नटवा गर्ब सूं गाजि ॥१३॥
 जाणे रंभा तीलोत्तमा । उत्तम भपछरा निहरावि ॥
 पात्र नाना विष नाचे ए । हस्त कमाल बाणावि ॥१४॥
 ताता येई येई बोलती । ठविण ठवि पद छंद ॥
 नाटक साला नाचंता । तिहां उछे प्रति छंद ॥१५॥
 भमरी देयंता मेखला । धूधरी नू धमकार ॥
 नयन कटाक्ष नीहालती । चालती कुंडल भलकार ॥१६॥
 फूले काहोयि पोढी परे । घरे घरे मंगल सार ॥
 राज मारणि शेरी चौहटां । सोहटां बीभामण उन्नार ॥१७॥
 घिर घिर गुडी ऊछल । पंच वरण धज सोहि ।
 पवनें पताका लहिकती । पुरी जाणे नाचीती मोहि ॥१८॥
 तलीया तीरण भगमणे । सोहिए रभा सुयम ॥
 ठामे ठामे तान गान सूं । नाचि नाना विष रंभा ॥१९॥
 रतन जडीत गलि हांसलो । हांसलुताजी भमूल ॥
 मोठी ताण्णि मरबीभारणि । पाखर भतीही अतूल ॥२०॥
 कनक घडां रतने जडा चोकडी उंचिलवाम ॥
 हेम पलाणछि खडू । खडी सोभा सुठाम ॥२१॥
 मोतीय भवका भू बता । फूमतां हीरना दीसि ॥
 पने नेजर भमकार । हिसारतो हय घणूं बीसि ॥२१॥

राय राखत महाजन बहू । कहु तेजी दीयां मान ॥
 भीकल फोकल पुर । कपूर देवाय सूं सुं पाय ॥२२४॥
 केसर कपूर छांटया । धति बखो बुभा बापेय ॥
 तिनक करी मोती बोटियां । अबीर बाधि करे मेख ॥२३॥
 डोल नीसाण धू सु किए । पूं किए रीपू हुणी मान ॥
 सखगार सूं नजमाभिनी । काभिनी करि नील मान ॥२४॥
 मोती अडे बधाबी करी । करि उदरयो तेखी बार ।
 सजनिहूं घोडि बहावयो । मारोवतव अडवार ॥२५॥
 कुं कुमे पूजी बधाबीयो । हय नलि टोडर ललकि ॥
 बूधर माल कनक तखी । बालंतडां बखूं बलकि ॥२६॥
 तबहूं बहू सखगारयो । भारयो सखगार भार ॥
 रतन मुगट अलि अलकि । ललकि कुंडल वार ॥२७॥
 नल बट दीउ पिरबखूं । सिरि असावि जमाजोत ॥
 आंजी मालडी पदम पांलडी । पद कडी कीरणे उखोत ॥२८॥

बिभिन्न उत्सव

आमलां म न भूक्ताफल । ललकिउदरवर हार ॥
 रतन जडिन बाजू बिहिरया । करे बीटी वेडु अपार ॥२९॥
 कटि लल के कटि मेखला । रतन पाउडी खोहि पाय ॥
 सहयो आरा असवार । पालनु पार नही पाय ३० ॥३०॥
 गज अडगाह अमर डले । रघुसीया सिर बहू अत्र ॥
 पंच बरण बज फर हरि, पटकल तखी म बिचित्र ॥३१॥
 बाजीव नाद संमल करी, धिर धिर नारी उखाह ॥
 बरजो बरधि करखी । साथ करि बाहोबाह ॥३२॥
 एक मोडी मोलीहुरखे । दोरडी बीटीने पाय ॥
 बालंटा बांधो बडो । बू बिजे मोती बांपाय ॥३३॥
 एक आमूचस्य करी तीम । अडीय अजावली बाय ॥
 काने कंकण करे कुंडल । पिहिरती अलीय संकाय ॥३४॥
 एक बालका सलाककरी । आंवीकं नमनखि एक ॥
 जोबा बावते अजावली । बिकल निमोहि बीवेक ॥३५॥
 एक बाबडूं भूकी बाजक । बालका जोबावि पाय ॥
 पांहुनि धाने बीजे केरडी । खेरक बीर अलि बीबाय ॥३६॥

एक यमती साथि छोकरी । कूत्परधू बलगूजई भासि ॥
 बिहिलाजनी जोईयि धूमू । म। पंपू झालती बोलि बाण ॥३७॥
 एक मेलती बाछरू । कूतरू बांधीळं ठाम ॥
 दोहीसूं पछि कही बालती । बाछरू नूं सरधूं तव काम ॥३८॥
 एक राबती राषणूं । लूण बणूं घाली घान माहि ॥
 दाल वघारी झलूणी । सलूणी वेगि बर चाहि ॥३९॥
 एक प्रीसती भरतारने । बारनि भिन्नारिनि भावि ॥
 भारी नाखी बर जोवती । सही भरनि मने भावि ॥४०॥
 मेडी जोवि सवे पदमनी । घसमखी साख भरत ॥
 ममर भमि मुख परीबलि । कमलनी बोसा भरत ॥४१॥
 मधकुंद भोगरो मालती । माहालती लाजा वधावि ॥
 जय जय वाणी उच्चरें । जिहां बर मारनि भावि ॥४२॥
 एणी पिर फूलि काहोयि । जूयिकोडि देवी देवी ।
 बसोबर राखा सुत परणीइ । वरणना कोणि कहेवी ॥४४॥

ब्रूहा

इत्यादिक उखव घणा, नित नित जमणवार ॥
 मागण जननें देवता, बांछीत दान उदार ॥१॥
 जान सजाई होइ घणूं, हय गय रथ सुबिखाल ॥
 पाला पार न पामीइ, पालखी बहू गुणमाल ॥२॥

भास धूलनी

हाथी बहु सणवारघां । कनक सांकलि घण भारथा ॥
 घंटा तरणी टणकार । धूबर झालाना भमकार ॥१॥
 अंवाडी रुडी बीसि । रतन कवल सोहि जीसि ॥
 सीदरें रग्या सीसे । मोती जाली मनहीसि ॥२॥
 अंवाडी घज लहिके करी । कान वद बिहिके करि ॥
 तिहा भमरा ऋणकार । अंकुस सहीतकुं तार ॥३॥
 अनेक कुंभर तीहां बिइठ । रुपें रैमणी मन पिइठ ॥
 अमर सोहे गज काने । दतूसल सीध बाने ॥४॥

अंजन मिरि जायँ बसता । भरि बरखी हासता ॥
 मलपता महीमल माहोति । जंभी सूड हकसति ॥३॥
 धाजासोब बोझा जाति । बबर हुकसीय भाव ।
 बानायुज छिविनीत । बायुवेयी छिबीपीत ॥६॥
 बोडा मलि छि काबोज । पाखीपंथी छि पीरोज ॥
 पचकल्थाण पारसीक । बाहलीक बलीया कछीक ॥७॥
 गंगा जल गुण जायँ । हासला बोर बलायँ ॥
 एह भादि भाष्या बराय बोडा । सख्यारया नहीं बोडा ॥८॥
 रतन जडया हेम पलाण । पावलि पावर बषायँ ॥
 हरीनां बरायँ फूमतडा । मोती प्रबाला ना भबकडा ॥९॥
 मखी भारणि मोती ललकि । लगाय बोकडे मखीमलके ॥
 झुरि बेणी मोखी भाष । रजि रूच्यो रवि भाण ॥१०॥
 रथ रुडा वस्ति भरया । घोरीयडा धोरि जोतरया ॥
 केटला राजा बैठा रथ । जूता घोडा समरथ ॥११॥
 अनेक राजा तीहा बिइठा । सुरवीर सुभट गरीठा ॥
 अतीय तिहा हथी धार । छत्र चमर के नहीं पार ॥१२॥
 पंचवरण लिहिकि अज्ज । चिन्ह छि उनखवाने कज ॥
 पाला असि अइ मज्ज । अरी अण अय करी मज्ज ॥१३॥
 पंचवरण पिहिरया वस्त्र । अरया बहुवीच अन्न ॥
 एखी पिर चतुर्वीच सैय्य । राय असौष सुधन्य ॥१४॥
 हस्ती उपरि । बिइठुह सार सांयि सद्रु परिवार ॥
 एखी पिरि चालिए जनि । मचकौयू संगल बीचान ॥१५॥
 हस्ती उपरि बिइठुह वासा । सारीदल सुखो वासा ॥
 छत्र चमर वखी सोभ । अगलि नाचिए रंभ ॥१६॥
 डम डम डोल अ हुकि वैरी मानसुहु सुकि ॥
 गों भों अंगल नाद । सरखाइ सुय साव ॥१७॥
 शालखी कनकमि सोहि । अतीय सोना अय मोहि ॥
 कटक अछमली चारखी । मही कपी लेख हाखी ॥१८॥

गिरीवर घणा द्रमद्रमया । ग्रह तारा भ्रमे भमया ॥
नदीय सायर उलटया । वाष सैष दूरव टया ॥१६॥

तव पाम्यो बराड देश । अनेक सोभानु नीबेस ॥
आवयो जाणी नरेस । अघित पूजा करि बीसेस ॥२०॥

ऊतत तरु बाये हार्लि । अतनि जाणी वाय बाळि ॥
तरु बेल थी फलफूल । जाणे वधाबि अतूल ॥२१॥

रतन सिला छि ठाम ठाम । जाणे आसनवि अभिराम ॥
सरोबर नीर नीभरण । अमोखणा दीयि भूयि चरण ॥२२॥

पिर पिर तरु अर फलया । जाणे भेटणा आगल घरया ॥
आक्षा मंडप ठाम ठाम । जाननि दीयि जाणे विव्धाम ॥२३॥

श्रीफल फोफल लवंग । कपूर एलबी दिए चंग ।
चंदन तिलक तसु दाषि । इक्षु बंड रस राळि ॥२५॥

तरशा अक्षु रस पीवाय । भूक्षा अनेक फल खाय ॥
सेलडी पणूनि नीराये । दूष दही पार न बाये ॥२६॥

दुकडां दुकडा गाम । लोक सजन ना विश्राम ॥
नगर पाटण पुर आक्षा । बनयणि घरां प्राजां ॥२७॥

मंजलि मजल चालंतां । चौविध सैन्य महंत ॥
एला नगरीयि आब्या । सह सजन तरिण मन भाब्या ॥२८॥

जान वधामणी यानि प्रसीध । पंचपसाय रायि दीध ॥
वन उद्योतें ऊतरया । सूत्र धारि घर करया ॥२९॥

मंडप मोटा बिसाल । पटछुल तरा गुण माल ॥
जान सार्ले यानि कानि । बाजित्र बहूपरि वाजि ॥३०॥

हय गय रथ सूं असंक्य । पाला अपल छिलक्ष ॥
रजयै सभ्रम साथ । साहामो आबि नरनाथ ॥३१॥

जन नि दीधला मान । श्रीफल फोफल पान ॥
छांटणां तीलक अबीर । कीधु बिनय गंभीर ॥३२॥

नगर प्रवेस इम होवि । नर नारी बरनि जोवि ॥
कहिए आचंभ रूप । जाणी किए नल भूप ॥३३॥

अत्र नरेंद्र नामेंद्र । सूर मुख सूरके चन्द्र ॥
 के अक्षररवो ए काम । मुखा लक्षण कैरो ठाम ॥१४५॥
 जाखे न्यायनो समोह । दीठि ऊपजि मोह ॥
 जाखे प्रमटसू क्षत्री धर्म । एही पिरि करि बखो भर्म ॥१४६॥
 नगरी पीजि प्रकार । सात सखां घर कषार ॥
 चक्रटां शौकिहू आम्बु । नारी फूलि बन्वाम्बु ॥१४७॥
 भेडी मुखसू बीचार । जोबि बहुवीच नार ॥
 नगरी सोभा महंत । बच तौरण कलकंत ॥१४८॥
 चंदन हाथा बीभाम । जाखे नगरी हसि सकाम ॥
 गूडी लहिकि सहूराचि । जाखे नगरी हरचि नाचि ॥१४९॥
 रतन वसी जग जोत । निरी पणि बखो उद्योत ॥
 राय बलहरसि कबो । जाखे नगरी नारी नो बूढो ॥१५०॥
 कारजे नीर भरए । जाखे अशोषण भरए ॥
 पांजरि पोपट पडिए । जाखे बिनय मुक दुडए ॥१५०॥
 नगरी मांहि सुम ठाम । जांन उत्थारा विश्राम ॥
 बबल हरे सहू उत्तरयो । मानवी मंगल करयो ॥१५१॥

बूझ

स्नान बिलेपन मुक हवां । हवो बहुरीता चार ॥
 लजन दिन बानें बरी । नमसि न बाडि नार ॥१५१॥
 रतन जडील प्रासन भरए । भासुक मोती चोक ॥
 कनक कलस बखू बलि भरथा । पल्लव प्रावां अखोक ॥१५२॥
 नारी नगरं नीर सू । बाधरी आशोवार ॥
 सवे सोही सखवार सू । आचि बन्वामा माट ॥१५३॥

जास कापुनी

राजदेसाज

नारी नामें नारवदे । आचि नच नेह ।
 सुरादे मुख नीरबी । बीबादे विह ॥१५४॥
 हीरा देहे बिहसि । हरकि हरपामे ॥
 अणवार सू सीवार दे । मचकि वरपादे ॥१५५॥

गोमादे गोरी गुण्णि । गंगादे गरबीसरी ।
 भादेसही सोभती । सीखें नही वर की ॥३॥
 भावस दे भाबि भली । भोमादे भोली ।
 चतुर चालि चगा दे । चम पंचरंग चीर चोली ॥४॥
 मोहणदे मारिणिकि मोहती । मङ्गलाणदे मोटी ।
 लक्षमादे लक्ष्मी समी । लक्षणि नही छोटी ॥५॥
 कमलादे कोमल बदी, कोडादे नही क्रूरी ।
 रतनादे रलिमा मणी । अछबा देजि छि छोटी ॥६॥
 आजादे आवि अलज्जइ । रस भरी रगादे ॥
 बहलादे बिहि वारणी । बाहानी कथवजादे ॥७॥
 हपादे रूपि रस भरी । रमादे रूढी ।
 रंभादे रभा समी । करि सोभती चूडी ॥८॥
 रगादे रग राषती । राजलदे राणी ॥
 अमरादे अमरी जसी । अनादेवि वषाणी ॥९॥
 वनादे वन देवता । वीरादे वारु ।
 अघादे अर्धकारी । रघादे रती सारु ॥१०॥
 हासलदे हंस गामिनी । हसा दे हसी ।
 सोभाग दे सोभागणी । प्रेमादे प्रसंसी ॥११॥
 तेजलदे तेजि तपि । जसमादे जाणि ।
 एणी पिरिनारी वहू मली । रुपगुण तणी खणी ॥१२॥
 तिलककरी एक कामिनी । एक मोती चुहुटि जिएक ॥
 सीख देती सोहामणी । मीठू बोलती मोठि ॥१३॥
 एक मोतीडे वधावती । एक नयन सुधंजि ॥
 एक आभरण पिहिरावती । एक हंसती रंजि ॥१४॥
 एक ऊंडी पीडी करि । एक बीका ऊतारि ॥
 एकज जूण उतारती । एक मंगल उचारि ॥१५॥
 एम मली सोभाणिणी । मंगल गाए वा ।
 सहूरीत होयि राय सुणो । चालु परणिवा ॥१६॥
 बाजित्र बाजिजे हू परी । घसी नाचि पात्र ।
 अश्व बिडोहूअपतो । बली चामर छत्र ।

अनेक कानी करी परबंदरी । बाघ्यु तोरखु धार ।
 सालो सन्मुख रही भसिए । मला इलीक बिस्तार ॥ १८ ॥
 प्रथ्य छतर इलीका बसो । भस्योभि उतंत ।
 सुखावि नयर नर नारीनि । बाघ्यु बहुरंग ॥ १९ ॥

बस्तु

जस बस्तरयो मय लघु । सार द्वार सुधार ॥
 नयर मफार जस बिस्तरयो उज्जलु
 बंदी जीरद बोलि बसो । मायस माधि नीत मंगल ॥
 दान देइ तव मन रली । राम जसोथ अपार ॥
 तोरखु रीसह बिकहू । मारीकता मबिधार ॥ १॥

भास साहेल्लिनी

सालो मांडप थी छोटलोए । सहेलिरे प्रीक्ष्ण्यो वेइ दान ॥
 मान तोरखु भापलि कनकनुए । साहेलीरे सिंघासन सु निधान ॥ १॥
 लीला भू झालबली नटकनुए । सा० । ऊमो रह्यो तेखीवार ।
 पुंहुकवातली सजाई लेइए । सा० । धावी पदमनी नार ॥ २॥
 मझायू बधावतीए । सा० । पुंहुकती चतुर सुभाय ।
 दूसर मूसल मादि करीए । सा० । सरीउनाक बघाए ॥ ३॥
 गेवा सूत्र सांपड उतारतीए । सा० । लहिका हूं सांभि ह्यथ ॥
 घाट वाली नाकताणतीए । सा० । हसयो तव सहू छाम ॥ ४॥
 माहिहू चडा रतन तणू ए । सा० । सिंघासन पर ब्रीष ।
 हूं बेसारघो नामसिए । सा० । भाडु अंतर पट कीष ॥ ५॥
 कन्या भादी कोशामलीए । सा० । साहाभी बिसारी रसाल ॥
 मीती रतन फूल तणीए । सा० । कूठि वाली बरमास ॥ ६॥
 पंडित मंगलाष्टक बसिए । सा० । जोसी करि सावधान ॥
 पल मझर बासा दासबिए । सा० । जासिए दिन निसीमान ॥ ७॥
 सुभ महुरस जन्म सहीए । सा० । बेनि बजायो बाल ।
 अय जयकार तव हवीए । सा० । पबीष पदुलडे माठ ॥ ८॥
 कन्याबर हवेमाल बोए । तव मलवा सुवरास ।
 मजपट द्वार किमाए । सा० । तवहपो तबीस छोट ॥ ९॥

बेहूजण नम्रण मेलाबडोए । सा० । हुबो तब घती सुबिवाण ॥
 माहो बाही बेहु जरा हरपीयाए । सा० । निधान पाम्यो दम जाणि ॥१०॥
 डोल नीखाण भ्रसुकीयाए । सा० । नफेरी भूभल जोड ॥
 भाट भटाई भलु भणिए । सा० । भावय गायण कोड ॥११॥
 कामिनी पीत गावि बणूए । सा० । बहुगुण यक्ष विस्तार ॥
 नयन विकार विस्तारतीए । सा० । हूरपती प्रतिहि अपार ॥१२॥
 कुंभर इन्द्र समो जाणिए । सा० । कुंभारी इंद्रास्त्री बलाण ॥
 भ्रमृता जसोबर जोडलीए । सा० । भलि घडी बीता सुजाण ॥१३॥
 कुंभर जाणो चंद्रसमोए । सा० । कुंभरी तें रोहणि जोय ।
 भ्रमृता जसोबर जोडलीए । सा० । रक्षेरे घळोहि कोय ॥१४॥
 कुंभर जाणो सूरज समोए । सा० । कुंभरी प्रभावली सार ॥
 भ्रमृता जसोबर जोडलीए । सा० । घन घन ए भ्रवतार ॥१५॥
 कुंभर जाणो काम समोए । सा० । रतीदेवी कुंभरी विख्यात ॥
 भ्रमृता जसोबर जोडलीए । सा० । भली रबी एस निधान ॥१६॥
 कुंभर जाणो ईश्वर समोए । सा० । कुंभरी गौरी समान ॥
 भ्रमृता जसोबर जोडलीए । सा० । अनोपम भ्रवनी निधान ॥१७॥
 कुंभर जाणो नरहरि समोए । सा० । कुंभरी लक्ष्मीवान ॥
 भ्रमृता जसोबरा जोडलीए । सा० । घन घन ए भ्रनिधान ॥१८॥
 कुंभर जाणो बलभद्र समोए । सा० । कुंभरी रेवती एह ॥
 भ्रमृता जसोबर जोडलीए । सा० । रूप सोभागिनी रेह ॥१९॥
 कुंभर जाणो मल समोए । सा० । कुंभरी दमंती रूप ॥
 भ्रमृता जसोबरा जोडलीए । सा० । रूप सोभागिनो रूप ॥२०॥
 माणिक उपि अश्वी बणू ए । सा० । हेम मूंदीपिरहोय ॥
 भ्रमृता जसोबरा जोडलीए । सा० । संयोग सोभति जोय ॥२१॥
 यम भोती भ्रमूलकए । सा० । गुणकरी भ्रतिह्नी सोहंत ॥
 भ्रमृता जसोबर जोडलीए । सा० । संजोय मन सोहंत ॥२२॥
 यम राजा बल रूपसू ए । सा० । राजनीति हुमिधात ॥
 भ्रमृता जसोबर जोडलीए । सा० । तिम संजोपि विधात ॥२३॥
 कंकणविरि जीत्या तह्य करिए । सा० । कठण लभण सुबिचार ॥
 कुंभरी कर कोमल बणोए । सा० । वेरे भांडवां अपार ॥२४॥

तहूँ कल्पवृक्ष कुट्ट बघोए । सा० । कुंभरी तेल बघिघार ॥
 तब बैलना कुलु मन बरिए । सा० । उचकर पीछे लखार ॥२५॥

अन्यता के साथ विचार

एसी पिर भंगल गानताए । सा० । चोरी रतनमि बंज ॥
 नीला बंज हीर दोरबीए । सा० । रचित कनकमि कुंभ ॥२६॥

चोरी सारि ब्राह्मण भजाए । सा० । अन्न बापी बृत्त होम ॥
 मंगल काज ऊकां सोहिए । सा० । बहू बर रोहिए सोम ॥२७॥

सालु सूप साही रह्यो ए । सा० । लाजा मू कि मूठवार ॥
 बर बभू कर संघुट करिए । सा० । होमे अग्नि मजार ॥२८॥

पहिलू मांगल बरतीइए । सा० । कन्यादान देवाय ॥
 मलपना माता हाथी बर्यां ए । सा० । दीइसा मलकाहन राय ॥२९॥

बीजू मांगल बरतीइए । सा० । कन्या दान देवाय ॥
 हींसता हय बर हांसला ए । सा० । दीइ सामल बाहन राय ॥३०॥

त्रीजू मांगल बरतीइए । सा० । कन्या दान देवाय ॥
 रथ समरथ धरथि भरपाए । सा० । दीइ सामल बाहन राय ॥३१॥

चूषू मांगल बरतीइए । सा० । कन्यादान देवाय ॥
 गाम पोर पाटण बरलाए । सा० । दीइ सामल बाहन राय ॥३२॥

मांगल फरता बहू सोहिए । सा० । कुंभरी छि दखण हाथ ॥
 मेरु प्रदक्षण देम तोए । सा० । जाखे सूरज प्रभा साथ ॥३३॥

सालो अंघुठु चापतुए । सा० । सोहि अती अपार ॥
 जाखे मरु रूपे जी कियोए । सा० । काम पाय लागि विचार ॥३४॥

सप्तपदी साते किर करयो ए । सा० । कुंभर अंघुठा ताल ॥
 गुरु आविर उजंबवाए । सा० । सखीकर कुमुवनी जाण ॥३५॥

कन्यादान होव बखूँए । सा० । सजन सहू परीवार ॥
 मोचक कहिखी पार नहीं ए । केज भाजन अपार ॥३६॥

सामू श्रीषी सोहानली ए । सा० । सोका बाल कंसार ॥
 कुंभरीय बाइवी मकनि ए । सा० ॥ को लीय मोटेरा वार अपार ॥३७॥

सहीकवां लीयि अंरी बखूँए । सा० ॥ हाथ पांथी साहि कनि ॥
 हाथ साही जोरिअपता ए । सा० ॥ इकवा सवे सुजाण ॥३८॥

चन्द्रसाधि यम रोहणीए ।सा०॥ सूर यम्पारानिल साधं ॥
 अमृतमती सुं तेम जमी ए ।सा०॥ तह्ये असोधर नरनाथ ॥३६॥
 विसल्या साधि यम्या लक्ष्मण ए ।सा०॥ राम जिन् सीता साथ ॥
 अमृतमती सुं तम यमी ए ।सा०॥ तम्हे असोधर नर नाथ ॥४०॥
 सुलोचना सुं जयकुंमार ए ।सा०॥ भरत स्त्री रत्न जु हाथ ॥
 अमृतमती सुं तम यमी ए ।सा०॥ तम्हे असोधर नर नाथ ॥४१॥
 अंजनी सुं पवनजमी ए ।सा०॥ सुग्रीव तारा साथ ॥
 अमृतमती सुं तम यमी ए ।सा०॥ तम्हे असोधर नर नाथ ॥४२॥
 सावित्री सुं ब्रह्मा यमा ए ।सा०॥ श्री हरी लक्ष्मीय साथ ॥
 अमृतमती सुं तम यमीए ।सा०॥ तह्ये असोधर नरनाथ ॥४३॥
 एह धादि मंगल मननीए ।सा०॥ गावती गीत रसाल ॥
 मिजमाडी कु धरी ए ।सा०॥ बार च्यार नुएमाल ॥४४॥
 च्यार सोहासणी वधावयोए ।सा०॥ मोती माणिक तेणीवार ॥
 गौरी सावित्रीअि ग्रहिवा तनए ।सा०॥ कहि बली जय जयकार ॥४५॥

बहा

एणी पिरि वेहेबा महोछव हावाए । हवु हरष बहूरग ॥
 रायकरि डलट भरी । पियहिरामणी उत्तम अंग ॥१॥
 सोना पाट सोहामणो, मोती चुक पुराय ॥
 अनेक सगा सज्जन बहु, विनय सहित ते जांय ॥२॥

भास रावदेशास

राजा रक्ष बेठडा मेडीयिए । तिहा लखन सेबानी जोसीं तेडीयिए ॥

भास महाधवलनी

पाट पाथरया पटोलबेए । तिहां राय बोलि बोल भीठेए ॥
 भाणो करण्य कभाय धणीए । पीछोडी पामबी कनक तखीए ॥१॥
 सेसा सालू भूना भीणलाए । बहू भैरव परकाला भलाए ॥२॥
 पीला पीताम्बर ऊपताए । रूप तारा कणा ससी जीपताए ॥
 देवांग बस्त्र भीणां धणां । फलबंस गोपी नख सुण्या ए ॥३॥

पंचवदस्य मसक बहूए । कसमी भंग तिहां पिरि पिरि नहू ए ॥
 मसकुसुम मुकबल सुक सकनातए । एह भादि बेवहू देवपी जात ए ॥४॥
 तवरंग चीर चटोवडां ए । तांकी साउसाट बट भीलडांए ॥
 झूंवा भीसां झाएस भक्षांए । कसका भादि सावटू छोहो जलांए ॥५॥
 कटक कुंडल भना निहिरवाए । हार वांठीमा स्तर भाषक सरवाए ॥
 एह भादि पिरभूषण बहूए । पिहिरामखी पिर बिसारवा सहुए ॥६॥

भारत की बहुराजसुी

रायराणां मंत्रि भणाए । बर ताल काका भाभा भण्या ए ॥
 भाई भतीजा पीत्राइदे वा ए । मोहोसाल भासा मसी भाई भाए ॥७॥
 बर माय मोसी काकी मलीए । बर बिहिन मामी भावे भलीए ॥
 एह भादि कुटुंब मित्यो बहूए । पिहिरामखी काज बिइठा सहुए ॥८॥
 राय हूयें पाय पखालतु ए । राखी साबि वीनय जाखें बालतु ए ॥
 कुंकुम तिलक काढी करीए । बली पाय पीलिते बहू परीए ॥९॥
 एम सहु सजन पिहिराबया ए । बरबहनि भामूषण दीयां ए ॥
 बहू रीति मांडव बवाबयो ए । बखू पाव लागी नि भनाबयो ए ॥१०॥
 कुंभरी कुंकुंटीलां काढीयाए । मिं माणक मोती जोडीयां ए ॥
 बाजिन बाजि तब बणां ए । हुइ मंवल मान माननी तीसां ए ॥११॥
 जान बाली ऊतावली ए । राय बाब्यु बलाबा मन रली ए ॥
 दाखी दास साबि दीयां बणाए । सा विनय कीबा कहुं तेह तणा ए ॥१२॥
 मागस सहु संतोखया ए । परि परि पात्र भुम पीलीबां ए ॥
 मजल कजळ जान चलती ए । बली डोल नीसांरु बजाबली ए ॥१३॥
 सया दंड बाणि संतोका सबे ए । राय जसोब जैन सुल परखीइए ॥
 समकित दूइ बेनेत्र बिनव कीळ ए । दुखकांडु प्रभांचंद्रवन रलीए ॥१४॥
 भाखेंण पाखी छांटलां ए । बरमाहि भाभा बेह संघटला ए ॥
 बोम जनें पाये पडयां ए । भाव बापनि तम्मा मोह जडवां ए ॥१५॥
 जिनकर कुबरो बकासखीं ए । कीका पूजा अखियेक बसा बसा ए ॥
 संक भूख संक वाखन करयो ए । तिहां राय जसोब जस विस्तरयो ॥१६॥
 सखें सहु बकासो कीसो ए । इह खन खन रोहनें दीयो ए ॥
 बिनव कही संतोबीया ए । राय राखा मोखया निव विर बया ए ॥१७॥

गुरवीहु प्रभाचंद मनि रली ए । वादी चंदनें सेवि जबवेव बली ए ॥
 राम जसोत्तर कोडामसो ए । राजभार धरयो सोहामसो ए ॥
 सामंत क्षत्रीये परवरयो ए । सपतांग राज अलंकारयो ए ॥१८॥
 काल घणो राज भोगविए । रसि वैरीयनां बल जोगविए ॥
 प्रगट प्रतापि पूरयो ए । बहुदानें दुखीयां दुःख चूरयो ए ॥१९॥

राज्याभिषेक करना

एक दीवसिहूं देखीयो ए । रायप्रबल प्रतापि लेखीयो ए ।
 राज्य देवा उद्यम करिए । बहू जोसी तेडी मुहूर्तं धरिए ॥२०॥
 राय राणा तेडा बघाए । बहू भेट लेह ते घाबयाए ॥
 जलदेवता पूजी करीए । घणा कनक कलस आग्या जल भरीए ॥२१॥
 कनक सिंघासन आपीए । धरि उछवि हू तिहारो पीयोए ॥
 मोतीय चोक पूराबयोए । नारी तिलक करी बधावीयो ए ॥२२॥
 वाजिन्न राजता बहू पिरिए । राय कलस हाथि लेह करीए ॥
 सुभ लगनि सीर डालीया ए । तब जय जय कार सहूर्ये कीया ए ॥२३॥
 पट्टबध सीर बांधीयो ए । तब राम राणें आराधीयो ए ॥
 मुगट माथि काने कु डल ए । तेजि जीत्या रवी गसी मंडल ए ॥२४॥
 कनकमाला मोती सोहिए । आमला प्रमाणि मन मोहिए ॥
 हाथ साकला राज मुद्रका ए । सोहाससि कीधी आरासिका ए ॥२५॥
 राय जसोध उभो रह्यो ए । मुक आगलि कनक दंड प्रह्यो ए ॥
 राम राणा आचंभीयाए । तब ऊभा रह्या जाणे अंभीया ए ॥२६॥
 बिनय करीय सोर्ष बदिए । लाज्यो हूं पीता देखी नीचे पदिए ॥
 राय मुक बचन श्रीकारीयिए । राय राणा जूहार अक्षकारीयिए ॥२७॥

राज्याभिषेक में विभिन्न देशों के राजाओं का आबमन

बंग नबी मूके भेटणूं ए । बंगरायनि मान दीयो बज्जू ए ॥
 राय कुंतल केरल तणाए । एह नि वृष्टि प्रसाद कीजि कणाए ॥२८॥
 कोसल मगध देख राय नमें ए । एहनि प्रति मनीजि श्री मन कमे ए ॥
 नर्मि कनड द्रबड बली ए । एहनें बचन कृपा कीजे बली ए ॥२९॥
 कलिचराय निमें भीस दीजीयिए । नीसधरायनु जुहार ते भीजीयिए ।
 नमन नयन बचन रसिए । केला हस्ति भूमणि थोडि हसिए ॥३०॥

मानीबा राय बन्धू पूजीबाए । राय राखी निरु लक्षणकि गया ए ।
एणी पिदि राय हूँ पाबीबाए । राबा बसोब तखो कार बामीबाए ॥३१॥

दूहा

राय बसोब ते नीर्मलो, राय पालि गुलमाल ॥
सत्य रहीत ते जिन तणीं, धर्म करे सुकीसाव ॥१॥

षट् कर्महू आवकतणीं, पालिते मन शुद्ध ।
समकित पालि निरमलु, भव्य तणीं ए बुध्य ॥२॥

जसोब राय एके समि, बिठो सभा रसात् ।
अरी सिमुल जोयंता, दीठो पल्बो मोमाल ॥३॥

तव्य राजा मन चीतवि, तनुभव भोग बिरक्त ॥
काल तणीं स्थिति छि असी, करय विचार सुजुक्त ॥४॥

नमः

आचार्याः परमेष्ठिन सुतपसो निस्त्राद्युतावश्यकाः ।
पंचाचारविचारचारुचतुराः सद्भक्तसौरभ्यप्रदाः ॥

सद्भर्माभूतवर्षहर्षकरणा भाक्कावचित्ताभूताः
श्रीदेवेद्रसुबिक्रमस्तुतपदाः कर्बतु भो मंगलः ॥१॥

इतिश्रीयशोधर महाराजचरिते रासचूडामणी काव्यप्रतिच्छदेः ॥

भूदेवकवि विक्रम सुत देवेन्द्र बिरचिते । यशोधराज वर्णन
यशोधर विवाह पूर्वक राज्याभिषेक वर्णनो नाम कृतीभोषिकारः ॥३॥

चतुर्थ अधिकार

द्वारा नरबाहुनी

गुहाबस्था का प्रभाव

राय भणिए पली छिफूडी ।
बाखो मन तणींए दूडी ।
डोडी धाबीए तेडबाए ॥१॥

अथवा दीवन वन अखुं रह्यो,
काल महानल बैसि दह्यो।
रह्यो बसमकी हव बसो ए ॥२॥

जासे अथवा जरा ए राअसी,
तनु समसप्त मगंहां आबी वसी,
हसीत वीत सनी लेखीअए ॥३॥

देह तलाबरोमावली आड,
काल पीसाबि जाणे नाभूहाड,
वाडव कामने वारवाए ॥४॥

सरीर दीसि जाणे मोटो बडए,
अनेक रोग पंशी आछिजड ।
बडवाई समा दीसोयि ए ॥५॥

सरीर जाणे सागर सरीखो,
रोग मगर दुःख लेहेरी परीखो ।
सख सीपोनी फीए भलू ए ॥६॥

जाणे देह ए मोटी वाडी,
पनी हाड तीहां भूकूँ ऊभाडी ।
वीहाडया भोग सीआवने ए ॥७॥

जाणे जरा अथवा ए बेल,
सरीर दुख पामी करे मेल ।
कील तनु सम एह भणो ए ॥८॥

रूप लावय्य ए बान्य प्रसीयो,
विलय इंद्रि जाणे लूहूसी लीनो ।
कीघो ढगए परालनो ए ॥९॥

अथवा जरा रूपिणी ए नारी,
परस्त्री रत पर कोपी भारी ।
केशवरी दात पाठती ए ॥१०॥

काला केसते अंधार घोर,
कुबटि पाडि वीखया ज्ञोर ।
भूर जरा उद्योत भला ए ॥११॥

जुहूँ मरदु अणू होय रसाल,
बांछतु दीसि बिलराल,
जांडाल वचात्र परिस्त्री त्यजिए ॥१२॥

नववीचन सेवि दूध साकर करी,
 वृषनि त्यचि मूचल नवाचह परी ।
 परी कामनी एहवी कही ए ॥१३॥

वृषती नारनें खीची सरखी,
 स्नेह खीचि करि जाणे हरखी ।
 वर वर पुरुषनि ज्यवरिए ॥१४॥

बोलानी माला केसराली कूड,
 जनवनि भमि केसरी समो वृड,
 किम बीरे नारी हरखलीए ॥१५॥

भयवा भवनी वननि ए वृड
 भमि कूष जाखिए वृड ।
 वरवा बीहि नारी हंसलीए ॥१६॥

भवनी नवी वृष मगरनी बाध,
 बांकी डाढ सीर ऊज्जवल भास ।
 पासि न धावि नारी भाखली ए ॥१७॥

हाथे लाकडी बलेंकी वृष बांकी,
 नीची नबर मनसो वखू बांकी ।
 जीवन रतन नीहालतो ए ॥१८॥

वृषि हाथ वरा वे लाठी,
 भवेतन वी परखीठि ता हांठी ।
 चाठिन स्त्री केम वेतन ए ॥१९॥

वृष वैह कर बली बली रह्यो,
 लावण्ये रस वरनाथि नह्यो ।
 ग्रहयो जाखे जरा साकिनी ए ॥२०॥

नयन करि मुख साफा बलए,
 लोभ बिलस बाधो बल कल ए ।
 करम वृष्णा कल मांहे समी ए ॥२१॥

वृष हाथ बली सैति वृष्णावि,
 चाठिण धम सेठि परेमावि ।
 वृषिखण एकव्ही हमे कहिए ॥२२॥

राजा बशोष द्वारा चिन्तन

भिवली बरगो रचयो धारंभ,
विचारी जूइ होंमि भावभ ।
कुंभ भरथु पापि आपरगो ए ॥२३॥

कुटब काबि राज बिस्तार कीष,
तनु गोलें बीटी मंकोडा दीष ।
लीष कुगत दुःख में बरगो ए ॥२४॥

मेघ पटल सम ए परिवार,
बिघंटता नवि लागे वार ।
गवार फोकि जीव मोह करिए ॥२५॥

भव बनि कालि सैह बीकराल,
मुख पढया जाणें जीव मूग बाल,
सबल सरण ते कुण राखिए ॥२६॥

समुद्र मध्ये वाहांगणी ऊढयो सूडो,
सरणि तेहनि जिम को नहीं रुडो ।
जीवडो कष्ट पढयो धर्म राखिए ॥२७॥

द्रव्य क्षेत्र भव्य भावनि काल,
पंचप्रकार संसार विशाल ।
काल धर्मतो जीव दुःख सहिए ॥२८॥

चोहु गत माहि जीव एकलु भमिए,
सुख दुःख काल एकलोनी गमिए ।
समय एक साथे को नहीए ॥२९॥

करम कलंक काया थको भिन्न,
ज्ञान स्वरूपी भास्मां छि धंज ।
धनोपम तेजनो पूंजलोए ॥३०॥

धनुषी दहीर मांस खें बेह,
हाड भरयूं कर्म बांडाल नेह ।
नेह तेह सूं न्यानी किम करिए ॥३१॥

कुम्हार वेहू बेहू सन जाखो,
 नह बाढयो जमाइयो बंदाइयो ।
 बखान्नु आपणों बख ए किम बोहिय ॥३२॥

सोभली कुडी छितारी शेरबी,
 मलमूवादि क असूचीनी तुरबी ।
 बडीयो पासि कुण भवतरिए ॥३३॥

पंच प्रकार आशब सत्तावन,
 मलि पावन नें करि अपावन ।
 बन्य ते जे एधी बेहुल ए ॥३४॥

आशबरोवन करय महंत,
 गुपति बीषय जय व्रति गुणवंत ।
 संतते संवर भादरिए ॥३५॥

तप करी कर्म करें जे निर्जर,
 उभय प्रकारि करय जे नीर्जर ।
 निर्जर धई मोख ते लहिय ॥३६॥

घन रञ्जू न्यसि त्रिताल,
 पुरुषाकारि लोक विमाल ।
 अनादि अनंत इच्छिं भरषु ए ॥३७॥

आर्ज सब मनुष उत्तम कुल,
 दुर्लभ समकित जिन धर्म नीर्मल ।
 निश्चल पालि ते बन घन एह ॥३८॥

त्रिकरस सूष करि दस धर्म,
 सात तत्त्वनु जासि धर्म ।
 कर्महूली सिव ते लहिय ॥३९॥

एसी पिरि चितवता अनुप्रेक्षा,
 जसोवराय मरु बेधि सीक्षा ।
 बीजा खेस उचस करिय ॥४०॥

राय सहु सुखमंतम कीध,
 तावि एक छत दूष छि प्रसीध ।
 सीध सीक्षा बाग पुवां करीय ॥४१॥

बसोधर राजा एवं अमृता का जीवन

प्रजालोक हृषित सहू, करिते मुझं गुणधान ॥
 मारीदत्त अंबीचारीयि, जालीं पान्थों नीधान ॥२१॥
 सांभंत भनी राख भला, मंत्री आदि परीवार ॥
 मरु तणी भागन्या सिरं बहि, प्रबल प्रताप बिस्तार ॥३॥
 अनेक रायमि बह करधा, रण अंगण करी भूक ॥
 उपचीता रीपू बीटीआ, कोन लहि मुक मुक ॥४॥
 सुष्ट ते आण मनावया, दुष्ट ते कीचु नासि ॥
 मुक नीसाण सुखतडां, रिपु जननि पडि त्रास ॥५॥
 अनेक राजा तणी कुंभरी, परब्यु हूं उत्तम ॥
 रूप सोभागि आगलो, तेह सूरमूं मनरग ॥६॥
 अमृतमती सूं अतिघणु, निसदिन रास बिलास ॥
 सुख भोगवू हूं मनरली, करतां कुतुहल हास ॥७॥
 अमृतमती कूंखे हवो, कुंअर जसोमती नाम ॥
 दिन दिन ते मोटो हवो, रूप बिलास गुण ठाम ॥८॥
 इम करता दीन बहु गवा, आच्छु मास बसंत ॥
 अष्टाह्निका व्रत आचरि, मवि अण लोक महंत ॥९॥

मास बसंतनी फागुणनी, राग अंबोला मुडो

लोक सवे उलसत, बसत सूं आच्छु मास ॥
 घिर घिर नारी कोष मणी, भाभिनी गावि रास ॥१॥
 मत्रीयि मरु मन जालीकं, आखीयो मन बिदेक ॥
 बसत क्रीडानि काज, साधि कटक अनेक ॥२॥
 हाथीयि घाली अंबाडी, देवाडीयि मंगल पूर ॥
 निसाण नावे ऊमटयो, ऊलटयो सागर पूर ॥३॥
 अनेक सुजात बलाणी, पलाणीका चपल शोरंभ ॥
 कीध अजा धणू सतरा, संचरधा रथ उत्तंभ ॥४॥
 पालावो सट बसमसि, बरुमसि करि न लपार ॥
 पालखी अनेक सुखासन, रासनि काज अपार ॥५॥

दूहा

अंतःपुर सज चाकेए, पावेए मन भानंद ॥
 बिसी सुखासन फसली, सलीमां सानि वृंद ॥६॥
 कंचुकीया अनुगामी, भागि कनक बंड पार ॥
 बाडी बबलहर माहि ऊमाहि रमिधुबिचार ॥७॥
 राय बाल्यो तब जेलवा । जेलवाइ रिं स्याव ॥
 हाथी बंटा बालि बलपत्नी । बलमही ह्य नर नाथ ॥८॥
 धनेक राम धरूं मंडीयो । संडीयु रीपु दलमान ॥
 उडी रज करया मही । रहीयो ऊंवाई भान ॥९॥

बसन्तोत्सव मनाने राजा का बाहर जाना

राय बाल्यो तब जासीयो । प्राणीयो लोकि प्राणंदो ॥
 कीडा कर बा उछक हवा । कि हिवा लागा नारी वृंद ॥१०॥
 तह्ये भावु मह्ये सांमि । ए नाचि दीधी सीव ॥
 भागि नारी बली प्रेरीय । पिहरीय चीर सरीय ॥११॥
 पिहिरा मोती भरी कांचली । बंचली सांकें कंचेव ॥
 बंठी करवा भाङ्गवरा । भूषणवा बहु केव ॥१२॥
 बीछीया पागडां धूषरा । नेउरनू भमकार ॥
 हंस गामिनी बाल्ये भंगव येवसा नु बनकार ॥१३॥
 मोतीयुनु हार ललकि । डलकि टोडर कंठे वंग ॥
 एक दाणीउ बली पद कडी । बडीय रिं रतने सुरंग ॥१४॥
 बांहोडीयि सोहि बिहिरपी । सिहिरपी चंपाकली हार ॥
 करबली कंकण धूवीय । रुडीय मुद्रवी शार ॥१५॥
 नाके समूलक मोती । पवोती काने सोही भाव ॥
 नलबट टीणू जडाम । सोहीयि ए पीचलवो बालि ॥१६॥
 तियो कूनी केव फूल । समूलक रावडी वेणु ॥
 गोफरा फूलकक्रमि । सोहीयि बाहुडी वेणु ॥१७॥

खेलवा चाल्या ऊमसि । वसमसि सहू नर नारि ॥
 हार मलियु तूटिए । छूटे भ्रामूषण भार ॥१८॥
 वगथीय सगर वगरी ठीय । हेठी यै नव्य लेय ॥
 कही भमरी कहीं सांकलां । मेखलां छूटी पडिय ॥१९॥
 चहूटा सेरी भूषणि भरी । पहिरी जाणे भूम नारि ॥
 नीज स्वामी नें नरखेए । हरखी करि सणमार ॥२०॥
 राए ऊघान जब दीठो । मीठु होइ पंखी नाद ॥
 जाशी राय देखो भावतो । भावतु बन करि साद ॥२१॥
 केसुघडा फूल्या रातडा । रातडा भ्रमोक भ्रपार ॥
 भ्राबां माजरे मोरीभा । मोरीया कुंद मदार ॥२२॥
 पीला फूल्या रुडा चपक । नीप कदंब भ्रतुल ॥
 पाडल परीमल भ्रवसर । पसरि पगार भ्रमूल ॥२३॥

बसन्त बहार

परीमल वेध्यो जायने । जाइ नही भलीदूर ॥
 रातडो पण रासु वने । सुंबनी पिरित्यजय भूर ॥२४॥
 जूखडी जूइ वखाणए । जाणिए केतकी चग ॥
 मयण गज दतूसल । उज्जल केवडु रंग ॥२५॥
 मघूक फूल्या फूली माघवी । बांघवी भली रङ्गो श्रेण ॥
 रूपि रूढी रूप मंजरी । मंजरी छि बहुतेण ॥२६॥
 पारजातक रुडी रेवती । सेवती सोहि गुलाल ॥
 कमल मलावली कैरव । रवकरि भमर रसाल ॥२७॥
 बकुल छि परीमल गरुड । मरुज मोमरु चंच ॥
 टगर भवती सीद्वरीयो । छे बपोरीयो बहूरंग ॥२८॥
 वलसरी वालो वसंत । दीसंत मनोहर रूप ॥
 भमर भमि जाणे किकर । तरु भ्र सेवि भूप ॥२९॥
 भ्राबां वन बहु मंजरी । पिजरी दीसि चंच ॥
 कोयल करि टहूंकडा । दूकडी कूजि सुचग ॥३०॥
 तरु भ्र ताल तमाल रस । लिहीं ताल भ्रपार ॥
 रायण रातडा रुवडां । सुघडा सेवि विचार ॥३१॥

ऊँची सूजा तखी लीखी । धुनेरिण बोलत रसाल ॥
 पर बाली बधि बिलबलि ॥ बसत तखी कडमाव ॥३२॥
 बसोड बचाम बीबीरडी । जंबीरडी बंधू नाम ॥
 नाम केसर नारंग । लखम एसबी तखी ठाम ॥३३॥
 नालीकेरी करणा एम । बाइम रही छिन बेव ॥
 तुंकी किरनि करमदी । भरम हरम तखी बैव ॥३४॥
 मंडप तीहा द्राक्षा तखी । अतीवखा छि गम्भीर ॥
 नागबेल नबरंग । सोरंग सोपारी बीर ॥३५॥
 फरा सफलबा भल्ला तकी । जातकी बाकू चारोली ॥
 खेलिय राव भू रंग भरी । अतेडरी करि रोले ॥३६॥
 प्रचुरकी केसर रसभरी । बरी भरी खाटि अपार ॥
 मूठडी भरीय मुलालनी । लालना मुल गरि चार ॥३७॥
 अबीरी नाखती नयन पुरी । रस बरी हसती नरसाल ॥
 बलती कमल करीहूं हणूं । स्तन ऊपरि मुशमाल ॥३८॥
 फूलभीडू हरिण कलबरी । लखीकरी पाँड भूमे बंग ॥
 बलि ऊठी बंगि भासंगि । रंगि रमि उत्तंग ॥३९॥
 दोए कर बरी दोए ऊबली । हंसली समी सोहंत ॥
 तुबी सूं जागे बेणा बल्लकी । बल्लभ मन मोहंत ॥४०॥
 एक करे पीडी भोबि बडी । पावलडी भीडी बाय ॥
 चंवाणी अपेलन रही । मुचे कहियो भो नाथ ॥४१॥
 एक बचरि बन्नु बंडीधि । बंडी रही मूर कुष्टि ॥
 एक बयोवरि पीडीय । खेडी नाथि करि कष्ट ॥४२॥
 देखी बरी एक रीति कहि । रहि रहि मख कण्ठ चोर ।
 अहो कबला तनु कोमल । कसब सखीनुं निखोर ॥४३॥
 बपनीडा काय बमती । रसखी बाखी पलकेन ॥
 बेल देखिहिनी मू बरी । मू ब्रवा मूटीय बैव ॥४४॥

तक् डालि एक बलगती । हीचती नारीवार ॥
 घणी तीहा बाबी हीदोलडा । जोड लहीचि अपार ॥४५॥
 तव कटी मेखला खलकती । धरती जाखे श्रुती सार ॥
 गावती गीत रसाल । विशाल ए रति अबतार ॥४६॥
 डाले बलगी करे खाचती । उठे बिसे बहू बार ॥
 सुरत वीसरघो संभारती । करती नयन विकार ॥४७॥
 फणाभिर रही डाल खाचवा । सांचवा कुसुम अतुल ॥
 कतें रसोली हसीवली । डाल ऊछली पडघा फूल ॥४८॥
 जाणोह सबू देखी लाजीप्रा । फूलिऊं पाव्युं प्राज ॥
 डाल तालणता एक चीर खस्यो । हस्यो तव सही सहू राज ॥४९॥
 फूल मुकुट फूल टोडर । फूल पछोडियि राय ॥
 फूल चरणा फूल घाटडी । गोरडी फूल ह्टाय ॥५०॥
 जाणो प्रतक्ष ए बसंत । खेलेतो वनदेवी साथ ॥
 वन क्रीडा करी नारसू । मारिवत्त सुण नरनाथ ॥५१॥
 सहू नर नारी बहू बोलि । खेले ए वनें वसंत ॥
 चदेन केशर छांटणों । कुंकुम तिलक महंत ॥५२॥
 फूल टोडर बहू परीमल । पसरें दस दिस सार ॥
 परीमल लोभीया भमरा । रसाभरण करी अपार ॥५३॥
 जल सू खडो कली धीठीअ । पीठीअ फूल पमार ॥
 वन क्रीडा अम फेडीय । तेडीय राणी सराय ॥५४॥
 खल करी मुखपरी छाटता । खूंटता कमल सुकास ॥
 माहोमाहि बणू भूवता । करतां हास विलास ॥५५॥
 जल खेले इम नीसरथा । पहिरथा बरत्र विवेक ॥
 पहिरथां अनेक आभूषण । दूषण नहीं धंगि एक ॥५६॥
 नगर जावा सजे सज यथा । बाजियां विविध बाजिअ ॥
 संभ्रम सहीत पुरी आवीया । सोभा दीसि विविअ ॥५७॥

श्रम

नगर मरगधी । नगर मरगधी । हूँ सुखीवरी ।
 बन कीडां करी भावीकी । बंतेडर सूँ सार बनोहर ॥
 स्नान पूज बिन भोजन सवन तरसुं । शीत सुखाकर ।
 लोक आम्हु निव घर लहू करि शान्त अपार ॥१॥
 एखी पिर हूँ राज भोगनूँ । गारीयत अकवारि ॥२॥

ब्रह्म

श्रमृतमती रानी का कुबडे के गान पर आसक्त होना

एक समय श्रमृतमती, धवल गृह धरार ॥
 सही घर सूँ करि गोठडी, मीठडी चतुर अपार ॥१॥
 तेमिण समि सेवक श्रम, कुबडो प्रति हि बिसाल ॥
 मालव पंचम मालवे, सुदांगि सुरसाल ॥२॥
 तब ते मन अकस पडयो, अडिहरखली जिय पाव ॥
 इती चतुर मली सवा, पठाबी ते पाव ॥३॥
 कुरूप देखी पाखी बली, बीतवि चित्त अपार ॥
 काम करिन अचित छि, दुस्तह काम विकार ॥४॥
 देवं जालो अपखर, होय विदय देखी रूप ॥
 ते देवी कुबडु एहनि मन बारि, दुर्जय काम ए भूप ॥५॥
 इतीइ देवी बीनवी, वेछि कुरूप अपार ॥
 नीचनिकष्ट निओर तनु, तेह सूँ मोह निवार ॥६॥
 तब श्रमृतमि एम बोलीयूँ, ज्ञाबिष सषी मन सख ॥
 शुक्रुल कुरूप कुवतु कह्यो, जे कहि तेह कुबुध ॥७॥
 ये हनि काम प्रसन्न बसये, मित्रुवन विवई हेव ॥
 तेह नर निरु जासवे, कामिनीनि कामदेव ॥८॥
 रूप बीवन कल तेह कस्य, पाम्नीमि स्त्री मन रल ॥
 ते तो मन एमि बल, रूप नू कसु बल ॥९॥
 ते कसु बलु बरि, जेही पिरिय लख बल ॥
 एह भिखु कुक तन मन तप, अक एक रही न सकस ॥१०॥

तब तेसमि तेसूं बाऊब्यूं, बसबर जोई रमेय ॥

भारीदस्त भवभारतूं, हूं नबि लहुए भेय ॥११॥

भास रासनी

राजा बसोबर का राज बरबार

दिन दिन प्रति राजपाल तो ए । करता पर उपकार तो ॥
 प्रजालोक नें खुशी करूं ए । होइ मुक्त यम बिस्तार तो ॥१॥
 एक समि सभा मडपि ए । मध्य उन्नत भद्रपीठ तो ॥
 उज्ज्वल रतन नो मोभतु ए । जाणो निज यम दीठ तो ॥२॥
 परवालीना थंभ भला ए । मंडप भती बिसाल तु ॥
 फरती विचित्र वणूं पूतलीए । रुडी नाटक मालि तु ॥३॥
 तेह परि कनक सिंघासन ए । पञ्चवरण मणी बद्ध तो ॥
 अभूलक मूडा गारी भली ए । रचना बतिहि प्रसिद्ध तु ॥४॥
 तेरिण भवसरिहूं आवीयो ए । सभा मंडप मभार तु ॥
 सामंत मंत्री उठी नम्या ए । विनय सु करव जूहार तु ॥५॥
 सिंहासन बिठो सोहीयो ए । यम उदयाचल सुर तु ॥
 रतन कुण्डल तेजि करीए । कीषु तिमर भती दूर तु ॥६॥
 उलबद्ध वरणा राजीया ए । उभा रक्षा तेणी बार तु ॥
 बथायोम्यमि सजालीबा ए । ते बिरयो कीषां जुहार तु ॥७॥
 जेहनि बिसवा आभाहती ए । ते बिठा सुविचार तु ॥
 अनेक राणा उभा रह्या ए । कर जोड़ी सजी हविभार तु ॥८॥
 नयण बलावि को नहीं ए । को नहीं आलि हाय तु ॥
 को नहीं आंगली चालवि ए । बात न करि कोय साथ तु ॥९॥
 को माहोमाहि नव्य हसिए । नव्य करि कोय संकेत तु ॥
 चरण बलावि को नहीं ए । को नहीं घटींगण देख तु ॥१०॥
 सीस हलावि कु नहीं ए । को नहीं सीस कण्ठेय तु ॥
 कर कंपामय को नहीं ए । आंगली कोय न सरोय तु ॥११॥
 को कटका मोहि नहीं ए । को जंभाई न देख तु ॥
 को सांसि खंकारें नहीं ए । को नहीं दे को नहीं लेय तु ॥१२॥

- कीकि कोई किही नहीं ए । कोव न रोव अरान तु ॥
- को किहिनि क्वि नही ए । कोव न सोव देवाय तु ॥१३॥
- को कवि कोकलाय नही ए । कोव तीहां न लेहायतु ॥
- कोई स्फुटि ज्ञानि नहीं ए । को कोई नम्य ज्ञान तु ॥१४॥
- प्रण बोलायु बोलि नही ए । नवि कोडाहुन कय्यतु ॥
- बोलायु बोकि थीर बई ए । बासैह कुसु पसाय तु ॥१५॥
- को भूखि हाय बालि नहीं ए । नम्य भवरी न चलाय तु ॥
- जनासण बालिकां नहीं ए । परताप्यि कप्या राव तु ॥१६॥
- बीनामण पिर सबे रखा ए । लज भट कोटीभट थीर तु ॥
- बांणे सभा बाभर समी ए । वायु बीना बाह थीर तु ॥१७॥
- छत्र उज्जल थीर सोभतु ए । कनक कलस उत्तंभ तु ॥
- गज भवनाह चमर भलां ए । नीरमल भंभ तरंभ तु ॥१८॥
- वारंगना डालि घणी ए । हुइ कंकण रुनकार तु ॥
- खि अपछरा बीपती ए । रुपि अतीही अपार तु ॥१९॥
- अनेक राखानां भेटणां ए । आम्मा लेख सहीत तु ॥
- बिनय सहीत भंभी बांदए । राय सुणु थीर थीत तो ॥२०॥
- लेख सुली प्रति उत्तर ए । देयूं हूं थीर बुध्य तुं ॥
- मंत्र बटि बुप्ती करूं ए । बाबि बमराच रीत्य तु ॥२१॥
- अण एक कवित्त अलंकरधा ए । सुकवित्त तणां सणुं भंग तु ॥
- अण एक बाव बीडांसनाए । सोभलू मदि तण्णि रंगतु ॥२२॥
- अण एक नव रस नाटक ए । जोऊ भेद संयीत तु ॥
- आरीभमपधनी सप्त स्वर ए । अनेक ताल भली रीत तो ॥२३॥
- सूर्द्धना भेद भला लहु ए । नदूआं नभाबि पात्र तु ॥
- ताला बेई बेई ऊबरे ए । नामती नौडे बात्र तु ॥२४॥
- अण एक भट अखीत भलाए । कवित्त लभं सुरसाल तु ॥
- थीर रस विविध धरि ए । निज पराक्रम मुखभासि तु ॥२५॥
- इन्द्रबात्र थीर साधक ए । अंभ साधक कला कोव तु ॥
- अर्य साधक अमयु कोडे ए । सहुकुण अमयुल कोव तु ॥२६॥

मल्लयुद्ध क्षण एक जोडं ए । मत्त मर्त्यं वृद्धं तु ॥
 मीढा महीष भूभक्ता जीऊए । ते चदि छि मतीं कृष्णं तु ॥२७॥
 इम करतीं कतूहल ए । गुण मंडीत सभा माहि तु ॥
 कलपतरु चिंतामणी ए । कामधेनु मऊ चाहि तु ॥२८॥
 दान देखीं सहू लक्ष्मीए । अपृथहृवां इम ज्ञाण तु ॥
 सारद चन्द्र कुमुद समु ए । यत्त विस्तरयो वषाणं तु ॥२९॥

वृहत्

विरह वर्णन

तेणि अरुसिरि मुक्क सांभरी, अमृतमती सुवीचार ॥
 रूपयोवन गुण देह तरण, चीतु खदय मभार ॥१॥
 वीरह भ्याप्यो मूळ अती धरणो। क्षण एक रहण न जाय ॥
 अमृतमती गुण अमृत सू, रह्यो हुं चित्त लगाय ॥२॥
 विरह संतापि व्यापयुं, मळ कोमल अतीकाय ॥
 अमृतमती गुणचन्द्रका ए । रह्यो हृदय लगाय ॥३॥
 विरहतरणी धरणी वेदना, तब उपनी मुक्क देह ॥
 अमृतमती गुण रुवडा, रसाय रस पिर रह्यो सनेह ॥४॥
 विरह तरु अति दुःसह, हृदय पिड्ड सात ॥
 अमृतमती गुण शस्त्रधर, बैद्यनि बांठ विसाल ॥५॥
 वीरह दावानल तनुवले, लागो अति बिकराल ॥
 अमृतमती मेघ पयोधर तदा, ध्याऊ अती ही रसाल ॥६॥
 विरह तृषायि व्यापीयु, हु जापीहु अपार ॥
 अमृतमती गुण चीतबु, जाणें जलधर धार ॥७॥
 विरहए मातो मर्तम जो, तनु पाटण मजेव ॥
 अमृतमती गुण अकुसि, चित्तधरवी गंजेय ॥८॥
 विरह भुजंगम मुक्क नडधो, वेधण वीरहवूं व्याप ॥
 अमृतमती नू मनकरुं, नाम मत्र तणु जाप्य ॥९॥
 वीरही वीछी बिसं व्यापयो, मळ धारीर मभार ॥
 अमृतमती गुण ऊष घी, धरी करुं सीतकार ॥१०॥

विरह अंजलि सु-कीर्ति । इ-वत्प्राक सपूर ॥
 ममूतमती काह नन रसी, पीतयू इ मुय्य सूर ॥१३॥

बर्दे प्रेमचरित्तु संघे

अमृतमतीना सुखपशाए । बर्हलंतडे ।
 पीतयू मतीही बरवाश । सुख सुन्दर ॥
 विरहवेषण कण उपसमिह । मा० ।
 हृदय बसीबिन बास । सु० ॥१॥
 चरणे कमलपशुं जी कीयाए । मा० ।
 लाजी बाकी उजलि बास ॥ सु० ॥
 गजबली गमने जीकीयो ए । मा० ।
 तेहू बनें रसो उदास ॥ सु० ॥२॥
 घूटण विरह हणवे बलाए । मा० ।
 जंघा कनकमय धम ॥ सु० ॥
 जघन जाणे करी कर सोभा ए ॥ मा० ॥
 जीके रंभा अदंभ ॥ सु० ॥२॥

अमृतमती सौन्दर्य बर्हलंत

कटासके जीस्यो सिंह लोए । मा० । लाज्यो गयो वन ठाय ॥ सु० ॥
 पीडा परभव पामीयाए । मा० । दूर देसांतर जाय ॥ सु० ॥४॥
 अम्पबली उदरि सीहिए । मा० । रोमाबली वत जाण ॥ सु० ॥
 मयण सतंग जम जुवाए । मा० । नाभी ए इह बलाख ॥ सु० ॥५॥
 कवक-कलस जस्यो ऊपताए । मा० । अमृत भरघा इम जोय ॥ सु० ॥
 पीन इवन मुखे मेव कल । मा० । जाणो मुद्रा दीधी होय । सु० ॥६॥
 मयबा पयोवर प्रणुं सोहिए । मा० । रवे लाधि एह निवृष्ट । सु० ॥
 इम जासी करभो भिस सांजन ए । मा० । अनुर विधाता वृष्ट । सु० ॥७॥
 अयबा कनक कमल परि ए । मा० । वील उत्पल सोदंत । सु० ॥
 कजल डोडा अथ स्तन भणुं ए । मा० । उपरि अमर मोदंत । सु० ॥८॥
 अकया अकवी मोडनु ए । मा० । एहना स्तन रसाच । सु० ॥
 मुल चंद्र देवी अम तपीए । मा० । बस्यो रोमाबली सैवाच । सु० ॥९॥
 अयबा हृदय विव अकर ए । मा० । अयव अचित्त जाण ॥ सु० ॥
 स्तन उपरि अ-सामरिकाण । मा० । सुउपरि अमर अकल । सु० ॥१०॥

पातली नारए जाडए ।मा०। कौमल स्त्रीए कठीरए ।सु०॥
 स्त्री सुमुखी स्तन कालमुखाए ।।मा०। बाहेर काठया काटि तैरए ।।११॥
 कठिए कालमुखा बरुं होइए ।मा०। कन धरि स्वणि न सवार ।सु०।
 कठिए बंड नही छुटीविए ।मा०। कूपणए आसो विकार ।सु०।१२।
 जाखे कनकनी बिच बडीए ।मा०। पातजडी भली बेल ।।सु०॥
 गिरिपर होइ पण कौतकए ।मा०। बेल परे गिरि बेल ।सु०।।१३॥
 लावन्थे सांघ्यो कनक तरुओ ए ।मा०। प्रकृताए दबशा छोइ ।सु०।
 बेल बीलां लागीं लहूँए ।सु०। ए भऊ कौतक कोइ ।सु०।१४।
 केटली स्तन सोभा कहूँ ए ।मा०। चाणो ए मोटा राम ।सु०।
 घासमुद्र हूँ कर प्रहूँ ए ।मा०। तेहननि कर देवाय ।सु०।१५॥
 कनक बंड समा मुज कहूँ ए ।।मा०। कल्पवल्लीनूँ वितान ।।सु०।
 सांघी घांसली बली कोमल ए ।मा०। कर पालव समान ।सु०।१६॥
 कंठ सोभात्री रेखसूँ ए ।मा०। देखीय बरुं सुबरुं ।।
 संख डकघो जलि जै पडघो ए ।मा०। लाग्यु हृदय विखीरुं ।।१७॥
 हडबटी छुदरुं छि प्रसूँ ए ।मा०। चंद्रमाहि जसुं नखन ।।
 दांत दाडिम कुली कहूँ ए ।मा०। रतन के मोती पवित्र ।।सु०।१८॥
 नासिका मसिए सुक लहूँ ए ।मा०। बेठो मोती धरेय ।।सु०॥
 कान पासि ए भमिर धनुं ए ।सु०। प्रहूँ सुक कोठघो पण नडरेया ।।१९॥
 अघर पांकांटी ब्रूरडां ए ।मा०। दांत दाडिम कली जाल ।।सु०॥
 ए माहि पहिलूँ कहनें प्रहूँ ए ।मा०। बरथई बीते बखार ।।सु०।२०॥
 आसडी कमलहूँ पांखडी ए ।मा०। घाजी छि अली जाल ।।सु०॥
 अथवा राता कमल भसूँ ए ।मा०। काला अवर छिबीसाल ।।सु०।२१॥
 अथवा मछ युगम समीए ।मा०। रहीमा लावन्थे तर माहि ।सु०॥
 धीवर देखी पीछा धरे ए ।।मा०॥ ए बहूँ अरुन्धं ठाह ।सु०।।२२॥
 अथवा सोभायए तंबीमाए ।मा०। सांजन बली अफोर ।सु०।
 बनि भमंता हींडता ए ।मा०। नापते जेय जोर ।।सु०।।२३॥
 अथं चंद्र समो सही ए ।सु०। तेहूँ कालस्वय हीम ।सु०।
 नमरए बाण भमरी धनु ए ।मा०। सांघी कंघावध लोभ ।।सु०।२४॥
 कान ए कनक हीडोलडां ए ।मा०। अथवा नखन मुक पास ।।
 केसु आरे जीकथा मोरडां ए ।मा०। तेहिं पण बरथुँ नखनवस ।।सु०।२५॥

मने कनक तस्त्री पूतनी ए ।मा००० पातनी सीहल मेक ।।सु०॥
 तसार सुख बाहि सुख ए ।मा००० मेएह सु ।।सु०॥२२॥
 मयनावकव भेषि करिए ।मा००० अस्कर अमृता कटास सि००
 कणविमय बोका थोर होइए ।मा००० अमृता केरा अमिवाक ।।सु०॥२३॥
 बाटसा कोमल पीरोजडा ए ।मा००० बोका अमृता कस साँभ ।।सु०॥
 रतन मोती परवासडाए ।मा००० अमृता जीना ए काच ।।सु०॥२४॥
 माता मेगल मोटका ए ।मा००० ए मरु मन न होहाय ।।सु०॥
 अमृता जीना एव मेकवू ए ।।मा००० सब दाबा पीरी ठाय ।।सु०॥२६॥
 रथ जास्ये एगी हृटीयाँ ए ।सा००० दारकर मती क्रूर ।।सु०॥॥
 रथ रीम मरु मन मम्बू ए ।मा००० अमृता मती रिहि हंभ ।।सु०॥३०॥
 अनेक राणा राम देखसूँ ए ।मा००० मंडार सहीत ए राज ।।सु०॥
 अमृतमती नारी विणए ।मा००० एणि मरुसूँ सरि काज ।।सु०॥३१॥

ब्रह्मा

भेली पिरि चीता आकुत्यो, सांकलयो जिम नाय ।
 अंतर भदें नयन तरें, पण उठवा नहीं लाम ।।१॥
 तेणि भवसिरि दिनकर सही, लोक बांधव इस प्राण ।।
 अस्तावल सन्मुख धयो, जास्ये मुक करुणा प्राण ।।२॥

मात भूवास रावनी

सूर्य अस्त होने का वर्णन

दिनकर रे आयमनु हबो राउडो ।।
 निशि नारी नु रे, जास्ये कि कुंडुम जोखडो ।।१॥
 बिम आधमयो रे, तिम ते वरसूँ राने चकधो ।।
 सही महाजन रे, रतनसूँ कि कष्ट पडधो ।।२॥
 यम ऊपती रे, तिम आधमसूँ रेव वरसूँ ।।
 सहि सजजन रे, मन सुख हुजे उरसूँ करधो ।।३॥
 अस्तावलें रे, सूर आवंतो जासीयो ।
 निज सिर परि रे, मनुट समो बचायो ।।४॥
 पस्किम विधि रे, रानी आवि हुनी राउडो ।
 मेही तरुण रे, मोल बसि करे बानडो ।।५॥

दिन अंतरे रे, रवि धरूं मान पामयूं ।
 उलम नरे, कोसि एक सीस न नामयूं ॥६॥
 अमभारिखी रे, गमन रोषे रीरि चढी ।
 रवी उपरे रे, देषाडि अंलि रातडी ॥७॥
 जाखे तेहस्वार्पेरे, सूरज अस्तांगत गयो ।
 प्रबला एणि रे, स्वार्पे कोहोनो नही अय बयो ॥८॥
 जेह उदय धीरे, धर्म कर्म चालें धरयो ।
 तेह आधमे रे, जाखे दोषा काल तरयो ॥९॥
 रवि आधमेरे, कोमलाणी धरयो पदमनी ।
 देषी नव्यसकिरे, अल मीची रही धरयो ॥१०॥
 निज मीत्रनो रे, दु ख देखी अती दुर्धरो ।
 दुखीयो थाय रे, कोण नही ते उचरो ॥११॥
 रवि आधमे रे, कमल भाहि भमरो रसि ।
 सही कामनी रे, निचसूं संग करिसिमि ॥१२॥
 कमल तरयो रे, सोभा तब अय पामीई ।
 जिम व्यसनी रे, बिद्या सरीखी वामई ॥१३॥
 भमे भमरा रे, दीन थया विलखे धरूं ।
 जिम बिदास रे, कुजन भाहि पामे दीन परूं ॥१४॥
 अ अकार ए रे, लोकनि पीडि पापीयो ।
 जिम कुस्थिती रे, भूप धरूं लोभि व्यापीयो ॥१५॥
 सह लोकनारे, नयन तदा नीफला होवां ॥
 जिम कृपणनाए, जनम बली घन सोबवा ॥१६॥
 तब दीवी रे, ठाम ठाम धरूं प्रगट ई ॥
 अ अकारनी रे, व्याप्त ते वारें बिषटई ॥१७॥
 जिम जिनवाणी रे, ज्ञान कीरणि करी व्यापती ॥
 धरूं करी रे, मिथ्या तीमरनि का पती ॥१८॥

चन्द्रोदय धरूंन

तीणि अक्सरि रे, ऊम्यो पूनम चांदलो ॥
 पूरव दिसा रे, नारी तिर जाखे चांदलो ॥१९॥

जाखे उज्ज्वल रे, पूंज दीप्ति कपुर मो ॥
 छे समरथ रे, ताप निवारका सूर मो ॥२०॥
 पूरव विसे रे, ए नारी मुक्त सखासू करे ॥
 समी श्रीफलरे, लक्ष्म तारा तंदुल भरे ॥२१॥
 पूरव दसि रे, मुफा भको ए नीसरी ॥
 गमन वने रे, संभरयो शशी केसरी ॥२२॥
 किरण नखे रे, भ्रंशकार गज विदारयो ॥
 जाखे तारा रे, मुक्ताफल विस्तारयो ॥२३॥
 उग्यु चांदसु रे, भवनीमि जाखे बारडी ।
 काम सापने रे, जगवि कीरखें लाकडी ॥२४॥
 भ्रथवा ससि रे, जाखे नीसाखा मोखंडडो ।
 बाण छूटकारे, भसिए काम पुसंडडो ॥२५॥
 शशी सीतल रे, भ्रमृत मय कहिवाडतो ।
 लांछन मसिरे, हर दह्यो काम जीवाडतो ॥२६॥
 देखी ब्यरहणी रे, संताप पामी भ्रसभणी ।
 चन्द्रप्रति रे, कहिवा लागी सेह भणी ॥२७॥
 शशी सीतल रे, साह सकल ए किहां हती ।
 केहर गले रे, विश्वतरणी हवि संगती ॥२८॥
 साबर माहि रे, वडवानल भी सीखीयो ।
 तूं कसकीय रे, दोखाकर जड लेखीयो ॥२९॥
 तूं कृमुदनी रे, साधि खेलि मन रली ।
 योख जालीयि रे, परस्त्रीनि छजे बली ॥३०॥
 भयासडे रे, भ्रमृत पीतां पतिविब नु ।
 तूं नाखन रे, परनारी मुक्त, चंभनु ॥३१॥
 साबर मथीरे, फोकें देखि जगदयो ॥
 छई खांपन रे, साबर कुल तिसजावीयो ॥३२॥
 साबर ससि रे, सिद्धिदिसि जहाँ चंपादयो ।
 भयस्त तखी रे, अ जालीयि न पीकाईयो ॥३३॥

एति परं रे, व्यरहणी ससो भूः शीवरी ।
संजोमणी रे, किरण लामि वणं, रीकती ॥३४॥

ब्रूहा

तव मे सभा सज्जन सह, भावेत्या नीज ठाम ।
हू उठधो अताबलो, मनिम्हा भमृता नाम ॥१॥
रतनदंड धरतीणि समि, कंचुकी भाव्यो जेम ॥
भमृता भवाति पधारीयि, हरथ उपनो मुक्त तेम ॥२॥
भूक्यो दिन विष्यार नु, पंचमृत सहि जेम ॥
तरसो सीतोदकि लहि, हरथ उपनु मुक्त तेम ॥३॥
तावडि वणं संताप रो, फलो तरु लहि जेम ।
विनयवली दान गुण लहि, हरथ उपनो मुक्त तेम ॥४॥
रूपवंत निवली भण्यो, भण्यो विनय गुण जेम ॥
विनय वली दान गुण लहि, हरथ उपनो मुक्त तेम ॥५॥
दूध वली साकर भली, मूदी भली मरिण जेम ॥
घन अथि निधि पामयो, हरथ उपनु मुक्त तेम ॥६॥
श्रीमत. परमेष्ठिनो भृशमुपाध्वीयाः कृताध्यापकाः ॥
सिष्याणां प्रतिनिष्यकाधिमृतिनामेकावसंमानि च ॥
पूर्वाण्येव चतुर्वंशादृतदृशाकाराः पठंतः सक्त ॥
श्रीदेवेन्द्रसचिक्रमस्तुतपदाः कुर्वन्तु वो मंगल ॥१॥
इति यशोधरमहाराजचरिते रासचूडामणी काम्यप्रतिच्छेदे
भूदेवकवि श्रीचिक्रमस्तुत देवेन्द्रचिरचिते
वसतकीडाराजसभास्थिति प्रगटिते चिरहृपट्टराज्ञीवर्णन
सुवस्तिचन्द्रोदयवर्णनो नाम चतुर्थोऽधिकारः ॥४॥

पंचम अधिकार

भास भासंबाणी

कोडा वर्णन

तबहुं बाल्यो रंग भरी । भासंबारे । मध्यवचन परमाहि तो ।
भंगरस साधि तही । आ० । पोल कर्लकी आहितो ॥१॥

हूँ चढती हेली दोलन ॥३०॥ बालसा इष्ट अनेक तो ॥
 कोसी नैव विभुषण ॥३१॥ विलसु अक्षीत सुधीनेक तो ॥३२॥
 भीभी भोम्य लोहामरणी ॥३२॥ तीस रतन तखी तार तो ॥
 संगीत बाँधु खीलावीदा ॥३३॥ पायकी समय उदार तो ॥३४॥
 भीभी भोम्य तेज मखू ॥३४॥ पीला रतन में जोषती ॥
 बंभवारणी बंभ बड ॥३५॥ सुखतां हरष तहू होव तो ॥३५॥
 पुथी भोम्य बहुलससु ॥३६॥ स्वाम रतन मय जाखु ॥
 रतनदीप अकके बला ॥३६॥ अटपो सुखतां बंस बाण तो ॥३६॥
 राता रतन तखी पांचकी ॥३७॥ अटपो हूँ सुरसागतो ॥
 ज्याहां मोती ना भूबका ॥३७॥ राता जाखे परचासतो ॥३७॥
 फटिकतखी छठी कही ॥३८॥ वीठी निज प्रतिछायतो ॥
 जाणे हरषवि मखो बघो ॥३८॥ छती जणो बंग न माय तो ॥३८॥
 सातमी गही सोहो जली ॥३९॥ पंचरतन मय बंग तो ॥
 पंचवरण स्वस्तिक मला ॥३९॥ अनेक चिचामण रंग तो ॥३९॥
 तीहां अटपो हूँ रंग भरषो ॥४०॥ भरषो इवारकी हाथ तु ॥
 सही सहुए जय जय कीयो ॥४०॥ तिहावी चात्यो सहु साथ तो ॥४०॥
 छाऽमी भोम अनीपम ॥४०॥ उपरि अनेक चिचामतो ॥
 राता रतन भीत मली ॥४०॥ अमूल रतन मया काम तु ॥४०॥
 तिहां अटपो हूँ बसमती ॥४०॥ हसीत वदन हवो जाण तु ॥
 जाखे नीमान में पामीहूँ ॥४०॥ अथवा अमृत वरवास तो ॥४१॥
 अमृतमतीह जाणे हूँ ॥४०॥ मंदिरे पधार राव तु ॥
 चंदा बली बज्जवावती ॥४०॥ धारणी साहाभी अह्याव ती ॥४२॥
 भीछीयडा कमकावती ॥४०॥ नेवर तो कमकार तु ॥
 हंस पमखी जाखे हंसवी ॥४०॥ हूँ हंसप्रति धाने सार तो ॥४३॥
 कटी मेखता सलकावती ॥४०॥ प्राप्तवडी सिद्धकतो ॥
 गजसामिनी जाखे हस्तीनी ॥४०॥ हूँ हस्ती प्रति अचलहेकतो ॥४४॥
 स्वन भारी बखू नमी रही ॥४०॥ नीशंब बावो बखू खिनतो ॥
 मर्षी अलखी रणे वृद्धी ॥४०॥ कटी कळी मर्षी कौहु लखतो ॥४५॥
 अरवर हार विहिकावती ॥४०॥ ललकावती कुटी हार तो ॥
 हृषी हे मिई वा वरि ॥४०॥ मेमविदे असू सुबावतो ॥४६॥

नयण बाण धरूं ताणती ।आ०। नयण ओझावडी घुर तु ॥
 बदन शशी एह देखतां ।आ०। बिरह संताप मनु घुरतु ॥१७॥
 काने कु डल झलकावती ।आ०। सेसफूल फुली उच्चोत तो ॥
 बेणी गोफणो लहिकावती ।आ०। राखडी रतनहु जीततो ॥१८॥
 वदनें मुक्त भुरागावती ।आ०। जावती जय जय वाण तु ।
 जावती हूं भालंधीयो ।आ०। लेई चाली करताण तु ॥१९॥
 रतनपलंग छत्री झालो ।आ०। हंसतुलका पडि रग तो ॥
 कर घरी शेजि हे जिसू ।आ०। विनय सूं उभी उत्तंग तो ॥२०॥
 ।आ०। लीधी तब तेणी वार तु ॥ आसुंदारे
 चीर छाडता लाजती ।आ०। रतन दीवे फूतकार तु ॥२१॥
 विफलथमा कमलें हृष्या ।आ०। तेहूं नदीवानदं देवाय तो ॥
 मान मोडाइ माननी ।आ०। रही मुक्त सूं तनु लावतो ॥२२॥
 भेद चुरासी आसन ।आ०। कीचो तब संभोग तो ॥
 नख दीषा जे स्तन परी ।आ०। काम प्रसस्ति जाणो जोग तो ॥२३॥
 अघर खंडते ऊपतु ।आ०। कामध्वजाए लांछन तु ॥
 हृदय हृदय मुक्त परीमुख ।आ०। तनु करी भीडयो तन्न लो ॥२४॥
 गाढ झालंधन देयतां ।आ०। मनपरि तनु महं पेटतो ॥
 विपरीत सुरत खेलतां ।आ०। वीजपेर चपल ते दीठतो ॥२५॥
 अमृता मालती महालली ।आ०। हूं भगरो इम जीवतो ॥
 अमृता जाणो कमलणी ।आ०। हूं मकरंद सम होवतो ॥२६॥
 अमृता चदन छोडुड ॥आ०। हूं भोगी इम जाण तु ॥
 अमृता सरस तलावडी ।आ०। हूं मेमल बसाण तु ॥२७॥
 अमृता जाणे बीजली ।आ०। हूं वली मेघ समान तो ॥
 अमृता जाणो मीठी भाखडी ।आ०। हूं जाणो मडपवान तु ॥२८॥
 अमृता ए कल्प बेलडी ।आ०। हूं कल्पवृक्ष विचार तु ॥
 अमृता रती रमती रुडी ।आ०। हूं कामह अकतार तु ॥२९॥
 इम सुरत मुख भोगवतां ।आ०। परसेनअव लीनतो ॥
 हूं सुतो तब रंगभरी ।आ०। अमृता कंठे कर दीन तो ॥३०॥
 तेण गुण जगण क्षण बीतवूं ।आ०। सुरतकसा जेम मान तो ॥
 अघर नार उपर नीडडी ।आ०। जाव वान लहे लावतो ॥३१॥

अधक समय हूँ कुँवर दे ।।१०।। धामी संसय राख भार तु ।
 अमृत-विरहूँ चित्त रहूँ ।।१०।। योग शीघरूँ सुखिपार तो ।।१२।।
 राख ए नीलमक भये भयो ।।१०।। जाखी नीखरी समे तेख तु ।।
 भुजपंजर श्री कंचली ।।१०।। कोजलीधी यम न राख तु ।।१३।।

बूझ

अमृतमती का कुबडे को वास जानना

तब हू मने आचंभीयो, एखी बेला किहं जाय ।
 अथलाए बली एकली, कुण कारण कुण ठाय ।।१।।
 तब सेज्याथु उठयो, चाख्यो हूँ तेह साधि ।
 उठी अंधार पछेड लो, सडय भरभूँ निज हाथ ।।२।।
 सनें समें ते नीखरी, कथाड युवम उघाड ।
 मारीदस्त अनघारिये, रही कुबडे उठाड ।।३।।

वास जीवडागी

रागवेलाख, नगर घुलारा हो लोक नी जालि ।

कुबडे के शरीर का वर्णन

कालो कोडी कसमलो हो । कठिला काजल बांन ।।
 लूषो कांबल समान । काग केरी चांच मुचो हो ।
 नारी अनरथ क्रूरडी ।ही। नारी नाखे संसार हो जीवडा ।।१।।
 हो जीवडा जूज जूज नारी नीवार ।।
 पय आयली ठाम नहीं हो । घूटी घूटण मान ।
 घूहडनी पिरि भर भरि हो । चासतु रीछ समान । हो जीवडा ।।२।।
 उभे घूटण जब बेसैं हो । तबछ मय्यां देखाय ।।
 कोठ केबी दीसि नहीं हो । दोम माथा छि सहाय ।।हो जी० ।।३।।
 रोम जसा कांटा समा हो । जांच ए बाउल सांभ ।।
 पेट मोटूँ ह डोल सयो हो । पिर पिर पावाल बांभ हो जी० ।।४।।
 बटीरंफडा मुस समी हो । हेमा मुयें खणयो पाड ।।
 हाथ सूका मोटी नसा हो । पुनु दब बलनु फाड ।।हीजी०।।५।।
 पीहू जल्पा काठ खंड खामा हो । बांसो उंटनी समान ।।
 कडिं बांनिड बसे बल्यो । जामे हुँ डक संस्थान ।।ही जी० ।।६।।
 कान कोट्यां जालो सुपडां ही । नमक काकिखी नू टोच ।
 पडे काडो नीवर बोटां हो । जाबलि दीधि ऊठ हो । जी० ।।७।।

आल ऊढी कुंडी पडी हो । सखरी केवन कंसाय ।
 पांशिए पण पापी त्पणे हो । ए पांपली नेह बाब हो जी ॥८॥
 दांत बलर दांता समा ही । काई बाहिर काई बाहि ॥
 मूल दुरमंवे रहिवाय नहीं हो । होठ सणो नहीं बाहि ॥हो जी० ॥९॥
 कपाल ऊडूं शीप समु हो । वही बली सीसमुं आल ॥
 मायूं जाणे कागि दूम्पूं । कोखा करव सूवाल ॥हो जी०॥१०॥
 हाथीनि शूत्रि हाथ बल्या हो । आंनली बली गई जाण ॥
 जाणो बल्यु ए थांभ हो । मारिदत सुणो वाण ही जी० ॥११॥
 कहु कूतरो निकाने कीडा । भुंडो नि भूषाल ॥
 अघमाने अर्धां बोलु हो । तेहनुं मोटुं बाल ॥हो जी ॥१२॥
 पगफाटा जिम भांबडा हो । हलना पडया बाहाल ।
 पायतला सी जागव्यु ही । तेऊ बो जिमकाल ॥हो जी०॥१३॥

रानी का कुबडे से निवेदन करना

राणी परती बोलियो हो । कठण वचन बीकराल ।
 का असुरी आवई हो । भोटें भाली ततकाल ॥हो जी० ॥१४॥
 धीमे घपोई डीकें करी हो । पगधरी ताणी चाहि ॥
 कुं अली पातली लह्णी जिम हो । चंद्रकला नितराहे ॥हो० ॥जू ॥१६॥
 बली बोत्यो ते कुबडो हो । कायन बोलि नार ।
 शिरनामी पाये घर हो । तुम मन मांहि विचार ॥हो जी० ॥१६॥
 हास सहित बोल सांभली हो । ते बली बोली बाण ॥
 राय ते मुरु घेरह आवयो हो । तेणि बार लागी जाण ॥हो जी० ॥१८॥
 राजा जो पहरो भरि हो । तो न चीतहूं नार ।
 स्वामीनी तो भगत करं हो । मरुयो कोप निवार ॥हो जी० ॥१९॥
 हूं तुम पगनी वांणो ईहो । तुं मुक हे या हार ।
 हूं तुमनी दासी समी हो । तूं मुक काम भवतार ॥हो जी०॥२०॥
 हूं तुम ऊजीठा समी ए । तुं मुक मूल संबोल ॥
 हूं छूं पतंग तूं मरु मन हो । वस्वरंवे बा बोल ॥हो जी०॥२१॥
 तूं मुक मनें करकंकस्य हो । हूं मुक चरस्य-हरेण ॥
 तूं मुक कोटि काठलो हो । को पल कवच गखेण ॥हो जी०॥२२॥

तू मुक तिर बेसकल समी हो । तू मुक मोफली बेस ॥
हू मुक किकर किकरी हो । कोपते ककल मुगोण ॥हो जी०॥२३॥
तू मुक कंड टोकर समी हो । मुक मुल तुल बे बेस ॥
गुणसागर तू नाही लहो । कोपते ककल मुगोण ॥हो जी०॥२४॥
तू मुक जीवतो जीवत हो, तू मुक योवन बेस ॥
तू मुक तनु सणपार सही हो, कोपते ककल मुगोण ॥हो जी०॥२५॥
तब ते कुनडी हरबीयो हो, काही नारी अंतरं ॥
ते नारी तेणि आवरी हो, कोव कोवनि मनरं ॥हो जी०॥२६॥
तब हू मन नाहि नीलबू हो, चिम चिम नारी एह ॥
हू सरीसो राम परहरी हो, नीच तू नांखो नेह ॥हो जी०॥२७॥

नारी चरित्र

नारी चरित्र सागर समु हो, कोव न जांलि पार ॥
हाथ धरें पण धीर नही हो, पारा रह सम नार ॥हो जी०॥२८॥
नारी नदी बेहू समी हो, सहजे नीचा संज ।
कोव अपनी सागर बरी हो, मल भरपो तुहू ल सू रंज ॥हो जी०॥२९॥
बनें दावानल पीपयो हो, सूझू नीधू नव्य कोय ॥
तीम कामनी कामें बली हो, ऊच नीच बव्य अवलोय ॥हो जी०॥३०॥
नारी निबली बेलडी हो, ए बेहू एक समाव ॥
मोटा तसनि अवबली हो, बाड कांखरां पिरभाव ॥हो जी०॥३१॥
नही बखी सागर ते बलि हो, तो हू ते झलो अपार ॥
नारी नर बहू रमि हो, तुहू तुदि तुपल लगार ॥हो जी०॥३२॥
चिम चिम जम जमनें प्रसतो हो, तोहू न हो संतोष ॥
तम नारी बहू नर साथि हो, रचतां प्राणिक होइ सोख ॥हो जी०॥३३॥
न्याये नारी ए हुकि पति हो, न्याय प्राणिक कवि पात्र ॥
साहसिल कूटी सिद्धि हो, माका सखी विचार ॥हो जी०॥३४॥
पूड कंधट बूछ तखी हो, नारी ए मोटी खान ॥
बांधा नर नें मोलवती हो, बुलि नीले बास ॥हो जी०॥३५॥
नारी बीकली बेलडी हो, नारी बनरंज जम ॥
नारी नरकडी सातडी हो, नारी बीकल सागर ॥हो जी०॥३६॥

नारी बाधण वष वषती हो, नारी अशुची नीधान ॥
 नारी प्रत्यक्ष राक्षसी हो, बसती मन तनु बात ॥होजी०॥३७॥
 नारी पापनु पोटलो हो, नारी लोभनु पुंज ॥
 नारी नामि व्यसरी हो, खाती नरनि भुज ॥होजी०॥३८॥

बृह

नारी अन्या देवी करी, कोप डपनु अपार ॥
 ए बेहूनि हविहूँ हणू, हैयि एहबू निचार ॥१॥

राजा द्वारा तलवार निकालना और पुनः शान्त होना

खड्ग काढयो पडी आरयो, वली बीचार मन लीन ॥
 आ अबला अबध कहीं, ए कुबड़ो मृत दीन ॥२॥
 एह हण्यो मरु ऊपज सहसि, काई न सीक सि काज ॥
 खड्ग साहमू वली जोइउं, मारिवस सणो राज ॥३॥

मास नरसुभानी

खड्ग के गुरा

तब खड्गह गुरा चीतवूँ ए । नारे सुभा रण भांगण बीकराल ॥
 अरी दल मलि अती घसूँ ए । जाणीइ कोप्यो काल ॥१॥
 रणभेरी रणकाहल ए । ना० वाजि जब रण तूर ॥
 तब मरु हाथि उलसतो ए । ना० जाणे रोमाच्यो सूर ॥२॥
 अपल तोरंगम वाय वेगी । ना० अपल साधकहूँ अपार ॥
 सनाहि हूँ जाणे मेघलो ए । ना० खड्ग बीज अनकार ॥३॥
 खड्ग ए जाणें तीरथ ए । ना० धारा बहु नीर ठाहि ॥
 द्विजनि देता धन तनु कापी । ना० अरि हरि हरि करी नाहि ॥४॥
 खड्ग जाणें राहु समुए । ना० कालो तेह बीकराल ॥
 नूक्ष्यो अंसि केरी तसूँ ए । ना० राजमंडल तत्रकाल ॥५॥
 खड्ग जाणें सही मेघलो ए । ना० धारानल बरसाय ॥
 भीना बीना वली नगहा सता ए । ना० राजहंस कोसरे जाव ॥६॥
 खड्ग जाणें जम जीमडी ए । ना० लल लल लांबी होव ॥
 मोटा कुटा लोंटा केरीडाए । ना० सुमटां चाटती जोय ॥७॥
 प्रताप बंसवानेरि बनमणिए । ना० खड्गए मोटी मास ॥
 हूँ सूरवही अरी इन कही ए । ना० बीच काजि चाटि ऊवास ॥८॥

लडन करि बरघो ब्रजिह ए ।ना०। एलि मरी बरु सवार ॥
 बेरी कधीर पीअंतडाए ।ना०। सीस कुरी बरगलि सवार ॥१८॥
 लडन ए तेजनी पूजलोए ।ना०॥ भवकि कवकि ए सुर ॥
 तेज सही नहीं सकिए ।ना०। बचमि पीरि नील मूर ॥१९॥
 लडन ए मोटो दीवडो ए ।ना०। अरीअल सोलि मंग ॥
 तेज तेहनुं सहि नहीं ए ।ना०। पडि बेरी पतम ॥१२०॥
 लडन दीवा कावल देखाए ।ना०। काबी रखाविणि जोय ॥
 तेह देली अरीइए मुख ए ।ना०। काबी कुरपी होय ॥१२१॥
 कधीर अरघो हय मय तरीए ॥ना०। रण सार परचंड ॥
 तीहा विरीवल बूडयाए ।ना०। लडन एन करंड ॥१२२॥
 लडन भडके भुंयि द्रम द्रमह ए ॥ना०॥ कम कमि कावर कोड ॥
 पडघायि गीरीवर अरिए ।ना०। मऊवर वातुं बायि कोड ॥१२३॥
 लडन सहलि संजोगपी ए ।ना०। ऊडि अमी फुलीव ॥
 सप्राम सेज कधीरि सीनु ए ॥ना०। प्रताप दीव वातुं चंग ॥१२४॥
 लडनमांहि प्रतिविजळ ए ।ना०। हूं सोहूं रण भोमि ॥
 जय लक्ष्मीवर बाजरोण ।ना०। नील बलि बोटो विज ॥१२५॥
 विरी करी कुं मस्वल ए ।ना०। मंडया लडमि जाणिए ॥
 मंगलकावि ए लडवनि ए ।ना०। मोती बडें हवूं स्नान ॥१२६॥
 हूं ए हवो प्रतापियो ए ।ना०। लडवए हवो विसाल ॥
 किम हणूं एलि करी ए ।ना०। कुरको ए अकला बाल ॥१२७॥

राजा का चिन्तन

कोप्यो पुह बह सिहलो ए ।ना०। पल नव्य हलि सीमाल ॥
 तिम हूं कोप्यो किम हणूं ए ।ना०। कुरडोए अकला बाल ॥१२८॥
 कोप्यो सुर संग्राम माहिए ।ना०। न होय ना हाठानो काल ॥
 तिम हूं कोप्यो किम हणूं ए ।ना०। कुरडोए अकला बाल ॥१२९॥
 प्रचंड वातु दून नव्य ऊखे ।ना०। जेतए पाडिक बाल ॥
 तिमहूं कोप्यो किम हणूं ए ।ना०। कुरडोए अकला बाल ॥१३०॥
 ससंलासु हाथी अगिनहीए ।ना०। जे पाडि विरीवर बाल ॥
 तिम हूं कोप्यो किम हणूं ए ।ना०। कुरडोए अकला बाल ॥१३१॥
 बाबलकारयो वीर सु बडिए ।ना०। स्नान सु नव्य द्वीमि बाल ॥
 तीमहूं कोप्यो किम हणूं ए ।ना०। कुरडोए अकला बाल ॥१३२॥

फूफूतो फणपती जेम ए ।ना०। बलबै नही जल ब्योल ॥
 तिम हू कोप्यो किम हूणू ए ।ना०। कूबडो ए भवला बाल ॥२४॥
 विद्या विनोदी बाबीयाए ।ना०। जबसू न जपि बिसाल ॥
 तिम हू कोप्यो किम हूणू ए ।ना०। कूबडो ए भवला बाल ॥२५॥
 भगी झाऊ पेर नव्य कोपि ए ।ना०। चंद्र तेज छे रसाल ॥
 तिमहू कोप्यो किम हूणू ए ।ता०। कूबडो ए भवला बाल ॥२६॥
 अद्रवज्ज मीरीवर मोडे ए ।ना०। नव्य ऊकरडा पराल ।
 तिमहू कोप्यो किम हूणू ए ।ना०। कूबडो ए भवला बाल ॥२७॥
 एम बीनारी बीत सू ए ।ना०। सडम कीडु पडी मार ॥
 पेखी चरित्र पाछु बस्यो ए ।ना०। आभ्यो उपरडे तेखीवार ॥२८॥
 मोहि आवास लेख्यो प्रतिभोमि ए ।ना०। स्वर्गतणु आकार ॥
 हवै साते नरक सम लेखीए ।ना०। तू मारिदत्त भवघार ॥२९॥
 सेज्या सू तो चीतबू ए ।ना०। नारी चरित्र अनेक ॥
 रक्ताराखीमि जे रख्या ए ।ना०। सुणो श्रेष्ठिक सुबिबेक ॥३०॥

रक्ता राशी का कथामक

कोस्पल देस छे स्वडो ए ।ना०। साकेता पोरी जाण ॥
 देवरति राजा तिहा स्वडो ए ।ना०। उस रक्ता राशी बखाय ॥३१॥
 रजे रमन्ते रस भरी ए ।ना०। रूपयोवन फल खेय ॥
 राशी कपि राय मोहीबो ए ।ना०। अबर न जाणि खेय ॥३२॥
 अनेक राजा उलसैं आवि ए ।ना०। क्षत्रीय केरी कोइ ॥
 राय बडो पण मोहोल नहीं ए ।ना०। ए तेह मोटी खोइ ॥३३॥
 सामंत मंत्री मती मलाए ।ना०। सभा आख्या कर कोइ ॥
 राय बडो पण मोहोल नहीं ए ।ना०। ए तेह मोटी खोइ ॥
 महेता मोटा महुतरा ए ।ना०। बेसे दफ्तर छोइ ।
 राय बडो पण मोहोल नहीं ए ।ना०। ए तेह मोटी खोइ ॥३५॥
 हाथी घोडा रथ बखाय ए ।ना०। पाला बहू करे खोइ ॥
 रारा बडो पण मोहोल नहीं ए ।ना०। ए तेह मोटी खोइ ॥३६॥
 ठाम ठाम ना लेख घणा ए ।ना०। भेटखणं आवि कोइ ॥
 राय बडो पण मोहोल नहीं ए ।ना०। ए तेह मोटी खोइ ॥३७॥
 सीमाडी बेरी राजीया ए ।ना०। जाय नगर पुर मोइ ॥
 राय बडो पण मोहोल नहीं ए ।ना०। ए तेह मोटी खोइ ॥३८॥

परवारि यरवान बाळम्बो ए । ना०। पोहोतु ते बाळम्ब ॥
 पुर बको राय मीनम्बो ए । ना०। मधुरीय सु जलोत भास ॥१६॥
 राय बचन ब्रह्मचारीए ए । ना०। बीनबे तहामि प्ररीनार ॥
 मोहोल बेई सन्तोलीनि ए । ना०। बेस प्रजा सुनिवार ॥१७॥
 पुर उरमा बेहा जेम आवे ए । ना०। चोरटा मरु मरकार ॥
 तिम स्वामी मोहोल बीना ए । ना०। लोक पीडायि क्षपार ॥१८॥
 मंदिर मोहन माली भाए । दीप बिना दुःखकार ॥
 तिम स्वामी मोहोल बीना ए । ना०। लोक पीडायि क्षपार ॥१९॥
 मंदिर नवनीधी भरघू ए । पुत्र बिना दुःख भार ॥
 तिम स्वामी मोहोल बिना ए । ना०। लोक पीडायि क्षपार ॥२०॥
 पुत्र पीनारि कुटंब बसू ए । ना०। बन बिल दुःख विचार ॥
 तिम स्वामी मोहोल बिना ए । ना०। लोक पीडायि क्षपार ॥२१॥
 बहू सल्लकारी गोरडीए । ना०। बिल नयलान्न सार ॥
 तिम स्वामी मोहोल बिना ए । ना०। लोक पीडायि क्षपार ॥२२॥
 बेस सीमाळा राजीवा ए । ना०। भांजि पाटण पुर मंग ॥
 प्रजा उपरी दया करिए । ना०। मोहोल बीयो मग्निराम ॥२३॥
 तब राखीसू विचारीसू ए । ना०। राखी किहि सुखो राय ॥
 तहा बीटा बिल क्षण एक ए । ना०। नव्य रहिबाय जीबाय ॥२४॥
 तब राय प्रधान प्रति किहिए । ना०। संभालो तहो राज ॥
 लोकनी रक्षा तहो करो ए । ना०। म्हाारि नही राज काज ॥२५॥
 मंत्री किहि राक दूष घट ए । ना०। बनयोमी सवे सांकार ॥
 किम तेहनि दूष भासवो ए । ना०। राजन दूष्य विचार ॥२६॥
 राय किहि राजपथ नहीं ए । ना०। तारी सुं छि मुकू काज ॥
 किहि मंत्री सुद्ध एष नविए । ना०। तो राज मुंको राज ॥२७॥
 तब तारी मोहो राजीवो ए । ना०। राज तजी सांजि तारि ॥
 रतन मोती सांजि लीबाए । ना०। चाल्को ब्रह्मवी मकार ॥२८॥
 रतासू रवि रवे ए । ना०। यमि धनेर वेण ॥
 बभूनी मयी कांठि ऊपवन ए । ना०। तिहा अतरयो नरेस ॥२९॥
 दीपावळ सर काहीनी ए । ना०। रता मोलि दीपवेण ॥
 भास राका तिहा बीसम्बो ए । ना०। तिहा बावीस वेण ॥३०॥

बाडीरिरेहेटण हाकतो ए । ना० । पंगु अयंय अपार ॥
 तेहदू ज्ञान सांभली धरूं ए । ना० । रक्त केवी नमार ॥५४॥
 तीहां जं पांगलो जोईयो ए । ना० । बोली नोसबते बार ॥
 दू मुक्त जु अगीकरिए । ना० । तो हूं होऊ तुक्त नार ॥५५॥
 तब द्रवी आबी राय कह्ले ए । ना० । बात करि बरी वेद ॥
 राज बिना किम कीजीयिए । ना० । बरस बांठना वेद ॥५६॥
 राय कहि ते विष कहोए । ना० । कीजि जमलवार ॥
 महोछवि तहानि बचावीइ ए । ना० । कोटि घालीयि फूल हार ॥५७॥
 तब नगर लोकनो हो तरुणुए । ना० । लोक जमें अपार ॥
 रक्तायिहार रण्यो बलीए । ना० । पास सरखो बिचार ॥५८॥
 वली एकव्रत मांनीयू ए । ना० । संतु व्रत एम जाणु ॥
 तांत घांली तहू बांध सूँ ए । ना० । नदी कांठे डीऊ पय हांल ॥५९॥
 राय रीद्रयो सामग्री मेनीए । ना० । अंगूठां कंठसूं तवी कंठ ॥
 हसतीय रायद्रुड बाधीयो ए । ना० । पायहण्यो तेणे उलंठ ॥६०॥
 पोतें तीलक करी बचावीयो ए । ना० । कंठे घाल्यु पास हार ॥
 कंठे घाली ते तासीयो ए । ना० । पास मलि बिइठो ते बार ॥६१॥
 तब राय नदी माहि नाखायो ए । ना० । गई रक्त पांगला पास ॥
 चालि वीहिलो हवि जाईयिए । ना० । मम चूकसनीज भास ॥६२॥
 तब ते एणियि आण्यो टोपलो ए । ना० । पांगलो शीर पेर लेख ॥
 नाम नाम भमती फरि ए । ना० । सती सती एह कहिए ॥६३॥
 लोक मानि अम्यानीया ए । ना० । पय पीलें शीर कुंजुलाय ॥
 भली भली बोली अणिए । ना० । केता कहि भाव भाव ॥६४॥
 मायाविणी मुक्त भोगावए । ना० । पांगला सू दीन रासि ॥
 लोकय माडि करुन दीयिए । ना० । ए रही अहीयि बात ॥६५॥
 तांत बोडी तेहू माछले ए । ना० । राय तरी पाम्यो पार ॥
 मंगलपुर राज पावीयो ए । ना० । राजपालि बीणु नार ॥६६॥
 रक्ताआधी तेणिए पोरेँ ए । ना० । लोक पाम्यो आचंभ ॥
 राजमुवनें नेडी बलीए । ना० । बोली ते बरी वंभ ॥६७॥
 राय बोलि ते उलखीयिए । ना० । सही अ सती यिम जाण ॥
 वेद कही शीरक्त हवो ए । ना० । संसार दुःख धनें घाणु ॥६८॥

बरीन बीतवूँ बीरबती तखुँ ए । ना० । राखवहुँ बनमिन साह ॥
 धारिखी तख सुख दत्त नवन ए । ना० । बली सुनि सुहपुरी माहि ॥६८॥

बीरबती कावाचक

आनंद साह लिहा बखि ए । ना० । मिनबती तख करि ॥
 तख पुखी सु बेबाहवोए । ना० । बतननामा कुमर ॥७०॥

बीरबती नवन तेह तखुँ ए । ना० । सुनि रहि परीवार ॥
 एक सनि साहा मरि नवो ए । ना० । बन पव नवी नारा ॥७१॥

बतकुमर दुःखी हवो ए । ना० । पीहरि सुकी नर ॥
 बन कावें ते बासवो ए । ना० । रतनदीप तेखी नर ॥७२॥

बीरबती मन्था करे ए । ना० । पाप जोहि बिकरत ॥
 प्रनारक सुँ सुख मोमधि ए । ना० । ए बनी बनि पहली काल ॥७३॥

ब्यसनी बोरी करतलो ए । ना० । बरयो ते कोटवन्न ॥
 सुली दीधु ते पापीयो ए । ना० । पाप कल्यो तदा काल ॥७४॥

बीरबती नो जार सही ए । ना० बीरबती मोहि जाख ॥
 तेह मत्वाबिखु तेहनो ए । ना० । जीवन जाव बरवाण ॥७५॥

तेजि काहाव्यु बीरबती प्रति ए । ना० । तुम्ह बिखु प्राण न जाय ॥
 बीरबती मलका तखो ए । ना० । चीतवें तव ऊपाय ॥७६॥

तव उदम करी बावीयो ए । ना० । बीरबती बरतार ॥
 सजन सहुँ आनंदीयूँ ए । ना० । हउ भो प्रोहोण्य बार ॥७७॥

निजि बेहुँ सुँता सेवडीए । ना० । सुतो नह लहेम ॥
 बीरबती चाली नार मलीए । ना० । हायें सडम बरेव ॥७८॥

सहुँमनचड बोरे कीतकी ए । ना० । एखी बेला ए मर ॥
 ककलु ठाम जाविने जोऊँ ए । ना० । पूठि बाल्यो तेखी बार ॥७९॥

बडयान बावेंसक सखो ए । ना० । सखे जो फेरु सडम ॥
 बलीक आंगली बडाईपडीए । ना० । बडवाईमि पण लख ॥८०॥

बेगें नसाण माहि बेईए । ना० । जारबें नख्य पीहोपाव ॥
 उबेर उबेर मंडी बरीए । ना० । जार आनकी काय ॥८१॥

जार कहि सुँबेन करीए । ना० । तेह सुँबे मरव देवत ॥
 जीव नवी तेह बीर नुँ ए । ना० । नीकाय दुख तेह बत ॥८२॥

पमथी मडांय सीपडयां ए । ना० । पडी बोमे ते नार ॥
 होट चोरनें मुल्लें रण्यो ए । ना० । नारी भावी वर वार ॥८३॥
 नाह कहूने सूती कणी ए । ना० । करी उठी पोकार ॥
 ईशो होठ मरु खड कीयो ए । ना० । हयो कोलाहल अषरें ॥८४॥
 परमातें राम जासीयूं ए । ना० । वीरवती भरतर ॥
 वीरवई कही काठयो माश्याए । ना० । नव्य जोयो त्वय्य विचार ॥८५॥
 तब चोरें राय भीनयो ए । ना० । देखाडयो अंक्ली छेव ॥
 नारी चरित्र को नव्य लहिए । ना० । कहयो हयो के भेद ॥८६॥
 तब रायें सेवक मोकल्या ए । ना० । चोर तर्यूं मुल्ल जोय ॥
 उष्ट काडी रायनें देखयो ए । ना० । आचंभ पान्यत छहू कोय ॥८७॥
 नारीनें दंड कीयो चण्यो ए । ना० । साहनें वीयूं मान ॥
 गोपवती चरित्र कीतयूं ए । ना० । मारीदस सुणो सुवाह ॥८८॥

गोपवती कथानक

वर ध्यान देस छि स्वडो ए । ना० । पलाशग्राम पुर नाम ॥
 सिंह बल क्षणीति वसे ए । ना० । सस नारी अशीराम ॥८९॥
 गोपवती नाम तेह तर्यूं ए । ना० । रूपसोभाग अपार ॥
 सिंहबल क्षत्री तिहां गयो ए । ना० । सेवा काजि विचार ॥९०॥
 पदमपुर त्यांहा थी वेगल्यूं ए । ना० । भूसिंह सेन तिहां राय ॥
 बल्लभा राखी तेह तणी ए । ना० । पुत्री तेहनें गुण ठाय ॥९१॥
 सुभद्रा छिनाम तेह तर्यूं ए । ना० । सोहि अती हीं अपार ॥
 सिंह सेवानि भावीयो ए । ना० । सहस्र भट्ट भूकर ॥९२॥
 भूमिह सेननें भेटीयो ए । ना० । रामधीचूं बहू पान ॥
 शम ठाम दीषां भला ए । ना० । कुंभरी दीषी निधान ॥९३॥
 ते सार्यें सुख भोगवि ए । ना० । वीसरयो ते नीज नार ॥
 दीवस चण्यो तेणी जासीयूं ए । ना० । नाह तण्यो विचार ॥९४॥
 तब ते कोप बडी चण्यूं ए । ना० । भावो तीहां ते जोय ॥
 भेद भाल्या सहू नाहना ए । ना० । गोपवती छीनी होय ॥९५॥
 वर उपरि बडी करीए । ना० । ऊतरी ऊरडी काहि ॥
 सोय कसीर छेरी लेईए । ना० । सिख भाषी निज ठाय ॥९६॥

सिद्धवत् तव भावोमीए ।ना०। नारी नूं हीर तव्य हीठ ॥
 कमाड वीका देखी करीए ।ना०। मनि भावोन बईठ ॥१७॥
 बालमूऊमेर भावलि ए ।ना०। इव बाणी नाहाडी तान ॥
 बकित बयो मनि चीतवे ए ।ना०। बाव्यो ते निव वान ॥१८॥
 नारी कपटि बीनय करे ए ।ना०। स्नान जीवन प्रकास ॥
 जमता कोल करे बरीए ।ना०। रांन भावोन विचार ॥१९॥
 तव ते मोषवती बदिए ।ना०। भ्रम न भाषि नाथ ॥
 इम कही तिरमासि ठवीए ।ना०। हुवें जयो भावनि साव ॥२०॥
 पोकर करतो तव ना सनु ए ।ना०। ह्यस्यो काडी तरवार ॥
 सोर करती रोवती ए ।ना०। कोसि ह्यस्यो बरतार ॥२०॥
 नारी नूं मांभूं भावयो हतो ए ।ना०। ते माटि मरघो जाख ॥
 इम कही हर हर कही ए ।ना०। चीहा भाहि बली दुःख साखो ॥२०॥

बस्तु

एम चीतत एम चीतत । गई बहू रात ।
 नारी रमी भावी भ्रममसूं । सुती मुज पंजर पडठीछ ।
 मन कारण सुख दुःख ठगूं । पठम एह भावत मीठीव ।
 पछे सीमल तव समी । दखूं बेतनूं सूं अपार ।
 इम रजनी भखी नागमी । मारिवत्त भवधार ॥१॥

भास-सोल सवन नामी समी

प्रभात वर्णन

मधुप बुं बित कुमुवनी सुं रातो । चांदलो जाखो नीचे पवें जातो ॥
 रजनी नारी भति चतुर सुजाखी । चंद्रसूं कीकाधि कलकी जाखी ॥१॥
 चंद्र भांसो नमस्तो हबो पाए । संबर भति बलयो न मनाए ॥
 जाखी नारी कीहो कीसिर साव । चंद्र रगुं इम सही नीज ठाव ॥२॥
 जाखी रासि रोती बकवई बीखी । कुमुवनी कमलखी बखी प्रसीनी ॥
 पारके दुःखे सजन दुःख पावि । सुष्ठनैं सख बख ह्यसूं भ भावो ॥३॥
 ह्यसूं भाषि सुगंभी भीखो । कमल परामनें चारें बीखो ॥
 नारी बखी बेर सुगंभी भीखो । पेन वेर बंकी साव सखुखो ॥४॥

पूरव दिख काई काई होई पीजी । रवि आशि बाट पीडी करे भोली ॥
तारा बीण बखू थवा जाखे । उज्जम हीन रथ पेर बलाखे ॥५॥

बिर बिर दीवा काई नख मोहि । नीचन गुण जिम जन तख मोहि ॥
बिर बिर काभ कपूहल जोता । ऊं जावरथा दीवा सिस डोसता ॥६॥

सूर आशमे तखे खल बखू सोम्या । रवि न करे ववनें बखू धोम्या ॥
बाजे विविध बाजिन रसाल । तेसि जाख्यो बली घरभात काल ॥७॥

प्रबल बीरद-मुभि बोलि बंसीयण । गीत मंभीर गुण गावमे मायण ॥
बार बांध्यां वाता हाथीया बोलि । मव लोभी धमरा भला बोलि ॥८॥

पायमे पिरधिर हय रखा हींसि । अर सकल आगल पड्या दीसे ॥
सूर ऊयो जाणे कुंकुम रोल । पूरव दिसि घाटडीरंय बोल ॥९॥

अथवा उदयगिरी रातूं छत्र । पाकूं दाडिम फल जाखे विचित्र ॥
गिरिबरे वानरा लेका थाय । अरुण हाकंतो दुःखीयो थाय ॥१०॥

देवांगना पील्यो पूज्यो गिरिठो । उदयगिरि रवि राय बईठो ॥
रातां किरण करी सिरसूं प्रचार । सीदूर लेखता छेत राया पों तार ॥११॥

रांडी सिरसिया सम लेखें । लोक फोंक कुंकु करघो देखि ॥
रांडा एम मंडन ए करती । कुहुन कुहु किम नही व्यभिचरती ॥१२॥

सूर ऊमि पखि दुर्जन मंधा । पण अक्वगुण बोल वातखा मंधां ॥
दान पूजा धर्म सुजनें कराय । इम ऊयो रवी जाखीयो राय ॥१३॥

प्रातःकालीन क्रियायें

उठीअ जिन गुण चितन कीषूं । नीयो गीयि दंतवाचन कर दीषूं ॥
मंगल स्नान आदि आचार । मुकुट आदि कीचो सणगार ॥१४॥

सबे सणगार सूं भावीय नारि । अमृता देखी कमल भूषण्ये वारी ॥
कमलवाय भोयि पडी विचीत्र । ब्रह्मब्रतु अरंभन नारी चरित्र ॥१५॥

मने बीरसो पण भेद न दाखूं । दीला तखूं मन-केहेन क अखूं ॥
मंगल तिलक मानयि बधाव्यो । रात्र मंडीत सजा माहिहूं भाव्यो ॥१६॥

अश्विनी रात्र का रात्रगाथा में बैठना

रयण संभासणे बेठो तेखी बार । राय राणा मंभी कीव चूहार ॥
जैन ऊपाध्यायनि दीयू माल । देखी आसनं तव कीषूं आख्योन ॥१७॥

तप्य पदार्थों की विनयासी । लोचनी जीव सहीत कुम्भियासी ॥
दीक्षा सेवानों बीसू उपाये । कुम्भरनि जेताकी निम्न ठाय ॥१८॥

चन्द्रमती का ज्ञानमग्न

तीणि शबसरें चन्द्रमती माय । शायसी देखी हूँ लायो पाय ॥
दक्षण भागि सिबासशि बैठी । काळीस दीधि मुक्त देखी संतुठी ॥१९॥
जीवतुं नंदन मुक्त बीर काल । मंगल नित नित होत बिसाल ॥
जयो जयो मुक्त पराक्रमें पुरो । तुम रक्षा करो जगतो सुरो ॥२०॥
चन्द्र तन सोम्य तुम्ह जय करो चंद्र । मंगल नित नित करो आनंद ॥
बुध विबुधपती करो तह्य रक्षा । सुरयुधमुक्त बीयो मुक्त सिखा ॥२१॥
राहु मनीश्वर पीडा निवारो । केतु कल्याण सदा विस्तारो ॥
हरीहर ब्रह्मादीक सहू देव । दीयो भावुष्य चरां तुह्य देव ॥२२॥
लडग ताहारो मरी मय मदहारी । जयो जयो राज प्रजा सुखकारी ॥
राज ताहारें जयो सिधु मयादि । तूँ चिरजीवो मुक्त आसीबादि ॥२३॥

दोहा

दीक्षा लेवा उपामने, वितथ बचन बिस्तार ॥
माय प्रागल में बोलयूँ । माय बचन प्रवचार ॥१॥

यशोधर द्वारा चात्रि स्वप्न का वर्णन

तह्ये जे भायु धरूँ कह्यं, किह्यो बी भायु बिसाल ॥
रातें सयन में देख्युं, राक्षस एक बिकराल ॥२॥
हाथ निहूथ बीहामणों, बोल्यो करकत बाल ॥
कुटंब सहीत तुम्ह जय करूं, बचन कह्युं बुझ लाग ॥३॥
दीक्षा लीचिणों जीन हसी, तुमकूँ जा जीवत ॥
तेहूँ ज्यो दीक्षा लेयसूँ, किम मुक्त भायु महंत ॥४॥

चन्द्रमती द्वारा देखी बुझमें

चंद्रमती तन कोलयूँ, देखी कोरी पुत्र ॥
बिचन-बचनटे ए मटता, सयन देखतकि विचित्र ॥५॥
चंडी भायुंका कही, कुंड बचनी जयी जोड ॥
कासी कात्यायनी सही, कुल देखी तह्य सोच ॥६॥

उद्धे तो रोह मानो नहीं, समकीत बरसूँ धाज ॥
करो जिन धर्म दया करो, केय बालि एज काज ॥७॥

देवी पूजा कीजिये, होइ विघन विनाश ॥
आई धंवा ए कही, सूठी पूरि भास ॥८॥

झाग महीस भाधि जीबडा, बल दीजि सही रास ॥
धायु भाधि राज विस्तरये, विघन तेहि चटी जाय ॥९॥

साधुश्रीपरमेष्ठिनः सकरुणा षड्जीवरक्षाकरा ।
भारतीद्यद् व्रतगुणितसरसमितिका बद्धेन्द्रियाः साह्यिकाः ॥

लोचास्नानविचेलको स्थितिमुत्रो पूजद्विर्जकाशना ।
श्रीदेवेन्द्रसुविवेकसुतपदः कुर्वंतु वो मंगलं ॥१॥

इति श्री यशोधर महाराज चरिते रासचूडामणौ नाम
काव्यप्रतिष्ठदो भूदेव कवि श्री विक्रमसुत देवेन्द्रविरचिते

कामकेलिस्त्रीदुश्चरिता दर्शन शौर्यनिवत
सङ्गर्भानप्रभातवर्णनो नाम पंचमोऽधिकारः ॥५॥

षष्ठ अघिकार

नास हीबोलडानी

यशोधर द्वारा देवी के सामने बली का विरोध करना

बचन सुनी हू बोलीयो; मात सुणो मुझ बात ।
ऊतम कुलना अपना हीबोलडारे । केम करीयि जीव बात ॥१॥

उत्तम मध्यम कुले कछा, जीव हिंसा ना जेद ।
उत्तम जोई हिंसा करे ।ही० उत्तम गुण होए जेद ॥२॥

जीव हिंसा बीघन टालि । ए मुझ बण्ड समान
पर ना प्राण विघन करे ।ही० विघन विशेष होयें मान ॥३॥

दीन दुखी जे बापडा । जन बस्त्रादिक रहित ॥
परभव जीव बध्या तरां ।ही० फल जाण्यो इठ चीत्त ॥४॥

मांथलां बिहिरां पांगलां । भूना महिला जेह ।
जिनवासी माहिं हम कछा ।ही० जीव हिंसा फल एह ॥५॥

कोठी करुपा रोमीया । इष्ट बियोगीया जेह ।
जिनवासी माहिं हम कछा ।ही० जीव हिंसा फल एह ॥६॥

अनिष्य काचि रोम केम टलि । अचवा कसक रोम काक ॥
 डाहा उत्तम बाणता ।ही०। अनेष्य कहो किम काच ॥७॥
 विचन जाबाने कारखे । न करूँ हींसा कर्म ।
 बचन सूखी माय बोली सू ।ही०। पुत्र मोह्यो विनचर्म ॥८॥
 दिः कर्म धर्म बल नयो । न सहि वेदना भेद ।
 कामे कर्म जीव हिसता ।ही०। नही होये धर्म नू खेह ॥९॥
 जीव हिंसा धर्मह होय । इम कहि खोटा लोक ॥
 दान पूजा तप व्रत प्रीया ।ही०। जीव दया विष्णु फोक ॥१०॥
 मुझ सूँ भाग्रह बरगो करयो । एक जीव हूलाबा जारण ।
 लडग काडयो तब आपणो ।ही०। देवामे आपणा प्राण ॥११॥
 राय मोटे मुझ कर बकी । लीचो तब ते ऋपाण ।
 बिलखी बई माय एम वदे ।ही०। सांभलि पुत्र सुजाण ॥१२॥

चन्द्रमती द्वारा आटे के कुकड़े का बच करने का प्रस्ताव

मात पिता बचनहूतखे । भंवकीधि हुई पाप ।
 पीठ नु दीजि कूकड़ो ।ही०। जिम टालि लोक संताप ॥१३॥
 लाजि हूँ सुनि रह्यो । सांभली दीन बचन ॥
 वीनय करी मन गह बरभो ।ही०। नीगम्यु धर्म रतन ॥१४॥
 पीठनु कूकड़ो कराबयो । चीन वीचीत्र अपार ॥
 देवीमठ हूँ बालीयो ।ही०। माय छहीत तेखी बार ॥१५॥
 डस डम डमक डाकजां । लडय बणा ऋबकार ॥
 रण काहलवली बाजतां ।ही०। पोहोतां देवी मठ बार ॥१६॥
 अचन मास अचु बालडो । अष्टमी संवतवार ॥
 देवी नमी हूँ बोलीयो ।ही०। बली लेई करो अचकार ॥१७॥
 लडय कांडी कुकड़ो हण्यो । सबक हवो असार ॥
 जारो मुझ नि सेबती ।ही०। देवले कुर्णस्य नार ॥१८॥
 माय कहे ए अचकार । लीचे होय कल्याण ॥
 जे जे मासे निष्ठा कस्यो ।ही०। तिनि करयो नि अजाण ॥१९॥
 खेहेवीं होम अकिसम्पता । मुज्य लेहेकी होम ॥
 कर्म धर्मन अही बीबडो ।ही०। पापकरंतो न बोध ॥२०॥
 कुंभर ते राख निचरक्यो । होम्यु धर्म अंतर ॥

रानी द्वारा बसोबर से प्रार्थना

तप लेवा जब चालीयो ।ही०। तब आवी ते नार ॥२१॥
 तेह्ये तप लेवा चालवा । मुक्त नें सुंकी अरु ॥
 एकलडी नोरवार नें ।ही०। मऊ धरि रहें कुन काज ॥२२॥
 एकलडा केम जाके सो । मुक्तनि नीसी संवार ॥
 हू तह्ये सरसी तप करूं ।ही०। सकल करूं अबतार ॥२३॥
 मऊ ऊपरि तह्ये दया धरणी । बचन न लोभु एक ॥
 मऊ मंदिर भोजन करो ।ही०। पछि तप लेसूं बीबेक ॥२४॥
 कु अर तणुं राज जोईनि । क्षमा तम कीजे राय ॥
 पछि बेहू जरा तप लेसूं सही । इम कही लागी पाय ॥२५॥
 पतिव्रता जे कामिनी । कंत सुं तप लीयि सार ॥
 तप करी फल हूं मागसूं ।ही०। अब अब तुम्ह भरधार ॥२६॥
 आज तह्ये स्वामीनुहो तसी । छे हेसूं यमरा यमो राय ॥
 माय सहीत जमो मन रली ।ही०। प्रभाति जासूं वनठाय ॥२७॥
 भोजन आन्या दीजियि । कीजियि करुणा एह ॥
 माया बचने हू मोहियो ।ही०। भान्नुं वचन बलीतेह ॥२८॥
 स्वपन न दीठू इम लेखवु । नीसी दीठूं जे अन्याय ॥
 नारी माया वन माहि ।ही०। पछ्या कबल न भूलाय ॥२९॥
 राय सहीत हूं चालीयो । भोजन काजे चंन ॥
 जाणो जमेंहूं तेडीयो ।ही०। नारी मंदिर गयो रंन ॥३०॥

रानी द्वारा विविध पकवान बनाना

हरलीत हवी मायावनी । स्नान विलेपन दीध ॥
 कनक थाल हेम बेसणूं ।ही०। प्रीसणूं हरव सुं कीध ॥३१॥
 खाजा सेव सुंहालडा । फेरी सेजोरी सार ॥
 धेवर साकर फेरीका ।ही०। हेसमी सापसी अपार ॥३२॥
 पूडा बडी माडा वेदमी । छुत बली साक अनेक ॥
 माय सही जमकु अरु ।ही०। पला देखूं बीबेक बीबेक ॥३३॥
 आयसुं पाछमूं भाय करो । जाखे करयो मुक्त छेद ॥
 बसुकी बुध्य करी रही ।ही०। बेहू नारवा बिल भेद ॥३४॥

बिना बहीत मुकनि कहि । खानी ताहानी बाल ॥

बिबिधुक्त भावक सिंहासना

साहू कही बाबणी । ही०। मोकलमो मुक मात ॥३५॥

नाहू बंजीजे बाबरे । ते सही नारि कुनार ॥

पीहर केरी सुखडी । ही०। श्री राजनि बबीघार ॥३६॥

प्रीसूँ जो भागव्यां होय । हसी करी प्रीसो तेहू ॥

बाई जी तहूँ आरोम सो । ही०। बोडो एकलीबो एहू ॥३७॥

एम कही मायने मुँकयो । बेहू जमयां मने रम ॥

समय समय बिल व्यापयूँ । ही०। दीसतूँ भनि मुक भंग ॥३८॥

राजा का सिंहासन पर आकर बैठा २ बिस्लावा

चलू करी हूँ उठीयो । बेडो सिंहासन जाय ॥

बंद बंद करी भोमि पठयो । ही०। तब नारी भावी थाइ ॥३९॥

राजा को मृत्यु होना

बस्तु

बाई भावी बाई भावी । तबहते नार । रे रे कंत कसूँ हवूँ ।

इम कही चपि बचन परी परी । केज कलाम बिस्तारयो ।

धत्तमसीती बडी मुक ऊपरि । बासूँ बंद बीजवाल जि ॥

वंति कठ पीडेय । जीव मयी तेरिण क्षणि । मारीपत सुखो भेय ॥१॥

जास बस्तुकाराणी

रानी द्वारा बिलाय करजा

बस्तुकारे तब ते नारी जाण । पावली बिध्या तलीं । बि०।

लेई जसोपर नाम । रोमि ते बायाबली । बि०। ॥१॥

जसोपर रे हनि ए बाल । जसोपर रे । सुर सनी दूँ राय ॥

ऊनयो निबली ब्राह्मणी । जसोपर रे । राय ए कबंरली जाण ॥

कुमेवाली ए दूँ तुक नम्बो । जसोपर रे ॥२॥

व्याप्यो हनि बंधकार । हुँ एकली किम रहुँ । बि०।

बापरी बंधला बाल । बिरहनी वेवला केज सहुँ । बि०। ॥३॥

तब सर भनि बिल वेत । राय बंध बिल किम रिहि ॥ बि०। ॥

सिंज सही बंधला बंधाच । स्वामी बिना कहे किम सोहि ॥ बि०। ॥

विनय विना यम शीघ्र । विवेक विना जन बातडी ॥ज०॥११॥
 कंत विना तिम नार । किम हूं सोमु बापडी ॥ज०॥१२॥
 तारा विण जिम चन्द्र । चंद्र विना जिम रातडी ॥ज०॥
 कत विना तिम नार । केम हूं सोहूं बातडी ॥ज०॥१६॥
 प्राणडी विना यामि मुक्त । अंजन विण जिम प्राणडी ॥ज०॥
 कंत विना तिम नार । केमहूं सोहूं बापडी ॥ज०॥१७॥
 दया विना जिम धर्म । श्रावक विण जिम प्राणडी ॥ज०॥
 कंत विना तिम नार । केमहूं जीवूं बापडी ॥ज०॥१८॥
 सरोवर कमल बिहीन । कमल विण जेम पांसडी ॥ज०॥
 कंत विना तिम नार । केमहूं जीवूं बापडी ॥ज०॥१९॥
 मुकुट विना जेम भूष । मणी विण बीटी कनक घडी ॥ज०॥
 कत विना तिम नार । केमहूं जीवूं बापडी ॥ज०॥२०॥
 मोहुत विना जीम प्रेम । प्रेम विना जिम भेटडी ॥ज०॥
 कंत विना तिम नार । केमहूं जीवूं बापडी ॥११॥
 दान विना जिम कीर्ति । कीर्ति विना नर गोरडी ॥ज०॥
 कत विना तिम नार । किमहूं जीवूं बापडी ॥ज०॥२२॥
 परिभल विण जिम फूल । फूल फल विण जन जिसो ॥ज०॥
 गुण विण हार विचार । नारी भव कंत विण तसो ॥ज०॥२३॥
 पुत्र विना जिम वंश । हस बीना देह जसो ॥ज०॥
 भद्र विण हाथी जेम । नारी भव कंत विण तसो ॥ज०॥२३॥
 वेश विना जिम अश्व । धन विन नवयौवनअसु ॥ज०॥
 न्याय विना जिम राय । नारी भव कंत विण तसो ॥ज०॥२५॥
 रामा विण जेम गेह । गेह सुपात्र विना जसो ॥ज०॥
 विदांस विणा सभा जेम । नारी भव कंत विण तसो ॥ज०॥२६॥
 कंठ विना जेम यान । ध्यान अवा बिस्व मुनी जिसो ॥ज०॥
 समकित विण आचर । नारी भव कंत विण तसो ॥ज०॥२७॥
 देवल विण जेम गाम । देव बीना देवल जसो ॥ज०॥
 वाद कला विण वादन । नारी भव कंत विण तसो ॥ज०॥२७॥
 लक्ष्मि विना जिम पाक । हृत विना अमेजन जिसो ॥ज०॥
 भाव विना शुभ काम । नारी भव कंत विण तसो ॥ज०॥२९॥

सीस बिना नर नार । मरिह बिना औरक कसो ॥५०॥
 गुलु बिलु उल्लस बंस । नारी भव कंस बिज कसो ॥५०॥२०॥
 एकसको नर नार । सबलानि नख नारकीइ ॥५०॥
 लीला भूवास नरेन्द्र । कोल दसो एक भारपीवि ॥५०॥२१॥
 नाहानको बसोमती राय । सीस वीरामया वीरिनि ॥५०॥
 क्षम तव करी सहु साथ । बालो दीक्षा लीवीवि ॥५०॥२२॥
 इन्द्र सभा तुम काम । सही त्प्राहां तुं बोलावीयो ॥५०॥
 स्वर्गे नहीए ह्यो राय । तेह भरीं तुं भावीयो ॥५०॥२३॥
 ह्यो तमनें स्वर्गबाह । दीक्षा भाव तुमनि कसो ॥५०॥
 किम लेता तप भार । कमल कोबल तनु तहू तस्यो ॥५०॥२४॥
 तूं धयूं तुमनि नाह । रोग धर्षीतो धावीयो ॥५०॥
 पेट माहि हबूं दुःख । प्रीस्यूं धम न भावीयो ॥२५॥
 मरु सरज्यो नहीं लाभ । तूं साधनीं ज्यो नहीं ॥५०॥
 सामी धने वली स्वामी । एहे बी जोग मनि कही ॥५०॥२६॥
 भगतन जम्पि बेरी नाथ । ए मोटो रह्यो लोचक ॥५०॥
 वरत करी कहूं नाह । भव भव तूं बर वीजड ॥५०॥२७॥
 समकित घारी तूं देव । देवी पूजा कम बनि ॥५०॥
 कछरावंत महुंत । जिनवर बर्में सुं मनरनि ॥५०॥२८॥
 कपट करघूं देवी साथ । दोषो पीठनो कूकडो ॥५०॥
 कोल देवी कीपी ते माट । विधन देखाडयो कूकडो ॥५०॥२९॥
 विजजारा । रे पापशीं दुष्ट ते नार । रही मोति कंतहू तस्यी ॥
 लोक आगनि किहि इम । मायावशीं निप्यातस्यी ॥५०॥३०॥
 सासु धगुडो देव । मारी नें कहि तह्यो तूं धयूं ॥५०॥
 रोग बिना कोहो धाय । जीव तह्यारी कम गयो ॥५०॥३१॥
 गरदपसा मरिह जास । कोसीपी कडें केने रह्यो ॥५०॥
 बीक बीक असु धनतार । जीव तह्यारी जमें रह्यो ॥५०॥३२॥
 कवण वैसि हवि सीस । देवीयो राज नहीं दुन नीं ॥५०॥
 बुधि बिना किम होय । स्वस्ति पणूं बर सुन सीं ॥५०॥३३॥
 तब ह्यो ॥५०॥३४॥ ॥ ५०॥३५॥ ॥ ५०॥३६॥

राजकुमार यक्षोमती द्वारा विलाप

साधि मोटा राणा राय । कुंवर जसोमति धामयो ॥वि०॥३४॥

हा हा तात तू भाण्य । विरी तिमिर अय कारणो ॥वि०॥

हा हा तात तू चन्द्र । प्रजा संताप निवारणो ॥वि०॥३५॥

हा हा तात तू इन्द्र । सीला लक्षण मंडीयो ॥वि०॥

हा हा तात नामेंद्र । भोग भरघो भलो पंडीयो ॥वि०॥३६॥

हा हा तात सुधीर । रण अगणें रीपू दडयो ॥वि०॥

हा हा तात तू वीर । साधु तणो भय खडीयो ॥वि०॥३७॥

हा हा तात कल्पवृक्ष । कामधेन चित्तामखी समो ॥वि०॥

हा हा तात तुरु दान । विलखो घनद दिन नीगम्यो ॥वि०॥३८॥

हा हा तात प्रचंड । प्रताप पुंज तुं उत्तमो ॥वि०॥

हा हा पराक्रम पूर । सूर सुखि मगनें मम्यो ॥वि०॥३९॥

छत्र मंग हवो आज । राजभार कोण पेर भरघो ॥वि०॥४०॥

मांघाता नले राम । नचोषि सगर भादि मया ॥वि० वि०॥

हरीहर बल चक्रवर्ति । काल आगल कोन व्यह्या ॥वि०॥४१॥

खल भलयो तबलोक । हा हा कार नयरे पडयो ॥वि०॥

आचंभ्या सह कोम । अचीतो रायनें जम नडयो ॥वि०॥४२॥

प्रबल बायु जम जाण । कुर्चर सावर खल भलयो ॥वि०॥

तेम बाजारी लोक । लोटो तब बखोळ मलयो ॥वि०॥४३॥

नयरी लुटीय अपार । लोक नूवा रव बहू करि ॥वि०॥

फाटि हाटनी श्रेण । बहूटो लुटाइ बहू पिरि ॥वि०॥४४॥

यसोमतीनी फरी आण । नरव लुटातूं वार यूं ॥वि०॥

आभ्या मोटा राणा राय । राय भरण अदधार यूं ॥वि०॥४५॥

रीद्र बाजि बाजिप्र । रण काहल बीहामणो । वि०॥

नू वा रव हाहाकार । रीर पोकार करि बखो ॥वि०॥४६॥

संस्कार काजि राय । कावीयो तन मोटी परें ॥वि०॥

अन्तःपुर नें विलाप

अते उर ते वार । हा हा कार बखो विस्तरघो ॥वि०॥४७॥

एक रडि कहीं नाह । एक मूर्छा कही भोवि बडि ॥वि० वि०॥
एके ते हेनुं हखेय । एक भोवि खूं खीर प्राछटि ॥वि०॥४८॥

एक ते फाडि खीर । नवख नीरें तनु भीबधि ॥वि० वि०॥
ब्यरह बाबानल व्याप । तनु बनते बाले भूमधि ॥वि०॥४९॥

एक भोडि भोती हार । एक ते कंकख मोडती ॥वि० वि०॥
एक भोधि कूटती हाय । एक ते आवब बोडती ॥वि०॥५०॥

एक ते बोली चूथेय । एक ते बेखी छोडती ॥वि० वि०॥
एक सती थाबा काज । हरी हरी कही हाष बोडती ॥वि०॥५१॥

एक ते बसती जाय । ऊंची बई तनु नाखती ॥वि० वि०॥
एक बलबलती बाल । दैब दैब इन भाखती ॥वि०॥५२॥

विष खाती बली एक । एक कटारी बांफती ॥वि० वि०॥
पास बासती बलि एक । एक लडकि सीस कापती ॥वि०॥५३॥

केटली बाली समसान । भीहा माहि भंपसावती ॥वि० वि०॥
जैन राजा तराी बेव । केटली बंराम्ब भावती ॥वि०॥५४॥

केटलीक दीधा लेय । प्रतिमा भग्गार केटली बरे ॥वि० वि०॥
पांचसि राखी जाल । एखी चिरि बली दुःख करि ॥वि० वि०॥५५॥

जेहनि बाख्या राय । भिन्नबली सेवक बखी ॥वि० वि०॥
सांभली मरगनी बात । प्रख मया केता तखा ॥वि० ५६॥

केता कटारी करंत । केता मरंत विषगही ॥वि० वि०॥
केता पडपां भीहा माहि । माता साहाना बाख्या लही ॥वि०॥५७॥

केता लडनें सीस छेद । कमल पुजां केता करै ॥वि० वि०॥
केता साधर्मी राय । बंराम्ब छेद बीसा बरि ॥वि०॥५८॥

यसोबर हबो संस्कार । स्नायाधिक सहुंए करु ॥वि० वि०॥
मोहो कासि मोटा राय । तीरिण असोमती बासनें बरबो ॥वि०॥५९॥

बाहुरो दीन्ने आखीबधि । राय भीया हनि करो ॥वि० वि०॥
बाहुराखि दीवो दान हवें । असोबरनि उदरो ॥वि०॥६०॥

तब असोमती दीधि दान । भीया भीयो तब मुकठही ॥वि० वि०॥
मि काई नव्व तब । दूर बति लही बेगला बली ॥वि० ६३॥

असोमति द्वारा दान देना

ब्रूहा

ठाम ठाम थी ब्राह्मण मल्या, बहु पेर दान देनाय ॥
 धन कांचन करण सुत चणा, मणि वस्त्रादि धूपाम ॥१॥
 गज अश्व रथ नो महीषी, आदि बहु दीघं दान ॥
 बछ वाछरडी देवाहेयां. ब्रह्म भोजन बिधान ॥२॥
 भूम्य सेव्या ग्रामज दीया, पाप घटादि विधात ॥
 ब्राह्मण बहु परणावया, लहे नो असोघर तात ॥३॥
 तुला दान पिर पिर तरणा, काल पुरुष यम भात ॥
 कृष्णा जिन दासी दीयि, लहि जो असोघर तात ॥४॥
 तिल बुड हेम रूपा तरणी, नाय सीधी बहू जात ॥
 वृषभ महीष बहु लोह दान दीयूं, लिहिजो असोघर तात ॥५॥

खासबां घोतीया करवता । जल कुंभहसी वात ॥
 नित्य भन्न बहू गृह दीया । लह जो असोघर भात ॥६॥
 कुंभ कनक केरा करथा । भरथा सामग्री अपार ॥
 राय असोघर स्वर्ग थी । पामजो ए सुविचार ॥७॥
 पणमे कांइ न पामयूं । मारीदत्त सुण राय ॥
 दुरगती दुःखज पांमयूं । अचेतनि हिंसा पसाम ॥८॥
 इम जाणी सुजनं सवे । त्यजों हिंसा सकल्प ॥
 फल उत्तारण फल हृमन । पूतलां तेह विकल्प ॥९॥
 जीव चप्पा ना पाप तरणो । कोहो कोण दाक्षि पार ॥
 हणवो अचेतन कूकडो । तेणि वाभ्यु ससार ॥१०॥
 इम जाणी नीरभ्यु करी । पाल्यो श्रीजिनधर्म ॥
 हिंसा पातिक पर हरो । जिम पामो सीव धर्म ॥११॥
 सील समूं भूषण नही । समकित सम नहीं रत्न ॥
 बंधु नहीं को धर्म समो । करो दयानू मत्त ॥१२॥
 मिथ्यात सम को रीपू नहीं । बिष न मिथ्यात समान ॥
 ते भली मिथ्यात दूरि त्यजो । पालो दया निधान ॥१३॥

बास गुरुराजनी

हेमवंत पर्वत एवं वन का बरखन

हेमवंत ए दक्षस भाष । नगरी वासि छि बिरिबर ए ॥
 गुफा माहि ए सिंह रीराल । पाटतां पाठां बनबर ए ॥१॥
 गजबहाए । बीरी कडि सना । दंतू सलेबीरी मोडसा ए ॥
 गजतलाए कु भबिदार । महीसू मुक्ताफल जोडता ए ॥२॥
 फलाबर ए करय फूलकार । बाघ बखूं बखबकी रखा ए ॥
 शूकर ए घूर्णूर साद । डाढ बांकी जम सम कहाए ॥३॥
 हरिण ए नाहाठडां जाय । बाय क्रूर बरु भती बलाए ॥
 बांनरा ए फाल पलंत । बूतकार करय बीहामणाए ॥४॥
 गूजा ए पडी ठाम ठाम । दव जाणीं हुरीणां त्यजे ए ॥
 सीमातीयां ए फालू पोकार । मांस जाणीं क्षण तें भजिए ॥५॥
 भीलडीए गूजा हार । फूल फल काजि बनि बनें ए ॥
 भीलडाए कामठां हाय । भमता जीवनें बखूं बनें ए ॥६॥
 टाडडीए बीड्या जाख । बांनरा चीस पाडि बखूं ए ॥
 चणो ठीय ए डम्य करिय । सेवि बाणो ए तापणूं ए ॥७॥
 घूर्णुयिए घूर्णुज्जाख । समली तींकारणां वृषुं भनें ए ॥
 माहोमाहि ए बंस बसाय । दबलागि एह संबनें ए ॥८॥
 दवें बत्या ए फूटि बांस । तणु खले वन बखूं ध्यापीयो ए ॥
 तेहू बनें ए मोरडी बनें । भवतरपो पावे संतापयो ए ॥९॥

राजा का मोर के रूप में अम्ब

जठरनीए भागिहुं हूष । नारकी अम्बयनि कु डे जस्यो ए ॥
 यलमूत्र ए खरबयो अंधार । बूष तरसें बखूं कस्यो ए ॥१०॥
 मोरडी ए कनम्यो जाख । ताम पंजमाहि रापीयो ए ॥
 हूं फेंदुयो पुष्ट यंड । इहू फूटि तब तबू भायियो ए ॥११॥
 जीबडे ए पीसतो तन । सेव भिमतो काय्यो फारकी ए ॥
 बनूख तब बखूं बनि मोहारी तेलि बकीए ॥१२॥

मोरडीए नाबी लांब । हूं लीबो कांठि सहीए ॥
 बाटिए आबतां मोरी । कोटवालें लीबी सहीए ॥१३॥
 पारधीनें दीबी गाल । ठालु ते घिर आबीयो ऐ ॥
 नारीय ए देवे गाल । मलुते नव्य आबीयो ए ॥१४॥
 खासे ए मोटा पाहाण । हाणवासीर सीय नबो ए ॥
 चालीयो ए चहुटा माहि ॥ कोटवाल नेहूं बेचीयोए ॥१५॥
 थोडीए मूलज माठा । हूं राय चहुटें बेचाईयोए ॥
 संसार ए मंडपें एम । करम नटावे नचाबीयो ए ॥१६॥
 कोटवालें ए जसोमती राय । भेट काजे घरे लेई गयो ए ॥
 जतननें ए काजे तेण, पांजरा माहि हूं ठब्यो ए ॥१७॥
 कण घणा ए । चलीपीयू नीर । सनें सनें योवन हवों ए ॥
 सोभतो ए मरु कलाय । पंचवरण तव अमीनवो ए ॥१८॥
 एक बार ए जसोमती राय । आगलहूं भेट घरघो ए ॥
 देलीयो ए मरु स्वरूप । मोह राय ननें वीस्तरघो ए ॥१९॥
 आगणे ए हीडूं खेसंत । मोती चोकनि मंजतु ए ॥
 बोलतु ए मधुरी भास । राय तखूं मन रंजतो ए ॥२०॥
 नारीनें ए नेउरि नाद । पाय पाय हीडूं नाचतु ए ॥
 ऊडीय ए वेसूं घनास । नेच देली घखूं राचतु ए ॥२१॥

स्वाम का जन्म लेना

चन्द्रमतीब ए जे मरु मात । मरी करी स्वाम हवो ए ॥
 चंचल ए कूर अपार । अवतरघो जाणे जम जूवो ए ॥२२॥
 यसोमती ए आबयो भेट । रावनें तव मोह ऊपनो ए ॥
 घामतो ए बाबनी फाल । पारब सारथी नीपनो ए ॥२३॥
 सो बन ए सांकल कोड । पंचवरण मूल सोहवो ए ॥
 दीसे ए अति विकराल । नयस बीहामणो जीववो ए ॥२४॥

मोर का कुबडे पर आगवण

एक उमि ए मोर हूं जासु । समुतमती घवाति चडवो ए ॥
 कुबडो ए राखी संघात । खेसंतो दुष्टे पदघो ए ॥२५॥

छालभूँ ए बेर अघार । कडक देई कुबडो हूँकी ए ॥
 चोंचनाए कीया बहार । नारीभूँ बीहल कीयो बखो ए ॥२६॥
 कटी तखी ए मेखना खीब । नारीनि नांसी बन्ध भखी ए ॥
 मोडीयो ए पन तेखी वार । लीजतो नाहूँ ठो भव बखो ए ॥२७॥
 कोलीए के ए हण्यो चमरनें बंड । कोलो कपूरनि दावडे ॥
 कोलीए के ए बीखा बंड । मारयो कोलि हेमबंड बहि ए ॥२८॥
 यसोमती ए साकयो स्वान । सांकल प्रोडी ते चाबीयो ए ॥
 हाहा ए करतो तेण । कडे बरी बुड चाबीयो ए ॥२९॥
 जीबडो ए मयो तेखी वार । मोर मुघो राव जाखीयो ए ॥
 कर धरीए चोकीयो उत्तम । राव बसी स्वान हखीयो ए ॥३०॥
 यसोमती ए करि बहूँ लोक । हा हा मोर हूँ रडो भावतु ए ॥
 हींडतो ए भावखो खेवंत । तुम्ह कलाप देखावतो ए ॥३१॥
 मोतीय ए रतनना चोक । फूल साधीवारो हूँ अमथकाए ॥
 नाचतो ए तूँ अघार । नेउर नय सोहें साबका ए ॥३२॥
 चटी करी ए ऊंचो अवास । मेहो मेहो कुण जोलनि ए ॥
 जाखो ए जसोघर राव । आज भूयो एम बन बसे ए ॥३३॥
 हे हे ए स्वान बलिष्ठ । इष्ट एक कोकोनि मारयो ए ॥
 बावतो ए बावनी फाल । बन माहिं बकारयो ए ॥३४॥
 हरीणाए सूनि रडो रंन । तुम्ह बेला हवे कुण बावसए ॥
 ससलाए सू उजाल माहि । तुम्ह बीण कोण बिचारसि ए ॥३५॥
 तेडीयए परोहीत तास । संस्कार कीया करी ए ॥
 ब्राह्मणनिए बीचलां वंन । उभावनां बेहू बहूँ फिरिए ॥३६॥

बूहा

अहमे काई न पामभूँ । पामभूँ केवल दुःख ॥
 खरबीयि ते पूरव बकहि । वे कहि ते तही भूँस ॥१॥
 सुनेल जाव सखी सखि । प्रीति नाम बनमन्थ ॥
 केहेली अरुनें दुःखही । सन्नासहउ बन्ध ॥२॥

मौर का सेहेली के गर्भ में उत्पन्न होना

जरायो भूलें पीडयो । सूख तशी तेन होय ॥
 मोरनि भवे जे दूःख सख्य । तेथी अवीकन जोय ॥३॥
 भूँडो तनुं कांठि भरयूँ । जीव तशी बली आहार ॥
 पापें पाप ज काषयो । मारीबल भवभार ॥४॥

स्वान का सर्प होना

स्वान मरी सापब हवो । तेह बनि अती विकराल ॥
 बख बखतो भूखो भवे । अनेक जीवतो काल ॥५॥
 तब ते मरु नजरें पडथो । ग्रहयो ने में पूछ ॥
 खावा मांडथो अती बलो । हऊउ तेह बल तुछ ॥६॥
 थोडे थोडे खावतां । तडफड करि ते साप ॥
 करि फूतकार कालि नही । नडथो मिथ्यात पाप ॥७॥
 तरबिरु जीव एक आबयो, सेणि हसयो हूं जाण ॥
 पाप फलें बली अति अरुं । पाप्यो हूं दुःख खाण ॥८॥
 बँर ते दुखनीड रडी । बँर बभारि संसार ॥
 बँर तें धर्म बिनासणो । बँर दुर्गती दातार ॥९॥
 गुण तब बँर कोठारडो । बँर सुमति बन अग्यी ॥
 दयावल्ली बँर हिम समो । तेह अशी बँरम लग्यी ॥१०॥
 धम जासी निरयो करी । बँर सबरसो कोय ।
 क्षमा रमा सु रगे रमो । धम नव भमख न होय ॥११॥
 भास अथ्य बोधोतीनी

उज्जयिनी की सिन्धु नदी का वर्णन

उजेणी नधरी ने पासे ।
 नदी ऊंडी नीर्मल जलें भासे ।
 सिन्धु नाम छे तासे ॥१॥

वेहु तटिय पंच वरस पारबास ।
 ऊपर कोमल मांछि कठल सुं बास ।
 दुज्जल समा वरबास ॥२॥

सूर्य कांति सूरज नें लखिकि ।
दीसि कही एक जामी नखनके ।
मृग धारवां सके ॥३॥

चन्द्रकांति निसि चंद्रने लेजि ।
जल परं बाहू भरख होइ सिहिजि ।
नदी बाधि ससी हेजि ॥४॥

कही एक रातां किरण बिस्तरए ।
जाखी सीमाल वबीर बही करए ।
लख चाटता फीरए ॥५॥

कहीं एक पीला किरण बिस्तर ।
हरखी दब भय न करे संचार ।
भूली तापें गमार ॥६॥

नीलकिरण बिस्तरए दीहि ।
चक्रवाक बियोग मुंयबिहि ।
निसि समय लेखिलीहि ॥७॥

भीलते चंबुक सीलायि अपार ।
बसता बाण बलये ते बार ।
देवी कही माधि गमार ॥८॥

तरु फूल रेणु पवन धर्युं उडए ।
नदीय नीर माहि ते पडए ।
कनकह उपमा बडए ॥९॥

वनवाडी तेह कांठे सोहि ।
अनेक वृक्ष लख मन मोहि ।
कोए तरु निःफल नोहि ॥१०॥

नदी कांठि तरु फरया अपार ।
जलिपिसि प्रतिबिंब विकार ।
कर वा प्रति उपकार ॥११॥

ब्रह्म सांछि अपन बेलता मछ ।
सोखी शीषक बाजे पुंछि ।
पछि लखि सोखी अनुच्छ ॥१२॥

मछ पु'छ कहीयि जस कछालि ।
मकर कपाट सँ जस अफालि ।
बीहीना वानर दीयि फाले ॥१३॥

तीहां प्रकी मरी सेहेलनो जीव ।
रोहीड़ मछी गरम अतीव ।
दुःखे प्राडू रीव ॥१४॥

रोहीत मछ महा तनुं भोटो ।
बहु परी मछ गलंतो खोटो ॥
अपल परिण बरानू छोटो ॥१५॥

जाडू गलू मुख छि विकराल ।
अनेक मछ तणो ते काल ।
खेलू जलि विसाल ॥१६॥

अन्द्रमती जीव हूतो जे साप ।
मरणो दुःख तणो हवो व्याप ।
तेह द्रहि हवो ते पाप ॥१७॥

मछली मरकर संसुमार होना

संसुमार मछी ने पेटि ।
गरभ बेयसि दुःखियो हवो नेटि ।
नही क्षण एक सुख भेटि ॥१८॥

ससुमार ते बेणीयि जणयो ।
वाषतां निज कुल सह हणयो ।
कूपुत्र ते कुल क्षय भणयो ॥१९॥

मोटू सरीर बदन अति गाढ ।
कूर दृष्ट बांकी तस डाढ ।
उदर जाणो गिरि खाढ ॥२०॥

जल माहि हू दीठ फीरंतो ।
ससुमार मुख भरयो तरंतु ।
डाढ वचे चूरत ॥२१॥

राय तणी नृतकी तिहां भावी ।
रमभम करती सषी मन भावी ।
अनेक भूषसि सोहावी ॥२२॥

कुबडी कहीयि कोमल ग्रंथी ।
पिहिरी चीर बोली नवरंघी ।
संगीत नाच ग्रमंगी ॥२३॥

बासंती मेखला खलकायि ।
चूडी सहीत बांहोडी लहकायि ।
लहकि मचुर मायि ॥२४॥

नदीय देसामें वरुं संसूठी ।
चरणा सूं जलि वेमि पेठी ।
सीसुमारि ते दीठी ॥२५॥

बदन पसारी ग्रहीते बाल ।
हूं रोहीत ना हाठो ततकाल ।
भूक्यो जाणे काल ॥२६॥

राय भगल तब कीची राव ।
सेवक सर्व जणाम्यो भाव ।
वेगें शीवर तेबाव ॥२७॥

जाल सहीत माछीं बहु मल्यो ।
जाल नासिं जलचर खलबलयो ।
तबहुं कफाटि भलयो ॥२८॥

सीसुमार मुख थी हूं बांधु ।
नदी कपाड लही तब राख्यो ।
चपल परां वरुं खाण्यो ॥२९॥

सिसुमार को पकडना

जाल माहि पडचो ससुमार ।
खांची ताठें नाधु ते बार ।
टलबल करय अपार ॥३०॥

लाकडि दगडे सूं खलि खारचो ।
काप्यो लोहि वरुं विदारचो ।
मरण पाय्यो दुःख भारचो ॥३१॥

नमरी समीप छाकी उपसी ।
जसःसाकःनेर सुधी संगती ।
मोठी लग्ग मीमती ॥३२॥

भर कर बकरो होना

किहां जसोबर राजानी राणी ।
किहां ए छाली दुःखनी खाणी ।
पाप तस्यां फल जाणी ॥३३॥

पीठ कूकडा हृष्यानां फल भासि ।
मारीदल बहू जीव तूं विलासि ।
न लहूं बे तुम सूंयासि ॥३४॥

विबस केता हूं रह्यो द्रह माहि ।
जलचरने बहू प्रसंतो ताहि ।
तव नीपनूं ते चाहि ॥३५॥

अनेक माछी जाल लेईं आब्या ।
द्रह देखी नैं मनें सोहाब्या ।
जाल नाली घणूं फाब्या ॥३६॥

लेह जाल माहि हूं पडयो ।
पीठ कूकडा नो पाप ज नडयो ।
तडेनाभु आछडयो ॥३७॥

मारवा माछी आब्या अनेक ।
तव हूष बली आब्यु एक ।
म मारो बोल्यो विवेक ॥३८॥

मिं जाब्यूं मुकनें मुकेसि ।
गरडोएं को दयालूं बीसि ।
पण राकस इम भासि ॥३९॥

रोहीत मछ तह्ये ए जाणो ।
पितर सराबनें जोग्य बखारणो ।
एणि भिटलूं हविराणो ॥४०॥

रोहित मछ का पकडा जाना

तव सहूए मली ऊचली बीयो ।
माछी बाडा माहि माछी बीयो ।
मछ हाडें तनूं बीयो ॥४१॥

डग दीसि तबु मछ्छु कैरा ।
माछ्छुना पांख ठामे ठाम बेरथा ।
हाड तखा ऊकेरा ॥४२॥

मोटा मछ्छु वांसानां मोभ ।
मछ्छु पांसलीनां पीषां मोभ ।
सीनीच बेरि कहुं सोभ ॥४३॥

जाल तखां तिहां मोडव देखू ।
करंड मोटा मछ्छु भरवा लेखू ।
नरक पटल धीवीसेखू ॥४४॥

हाड पाथरि बली भोम्य कठीण ।
थलेना छोहवो अणूं खीण ।
करमें कीधु दीण ॥४५॥

ममर पसंक हंसतू ले सूतो ।
फूलडीच पण तनु नबि सूतो ।
करमें हूं एम वसूतो ॥४६॥

भूडडां मोहि करे मुक बात ।
स्वान गान नामस बदि बात ।
हम जाण्यो मे परभात ॥४७॥

बदधनी नार तलां सती पाय ।
बाजिच बाहनें गायण पाय ।
हम जायतो हूं राय ॥४८॥

हबडा प्रभात एणी पिरि जाण्यो ।
पाय तखो परभाण प्रभाण्यो ।
भारीबस्त भव जाण्यो ॥४९॥

हुहा

मसधी सहु नली मुकनें, राज मुपन लेई जाय ॥
राज जाणवहुं मेहेलीयो । शक धीपी कसाय ॥१॥

वेद वाठक स्मृत जाखीनि । वाखवो लेखी नार ॥
कारक जाखि ले कोलया । सज्यानु कुं अणकार ॥२॥

रोहित मछए जासीयि । उज्जल छि भीर मध्य ॥

हृष्य कव्य काजें कछो । उत्तम मछह मध्य ॥३॥

पचवरण तनु वीसिभि । प्रगट चपल भूमुंग ॥

साहामी प्रारिए चडि । एह पवित्र छि भंग ॥४॥

एहवि रूपि नरहरी । बाल्या वेद चार ॥

भंग सहीत इम जासयो । आहास्त्र माहिछि वीचार ॥५॥

श्राद्ध कीजि जो पीतरनू । कीजि आहाण भोज्य ॥

अखय तृप्ती पीतरनि सही । स्वर्गे जसोधर राज्य ॥६॥

तबहूं रोहित पाठव्यो । अमृतानि धिर जाएण ॥

माय प्रति जसोमती कहि । रोहित मभ बलाण ॥७॥

धितर काज ए कल्पीयि । सराब कीजिए गे प्राज ॥

चन्द्रमती साथि तृपती होय । जेम जसोधर राज ॥८॥

रोहित मच्छ को तल तल कर मारना

तब तेरीयि पापणी । पूंछ छेधूं ततकाल ॥

हीग म्यरी मीठूं मली । भूख भरीयूं वीकराल ॥९॥

ताता तैल माहि तल्पो । बेर बेर पाडू रीच ॥

नारकी पिर दुःख देखीया । कष्टि गयो मुभ जीव ॥१०॥

कुंअरे ते मभ कल्पीयो । खाधो लेइ मुभ नाम ॥

पिड पाडी किहि चन्द्रमती । जसोधर स्वर्गे ठाम ॥११॥

माहारी तृप्तानि कारिए । हूं खंड खड कीयो जाएण ॥

बापनि बापज कलपयो । जो जो लोक भयाण ॥१२॥

अहो तो काई न पायूं । मारीदत्त सुरा बात ॥

फल पाय्या पापज तरां । कीचु ते जीव बात ॥१३॥

इमजाणी म कलपसो । मूंआ ने सह कोय ॥

गतो अतर जीवनि सही । संबल सुकृत ज होय ॥१४॥

नास हेमनी

हू रोहित इम जाएण । विविध बेवना पाजी मूंको भेला
चन्द्रमती नुं जीव । संबुआर मरीजे छानी हूयो । हेला १.

संस्कार का बकरी होना

तेहनि कृषि हूँ बंग । गरभ उपयो दुःखि भरयो ।हेल।
 गरभ तस्यां तस्यां दुःख । जनम्यो मल श्रूनि भरयो ।हेल।१।
 वृषि पाम्बु हूँ बंग । अनुक्रम यौवन पामयो ।हेल।
 मद्य करी तनु दुर्गन्ध । शूलकार करता दिने बाययो ।हेल।३।
 मायनो जीव बली माय । छाली सू' संगम कियो ।हेल।
 दीठु बडेरे छाग । संगि करी पेट बांधीयो ।हेल।४।

बकरी मर कर फिर बकरी होना

मरी करी तेसी बार । तेह ज छासीं यमि जवनो ।हेल।
 आपो पानि बीर्य । ते माहि आपि संपनु ।हेल।५।।
 जूठ जूठ कर्म बीचार । पीति पीता पुत्र स्त्रि हूँवो ।हेल।
 धिक धिक गति तीर्यथ । भावप्रति भाव कीऊं जूवो ।हेल।६।।
 बीलया बाहीयो जीव । सुभ असुभ जासी नहीं ।हेल।
 हृदय तण ससां नेह । काम अगन लागि सही ।हेल।७।।
 चतुरन जाणि बीचार । तु पशुनि बीबेक हृषि किम ।हेल।
 पशु पामी मिध्याती । एत्रहणें मव नीस्फल वम ।हेल।८।।
 देवी काजि दीध अचेतन । तेह पापि बांधीयो ।हेल।
 पांमी पशू अवतार । ते पाप बीज यिम बांधीयू' ।हेल।९।।
 विलय जलि सींचाय । मातया मडप बीस्तरि ।हेल।
 पाप बेल यिम जाण । दुःख फल बेई नीस्तरें ।हेल।१०।।
 गरभ मोटु हवो आम । तम राजा पारथ चढयो ।हेल।
 जीवह हणायक काज । परणबीव तेह हाथि गण्य चढयो ।हेल।११।।
 अमतो अमतो जस । नगरी समीपि आम्बु फरी करी ।हेल।
 राव तणी लेली वार । वृष्ट पडी छाली बरी ।हेल।१२।।
 तेह उपरि मूक्यूं बास । जीव ययो तेहनो सही हिस।
 गर्भ नु पाम्यो दुःख । संसारिको कहि नु नहीं हिस।१३।।
 राव छासीं बीठ । परमसी बोई मोड पडी ।हेल।
 ते देखी-देखी बार । रावनि मम दबा कडी ।हेल।१४।।

पेट पीरी करी जाए । हूं काढ़ी पाल बादीयो । हेला ।
 अयोनी संभव माट । मऊ बतन बीनेल कीयो । हेला ॥ १५ ॥
 ध्याव्यो घनेरी छालि । दिन दिन हूं मोटो बयो हेला ।
 ललकि मोटा कान । लांबू मुल भद पामयो । हेला ॥ १६ ॥
 बिबि बोल नु बाए । देला बरसु बन माहि फर । हेला ।
 हवि जाए छू भेद । तेरिण भवि साबू न उक्कव । हेला ॥ १७ ॥
 बेछे जीवनि साथ । पुष्य पाप सही जाणयो । हेला ।
 भवर कुटबनि साथ । डाहा मोह म आसजो । हेला ॥ १८ ॥
 जलोबर सरलो राय । बोकडो बई बन माहि बम्यो । हेला ।
 कीचो मिथ्यात पाष । तेरो भव माहि सही एम दम्यो । हेला ॥ १९ ॥
 एक बार जसोमती राज । राज काज चिता बायीयो । हेला ।
 देवी काजि जाए । महीष तखो बल मानियो । हेला ॥ २० ॥
 सहजें सीझ्यो काज । मुढ़पणो नीरचो बरी । हेला ।
 महीस छाण्या अपार । देवी भागलें हींता करी । हेला ॥ २१ ॥
 मुढ़ मिथ्याती भव । एतहणे बाणो सरला सही । हेला ।
 हीडि आप मुराद । धर्मनु मर्म न सुनही । हेला ॥ २२ ॥
 ज्ञान नयन बिहीण । डगि डगि संकष्ट माहि पडि । हेला ।
 भव माहि भमे अपार । सुबो भारव नही सपडे । हेला ॥ २३ ॥
 हणका महीस ते जेव । राज सुकन माहि आणया । हेला ।
 सुपकारें तेणी बार । देखीच ते न बलासुया । हेला ॥ २४ ॥
 कूतरा काग अपार । ए पाका विटलीया । हेला ।
 केम पकवां अधिकार । ए ऊषीष्ट न सोकासीया । हेला ॥ २५ ॥
 काहारा लेऊया तेणी बार । वेद स्मृती जास बाकीया । हेला ।
 पूछयो महीष विचार । बोलता राय भनें आकीया । हेला ॥ २६ ॥
 अजोनी संभव जे काय । ते सूंवे जो व्हजें सही । हेला ।
 तो ए थायि जेव्ये । जाद नें एम स्मृती कही । हेला ॥ २७ ॥
 राय बोल्पो तेणी बार । अजोनी संभव छासो कही । हेला ।
 केमें काजो तेह । तेरो ए सुभयो इम सही । हेला ॥ २८ ॥

वेनि मरु काखेव । सु बाबया महीन सवे । हेवा ।
 सुबया महीन विचार । सारिवत् कर्म एव परम्ये । हेवा ॥ २६ ॥
 ते महीन पचाव । चापि तेह सहु मती । हेवा ।
 राज मुवन मरुतार । हुं तेई बई बाब्या बली । हेवा ॥ २७ ॥
 चीतवूँ सन मरुतार । के सोई सही पापयो । हेवा ।
 गंघ उठी छि अपार । दासी किछिए पाडा तली । हेवा ॥ २८ ॥
 बीजी कहि तेखी बार । माछी खाती राखी लोमणी । हेवा ।
 ऊपनो तेहथी कोड । ते गंघाव सखी सही । हेवा ॥ २९ ॥
 श्रीजी कहि सखो बेहेन । तह्ये ए भेद जाणी नहीं । हेवा ।
 राय जसोधर भारी । कूबडा साथि संगम करयो । हेवा ॥ ३० ॥

शील महारम्य

ताह हण्यो बिस देव । श्रेन पापि पिडलो । हेवा ।
 तीणि पापे हबो कोड । तरीर सवे मसी मयूँ । हेवा ॥ ३१ ॥
 शील न पाख्यो काख । तेह पाव फले रोव भयो । हेवा ।
 सही सुख कारख सील । सील संसार नूँ सारख । हेवा ॥ ३२ ॥
 सहु मुण सागर सील । शील शील सयल दुखवारख । हेवा ।
 तरीरह मंडण सील । शील ते दुरगति खंडण । हेवा ॥ ३३ ॥
 निरमल जस होव सील । शील संसार किडंडण । हेवा ।
 शील श्रीलोकें पूष्य । विकट संकट शील की टले । हेवा ॥ ३४ ॥
 सीले देव करि साख । सानि पुत्र बन रीष मलि । हेवा ।
 इस जाणी तर नार । शील वाली छटी ऊबलो । हेवा ॥ ३५ ॥
 जिन लहो संसार पार । शील सुख पाख्यो नीरमलो । हेवा ।
 शील न पाखि केह । सरनारी ते मूरख सख्यो । हेवा ॥ ३६ ॥
 धपकीरत पढो खेडा । शील कहि बतवहीयो कखो । हेवा ।
 उत्तम मुण्य जेकख । तीणि सखानल सुखीयो । हेवा ॥ ३७ ॥
 धनेक धपदा कष्ट । जाखे खेबवा खेस कीयो । हेवा ।
 सरन सुखी सुमार । बार सोन लता खेसि कीयो । हेवा ॥ ३८ ॥
 विमुक्त पूज्य दल । शील सापणो कीणि कोपीयो । हेवा ।
 शील शील खेह सखतार । त्रिणि कबो शील न साखीयो । हेवा ॥ ३९ ॥

नीफल हूयो तस जम्म । मनुख भव बली रासीयो ।हेल।
पाम्यो बीतामणी रल्ल । तेह सही भ्रांसि गम्यो ।हेल॥४३॥

पानी मनुख्य जम्म । बियाे बडो सील न प्रागम्यो ।हेल।
इम जाणी नरनार । सील तणो लोप न करो ।हेल।
जिम पाम्यु बहु सुख । संसार सागर हेलांतरो ।हेल॥४४॥

बूहा

कोल जष्ट होने से अमृतमती की बहा

तव तेमि सहू सांभल्युं । कोठणी तेरा बिचार ।
जो भ्रंता प्रष्टि पडी, मारीवत्त अक्कार ॥१॥

अलतो भरी पणि बालती । रातां पमलां पडंत ।
हवि पमलां पर भरधां । कूबडा चित्त नडत ॥२॥

वीछीयडा भमकावती । जाती कूबडा सूं जेण ।
ते प्रांगली मली गली पडी । पग्न बकी पापेण ॥३॥

घूंटी पानी राती हती । मांस गली बवो जाण ।
हाड उबाडा दीसियि । कांकसा चरण न ठाण ॥४॥

पग पीडी सडी पडी । नलीधि कीडा कोड ।
कुबडो चरतु जे हानि । लपास ऊपेर करी कोड ॥५॥

जांच भरी सासनी हती । घूंटण हुतो सुसोम ।
हाड उबाडा दीसियि । टानी तणो टप्यो बोम ॥६॥

नीसंब रयो परीबिसतो । कूबडो खेडतो जत्र ।
मांस मोटिम मली भई । हाडसाडरह्यो तत्र ॥७॥

उचरें नाभी ब्रह्म हनु । ते परधिय भराय ।
स्तन कूबडो कर अलतु । ते तो मली गली बाय ॥८॥

कंठ संल सनी हतो । हवि खातां मज न लाय ।
अभर कूबडो जे बूं बतो । मली गया नहींं ठाय ॥९॥

नाक तेहमो मली गयो । रण्यो डंडी बहु खन ।
भांच ते कुडां सनी हती । कूबडा जोतीं अघद्रष्ट ॥१०॥

कूबडा पग-बेणी जीहती । ते सीरबूं बडमर्हा ।
कुंडल जिहां जिहिकावती । मली गया तेह कर्ण ॥११॥

करे कूबडो आलंबती । ते कर रहां हाड ।
 दांत उभाड़ा सवा रिहि । डाकव आलैं रांड ॥१२॥

रूप एह बो हुतो किहां नयो । जोहोयो सरीर अपार ।
 ठाम ठाम कीडा कचवचि । पासि कूबडो वमार ॥१३॥

तेह परण दीडते हवु । हूं हरओ मन माहि ।
 हबि ए जोडूं सरपूं थपूं । देवतणी मत्य चाहि ॥१४॥

महिष मांस में रुचि नहीं । भ्रम बोली ते दुष्ट ।
 कुंभर असोमती मन रली । बलतु बोल्हो द्रष्ट ॥१५॥

अयोनी संभव ए बोकडो । पितरानि कहयो योग्य ।
 असोघर नि चन्द्रमती । एलि स्वनि पानि भोग ॥१६॥

तब तेसि जांच छेदाबई । मरु तरणी प्रतीव ।
 भूष तरस दुःखि पीडियो । पिर पिर पाडू रीव ॥१७॥

ते सेकी सराच करण । मुक्त निकलप्यु चंभ ।
 लाघु मातु सुते मली । सेई मुक्त नाम उत्तंग ॥१८॥

मितु काई लहूं नहीं । सहस्रं तीर्थेण गति दुःख ।
 मिथ्यातहि साफल सही । सहस्रं वृषा कहु भूष ॥१९॥

मांस मद्रवाहुनी

चन्द्रमती नु जीव स्वानर्ने सांप ।
 मरी हबोसितो भार के पाच ॥
 मरीनि आली के हबीसणै ए ॥१॥

असोमती कुंभर हणी के जाणु ।
 कसित देव हबो महीस बसणो ।
 बरदत साहा बेर भारवहिए ॥२॥

बरदत व्यापारी का महिष

तीरुणं तीर्थ नगण्ड जि राणो ।
 मोटी मबोडी शीलि मव माणो ।
 जातो हांथी सम मसपसौंए ॥३॥

मनु मोटुं मुक्त जोडूं बिलाल ।
 महिष हूं कडवो मबो कोण ।
 मजबुदी नाच ते कस करणो ए ॥४॥

भार भरी बरदत्त एक बार ।
महिल लाव्यो उजेणी मभार ।
जमण काजे नदी कंठ रखी ए ॥१॥

तेह सहीख तीहां बल मीलि ।
सीस उछालि बल बरगू लीलि ।
बली कराड खसिण बल करीए ॥६॥

तीसि भवसर राय तया घोडा ।
भाब्या तिहां चपल नहीं घोडा ।
रोडा देता बली मदी तटिए ॥७॥

घोडे एवं महिष की लडाई

बडो घोडो तीसि महीषि वीटु ।
पूरब जनमनो बैर परीठो ।
बैठो जात बैर बरगोए ॥८॥

तेह साहामो महीख बसी ब्याल्यो ।
जठर मध्य तस सीगब बाल्यो ।
माहाल्यो जम बैर वे गर्ले ए ॥९॥

ततक्षय रायनि हवू जाणु ।
सूपकार बोल्याव्या बाणु ।
प्राणु बरगो महीख बरगोए ॥१०॥

महिल घाण्यो ते राज दुभार ।
लोह तया भाब्या खीलाची भार ।
पगे वुठ करी बांचीयो ए ॥११॥

दोर बाल्यो ते नाक बभार ।
उबू मुख बांध्यु करव बोकार ।
मारबत्त पाप केम कूटसी ए ॥१२॥

हेठल पोकी भवन प्रजाधी ।
तीसि भवसरि एक बोल्थो हाली ।
बोली लूण हीन बगडू भाण्यो ए ॥१३॥

सहित को भून कर खाना

सारं जल बरीं येहेली कडाये ।

हेठल संग्नी बली बलाय ।

बलिं महील बखूरी बकारिए ॥१४॥

झरते ते बली नीर पाव करतो ।

प्रचीक प्रची तेहि लोक धरतो ।

नरक वेदना जिम दुःख सहिए ॥१५॥

जमेर प्रापी शक्ति कापि ।

सारिं जल छांटी दुःख व्यापि ।

पारें फल एहा दासव्यांए ॥१६॥

पीठनु कुकडु हण्यो जोय ।

देवी पूज्यानां फलए होय ।

कोयम करणु मिथ्यात असोए ॥१७॥

अप्य कों रह्यो हूं जोय ।

देखीं दरवार रघ्य बखूं रोय ॥१८॥

कोय न सार माहारी करिए ॥१९॥

चारम नीरे नीर न पाय ।

प्रमृतयो सराव करीं सखू खाय ।

बला राखा रामनी होकरषण ए ॥२०॥

बाह्यस बला मली सराव सरावे ।

राम कीहू संजली बराबि ।

न खाबि नाम माहारो लेईए ॥२०॥

बाँकि संभूठें पीठ पडाबि ।

पिडि पिडि नायि देवाबि ।

मिहिंसी प्रभाविक बन बखूं ए ॥२१॥

बासमू कावी कहि एव कही ।

राय रायनी मय सरवपी लहों ।

दिव करीहू शिम कूबर करिए ॥२२॥

सुगामीष नोई मुद्रिका दीषि ।
 आशान्न संकल्प करी द्विज सीषि ॥
 असोवर पामो भिष किहे ए ॥२३॥

मि जोम्बूँ माहारा तनूँ साहामूँ ।
 पण आभरण एक नही पाम्बूँ ॥
 दाम्बुँ दीदुँ गलि दोरडूँ ए ॥२४॥

मांस तरणा तेणे पिड पडाव्याए ।
 सज्जन साईं मांस खवराव्या ॥
 बली बाइवनि ते दीयूँ ए ॥२५॥

छेदवी छेदवी दीष सुलाय ।
 एणी पिर मीन पलादिक साय ।
 नाम ग्रह्या वलेई करीए ॥२६॥

ग्रन्थ खायि ग्रन्थ जो नव्य पामे ।
 बाइबेलोक चाल्या एम भामे ।
 कामें बाह्या ते प्रापणिए ॥२७॥

पुत्र जमे माता रही भूषि ।
 मात जमें पुत्र थाय दुःखी ।
 भूमा यकां कोहो किम लहे ए ॥२८॥

पूरव भव प्रापणा संतोष ।
 आद्व करी देतां हृत्ति दान ।
 किराजिनें प्रापण भूक्षा सहीए ॥२९॥

एशि दृष्टांतिं पूरव जे मरया ।
 पाष बुध्ब लेई भवतरया ।
 निज करणी सह भोषणि ए ॥३०॥

मारीदत्त मह्ये काईं भवसष ।
 मिध्यात पापि पिर पिर सष ।
 दष क्षुधा भवनें वणूँ ए ॥३१॥

कुमर तरणी हूँ दृष्टि पडयो ।
 जाणो मम मरु कालज नडयो ।
 कह्यो वचन सुपकारनिं ए ॥३२॥

महिल बनि तीहा बेकीयासो ।
बेदखिंए छालाने जासो ।
बाणी सुणी मऊनि सेई बयो ए ॥३३॥

अबन अहि तेसि पिर पिर बास्यो ।
अबेसन कूकडें जासो बैर बास्यो ।
बास्यो महिल सूं बम बरिए ॥३४॥

नमरी बाहिर कलीहां बांडाल ।
बर बरां दीसि तेहू चूनाल ।
बाल बरम अस्ती भरबां ए ॥३५॥

अस्ति तयां छि डांडा लाल ।
ओटा अस्ती तणी बार साल ।
पालल अपरि बरम बीटी ए ॥३६॥

बाब्या ते तयां पसूबा नेस ।
रवीर मांस करि रछां बस बस ।
कसमसे मन बीठे बसूं ए ॥३७॥

पसूबां करंक दीसि ठाम ठाम ।
आब्यानि ते बेसयां देबाय ।
बाय बयोडीना पाटलाए ॥३८॥

पुंछ बाहारडी बमर बबराम ।
मांस तयां डन छि बहु आय ।
लाव कूतरा करं पूबडीए ॥३९॥

बुध कब समली बसूं फरए ।
मांसनें लाई नें कस कल करए ।
तीसि करि अति बीहामलूं ए ॥४०॥

आग महील बेहू सभें कूबा ।
तीहां कूकडी बेकिहं बाही जा ।
उदर अवन दाबा बसूं ए ॥४१॥

कूकडी तब हवीं नारछंडी ।
संभारें सब जाना मंडी ।
ईहां तक मीसरी पडपां ए ॥४२॥

बाँडालणी कचरे संपन्नो ।
सकभूड हं फेहं फायो ।
काया लह्या केटले बीने ए ॥४३॥

माय पाँस बहूणा नीपंता ।
धीडां कूटां पाखें संपन्ना ।
ह्नु हलू तिहां बां बाचयां ए ॥४४॥

माय बहूणां भह्ये ऊळरयां ।
करमें अपारज दुःखी करयां ।
भूख तरस पीडघां सही ए ॥४५॥

बाँडालणी ऊपरें कचरय, नाख्युं ।
तव बेहुए काई काई बोल भांजु ।
पनें कचरो तेणी खोलयो ए ॥४६॥

भह्यो बेहु कूकडीं तेणीयि देखां ।
रुडां गरज भाबंता लेजां ।
कर घरी चिर लेई गई ए ॥४७॥

कण खचराबी तेणीयि पाल्यां ।
छोक्नी पेरे संसाल्या ।
हींजीयि कुमीनें खायता ए ॥४८॥

जेहू एवडो जसोचर राणी ।
बाँडालणीयि पनें ह्ण्यो जाणो ।
आणो मारीदस मानें पाप फल ए ॥४९॥

सिर पेर छत्र चमर बीजतो ।
ते कचरि चरणें खजंतो ।
जंतुनि एज पाप पीडंतु ए ॥५०॥

राय सारंतहूं हाव कासंतु ।
रतन पावडीयि मही मगहालसी ।
बाँडालनीयि ते पणि ह्ण्यो ह् ॥५१॥

रतनभूम्य बलहरं पिर रमतो ।
लीला करतां चिन नीगमतो ।
बमतो हींहें हूं वेड आंगणे ए ॥५२॥

सरस ब्रह्म पंचामृत जमली ।
ममर पलंग कंठिरी तिमली ।
समती कंडाल चिर बेवना ए ॥१३॥

फूल मुकुट बलि फूल हार ।
सुगंध वस्त्र तनु लासो अपार ।
ऊकरहेते हूं पडी रहए ॥१४॥

अमूलक भीषां बस्त्र पहिरतो ।
अनेक भूषण हूं बेह भरती ।
ते हू सीतादिक दुःख सहए ॥१५॥

मिथ्यात जीव हिंसा परचावें ।
जीबडा कोण कुण दुःख न पावें ।
प्राये न कुण कोण बेवना ए ॥१६॥

इम जाणी मिथ्यामत टालो ।
जीव दया मन बच क्रम पालो ।
जिम दुःख जाल पडो नही ए ॥१७॥

बस्तु

बेह कूर्कट बेह कूर्कट बाध्या तिहां जाल ।
गती सीखा सिर सोमती । पीछ पुंछ पांख पोढी होइय ॥
पाछली राति तरु पडीय । कूकू कूहू बोसंत सोहीय ॥
कमी कीटक बणूं साबंतां । बाध्यां तीहां विचार ॥
पापे पापक बाधवी मारिवस अचचार ॥१॥

श्री तीर्थंकरसन्मुखांबुजमकाश्वेताममवावातिनी ॥
या माता जित्तिवाहनी सुवरदा वेणुप्रमालाधरा ॥

पुस्तकाभूषित हस्तकामिनिकमा हाराबरा भूषिता ।
श्रीदेवेन्द्रसुबिक्रमसुतपदा कुर्वाणु सदां भवसां ॥

इति श्री यशोधर महाशय चरिते । रासभूषणमयी काव्य प्रतिछेद्वे ।
भूदेव कवि श्री विक्रमसुत वैवेक्य विरचिते यशोधर चन्द्रमती ।

रमित कृनिम कुबकुंठ टनीदसुतपाव प्राप्त दुष्ट संक भव अमल ।
बसुंनौतसम कथींअचकारः ॥

सप्तम अधिकार

भास पटुललकीनी - रास रामगिरी

कोटवाल का राजा के पास आना

तिरिण अरबसरि तिहां आवयो । पटुलडीए ।
 रायतरणो कोटवाल । सलूंणडीए ।
 अह्णो दीठां तीहा तिरिण रूबडा । पट० ।
 हाथे लीषां ततकाल । सलूंणडीए ॥१॥

लेई करी ते चालयो । पट० । रायनि भेटनि काज ।स०।
 राजा आमल आहे बरघां ।प०। हरघो जसोमती राज ।स०॥२॥

अह्ण दीढी मोह उपनो ।प०। बली बली जूई राय ।स०।
 करे करी अह्णो पपू आलया ।प०। पूरब स्नेह पसाय ।स०॥३॥

ये अह्णो पाली पोढो करघो ।प०। ते अह्णो करे सभाल ।स०।
 अबलीगत जूउ करम तणी ।प०। ते करि अह्ण प्रतिपाल ।स०॥४॥

राय रली आयन बोलीयो ।प०। भलो कूकडा सूष ।स०।
 राखो राय कही अती रुडी परे ।प०। भलां करमेतो यूष ।स०॥५॥

कोटवाल नें अह्णो सोपया ।प०। पोढां करे वा काज ।स०।
 कोटवाल बिर लेइ गयो ।प०। राख्यां पाबरा ठाम ।स०॥६॥

कण चरणू अह्णो अति बरणू ।प०। पीयू रुडू नीर ।ह०।
 दिन दिन डीले बाषयां ।प०। यौवन पाम्यां धीर ।स०॥७॥

टूंकडी कोटवालूं सो अनूं ।प०। चरण कठण कंटाल ।स०।
 माहोमाहि बडंतडा ।प०। रीस भरयां जेम काल ।स०॥८॥

मधुरि स्वरि बली वासतां ।प०। राती सीखा ललकंत ।स०।
 कोटवाल बिरे सहू जणा ।प०। अणूं अह्ण अतन करंत ।स०॥९॥

बसोमती का बनकीडा के लिये प्रस्थान

एकबार जसोमती ।प०। चालु बन संभार ।स०।
 अतेउर सूं मररली ।प०। क्रीडा करवा उदार ।स०॥१०॥

पढो बजाव्यो ते बेला ।प०। ऊमह्यो नाव नीसाण ।स०।
 भागो अरी हूदब घट ।प०। डलया बेरी प्राण ।स०॥११॥

श्री नारी नखन गल्यां ।प०। ए मोटूं आबंभ ।स०।
 अवर हृष्या अवर भागा ।प०। अवरबी गल्यां अंभ ।स०।।१२३।
 ह्य गय पार न पामीयि ।प०। रय बजा सेहे कंत ।स०।
 पाला बहु तव धनमसें ।प०। चसुविष सैन्य महंत ।स०।।१३।
 वसंत क्रीडा रमबा चलयो ।प०। जसोमती कुमार ।स०।
 अतः पुर आदर बरयो । ।प०। साथे कुसुमावली नार ।स०।।१४।
 राव आलंनो जाणीवो ।प०। बनि आल्यो कोटवाल ।स०।
 अहूँ बेह छूं तो पांजरे ।प०। ते लीछूं सु विसाल ।स०।।१५।
 वनमांहि छि रायतणो ।प०। सात बरयो आवास ।स०।
 डेरो आंगलि बिस्तरयो ।प०। तिहां अहूँ पांजर निवास ।स०।।१६।

घन के फूल फूल

कोटवाल तब जोअंतो ।प०। अनेक तर छि रसाल ।स०।
 आबा रायणा आबली ।प०। राय आमली विसाल ।स०।।१७।
 कोठ करणीके कदमदी ।प०। लीचूं साकिर लीचूं ।स०।
 लीब बकायन बीजोरी ।प०। फरास फोफस में अंबु ।स०।।१८।
 राति फलें फलया बड ।प०। गंभीर छाया अपार ।स०।
 पील पीपर आरोली ।प०। आलामी बडीसार ।स०।।१९।
 नालकेर लजूरडी ।प०। ताल तमालहें ताल ।स०।
 अलोड बदास नागकेसरा ।प०। सुकिड तर गुलमाल ।स०।।२०।
 मोगरो मालती मंदार ।प०। मदधा मंडा मचकुंद ।स०।
 पीला फलें फूल्या चापला ।प०। पाडल बलसरी हृद ।स०।।२१।
 जाई जूई जोई जूखडी ।प०। रूपमंजरी गुलमाल ।स०।
 केसू जासू अरापराणी ।प०। केसर टगर गुलमाल ।स०।।२२।
 बकुल केबडो कैलकी ।प०। स्थल कमल अलोक ।स०।
 पंथीयडा बंध देलता ।प०। आये अवरहूँ करि लीक ।स०।।२३।
 ठाम ठाम घर बैलना ।प०। मंडप फूल बडील ।स०।।
 बेधे अवरहूँ ही हरसली ।प०। राहो अंवारि काम भील ।स०।।२४।

धरती देवती सही ।प०। सेवत्री संतुकार ॥स०॥
 बंधकराता फूलीया ।प०। करी भमरा रण भरणकार ।।२५॥
 केलवणी कोडाभणी ।प०। द्राख मंडप विसाल ॥स०॥
 एलचि फूलि लची रही ।प०। मरी भूबका गुणमाल ।स०॥२६॥
 नागबेलना मंडप ।प०। छाया सीतल होम ॥स०॥
 ईक्षु बंड बाडी करी ।प०। भरहं बहू पेर जोय ।स०॥२७॥
 रायतणी प्रतेउरी ।प०। झाकी कचुकी साथ ॥स०॥
 पालखी मोती भू बका ।प०। वक्ष ब्रीखा बहू भात ।स०॥२८॥
 राय श्राव्यो बन खेलवा ।प०। ललवारू सजूत ॥स०॥
 हाधीयडा बहू भागल ।प०। रथचालिहा सजूत ।स०॥२९॥
 सरागारथा धर्या जलमती ।प०। गज भवगाह छि कोटि ॥स०॥
 सामत छत्री परवरयो ।प०। भागल वाला कोड ।स०॥३०॥
 हय बेसी राय चालीयो ।प०। उजल छत्र सोहता ॥स०॥
 गज भवगाह चमर डालि ।प०। जाणे इंद्र मोहंत ।स०॥३१॥

राजा की सुन्दरता

के रूपि काम कहू ।प०। के नल कहू कुवेर ॥स०॥
 नाग कुंभर कं चांदलु ।प०। धीर गुणि कहू मेर ।स०॥३२॥
 सायर समए गंभीर ।प०। धिम चीति नरनार ॥स०॥
 ठाम ठाम नृप जोभंती ।प०। करे ए जय जय कार ।स०॥३३॥

राजा की सेवा

एक मोती डे बधावती ।प०। एक ते भामरणी लेय ॥स०॥
 एक ते फूलि पूजती ।प०। एक ते आसीस देय ॥३४॥
 एक ते लाजा बीखरती ।प०। लेती नृप गुण एक ॥स०॥
 जीवनंद एक कोलती ।प०। एक ते विनय विवैक ।स०॥३५॥
 नगरी पोलघो तीकल्यो ।प०। दीदु तव उद्यान ॥स०॥
 पखी साव सोहामखी ।प०। बन जाणे दीधि मान ।स०॥३६॥
 भ्रीखोबाय तरवर लहिकि ।प०। फूलहू रज ऊढाय ॥स०॥
 श्रमलीन जाली राय ते ।प०। ए बीजरो चालि वाय ।स०॥३७॥
 फूल पडि तिहां परी परी ।प०। उद्यान आखे बघावनी ॥स०॥
 बलहर कलस सीना तरु ।प०। सिखर च्चजा लिहिकावि ।स०॥३८॥

बूबरी बरखुं बरखी बमचने ॥५०॥ बासो राज गुल पावि ॥६०॥
 नेडी खोटी नतबारखा ॥५०॥ राय देखी सुल पावि ॥६०॥३३॥
 अथ बकी राय उत्तरधुं ॥५०॥ लील अवासि भावि ॥६०॥
 सर्व सन बिदा हवी ॥५०॥ कुसुमावली मने भावि ॥६०॥४०॥
 राशी सुरंमे रमि ॥५०॥ टुलडीए दाखि भासन मेद ॥६०॥
 सुरन रमसां वम हवो ॥५०॥ पवनें नीममयो वेद ॥६०॥४१॥

डूहा

कोतवाल द्वारा भूमि हर्षन

कोटवालि उद्यम करी । जोमू सह आराम ॥
 असोक वृक्ष हेठल रको । मुनीधर दीटु ताम ॥१॥
 नासा अने थापयूं । अदोन्मीनीत नेत्र ॥
 शुद्ध चीरूप ने ध्यायतो । अम्यंतर पवित्र ॥२॥
 अतरदृष्टे मीहालतो । अनोपम आत्म स्वरूप ॥
 अत्रु भिन्न समसेखतो । समता रसनु रूप ॥३॥
 वाकीस परीसह जोकतो । मुक्तो चोवीस संघ ॥
 रत्नत्रय करी मंडीयो । सुगती रमा सुरंन ॥४॥
 दश दिशि अंबर पेहेरखो । मलमलीन तेह वात्र ॥
 ध्यान करी संकरधी । जासो दया नो पात्र ॥५॥

कोतवाल की चिन्ता

कोटवाल भावमीयो । पिता मने बहू पाय ॥
 मरु ऊनेर बखूं लीजसे । जो देखते एह राय ॥६॥
 ए नाचो अमंगलो । असुची वीसे एह वेह ॥
 किहां भी ए अही भावयो । लाज तखो एह मेह ॥७॥
 वेद भरस बकी वेगलो । अणु अणु नंदे वेद ॥
 ए लमयो जाय अही बकु । ती जाये मुक्त वेद ॥८॥
 एहनि नीकलवा तखो । मांडु काई उपाय ॥
 काज सरें जेम मरु तखूं । ए अहीथी जाय ॥९॥

कोतवाल की अज्ञान अज्ञि

अज्ञ भीती भुवि आवले । वेठो कपट अज्ञान ॥
 विषं बक बिचि नदी तटि । अनि वीनु अनुराग ॥१०॥

प्रणाम करघो बिनय करी । भव्य जासी मुक्तिराय ॥
धर्मबुधि सेहनि कही । कपट रहीत गुण ठाय ॥११॥

भास चौपईनी

कोतबाल मुनि का उत्तर प्रत्युत्तर

चंडकरमा बोल्यो कोटबाल । धर्म बुधि तह्यो कही विसाल ॥
ते ब्रह्मर्षे छि सदा मुनी जाण । भेद कहूं तेहनो बलाण ॥१॥
धर्म अनुष पर्य चगुण होय होय । बाणह मोक्ष छे नित नित जोय ॥
तेह भरी प्रहो धर्म इम लहू । कबण विशेष वचन तह्यो कह्युं ॥२॥
मुनिवर बोल्यो मधुरीय बाण । नामि अरथ न होये जाण ॥
हेम धतूरो कनक कहेवाय । पर्य गुण जाणी वीसेख जणाय ॥३॥
मुनी कहि धर्म भेद छि भला । धीरर्थ सांभलो कह्युं केटला ॥
ससार माहे पडतां जेह । धारे धरम कहीजे तेह ॥४॥
वली तह्यो सरीरें दीसो काक्षीण । वस्त्र रहीत कां दीसो दीण ॥
मल मलिनकांतनु तह्य तणो । चालो वस्त्र भूखण वीयु धणो ॥५॥
भूम्य सयने खेदायि देह । सीत उष्ण लागि वली एह ॥
स्नान वीलेपन धर आदरो । फोकि कष्ट तह्यो काय करो ॥६॥

मुनि का उपदेश

मुनीवर बोला मधुरीय वाण । सांभलो कोटबाल सुजाण ॥
वस्त्राभूषण धर भवे भवे लह्यो । पर्य रत्नत्रय कहीअन प्रह्यो ॥७॥
सूं ध्याऊ जे कह्युं वचन । ते भेद कहूं सुणो सञ्जन ॥
जीव कर्म मल्या अनादि काल । पाखण हेम संजोग गुणमाल ॥८॥
पाखण धकी कनकउ धरे । तेहनो काज धणो जेम सरे ॥
तिम आतमा कर्म एकठा मल्यां । ध्याने करी करसूं वेगलां ॥९॥
तेह भणी आतम ज्ञान स्वरूप । अखेद अत्रेद अनंत अरूप ॥
चेतन तेज तणो पूतलो । जनम मरण भयधी वेगलो ॥१०॥
एहवो आतमा ध्याऊ जाण । वाक्खूं लहवा सत्त्वत ठाण ॥
अजरामर पद लहवा सार । असह दुःख छे ए संसार ॥११॥
अनादिकाल जीव भमती जोय । पुरुष नारी नपुंसक होय ॥
चंद्र सौम्य हवो जय समतूर । के वारे राहु सभ के वारें सूर ॥१२॥

कै बार राय प्रतापह ठाय । कै बार पालो प्रामल पलाय ॥
 कै बार काम रूप एम जोय । रूप बिहीण कै बारें हीव ॥१३॥
 कै बारें उत्तम कुल हवो । कै बारें नीच भीम विम जूवो ॥
 कै बारें हवो जीव जीव बलीण । कै बारें राफह वो दीण ॥१४॥
 धार्यसंड श्लेख संड प्रभार । नरभव पांमो जीव कै बार ॥
 बनहीन हवो बली धनवत । हवो श्रीत्री कंडाल दुरंत ॥१५॥
 भवगति कुकह जासो कोटवाल । सोक विधोष सताप बिकराल ॥
 तिर्येच गति बाध सिंध ज हवो । तृण चर रंजाणी जीव सूवो ॥१६॥

नरकों के दुःख

रत्नप्रभा आदि नरक उपन । छेदन भेदन वसू संपन ॥
 नारकी माहोमाहि छेदे तन । मूल धरणी मले नही सीध अन ॥१७॥
 तरसें जाणे सायर सोलवो । पण पावये नही जल विदूवो ॥
 गीरी समो लोह गोलो गली जाय । एहेवू उष्ण ने सीत सहिवाय ॥१८॥
 सहश्र बीछी बलवायो धरणो । दुख ऊपजे मृतीका हंस तरणो ॥
 सूला कंटक मडित मही । इम भोगव्यां जीवें पाप फल सही ॥१९॥
 मृत्तिका गंध सही मध्य जाय । मूखें बल यो तेह ज खाय ॥
 वेतरणी रुधीर मय नीर । पीनो बल तो पाडय रीर ॥२०॥
 करवतें नारकी छेदे काय । ए कतरवू ऊहू करी पाप ॥
 एक भ्रमन थंभ सूं करे भेट । साते व्यसन तरणां फल नेट ॥२१॥
 बलयो असीपत्र बन तलि जाय । पत्र पडंतां छेदे काय ॥
 गिरि प्रत्येगये गिरि सूटी पडे । जीव नें नरकें कर्म एम नडि ॥२२॥

तिर्येच गति के दुःख

बली तिर्येच माहिं भमत्तो जोय । जलचर बलचर बली बली होय ॥
 नभचर गरूड भेरंड आदि भम्यो । मूल तरस छेव भेदे दम्यो ॥२३॥

देव गति के दुःख

दुरयति पांमो मानसीक दुःख । इम भमत्तो किही नही लह्यो सुख ॥
 इम बंधिष कोहो शती संसार । मंडवें कर्म बट्यावो अपार ॥२४॥
 बहु परी वेख लेवाडे जाण । जीव नृत्यकीनि नाचाने बजाण ॥
 इम जीवि जीव विम बली मरे । यावर जंभव माहिं एम फरे ॥२५॥

संसारो जीव

अत्र संसारपी बीहू बरू । बिलय सीस्य नेहू अवनयू ॥
 बारभेद बली तप भावकं । पर घर पासुक भीखा ककं ॥२६॥
 बनें नीरंजन ठामे बसू । प्राणम तस्व बरू अन्वयू ॥
 धर्म कहुं बली मीनि रहू । निद्रा जीतू मोह निवृत्तू ॥२७॥
 क्रोध मान माया लोभ त्वरू । कपट हास्य रति अरति न बरू ॥
 चिन्ता सोक उद्वेग न अरू । मद तरणो मद हूँ बूरि ककं ॥२८॥
 श्रंख हूँ नारी नीहालवा । हृदय सून्य अवगुण जाणवा ॥
 राम गीत सूँ बहे रो जाण । पर अपवाद भूंगो बलाण ॥२९॥
 कुतीरथ जावा ने पंगली । कामकेलि बिलय वृंदलो ॥
 आश्रय्यो अचेतन चेतन तनु होय । चेतने बहीयि सकट इम जोय ॥३०॥
 वृषभ बिना सकट नबि चली । तिम तनु चेतन सरिसोमलि ॥
 जीव अन्व कलेबर अन्व । इम लहि दिगंबर हवो अन्व ॥३१॥
 परने न नीतू मोक्ष ईछंत । ध्यानामृत रस पीयूँ नचीत ॥
 प्राप्त रीद्र दोए मूकुं दूर । भीलूँ धर्म मुक्कल ध्यान दूर ॥३२॥
 केवली कहयो लीयूँ आहार । वृषूँ हूँ पापअव द्वार ॥
 इम यद्दी बल ने जीतकं । कर्म कलंक नहीं छीपकं ॥३३॥

कोटवाल का पुन प्रश्न

कोटवाल इम जपे चंग । गोस्तन मूँकी दूहि कुल मृंग ॥
 ठेली कनकवाल मिष्टान्न । कबल करि बीजा पिर मल ॥३४॥
 प्रत्यक्ष ससार सूखनि त्वजि । मूरख जे मोक्षकारणे भजि ॥
 विण छवि छाया नबि होइ । विण जीनें मोक्ष पने किये ॥३५॥
 फोकि देह संतापु भाव । मुळ कह्यं करु तु सीकि काज ॥
 देह जीव ए भिन्न न होय । जिम तर कुसुम परीमल जोय ॥३६॥
 फूल बिनासे मंच बिनाश । तिम तनु नासे जीव निरास ॥
 भूत बीहो बंधायो देह । पवन योग यंत्र पिर करे एह ॥३७॥
 मुड महु छाल उदक थावडी । मलि उन्माद सक्ति तिम थाडी ॥
 तिम ए जीव वेहे धार कहिवाय । किहां थी न प्रावी किहां थी न जाय

दीप सिका पर्वसे सोप । कही ने कबलु दिसे ते जाइ ॥
 तह लोपार्थे लीपायि काय । तिम तनुं बाटां जीव तः अयः ॥३६॥
 पवन ते पवन करीसो मलि । मानो सत्यः जेव ए दुःख इलि ॥
 जीवन संकायन बनु काय । फीकि एहवी प्रोतस पय ॥३७॥
 सुक नलीका पर बँडो जेत । बिरल बंभि बँव केवे पय ॥

मुनि का उत्तर

मुनीवर बोल्या बोझ बीचार । कछुं ए जीव मस्को भूत च्यार ॥३८॥
 माटी पात्र जलिबली भरयु । पवन जलीत काय ऊपरे बरयो ॥
 च्वार मलि तु उपयि जीव । माटी पात्र तो होय अलीक ॥३९॥
 जे बुद्ध धादि कछु हृष्टांत । ते तुम्हनि छे मोटीं प्रांत ॥
 जीव चेतन न्यामनु भूतलो । अचेत नए हृष्टांत न मनो ॥४०॥
 वली मय शक्ति चेतन ने जीव । काठ पूतला नें मय नय्य होय ॥
 मूल बंध हृष्टांत जे दीव । अचला काल गोपाल प्रसीद्ध ॥४१॥
 फूल त्वजी बंध तेल तु रमि । अवर देह तेइ तिम जीव भवे ॥
 जो पूर्व भव जीवनें न होइ । लीधु बाळह तु धावे न कोय ॥४२॥
 जण्डू बाळह जासि स्तन ठाय । अल सीसण्डु बसनिसे काय ॥
 जासो काल अनाद जीव भयें । करयें सीसबनो काल नीमनि ॥४३॥
 जीव तनुं प्रति पूजूवा जाणवा । साधु धसाधु भेद बालवां ॥
 एक राव एक किकर काण । बाहन एक बडीयां बग्राण ॥४४॥
 धनवंत एक एक धन हीन । एक सुली एक दीसि दीन ॥

कोटवाल को सुन संका

कहि कोटवाल मुनी प्रवधार । चोर एक बरयु वेइ अकार ॥४५॥
 लाल विडो न राजको ठाम । त्याहां बसो चोर मरी बयो लाम ॥
 लीजन पकयो एकज रती । जंतु मनो कुण मरनि मली ॥४६॥
 एक चोर सोखी नारयो । बली सोखी तें तु चारयो ॥
 हलयो न चारे हरी नवार । को किय बीवः त्रि तनु मकार ॥४७॥
 एक चोर करयो बंध बांध । सोयो कुण लपकी अंध ॥
 जीव्य जातो पीठो तेह संधी । एउ उत्तर ननुयें मुक भण्यो ॥४८॥

मुनि का उत्तर

मुनी बोलि एक भ्राणी मजूस । संख सहित नर रह्यो ऐस ॥
 लाक्षा बीडी तीखें संख बाजयो । लोक कानें सबद ध्याजयो ॥५२॥
 छीद्वन पढयो तीणि लगार । स्थूल शब्द बली छे अपार ॥
 नाल ने भडके गीरीवर छसि । आप अमूरत केम हृष्टी प्रसि ॥५३॥
 चर्म मसक ठाली तो लेय । वायू भरी पुनरपि तो लेय ॥
 भार समान जो पवन प्रचड । तरु जेऊ मेले करे खंडो खड ॥५४॥
 रूपी वायु जे नव्य देखाय । आत्मा केम दृग गोचर थाय ॥
 समबी काष्ठ खडो खंड करयो । जियो अगनी पश नही नीसरयो ॥५५॥
 जे मन तरुवर नगर वहेय । एहेवा अगत ने नयण नग्रहेय ॥
 मूर्ति पदारथ ने दृष्टी ज ग्रहे । क्षयोपसम योग्यता ए लहि ॥५६॥
 खडग धार तीखी नभ न छेदाय । अपल बालके नीज लघ न चदाय ॥
 तीम नीर्मल ए हृष्टि छि अणी । आप रूप न देखि आपणी ॥५७॥
 नव्य देखीयि ते नथी जे कहि । सहू भूल्लं माहिक उपण लहि ॥
 मास तात लघु पण थी भूर्वा । बिण दीठि तिणो केम मानवा ॥५८॥
 मूत प्रेत ब्यंवर राक्षसो । बिण दीठि छि केम भाखसो ॥
 दूर आवतो सबद न देलाय । पण कान सूं मलयो थी जराय ॥५९॥
 इंद्रि निज निज बिखय यहैवाय । अमूरत ज्ञानीनिबी लय थाय ॥
 ना केसू कुण्डि रूप देलाय । काने सूं भोजन स्वाद जराय ॥६०॥
 जीणीयि निज निज सही जोग्यता । रूपीयि रूपबी जोग्यता ।
 सूक्ष्म आप स्थूले न जराय । हाथी सूंठे राई न लेवाय ॥६१॥
 तिल माहि तेल मलो जेम रह्यो । दूध माहि यम घृतित कछ्यो ॥
 काष्ठ माहि यम अग्नी समाय । तिम तनु माहि जीव जनाय ॥६२॥
 सूरज कौति माहि जिम अग्नी । चंद्रकौति जल रह्यो विलग्नि ॥
 पाखाण माहि जिम छि प्रात । तिम तनु माहि जीव विस्मात ॥६३॥
 सुखदुःखादि दृष्टांत अनेक । बेतना लक्षण जानि विवेक ॥
 बुद्धि व्यापार जू भू प्राजोय । ज्ञातमा उपजौ नमय होय ॥६४॥
 केम जीव बेहासर करि । किम संसार माहि ए करि ॥
 मुनीवर कहि सभजो थीर बिस । जिम होइ तह्य जीवह हित ॥६५॥
 घाठ करब अठतईल सुअकृत । अनादि मल्को पण एहंछि विकृत ॥
 ज्ञानदसोनाबरस ए वेहो । वेदनी मोहनी प्रामुखि मेह ॥६६॥

नाम मोक्ष कहीयि अतराय । आठ करव आगले कहिबाय ॥
 भेद कहू एहना बेनला । संक्षेपि जाणि जो मला ॥६७॥
 ज्ञान आचरें ते ज्ञानाकरण । पंच प्रकारि तेह विस्तरण ॥
 सिद्ध इष्टपक्ष नश्य बैसीयि । देवमुख परी कल्प लेखीयि ॥६८॥
 दशनाबरण देखावान केय । दरसन आचरे छे नबमेव ॥
 इष्ट वस्तु लेथी नव्य पासीयि । राज पोसीयागी फिरवासीयि ॥६९॥
 सुख दुख नि जणावि जेह । बे प्रकार वेदनी कही तेह ॥
 लडगधार मधुलीपत छि जेम । सुख दुःख जीवि लहीयि जेम ॥७०॥
 आत्मार्नि मोहि जे घरण । मोहनी नाम कहीयि तेह तरण ॥
 भेद अठावीस तेहना ते सही । मदिरा माण्वा कोइ बपिरत कही ॥७१॥
 आयुकरमि भव माहि राखीयि । च्यार प्रकार केवली भाखीयि ॥
 हड चाल्या नरनी विर जोय । भवशी नीकलवा नही वीयि सोय ॥७२॥
 नाना रूप कारण ए लह्यो । तायां भेद नाम करम कह्यो ॥
 चीजक विर परिवले चीत्राम । नाम करम एहवा परीणाम ॥७३॥
 गीत करमना छे बे भेद । ऊंच नीच जाणो त्यजी भेद ॥
 कु भकार भाजन परी जेम । जीव ऊंच नीच कुल लहें तैम ॥७४॥
 इष्ट वस्तु पामता जोय । अंतरकरि अंतराय कर्म होय ॥
 पंच प्रकार आगम माहें कह्यो । मंबारी परि गुणें ते लह्यो ॥७५॥
 ए आठ करमि करी ए जीव । अनाद कालनी बीखो अतीव ॥
 मिथ्यात अविरत प्रसाद कथाय । बंध हेत कह्या मन बच काय ॥७६॥
 एकाते प्रथम मिथ्यात बिचर । अल अमत्या ते यानि बजार ॥
 केम लटमास अवधि कहिबात । पुण्य पाप कुण्य लहि मात तात ॥७७॥
 विपरित ते जे बयममुखे कहि । विधि वीसेखि ह्रीता नें यहि ॥
 सात अ्यसन आरुब माहि प्रादरि । ते केम पर तारि आप तरि ॥७८॥
 खर कुतर जो महीकह तरागो । तरुवर पंचद बीडीनो अलागो ॥
 विनय करि कुण्यविरा देव कही । विनय बीध्याह कही ते कही ॥७९॥
 नर मिमुगति स्त्रीनि सिं नही । यहू आदि संसथ रहि ग्रही ॥
 धर्म माहिं करि खेहेह । संख्य मिथ्यात कहीपि तेह ॥८०॥
 अज्ञान मिथ्यात पंचेदी हस्यो । एकैदी मोडतो करण करिण ॥
 देव धर्म प्रतिमा लखेद । पंच पापना कह्या भेद ॥८१॥

श्लेष मान भाषा ने लीय । श्लेष प्रकार दीयि अब बोध ॥
 कूट कपट बली काम विचार । पंचेंद्री बली विज्ञान विकार ॥८२॥
 कृष्ण नील कापोत जे नाम । जीव ने कृष्ट करें परिणाम ॥
 भासंरोद्र ए बहू दुर्घानि । जीवनि भवाडिए भवरान ॥८३॥

प्रकृति स्थिति अनूभाग प्रवेक्ष । बंध तराओ भेद कहुआ विशेष ॥
 ईशैं बंधायो जीव बखू भये । चारों गति माहि काल निगमें ॥८४॥
 नाम करम नाना रूप करि । भानुपूर्वी मस्थंतर धरे ॥
 जीवनो ऊर्ध्व गति छे सभाय । कर्म बलि विधीन गत्य जाय ॥८५॥
 ऊर्ध्वगमन जेस भगनीही जाल । झह्यो पल्ली बाध धधोनि बिसाल ।
 शयबा मंकड संकलि भरघो । जिम फेरवीयि तिम जीव फरघो ॥८६॥
 संहार विस्तार कर्म प्रमाण । कूयू भासमो बली हाथी समान ॥
 जिम लघु घट माहि दीपज धरघो । घटमाहि धरघो घट उद्योत करघो
 ॥८७॥

ते बडो बेहते बडो व्याप । कह्यो केवलीयि निःपाप ॥
 पाति करम क्षय होय ए प्राप्त । दोष रहीत मुण त्रिभुवनि व्याप्त ॥८८॥
 जीवनमुक्त मईत भगवत । सर्वज ते कहीयिए संत ॥
 तसि भागलि कह्यो जेह । जीव स्वरूप कहो एगहा एह ॥८९॥

द्रव्य नये छे आत्मा एक । पर्याय भावे कहीयि अनेक ॥
 कर्म कलंक रहीत जब बाय । अछेद अभेद अनंत कहिबाय ॥९०॥
 नित्य कहियि प्रथिं सही । पर्यायि अनित्यज कही ॥
 नित्य कहितां नव्य भरण न होय । अनित्य कहितां गमन सम जोय ॥९१॥
 जिनवर कहि जीव नाना भेद । छे काय एह भवि भवि सखेद ॥
 एक रीसास कहिमें एक साध । एक शरीर धने एक न व्याध ॥९२॥
 एक छे गुरु अनेक छे सीध्व । एक मूलें अनेक छि दक्ष ॥
 एक छे राय अनेक छे शूर्य । एक करि पुष्य अनेक अक्षर्य ॥९३॥
 रागद्वेष बिलई कहि जेह । बचन प्रमाण न कहीयि रोह ॥
 जे पितृबनं नाचंतो भवि । निज महीला सूं रंवे रमि ॥९४॥
 जेह करे गदा सकति त्रिसूल । श्लेष कपट के राखे झूल ॥
 रोह बचन प्रमाण केम होय । स्वयं सीध्व भागम एम जोय ॥९५॥
 लोक ए स्थिरकेम कहिबाय । न करे कार्यं तो वास न थाय ॥
 बंधायो ते कहीयि नभू काय । गुर सीधादी भेद न जंणाय ॥९६॥

ईति सुखि कारज जो करयो । ईत करीर कोखे बनी करयो ॥
 बिल तनु ईत जो कारज करे । बिल तनु बेध काखी उखरि ॥१७॥
 मनन फले कंठे हारि सु होय । व्यथ्या सुत जाती ए जीव ॥
 सत सु बह बलुष कर बरी । सुनतुप्ला जल नाही करी ॥१८॥
 कथला ईत जेकनी पाय । एक सुखी एक दुःखी को बाय ॥
 मात तात सीपु मय्ये भारेय । तो किम कहीयि संहार करेय ॥१९॥
 एक ब्रह्म सहु आपी रह्यो । सवे घट चंद्र बिंदु पेर कहीयो ॥
 ब्रह्म ने वेद कहि नीकलंक । जग ए जीव मतिन सकलंक ॥२०॥
 एक कहि जो मन बंधाय । जीव कमल परे रह्यो जल ठाय ॥
 सुक नलीका पेर उपजि भ्रांत । कोकिं देखाडो ए हृष्टांत ॥२१॥
 मन बंधन कारण सही होय । सुक परितोष बंधातो जोय ॥
 कोसीयो बंधाय जिम नीज साल । तिम जीव बंधातु स्वयं जाल ॥२२॥
 जो ए जीव बंधाय नहीं । तो दीन दुखी को वीतिं नहीं ॥
 ज्ञान्यो जीव करमि बांधयो । विषय बलुषो बुद्धि बांधयो ॥२३॥

इन्द्रियों के कारण बन्धन

स्पर्शन विषय बांध्यो हाथीयो । साड पडयो संकुल बल शीयो ॥
 बहु पेर भार लेखि भय्यो । विषय तृष्णाधि ए बल्युं धम्यो ॥२४॥
 रसना विषय बांधीयो होय । माछलो दुःख सहतो जोय ॥
 रसना विषय जीत्वा बिल जीव । माछला पिर दुःख पावे अतीव ॥२५॥
 नासिका बंध तणो लोभीयो । समरो कमल माहि थोभीयो ॥
 बाँस कोरि एही कठब सजाड । तिहां मूठ विषया अनुराड ॥२६॥
 नखण विषय जे तरायु पतंग । दीवा माहि नाखे निज बंध ॥
 काई बखे काज सरतम गणो । फोकिं लोहि जीव प्रापणो ॥२७॥
 पारपी बाँट नाद वन सुणी । बेधाया हरणा हरणी ॥
 श्रवण विषय शीजन्मावे पसाय । श्रवण न साध्यो प्राखे बाय ॥२८॥
 इम जाती विषया मन लखो । सुख नीरजन प्रावे जखो ॥
 जिम पायो सुख केवल नाथ । अवीचल पर पायो निवर्ति ॥२९॥

नयनयो के कारण सुखी हुये बलुष

सुत कान बुद्धिधर राम । राज लय हुनै कहिबान ॥
 पाम्यो वन माहि पिर पिर मुख । सुत जीवोरे पयो सहु सुख ॥३०॥

मांस तखो लोभी बक हूयो । भीससेन हाथि ते मुनो ॥
 मुनिव्य सातो काहाव्यो राक्षसु । नरकगति ते कर्मइ कस्यो ॥१११॥
 मद्य निमोगि यहु राजीया । माहो माहि बढो क्षय गया ॥
 मद्य निबोद पातिक नो ठाम । जीवनि नरकि ध्यापि विष्याम ॥११२॥
 नबटि भूक्यूं जेहेवूं ऊतारणू । बेस्यानि ते सरणी भखूं ॥
 कूंतारा एक भाबि एक जाय । चाहदस पेर दुःख सहाय ॥ ११३॥
 पारब बसने बह्मादस भयो । हिंसा दोखि नरक भयो भयो ॥
 बापका वृण चर किहिनू न जाय । दुर्जन प्राण लेख प्रूठि धाय ॥११४॥
 परदारा व्यसनि जाणजो । रावण क्षय भयो मन जाणजो ॥
 धवर पुरुष कहू केही मात्र । व्यसन व्यलूयो नरकहु पात्र ॥११५॥
 चोरी व्यसन ते भूक्यो हूर । तीसि पाप लागि कति कूर ॥
 मरी नरकि सिबभूती भयो । परचन हरतां दुखीयो भयो ॥११६॥
 सात व्यसन ए मुकि जाण । प्राणी पाभि सुखनी लाग ॥
 एह लोक परलोक जय होय । अनुकामि शिवपद पाभि जोय ॥११७॥

बया धर्म का प्रभाव

समता रस सहसूं घादरो । क्रूर चित्त कोई पर मत करो ॥
 समा धरता जीवनें जोब । पदे पदे धरम अनोपम होय ॥११८॥
 कोमल मन आपणां कीबीह । जीब जगणा करी धर्म लीजीह ॥
 माईव त्रिकरण मुधि धरो । अवसागर मन हेलां तरो ॥११९॥
 भाजंब कहोइ कपट रहीत । जीब दया उपरि धरनें चित्त ॥
 कलुष भाव टालीजे जोय । तश्चेतो अविचल पद होंय ॥१२०॥
 सत्य बचन बोली जे सही । एटला ऊफरूं पुण्यब नहीं ॥
 पर अपवाद बिकया नें त्यजो । मुगती नारी सूं देगि भजो ॥१२१॥
 लोभ रहीत कीजि अतरंग । परमात्म सूं लीजि रंग ॥
 वाह्य अर्थांतर शौच धराय । मुवति नारी लीला बस धाय ॥१२२॥
 कीजे संयम करत विद्याल । इन्द्रिय रोषी धर्म निदान ॥
 काम महागज बल धासीह । सयमि मुमति टूंकडी जामोधि ॥१२३॥
 बार भेद ये तप धाचरि । धीरवीर भेद उद्धरि ॥
 कर्म महागज अपनी समान । पामइ नीर्मल केवल ज्ञान ॥१२४॥

सर्वे परीग्रह कीजि त्याग्य । अथवा त्रिविध पात्र दत्त भ्राग ॥
आकांक्षा रहित जे करि । ते संसार माहि नव्य करि ॥१२५॥

पत्नीग्रह सह हूँ मूकम् । अथवा जनसवर हूँकर ॥
तृष्या नदी जलधि जेह । मुमती भारग सहि क्षम्ये तेह ॥१२६॥

त्रिकरण सूत्र धरि ब्रह्मचर्य । व्रत आचार जाहिचे धर्म ॥
तेरिण आचारको सही सह धर्म । करिहु मुक्ति माननी सुख सर्व ॥१२७॥

ब्रह्म

दस प्रकारि धर्म कहु, मुनीनांनि उत्कृष्ट ॥
धर्म परिण जो पालय आवकति पत्य सुष्ट ॥११॥

लेख्या वर्णन

पीत पत्र मुखस कही, बध्या लैन्या जे अन्य ॥
सुगति जाबा कारण सही, जे जाखि ते धन्य ॥१२॥
धर्म मुखस जे ध्याय ते, अपि बनिबल बस ॥
मन पवन बंधा करी, कखहुं तहे ब्रह्मज्ञ ॥३॥
अनुभवाना सिद्ध सीस्य ने, स्वाप्तीन नीस्य जे जेह ॥
इन्दीब रहील जे अनुपम, सास्वत्तं कहींचि तेह ॥४॥
कोटवाल तब बोलियो, जाणुं हूँ सिद्ध भेद ॥
गुटिका सिद्ध धवन सिद्ध, प्रहस दीसि नही जेद ॥५॥

सिद्ध स्वल्प

मुनि कही ते कपटी सही, व्यसनी लोटा अपार ॥
सौध नीरंजन नीरपनी, ज्ञान तयो अपार ॥६॥
प्रसन्नम तेवस रूपए, कोणि ते तेज न हृद्यम् ॥
ते तेज कुही नैन बूझने, रणु चरत्वर समाज ॥७॥
ज्ञान तेज मोटिम परिण, रही सङ्ग मज्जि भास ॥
किहिनि नही भ्रामादि, बस कमसह वेर भास ॥८॥
केवलीनि मोचर होय, जीव मुक्त विधीय ॥
तेह विना मोचर नही, जोह जाणि छि बधिस ॥९॥
भूपते ते साकर सायत, करवीर वृष्टी देखाय ॥
स्वाद जाणि हरलीत होय, निम जीवि न कविवाय ॥१०॥

ब्रह्म सिद्ध स्वरूप छि, व्यापक सकल धर्मत ॥
 ज्ञानी बचनि प्राराधयो, धजर धजर छि महंत ॥११॥
 विष्णु संभु संकर कछो । ब्रह्म सुखुष बली होय ॥
 सलख निरंजन प्रकलए । नाम धर्मता जोय ॥१२॥
 भोला विष्णु व्यापक कहि । जल पल गिहि सुं प्रपार ॥
 माया मोहयी बेगलो । बली कहि बरि अवतार ॥१३॥
 जगत उदारका कारणि । निरंजन काम बरि रूप ॥
 करम काया बी बेगलो । ब्रह्म जो सहस्र स्वरूप ॥१४॥
 धम जाणी मन दूढ कर । ब्रह्म न बरि अवतार ॥
 ब्रह्मि हय्यो ब्रह्म जलिहि । ए छि बचन व्यापार ॥१५॥
 ध्यान बलि कर्म बीकीयि । होय ब्रह्म ज्ञान प्रभ्यास ॥
 तेज सु तेज जई मले । काल धर्मत विलास ॥१६॥
 पुत्र कलत्र मित्र नहीं । नहीं नगर पुर हाट ॥
 बरण तरणी मेवज नहीं । नहीं बीता उचाट ॥१७॥
 भोजन भावन सबन नहीं । नहीं प्रभ सेवक भेव ॥
 पनतलां सबा सूबू नहीं । नहीं सुख मो बली छेद ॥
 इत्यादिक गुण सिद्धना । गुण गातां होय पुण्य ॥
 बिक्रम वैश्वेनो इत्ययो । तेह कई होई धम धन्य ॥१८॥

भक्त भग्नाह्वलीनी

कोटवाल की स्तुति

सब कोटवाल मनै हरलयो तो । भग्नाह्वली । धनधन सुनीवर भासतो ॥
 खेद मद पीकी बेगलो तो । भ० । ज्ञानातरुो प्रावास तो ॥१॥
 जीव द्रव्य एणि उलत तो । भ० । ब्रह्म न स्वरूप लछो जोय तो ॥
 गाल फूलावे बीचा सही तो । भ० । सत्व ज्ञानी एह सही होय तो ॥२॥
 मेखीचबयो बहु परी तो । भ० । बांका बचल बोलव तो ॥
 जीवऊ बाप्यो बहु परी तो । भ० । बारकाक मत सेव तो ॥३॥
 बसीए निधो में चरू तो । भ० । नामो धनुषी प्रभासतो ॥
 पण ए हरी छबडी नहीं तो । भ० । ए सही असीही सुभास तो ॥४॥
 समु मित्र एह मने समा तो । भ० । सोष्ट कनक सम भावतो ॥
 बिकार भग एहमें नहीं तो । भ० । ए सबसागर नाव तो ॥५॥

कायक्य एह जाणीयि तो । ४०। कायतली कबकर तो ॥
 काय करे ए कायलु तो । ४०। कायतली वतार तो ॥६॥
 रम कही बीए कर बीबीया तो । ४०। सीस तनीबी सायो पावतो ॥
 मरु बरम सकल ह्यो तो । ४०। तुं दीठु मुनीराम तो ॥७॥
 हुं क्यूं कर सही तह्य तलो तो । ४०। मरु सरुं बीयो कावतो ॥
 विम मुम देह सकल होय तो । ४०। तुं सही मुनीवर राज तो ॥८॥

धर्म की महिमा

मुनीवर स्वामी बोलियो तो । ४०। मधुरीक मुनीत कास तो ॥
 काम कहूँ एक सबहुं तो । ४०। कोटवाल सुखो सुजाण तु ॥९॥
 धरम करो तह्ये नीरमलो तो । ४०। विमुनन तारण हार तो ॥
 जियि फल वसू पामीइ तो । ४०। जीव दया मंडार तु ॥१०॥
 धर्मिं नवनीधि सपजितो । ४०। हरीबल पद धर्म होइ तु ॥
 चक्रवर्ति पद धर्मबी तु । ४०। धर्म समो नहीं कोय तो ॥११॥
 लाल बोरासी हाथीया तु । ४०। रम तेता तुं जोय तो ॥
 कोड मठार तुरंगम तो । ४०। धरम फलें सणो बोव हो ॥१२॥
 कोड बोरासी फला भला तो । ४०। बडव रतव धर बाहि तु ॥
 छनक सहज अटोड़ी तो । ४०। धरम तखर फल बाह तु ॥१३॥
 बरीत सहज मुकुट बंध तो । ४०। राम करे निरु शेष तो ॥
 सोल सहज गणबध देवता तो । ४०। मंगरलक सेने देव तो ॥१४॥
 छुवांड तलो ते रजियो तो । ४०। प्राय के छनक कोड तो ॥
 मागव वर्तन छे भावि तो । ४०। जानया देव तेवि कर जोड तो ॥१५॥
 एहि मानें धरर रीच तो । ४०। आस्व कह्यो बहु शेष तो ॥
 धरम फलि एहवां सुक सहो तो । ४०। नहीं सोक संताप देव तो ॥१६॥
 धर्मि सीबंकर पद बली हो । ४०। लहीमि पंच कल्याण हो ॥
 मेव बीकर पूजा लहि तो । ४०। धरम तधि परमाणु तु ॥१७॥
 बनीस लाल विमान बाखी तो । ४०। इंद्र श्रेणि नीत वीत तो ॥
 बागें फिकर धर तखो तो । ४०। भगत बाव बपी बीसतो ॥१८॥
 नाम धरम परकासने तो । ४०। बरीके सुपती नार तो ॥
 विमुनन जस विस्तारयो तो । ४०। धरम तधि विस्तार तो ॥१९॥
 इन्द्र भागें उर्वरी तो । ४०। पद पामीमि धर्मि जगलतो ॥
 देवानिया तुं बीडा करता तो । ४०। धनेक देव माने साख तु ॥२०॥

विद्याधर विद्या भली तु । भ० । धर्मिचंद्र सूर्य धाम तो ॥
 देवांगना नाटक रचि तु । भ० । नारद किन्नर गुण धामतो ॥२१॥
 कामदेव सरखूं रूप तो । भ० । नारी मन मोहंत तो ।
 रूप देखी देवी मूलि तु । भ० । धरमि होइ भूप महंत तो ॥२२॥
 सीर बर छन उबलो तो । भ० । चमर ते गज अबगाह तु ॥
 गज तोरगम रच बरणा तु । भ० । पराक्रम जय तखो ठह तो ॥२३॥
 धरमि सात खणा बर तु । भ० । रतन तणीं सोहि भीत तु ॥
 धन कण कबख रवणें भरषा तो । भ० । पट कोल बस्त्र बीचीन तो ॥२४॥
 धरमि नार सोहामणी तो । भ० । रूपें रती अबतार तो ॥
 मुनीबर नां मन मोहती तो । भ० । सोहती सील मंडार तो ॥२५॥
 नमती सासू नराद ने तो । भ० । गमती नाहनें मने तो ॥
 रीस न धरती रती भरीं तो । भ० । हरष वदन दिन दिन तो ॥२६॥
 हसगामिनी मृगलोचनी तो । भ० । धरमि बहु गुणवंती तो ॥
 जीब तखू जतन करती तो । भ० । कोमल बचन महंत तो ॥२७॥
 निज कुलनि ब्रजू बालती तो । भ० । चालती लक्ष्मीय होय तो ॥
 वरत विधाननि पालती तु । भ० । धरम करंती जोय तो ॥२८॥
 धान देती सुपात्रनि तु । भ० । मानती सगा सजन तो ॥
 जिनपूजा करती रंके तो । भ० । निरमल धरती मन तो ॥२९॥
 प्रोहोणा सगानि संतोषती तु । भ० । अतुर पणानु ठाम तो ॥
 भाग्यवंती विनयवंती तो । भ० । कंतना पूरती काम तु ॥३०॥
 धर्मि पुत्र भला होय तो । भ० । मातपीतानि मानंत तो ॥
 धरमर्बत गुणि आगला तो । भ० । नयनें आरांभ देष तो ॥३१॥
 धर्म पुत्री पामीयितो । भ० । रूप सोभागनी रेहतो ।
 सीलवंती गुणि आगली तु । भ० । विनय विवेकनो नेहू तो ॥३२॥
 धर्म मित्र भला लहियु । भ० । पाप धी दारय जेहू तो ॥
 हीत मारगनें अदेसि तो । भ० । अंगर अंबर आवि मोच तो ॥३३॥
 धरम तचे फल पामीयि तो । भ० । अनेक ईष्टनो संभोग तो ॥
 मणि माणिक मुमता फल तो । भ० । मोती नखसर हार तो ॥३४॥
 पालखी रब सुखासन तो । भ० । धरम तखो विस्तार तो ॥
 कनक सांकल हींदोलार भला तो । भ० । हींदोलि हींदोलि दस तो ॥३५॥

माननीय मननी रली तो । भ०। बरमि लीला विश्वास तो ॥
पकवान बहुजात तु । भ०। रहा ब्रह्म अनेक प्रकार तु ॥३६॥

भोजन सजाई भोजन सक्ति तो । भ०। दधि कूज दूध सुनिवार तु ॥
बलो रास कपूर नाग केस दल तो । भ०। फोफूल फूलबी सबक तो ॥३७॥
ए आदि भोग उपभोग तो । भ०। बरम फल उद्यान । भ०॥३८॥

बरम सुख

बरम ना फल बरमना फल । तसो विस्तार ।
भक भव जीव सुख लहि । दुःख वेद एक क्षण न पावि ॥
दूर देसांतर पावतां । बरम एक सखाय आनि ।
जल गिरि रण बन मगहि पडयो । जीवनें रहसि धर्म ॥
इम जाणी धर्म आचरो । दूर मूको पाप कर्म ॥१॥

नास जीवडानी—राग देवास

पाप के कारण विभिन्न गतियों में भ्रमण

पापतण्डि फल भव बसे छे । जीव भवें क्षपार ।
दुःख सहि बीहो गत्री माहि हो । सुख न पावि सवार हो ॥
पापें दुःख वालीद सहि हो । भव माहि भ्रमतो जोम हो ॥१॥ जीवडा
नीत्य निगोद क्षात लास कही हो । इत्यर निर्भीच तेनी होय ।
नील फूल कंद मूख माहि हो । जीव अंतते जोय हो ॥
पाप तणां फल होय । पापें दुःख वालीद सहि क्षीय हो ॥
भवमाहि भ्रमती जोय हो ॥२॥ जीवडा
मख मांस सरीरि माहि हो । कंद मूल माहि जेह ।
फूल फल छाल पल्लव हो । नीगोदे भ्रमते जीव एह हो ॥३॥
सात सास पृथ्वी काव हो । मुहु खर पृथ्वी भेद ।
वेद नीरी मांटी सीला हो । जीव उपनो लहो वेद । हो जी० ॥४॥
सात सास अक्षय्य माहि क्षीय हो ॥ जीव भ्रमती वार ।
गद्दी सवार सखेवर कूषा हो । उपनो एह बजार । हो जी० ॥५॥
तेजकायक सात सास कछा हो । भवनी काव उपन ॥
कास कर्मते जीव भ्रमती हो । कहीं कहीं सुख तपन । हो जी० ॥६॥

बायकामक लाख सात हो । तनु बन बनोदधी नाम ।
 चर बायु माहि बली हवो हो । जीव भयो ठाम ठाम ।हो जी०॥७॥
 अनेक बेल्ल तर वृण्ण मादि हो । बनसपती वस लाय ।
 जीव अनंतीवार अवतरयो हो । केवली बोधि भास ॥
 पाप तणां फल होंय । पापि दुःख दावीइ सहि हो ।हो जी०॥८॥
 बिलास बिइंद्री माहि हो० । अलसीयां शंख सीपोलि ॥
 श्रीडा लालीया मेहर मादि हो । जीव भयो बहु जोण ।हो जी०॥९॥
 श्रेष्ठी बेलाल लेखा हो । वीछी कीडी मंकोड ॥
 जीव एह भमनो बापडो हो । कामिं लाई मोटी खोड ।हो जी०॥१०॥
 बे लाख चोरेन्दी कही हो । हवो जीव अनतीवार ।
 मालि गोमालि डंस मसाहो । अमरा मादि मकार ।हो जी०॥११॥
 अ्यार लाख मारकी जोनें हो । कतूरा फूल आकार ।
 हूडकू संस्थान हवो हो । सहयो दुःख अपार ।हो जी०॥१२॥
 तीर्यंच अ्यार लाख माहि हो । वन नभ जलचर जात ॥
 वार अनंती अवतरयो हो । बेससेई बहु भात ।हो जी०॥१३॥
 चार लाख देवगती माहि हो । भावन व्यंतर जास ॥
 जोतवी कल्पवासी हवो हो । मानसीक दुःख बसास ।हो जी०॥१४॥
 चौद लाख मनुष गती हो । आयं म्लेच्छ नू जोय ॥
 भोगभुमीया विद्याधरा हो । भमतो जीव अवलोम ।हो जी०॥१५॥
 लाख चोरासी योनि भयो हो । वावर जंघम हो एह ॥
 सूक्ष्म वावर रूप बरया हो । दुःख तखो नहीं छेह ।हो जी०॥१६॥
 पंच परावर्त्त पूरयां हो । भमतो वार अनंत ॥
 संसार बनी भीतरि हो । करमनि फलि महंत ।हो जी०॥१७॥
 खोंडा पांगला अंबला हो । जूया बहिला जेह ।
 पूरव भव पाप करयो मति हो । उवव भ्राभ्यो सही एह ।हो जी०॥१८॥

बाय का कल

कोडी द्राव कांदां बरहा हो । वीवकी पामा बाय ॥
 पंच बर्म वात रक्त मादि हो । पाप तखि पसाय ।हो जी०॥१९॥
 कंठमाला मडबू बडा हो । पाठो हरस मादि व्याधि ॥
 पक्ष कक्ष रोग पीडयां हो । नपूही न कांथि सथाधि ।हो जी०॥२०॥

मूर्खें बसूँ बसूँ बीडको हो । बीडको दरीसिं जेहूँ ॥
 भीख मागतां भर भरें हो । पाप तस्यां फल एहूँ ॥१२१॥
 तराकलें छाहुँ भूँ पदें हो । बरसाति बलंत ॥
 भोयें पडिया सांतपि हो । भूटो साट बलंत ॥१२२॥
 कोछ्यां सत्वां खोला सायें हो । नीरस जमें जन्न ॥
 परदेसी सेवावरती हो । पायें नीगमें दन्न ॥१२३॥
 पाप तस्यां फल होय । पापि दुःख सरीर सहि ह्ये ।
 भवें भव जमनो जोय ॥
 फाटां भूटां लुगडा हो । बूह भरया भसेल ॥
 चांभड मांकण मसान डि । दैव ए दिन मम लेख ॥१२४॥
 नारी बिर करुपिणि हो । सापिणि पिरि जाबा चाय ॥
 मोर पनी रीछ गती हो । पाप तसे पसाय ॥१२५॥
 नख कूपा भांगली बरती हो । भूटी मोटी जाण ॥
 जांब ऊर रोम बणा हो । बीर्भाय तशी जाण ॥१२६॥
 मादल बोल सम पेट हो । महिषी जेटलूँ साय ॥
 सांकि व्याहाणि भूती दीसि हो । शील हीछी पाप पहाय ॥१२७॥
 उत्तर दक्षिण स्तन न्यम्बा हो । कोटिते मल तस्यो ठाय ॥
 गालेसु साबा पड्या हो । स्त्री सहीह पाप पसाय ॥१२८॥
 होठ काला हांकणी समा हो । नाक ते बीडूँ जेण ॥
 कान भूटा साकिनी स्त्री हो । पीसी टूंकवी सीर बेण ॥१२९॥
 सिहिधिं जमरा कातरी हो । ऊपूँ पोहो भू कपाल ॥
 सरीर कठण भंगे सूकी हो । खरबा वे विकरास ॥१३०॥
 सोभिल नें बंधन बखी हो । पहरोखा जाधि नेह ॥
 बडबाड बीसेवे करें हो । नाहूँ न राधि नेह ॥१३१॥
 होठ पीसंती बीसीधि हो । कुवनी बंधन कोर ॥
 साहस करि कायाबखी हो । नेह दुपेंब अपार ॥१३२॥
 प्रलय काल सोला जाचो हो । कणठ तस्यें एहूँ नेह ॥
 मूर्खें बसूँ बीडको हो । पाप तस्यां फल एहूँ ॥१३३॥
 बीनय रहीत बीकवारछी हो । पापिणी पाप करण ॥
 मुख बीडी भोटे कोटी हो । परमर बिर करण ॥१३४॥

दान पूजा नथ्य गमि हो । धरम कथा न सुहाय ॥
 विक्रमा कूटि कपटणी हो । जीव जतन न कराव । हो जी०॥३५॥
 पुत्र पुत्री होइ नही हो । होइ दु मरीनि जाय ॥
 धर्म कहीं करे नही हो । व्यसनि भूँडा सहाय । हो जी०॥३६॥
 मित्र तेछि तारा मलि हो । लायि पापह बाट ॥
 इष्टतणा वियोग होइ हो । परि परि पापि उचाट । हो जी०॥३७॥
 नीच कुलि बली भवतरि हो । करतां नीच के काम ॥
 पोखि पिड पापि आपणो हो । न जाणि धर्म नू नाम । हो जी०॥३८॥
 लांच लेइ चाडी करी हो । धूतारी भरे पेट ॥
 पर अपवाद जूँठा दीयि हो । पापनुं कारण नेट । हो जी०॥३९॥
 पाप आरंभ पोढा करि हो । करि पाप व्यापार ॥
 पापी सू संगत करि हो । पाप कारण ए बीचार । हो जी०॥४०॥
 साधु साधर्मिनी नीदि हो । धर्मनी बाटि न जाय ॥
 दान पूजाये कलेक करि हो । तीणि किम सुखलहाय । हो जी०॥४१॥

इहां

कोटवाल द्वारा धर्म के स्वरूप को कहने के लिये प्रार्थना

कोटवाल कहि धर्म नो । कोहो स्वामी स्वरूप ॥
 जिम भेद जाणं धरयो । धरम लेक सुख रूप ॥१॥
 मुनिवर स्वामी बोलीया । दया धरम कर सार ॥
 सुरग मुगती फल पामीयि । जिम तरीयि ससार ॥२॥

कोटवाल का पुनः प्रश्न

कोटवाल सब बोलीयो । ब्राह्मण कहिते धर्म ॥
 दान बीजि बिभ्र लेषयी । सूइ लहि धर्म एम ॥३॥
 लचीनि हीसा कही । पारखे आदिक कर्म ॥
 मास लायते दोष क नहीं । न्याय पालि होय धर्म ॥४॥
 मद्य मास दूषण नहीं । बेस्या सग प्रकृति ॥
 ए जीव सहिष छि अती भलू । नो करे एह बी नीकत ॥५॥
 ब्रह्माई पशु सरजयी । समृति कहि बज्र काज ॥
 वेद कहि पशु बज्र थी । लहि ते स्वगैह राज ॥६॥

भास साहेलडीनी

मुनि का उत्तर

बलता मुनीवरउ । उत्तर बोलि सुखी तह्ये कोटवास ॥
 क्षत्रीकुल उत्तम सहू मध्ये । कर्मम हिंसा करि विकराल ॥
 जूतू बरम विचार । जीवदया मजित सही जसखी ।
 सुरम सुबलि सुखकार ॥१॥

क्षत्री बरम रक्षावखे आम्बो । जीतबो साहामोपचारी ॥
 नाहा सता पडता कांति तृण भरता । तेहने क्षत्री कर्म मारी ।साहे॥२॥

बापडा हरण कांति तृण भरता । नाहासता पडता अपार ॥
 क्षत्री पारध किम एहने मारि । चतुर करी विचार ।साहे॥३॥

तीर्थकर हरी हलधर उपजि । क्षत्री बंध पकीन ॥
 भास भक्षण जीव हिंसा । किम बोली । जूड विचारी मीन ।साहे॥४॥

जीव हणतां कर्म जो होय । तो माछी पूजीवि ॥
 भास जावि जो कर्म कहीड । तु मार्तंग गुण लीवि ।साहे॥५॥

ध्यान मोन जीव हिंसा करता । पावि कु उत्तम ठान ॥
 तु नदी कांठि मीन ध्यानी । बकमि दीजि मुनी जाव ।साहे॥६॥

जीव बघतां कर्म जो कहिड । प्रथम कहोमि कहिक्कय ॥
 केवल स्नानि जो कर्म होय । माछलां तो जीव जाव ।साहे॥७॥

ब्रह्मावि पक्षू यज्ञ निररण्या । जे तह्ये बीलो कचन ॥
 वाच सिंह सरथ पक्षूजि कहयां । ते हलबान करि मंन ।साहे॥८॥

ते क्रूर जीव बलतीं सीख देखे । प्रथ बंपडा बल हीण ॥
 तेह बखू भावनि आवरवा । देवे दम्भाये वीन सा॥९॥

जीव अहिंसा परम बरम कहियो । वेद स्मृती मकार ॥
 जीह्वा बंपट जे विखड । बसनी अपरीत वापि विचार ॥
 जूड बरम वीचारी । जीव दया मजित सही ।सा॥१०॥

जीवत दान एक जीवने दीव । जूव दीवि एक असेल ।
 एक मेव सन कनक देयता । जीवत दान बिसेम ।सा॥११॥

एक जाखी निज पुढ मन वाखी । छांडो विषय भांत ॥
 केवली भावीत कर्म कहीं वाखी । विपुवन मोहि विचरत ।सा॥१२॥

अष्ट मूल गुण

मद्य मांस मधुकर जीवि । बली पंचूंबर परीत्याम ॥
 अठ मूल गुण एहने कहीयि । आवकनु ए मार्ग । सा० ॥ १३ ॥

बारह व्रत

अहिंसा व्रत पहिलू कहीयि । बीजूं सत्य वरतह अम जाखरे ॥
 अचोरीय व्रत पड्यूँ मूक्यूँ न चोरीयि । स्वधारा संतोष बसायो । म० ॥ १४ ॥
 परिग्रह परीमाण बली बीजे । रात्रि भोजन टालीयि ॥
 जीवदया आदि तह्ये जाणो । अशुभ्रत एह पालीयि । सा० ॥ १५ ॥
 दीनवरती देसबीरती अनरथ । दंडव्रती ए देषो ॥
 गुणव्रत नुहि गुणो व्रथ पात्रे । संसार तारण लेखो । सा० ॥ १६ ॥
 सामाथक पदवें उपवास । भोग उपभोग सक्या ॥
 अतीथविभाषण ए च्यार प्रकार । सीमाव्रत सुअ सीक्षा । सा० ॥ १७ ॥
 समकित सहित बारि व्रत कल्यां । संलेखना तनु स्थान ॥
 दृढ मन करी तह्ये ए पालो । सरन मृगती नु मार्ग । सा० ॥ १८ ॥
 चडकरमा बलनुं इम जीवयि । ए सह पालूँ सुजाण ॥
 जीव दया पण नथि पलयेमे । होयि कुल धर्म हाण । सा० ॥ १९ ॥
 विकट लोटा चुरटा जे मोटा । निग्रह कर तेह करे ॥
 भली परीह दबरी ने राखूँ । क्रूर कर्म छि महारो । सा० ॥ २० ॥
 मुनी बोलिहजी तह्य मज केरी । ज्ञात से काम न जाय ॥
 कुलि पांगलो कोढो को व्यसनी । तिम आपखी सुं बजाय । सा० ॥ २१ ॥
 बली राजानी भय तह्य होसि । कुटम भरण तखो सह ॥
 खावा काजि कुटम सह मलयू । दुःख सहिसि जीव बहू । सा० ॥ २२ ॥
 परतक्ष तह्य निदृष्टां तज दाखू । साभलो मन बिर राखी ॥
 जसोषर चन्द्रमती भव भययां । ए क्रकडा बेहू साखी । सा० ॥ २३ ॥
 पीठ क्रकडो हणयो देवी आगलि । ते पाप बहू लागी ॥
 अमृतायि जसोषर चन्द्रमती मारया । मोर कत्यरा भव भय भायो । सा० ॥ २४ ॥

जसोषर एवं चन्द्रमती के जन्म

तीहां भी असे सिहिली साय हवां बली रोहीत संसृमार ॥
 चन्द्रमती राजनी बली । नेत्र गति राय छाया हवी जे बार । सा० ॥ २५ ॥

चन्द्रमती महिष मोनि पाम्बी । तिहो की कूकडा हवां बेह ॥
कुचिन जीव हिंसा फल पाम्बीः । त्रिनि भवतां नहीं बेह ।सा०॥२५॥

कोटवाल का संसार से नव

तब कोटवाल आचंच मनि पाम्बी । काँप्यो भर भर बेह ॥
राख राख ककशा करी मुनीवर । किम होकि पाप बेह ।सा०॥२७॥

कोटवाल मुनी पार्य तीर नाबी । बरत नाभि मनि सूख ॥
समकित सहित आवक बल दयां । मुनी ककशा करी बीच ।सा०॥२८॥

तब बह्ये बेह कूकडे सह सुखयू । भर मनि बवांतर सार ॥
जाती समर ऊपनू सही । बह्ये पण लीबा बरत नवतार ।सा०॥२९॥

जाती समर बसी बरतक पाम्बी । हरम ऊपनो अपार ॥
कूकू कूकू इम मधुरज वास्यां । मारीदल सुखो बीचवर ।सा०॥३०॥

कुसुमावली सूरंगि रमतां । काने पडची बह्ये सार ॥
जूठ जूठ सबद बेबी बालू पूकनू । बाण लीमू करी बाव ।सा०॥३१॥

बाण बेगि राजाइ मूकनू । मूकयो बह्ये बीच प्राण ॥
कुसुमावली नरमे ऊपनां । ओहुं हुं बत प्रमास ।सा०॥३२॥

कोटवाल मुनीवर पद बाँदी । स्तम्भन करणु सत रंज ॥
घम्य घम्य मुनीवर तह्ये तणी बाखी । नीरजल मंग तरंग ।सा०॥३३॥

पापकर्मक महारां पकलाबा । तुक बाखी जल पूर ॥
मक मन प्राण काखन सह सूतो । मुनीवर खीठ सूर ।सा०॥३४॥

संसार सागरि बूडतां । मुक तह्ये बीमू हाथ ॥
हं पाप लहिरी कंपावु बलीबिरे । मोहि आवकयो अनाथ ।सा०॥३५॥

धाम वितामणि रत्न रें पाम्बू । पाम्बी घर्म करणुस ॥
जिनबाखी जिनबत जिनबासक । जिधि बाक्यो ते वर ।सा०॥३६॥

जुहू बीच कुल बबतरधु । तु मुक भाग्य किसान ॥
समकित रण्ये भरम मिल हवी । जीव दवा कुलमास ।सा०॥३७॥

कोटवाल मुनी नमी निच स्थान के । पीहोली मुनी मुख बातो ॥
मुनीवर बोटी बसड मोहत । बह्यो बीचूण ध्यातो ।सा०॥३८॥

वस्तु

बेहू कूकड बेहू कूकड मरीते जाए ।
 कुसुमावली गरमिहवां । सने सने ते गरम बाध्या ।
 गरम बेदना व्याकल हर्षा । नवमासे अवतार लींखु ॥
 अभयदानजो होलो हवो । अभय अभयमती नाम ।
 पुत्रनें पेटेज पुत्रज हवु । भव एहवु दुःख ठाम ॥१॥
 श्रीमंतो हृषभादयो जिनकरा श्रीरावसानाः सदा ।
 ससारार्णवनीसभाः समदमध्यानातुसद्रोचकाः ।
 सद्भुव्यप्रतिबोधकाबुधनुता षड्बेदशुभदगुणाः ।
 श्रीदेवेन्द्र सुविक्रमस्तुततपदा कुर्वंतु वो मगलं ॥७॥
 इतिश्री जसोचरमहाराज चरिते । रास भूडामणी काम्यप्रतिष्ठे ।
 भूदेवकवि श्रीविक्रमसुत देवेन्द्र विरचिते । यसोमती कुमार ।
 वसंतक्रीडावनागमन कोट्टुभानमुनीबिबाव ककुंट लब्ध ।
 सटमंप्राप्ताभयकथ्यभयमत्यवतार वर्णनोनाम सप्तमोधिकारः ॥७॥

षष्ठम अधिकार

भास रासनी

अभयमति एवं अभयदधि का शिकुकाल

सने सने मोटां हवाए । ग्रहो बेहू सुंदर बालतु ॥
 बतीस लक्षण अंकरधांए । चन्द्रकला गुणमालतो ।वरमाहें हीडीयो ॥१॥
 रीखतांए मोतीचोक चूरंततो । रतनसाथीया वेरंतडांए ॥
 बली बली तेह पुरततो ॥१॥ वरमाहे हीडीयो ॥२॥
 रतन प्रागिण्डि खेलतडांए । दीसि ग्रह प्रतिष्ठांहीम्य तु ॥
 नागकुमर नागकुमरीए । जाणो ग्रहसू खेलायतो ॥३॥
 क्षण क्षीजता क्षण हसतडांए । क्षण क्षण बरखी पडंततो ॥
 रतन खेलणां भावल धरिए । तेहूं पण प्राप्ते चडंततो ॥४॥
 अनुक्रमि ग्रहो मोटां हवांए । सुललीत तनु सुकुंमाल तो ॥
 विविध वस्त्रे भूखणो भराए । कठि मुक्ताफल मालतो ॥५॥
 मोटा उखव संभ्रम करीए । सूक्या भणबानी सासतु ॥
 अक्षर अंक राजनीत भण्यांए । लेपसखण विसालतु ॥६॥

सातबरसना अर्थात् हवाए । मऊ लघु परिण बहु लाजतो ॥
यसंभरती राम देखी अर्थात् । प्रोहोराचारति काजतो ॥७॥
पारध तूर बाजीबडां ए । बाज्यां अनेक प्रकार ती ॥
पारधी सहूए सब थया ए । हाथ अनेक हथिभार तो ॥८॥
पाश केटलां हाथ घरीए । केटलां मूसल प्रबुद्ध तो ॥
रंजडां हथें धरि केटलाए । केटलां लोडां दडती ॥९॥
गर्ज लोहू लाकडा घरीए । हाथ धरणां कलीहार तो ॥
पांनवाटी मोडण धरणाए । सीबाणा बैहेरी प्रकार तो ॥१०॥
शुभ अग्नि सकरा घरी ए । नीची रथ फिर बिठतो ॥
कनक साकल भूण पचवरी ए । दीठें मन भय पेठतो ॥११॥
पांचसि स्वान बीहामणा ए । बल बलता जासी काल तो ॥
लांबी राती जीभ ललकि ए । नयण पीला विकराल तो ॥१२॥
लाबा कान धरू दीसिए । बेंहू पेर टंका काम तो ॥
केता घोला केता रातडा ए । केता दीसि पंचवस्त्र तो ॥१३॥
वकारथा वाध साधि बढिए । वांकडे पूंछ रीसाल तो ॥
दात ते जम डाढ समा ए । मुल मोटू विकराल तो ॥१४॥
कनक साकल धरू साकल्या ए । रतनपाटी बलि सोहि तो ॥
भूल भलकि पचवरीनी ए । राजानू मन मोहितो ॥१५॥
राय बाल्यो तव केवलि ए । धाव्यो वन समीप तो ॥
क्रूर बाजिज सुखंतडा ए । तीरीयंघ पंली कपतो ॥१६॥

मुनि सुदस्ताचार्य धर पांश सौ शिकारी कुत्तों को खाइना

सुदस्ताचार्य मुनीवरए तीसि अबरसें भूप दीठतो ए ॥
अपसुहोण धारबसें हुक ए । राम मन कोप पईठ तो ॥१७॥
पांचसि स्वान भूकावयाए । मुनी ऊपेर तेरी बार तो ॥
मुनीवर वस्येते धामयाए । जास्ये काम धाकार तो ॥१८॥
मुनीवर तेरी बीटीयो ए । सोहिते मुसामाल तो ॥
विह पसकम पुंजलो ए । जिम बीघो सीकराल तो ॥१९॥
मुनीवर तखी तप बलिए । स्वान नम्या थया सांत तो ॥
बिजलक्या सम देवी करीए । राय अने हथो भांत तो ॥२०॥

मरु पारथ विघ्न करणू ए । स्वान लीत्या एशि जाणू तो ॥
 ए कपटी को दीसीमिए । एहनें करूँह जिहाणू तो ॥२१॥
 तब खडग करे घरीए । असमस बाल्यो भूप तो ॥

कल्याण मित्र की मुनि बन्धना

राज मदे जीव प्रांघलोए । न लहि न्याय तरुण तो ॥२३॥
 तीणि अकसरें मुनी बंधवाए । कल्याणमित्र बन माहि तो ॥
 प्राय्यो भावसहीत भलो ए । राय दीठो तणि स्वाहि तो ॥२४॥
 अपूरव भेट लेई मल्यो ए । राय दोषो बहमान तो ॥
 बालो नरेंद्र मुनी बंधीमिए । कीजि बर्म नीषानतो ॥२५॥

राजा के बिचार

तब राजा कहि मित्र सुणो ए । बहू कीषो अमसोख तो ॥
 पारथ फाकेवा तखो ए । एह बाँदि युख कोख तो ॥२६॥
 बली एणि स्वान लीलीया ए । मरु तया अति क्रूर तो ॥
 बली नामो अमंगलो ए । कुल एहनुं जखायतु ॥२७॥
 हूं कुलवत राजा सहीए । किम एहने नमायतो ॥२८॥

कल्याण मित्र का उदार

तब कल्याण मित्र बोलीयो ए । राज सखो मरु बात तो ॥
 पारथ अपसुण तहूँ कह्यो ए । ते बोल सख्य बीक्यात तो ॥२९॥
 पाप कारज एयी नख्य होय ए । होय पुण्यनो एयी काय तो ॥
 स्वान लीत्या ते फोक कह्योए । कपटनो न सहि नाम तो ॥३०॥
 तप परभाव एह मन मल्यो ए । सांत हुवा ए अपार तो ॥
 नामो कह्यो ते ऊतर कहूँ ए । सहुजन सहिजि बिचार तो ॥३१॥
 लोक नामो जय्ये नामो भरिए । नामो साधि तीव भोक्तु ॥
 जीव स्वभाव नामो होय ए । पहिरयो ए विकृत भेस तो ॥३२॥
 बली ईश्वर नामु कह्यो । नामो सही श्रेयपाल तु ॥
 सुरविद्याधर एहनि नमें ए । नवन काजि मुखमाल तो ॥३३॥
 वेद बर्मयो वेगलो कह्यो ए । वेद कहीमि एह ज्ञान तो ॥
 बहू विद्या उपनिषद ए । बहू लहि जेम ज्ञान तो ॥३४॥

मलयवीन सरौर सही ए । मरु बरु बोरब जोय तो ॥
 सस वास मल भुव बरयो ए । गविन सुवच नही उर्ये तो ॥३५॥
 मील संवध तप प्रासकां ए । एह होने पमिच तो ॥
 मसुधी कहु ए किम हवो ए । प्राह नदी पीये नीस्यतो ॥३६॥
 सीस प्रवाह त्रट लस्य तो । दया कसोल बीसयं कहु ए ॥
 भास्या नकी संवच जल ए । पाठव ताहू नीस्यतो ॥३७॥
 कुल एहसु कहुं सांभलो । कलिय बेगनु राससु ॥
 सुदत्तारस्य नाम रवहू ए । अनीय कुल पुस उल तो ॥३८॥
 सपताथ राजे मंडीयो ए । राजपाल तो एक बारसु ॥
 कोटवर्ति चोर बरी बासुयो ए । राजवर्ति कहि बीचार तो ॥३९॥
 एणि चोरि सुहपती मारयो ए । बिल चोरभू उतंय तो ॥
 बंड देवा ग्राहण पूछीया ए । ते बोल्या सुचंय तो ॥४०॥
 नाक हस्त पम खंड करो ए । राय कहि कोह्ल पय हो ॥
 ग्राहण कहुं पाप रायने ए । मूक्यां करि पाप व्यापतो ॥४१॥
 ते वाप प्रस रायने सही ए । तब राय सहुो बैराय तो ॥
 राजभार सुतनें वीउए । संजम लीचो मोल मर्ये तो ॥४२॥
 शोक करि नहीं तह्य ठरयो ए । वाय फूल हर तो ॥
 सुर नर कल विद्याभर ए । पूवि चरस कुलकर सु ॥४३॥

राजा द्वारा सम्मान करना

तब राजा बोल मानीयो ए । मुनीवर जानल जाय तो ॥
 नयोअसु करणु बेहु बासिए । जीव पारयो मुनीराज तो ॥४४॥
 प्रासुकं जमे बैसीयाए । मरुं कृति बेहुने बीस्यतो ॥
 राम बरु साचंजीयोए । मरुं बीचार तब कीवहु ॥४५॥

मूह

मुनीवरनि राजा कहि, कसल बेड उभमान ॥
 रावह व बीस नही । जया तसो नीचान ॥४६॥
 कहु कहु तो उर्येको चलो । हरी तो सोपी सुज ॥
 जीव कहुं तो पीवु मनें करि । रवि कहुं तो वाप जीव ॥४७॥

चंद्र कहूं तो कलंकी सई । गुह पतनी दोष इन्द्र ॥
 सगर हूं तो खारो खरे । मेरु तो जड़ लोम मंद्र ॥३॥
 नारद कहूं तो कलह करे । दुर्वासा तो बहु रोष ॥
 विश्वामित्र बसिष्ठ कहूं । मातंगी उर्वसी सुत दोष ॥४॥
 कपिल सगर सुत बालधा । जमदग्नी रीसह ठाय ॥
 व्यास कहूं तो शूको अपहरा । वीवरी सुत कहिवाय ॥५॥
 सुक पु अपसरा सूडीयि जण्यो । हरणीयि जण्यो एक शृंग ॥
 इम कोतां कुल सील थी । अनोपम मुनी उत्तम ॥६॥
 बली एहनि स्वान मूकया । कोपि चढभा बिसेस ॥
 हूं पण लडव काढी घरघो । रीस न बढी लबलेस ॥७॥
 साधु तणी निंदा करी । किम छूटसूं ए पाप ॥
 सिर छेदी मुनी पादे धरूं । तो टलिए सताप ॥८॥
 इम चिंतें राय कोटि भट । लडयि बालि जब हाथ ॥

मुनि द्वारा सम्बोधन

राय प्रति बली बोसियो । दयावंत मुनीनाथ ॥६॥
 भाभो भूप भलूं नहीं । सिरछेदवाभूं काम ॥
 आप हत्या ए मानीयि । दुरगति केरो ठाम ॥१०॥
 तपि करी पाप पछालियि । तप करि छूटि पाप बच ॥
 तप करी सरन मुगते सुख । अबर जाखे लहू बंध ॥११॥
 राय मनें आशचर्यं हबो । कल्याणमित्र सूं कही बात ॥
 मुझ मन भाव किम जाणयो ए तहूँ कहो मझ भ्रात ॥१२॥

वास अंधिकानी

कल्याण मित्र द्वारा राजा को सम्बोधन

कल्याण मित्र बोस्यो तेरी बार । राय सुखो बाणी मुझ तणी ए ॥
 ए कारण तो थोडु विचार । ए मुनीवर ज्ञानी धणी ए ॥१॥
 तप करतडा अती स्मृधो । रीष ऊपनी छि अती धणीए ॥
 रिषि सकति जे मुनी कह्ये होय । विस्तारी कहूं क्रीडाधणी ए ॥२॥
 जो जिन नाम रूषी स्मरण करत । विसुचिकायादि रोग टलेए ॥
 अवधी जिनमुनी स्मरण थी नाए । सर्वज्वर रोग मले ए ॥३॥

परमावधि मुनी स्मरल विशेष । रोने मस्तकनो जाय बनी ए ॥
 सर्वावधि मुनीनि जन्ममूर्त । जाणें बसु रोव हरिण कलीए ॥४॥
 अनंत प्रवधि जाणें जब स्वल्प । जण्य ग्रह रोव हरिए ॥
 कोष्ट बुधी रंभी परेभोध । गुल गुल्मीदर मोक्ष करेव ॥५॥
 सर्वशास्त्रज्ञ बीज प्रखर लही जाणि सर्वशास्त्र ॥
 बीजबुधी स्वस सही ह्येए । श्रुत लही माहीमाहि बर जाईत ॥
 बर तत्रि पदाशुकारी बुणिए ॥६॥
 सरीन खोच मुनी रीष्य ध्यामत् । स्वास खेस जंय रोम हुरे ए ॥
 सयं बुधी रुधी मुनी तरणू ध्यान । कवित कला फल जनि बोधिए ॥७॥
 काद विद्या होय जेहनि ध्यान । प्रत्येक बुधि मुनी कखा ए ॥
 बोधीत बुधि बुधी गभिर । तल्प पदारथ जाणी रखा ए ॥८॥
 सरसपरणें मन बीस्यो पदारथ । जाणें रुजू मनी रुबो बसीए ॥
 विपुलमती कहि कुटिल विचार । मन प्रथं चिंता बसी ए ॥९॥
 जेहनी भक्त मर सहं जाणि जय । दशपूर्व रुधी गुल जाणीयिए ॥
 स्वसमय पर समय लहि भेद । चौदस पूर्व बलाणीयिए ॥१०॥
 अनेक प्रकार जाणें निमित्त । अष्टांग निमित्त कुशल मुनीए ॥

श्रुतियों का वर्णन

अलीमा महिमा प्रावि रीषी दातार । विकुर्वल रुचि क्षिपावनी ए ॥११॥
 लघु अणु सम मीटूं मेरु समान । सरीर करि रिषी बलें ए ॥
 आकाशमामिनी ध्याता दीधि । सीषी विद्याधर रिषी फलिए ॥१२॥
 हृदयबीज मृष्टीयत वस्तु । पारल रुधी जाणि लहीए ॥
 जंय खणि जाणि श्रुत मुनीन्द्र । पण समखाण रुधी कही ए ॥१३॥
 मेरु हीखर जई स्वर्ग करंत । आकाशमामि रुच तणें फलिए ॥
 आधी बीखि रीषि दात पीसंत । चक्रवर्ति संन्य भणिए बलिए ॥१४॥
 जो करवति तनु करे बेखंड । कोप न करे सही जमा बलिए ॥
 दृष्टि द्विज जो करि वृष्टि । चक्रवर्ति लेन नो ठाम टले ए ॥१५॥
 बसु बल-मुदीए बड़ी क्षती सक । पण को प्रति कोप न करिए ॥
 तेह रुधी मुनी ध्याता सुषो राव । अनेक प्रकारें बिल हरिए ॥१६॥
 बीर पणि तंय बी न बलेंत । उग्र तपि रुधी फल लखीए ॥
 सरीर काति जाए अंधकार । जिनबासी जिके विध्यात कहीए ॥१७॥

तन लच्छो पाप संसम सङ्ग जाय । रित्त तप रिद्धे बर्यां ए ॥
 एहवि श्वानि कारतां फल होय । स्तंभन पोडी सेन्या तर्खुं ए ॥१८॥
 ताता लोडा पिर पक्यो जस जेम । तम अक्ष पान् विवटीं अजय ए ॥
 तप्त कपी प्रभा विष्वात्ता जालो । विघ्न कर्णुं स्तंभन पाय ॥१९॥
 छट्टु महुन पक्ष मासोपवास । मक्ष कीकृती पायि नहीं ए ॥
 महातप रीषी तर्खो परीखाम । जलस्वभन श्वाना सही ए ॥२०॥
 सिंह व्याध क्रूर भाकम्याए । जं सर्वही मुनीं कीकृती रती न भजेए ॥
 बोर तर्पि बोर मुणिवली रुधि । परीसह कीचि नव्य वृत्तिए ॥२१॥
 बोर गुण पराक्रम जोय । कर्म विरी साधि बडिए ॥
 बोर गुण ब्रह्मचारी गुणय । नारी परीसहि नवि पडे ए ॥२२॥
 धामोसहीए पत्त परभाव । ग्रामय पिर पिर ना टलिए ॥
 बीलो सही रुधि धूंकने स्पशं । रोग सहु दूरें पलिए ॥२३॥
 सर्वांग मेलबी साप बिल रोग । कीत भ्रांती डीफक जाय ए ॥
 जन्तोसही पति मरकी विनांत । रोग जाय कबी व्यायतां ए ॥२४॥
 सर्वोपवीय पत्त गुण जोय । सर्वोय उपय अश्वो व्यायतांए ॥२५॥
 अंतरभूति द्वादश भंग । अस्वन मरकी हणि तेरिण बलीए ॥२६॥
 कायबली जु ऊंवलि प्रीलोक । तक्ते अन्म स्थानकि बरिए ॥
 हस्त पास्यूं ते रूप सही होय । बीरस बीण कपी करिए ॥२७॥
 हस्ति बीपादी तें श्रुत सही पाय । सखीसवीण कपी बीर कहीए ॥
 हस्ति अक्ष अयूत गुण होय । अनी अ सवीख गुण बहीए ॥२८॥
 अक्षीस महामलीकथ्य मुनींन । जेह बेर आह्वार लेई जावए ॥
 अक्षार हय कत्री संन्य सपाय । अक्षहान अजय पाय ए ॥२९॥
 बद्धमान रुधि मुणिव घन धान्य । विद्या तर्खी कृषी मोहें ए ॥
 सखिस्त्रिपयद शाश प्रवाल । सर्वोसबी माहा पुण्य सीचिहिए ॥३०॥
 बद्धमान कृषी कपी नाम । सर्वार्थ सीषी मोक्षादीं वैद्यए ॥
 एह कपी मुनी कर्हि छिसार । विनय करी गुण सीषीविहिए ॥३१॥
 सुर अक्षुर नर जोमि हय । ए मुनी मोटी राजीव ए ॥
 अनेक सात्त छि अरथ अंडार । नव नय कर्खुं ए माजीव ए ॥३२॥

सुभद्रा स्वयं करि कथन बनेन । मोहि निरीतिए कहयो ॥
 काम ब्राह्मण सब महाठका जाय । पाय पाटल नाल पबयो ॥३३॥
 करम बेरी रखे रोसबा जेस । उलक्य विद्याए कियो ॥
 त्रिभुवनन मोहि एकल सखल वीर । सह मोकि प्रथ जब कीउ ॥३४॥
 कामाक्ष्या सु रंज मंस । ध्यान विद्याए निधि कियो ॥
 नित्य नच पदारथ जाख । भातय तत्पनिवही कियो ॥३५॥
 प्रभार प्रहल सील रत्न राखि । बीरासी साख उत्तम गुण ॥
 सुभट सबे पचाचार प्रधान । एह सधु पुरि कुराए ॥३६॥
 उपसम भज चढो करे काम । ठाम विखय बेरी नी टालि ॥
 पोढी प्रजा बहुविध संघ । बचन घनि जण पालि ॥३७॥
 पुण्य पाटल राजधीनि जाण । सरय बवत गृह सोभता ॥
 व्यंतर ज्योतिक विविध विमान । परबार्धनीत पुर सोभता ॥३८॥
 एणी पिर राज करे मुनीराज । भातया बित्तन राजकट कलीए ॥
 पापी भ्रमव्य ने मोहोल न होय । न्याय मारने बालि बलीए ॥३९॥

इहा

भवांतर पुछु बबका, मात पिता तरा भाव ॥
 ए मुनीवर न्याने धारलो । सुखो जसोमती राज ॥१॥
 तब जसोमती कर जोडीनि । मुनीनि नामो पाय ॥
 मिमोजालि भविनय करय । तम्हे कमजो मुनीराय ॥२॥
 मुनीवर कहि राखा सुखी । लाल बोरसी जीव ॥
 ते ऊपरि जमता संक जसमता कक बलीये ॥३॥

भवांतर भेऊ मात तलिन । कहि तबे कामा बंडर ॥
 मुनीवर कहिसे पू जूना । सुखो जसोमती मुनीवर ॥४॥

वास भव भवाचोखी नितनीन ।

जसोमती राजा के सवांतर

राय जसोवर सुख पिताजी । जसुलमती तम मात के ॥ राय बबधारेजी
 संक जय सुखजोमती जी । तबे सुख पुण्य बहाय के ॥ राय ॥
 बंधवता सही जासीभिजी । पुण्यनि पाय विद्या के ॥
 जसोवर सम्राटो पीतायह जी । बेडी प्रवीणयो पावके ॥
 बैराग्य धरी तब बचरी जी । सुरम पावो पुण्यमान के ॥ राय ॥

पूरव करव पसाय बी बी । राणी कुमका सू लम्ब ॥
 असोचर मन तेह सूं सहीं बी । बहू परकोहिं बढ के ॥१॥ राय०
 राणी अजानी सी जाणीयो बी । राय हवो मन मंष के ॥
 रति बंराय्य भावती नई बी । प्रभात हवूं उत्तंय के ॥३॥ राय०
 सामंत क्षत्री मंडीयो जी । राय समा बईठ ॥
 चन्द्रमती तिहां भावई बी । सुत दीठे हरख पईठ ॥४॥ राय०
 असोचर दीक्षा लेवा सही बी । कहिं क्रूर सपन उपाय ॥
 चन्द्रमती बलती बबे बी । देवी कोपी राय ॥५॥ राय०
 देवी मढ़ जीब बल दीजिये जी । जिम होय विघन विनास ॥
 उत्तर प्रति उत्तर कहिबा लगी जी । असोचर दया निवास ॥६॥ राय०
 माघि प्रेरयो लाजिं पडधों बी । पीठ कूकडी करेया ॥
 भाव करयो हंसा तम्पो बी । देवी नें बलि देय ॥७॥ राय०
 देवी नूं स्ववन करधूं जी । मरु विघन करो दूर ॥
 तं चन्डी कात्यायनी जी । सींह बाहनी तू क्रूर ॥८॥ राय०
 ते समरय केम राखवा बी । जो ब्राह्मू मृत पास ॥
 भोला फोकि भिष्यात करी जी । पडिते पापनें पास ॥९॥ राय०
 देव स्वरूप जाणि नही जी । सुख बांछि नंमारि ॥
 जे पर जीवना प्राय्य हरि बी । ते किम तारि संसार ॥१०॥ राय०
 धिर भाबी तुम्ह राज दीयूं जी । संजम लेवा सचचार्ये ॥
 तब अमृतायि भीतयूं जी । जाण्यो मुक अन्धाय ॥११॥ राय०
 ते भाबी विनय कर बोडी जी । दीक्षा लेस्यूं तुम्ह साथ ॥
 माघ साधि मुक मंदिर बी । भाव जयो मुक नाथ के ॥१२॥ राय०
 रायें बीसवास तेम करबुजी । जेसूं पडी भीत साड ॥
 बली बसेखिनदी नसी प्री । नारी सासु साड के ॥१३॥ राय०
 विश्वास करवो नहीं जी । राय ते बखी सुखताय के ॥
 पण तेह धिर जमवा नयो जी । कर्म तयो परमाय के ॥१४॥ राय०
 बिल वैई तीसि जेहूं जशां हथ्यां बी । अचेतन कूकडा ते पाप के ॥
 राय मोर भांम स्वान होई बी । पायें पाण्यो संताप के ॥१५॥ राय०
 मोर मरीं सेहेलो बयो जी । स्वान बयो ते साप ॥
 सेहेलो मरी रोहीत हवो जी । सापते समुधार पाप ॥१६॥ राय०

पापि धापरिध बाणयो जी । कुम्हो कर्जीमती रूप के ॥
 माय बेटा बिर बिस्तरधू जी । संसार दुःखनो रूप ॥१७॥राय०
 माझाबि तहू ने भेट बरयो जी । जे रोहीत बिल्यात ॥
 अमृता ए जे तेल माहि तल्हो जी । ते सही जाण्यो तहू तात ॥१८॥
 राय०

सीसु मार जेरी कुमडी हली जी । मृत्युकी नाचती स्तर के ॥
 माछी लेकी तेमारधू जी । ताती बेलू समार के ॥१९॥राय०
 पोता बीरज पोति ताहां हवो जी । संसार ए हवो विखीन के ॥
 तहू छातीं हसी तिहां । तहू पिता जी । पोति पीता पोति पुन के ॥
 २०॥ राय०

छाली मरी महिष हवो जी । तहू भयव हसो जेख के ॥
 अजोनी संभव छाग तहू पिताजी । दुःखी हवो जाय हसोख के ॥२१॥
 राय०

महिष मारयो बाल्यो चन्द्रवतो जीवजी । छाग बाल्यो पिर तहू के ॥
 छाग महिष साचि मूसा जी । कूकडां हवां पापेख ॥२२॥राय०

वन कीडा तहू धावध जी । वन लीची कोट बाग के ॥
 मझसूं वाद करंतडां जी । प्रतिबोबायो बिलाल के ॥२३॥

कुकडे तत्र भव सांभल्या जी । मुक बचन थी सार के ॥
 कोटबासें साथे हुत लीयां जी । हरखें बासां ते वार के ॥२४॥

कुसुमावली सूं खोलंतडां जी । मुकसूं अन्द बेंब बांख के ॥
 कुसुमावली वरनें जोडि भवतरपां जी । कुकडें मुकिं प्राण के ॥२५॥राय०

अभयमती अभयवन्धी जी । रूप सोभाम अघार के ॥

मिथ्या पाप तखि फलि जी । इम बांघ्यो संसार के ॥२६॥राय०

अमृतायि पाप करयो बसूं जी । माह मारयो बेई बिल के ॥

सीख न पात्यो मिथ्या करो जी । पांचमे नरकें पायीं सीख के ॥२७॥

राय०

राजा की बला

राज बनें तत्र पहि बरयो जी । नबखे अंसूं भायके ॥

भूरी भूरी धापने नंद तो जीके । रा०। बरबर कांयि काय के ॥२८॥

माहारो मात पितर तखो जी । महारि हाचि ब्यव कीच के ॥

जीखि हूं पात्यो पोठी करयो जी । तेहनें में दुःख वीच के ॥२९॥ राय०

कल्याणमित्र प्रति बोल तो जी । मि कीर्ति बहू पाप के ॥
 बलचर मन्धर बलचर जी । कल्याण कीर्ति सौदाय के ॥३०॥ राय०
 ते पातिक हवि छेद पूं जी । वेसू संजम मोर के ॥
 तनु भव भोग विरक्त हवो जी । दुर्धर तप करी मोर के ॥३१॥ राय०
 दुःकर्म विरीजी पसुं जी । जीकू इन्द्रिय मोर के ॥
 तनु भव भोग विरक्त हवो जी । दुर्धर तप करी मोर के ॥३२॥ राय०
 मयम धान मवेन ककू जी । कूबू मन ए पिर के ॥
 कल्याणमित्रनि वसी कछू जी । कूअर वै वैजो राज के ॥३३॥ राय०
 ग्रहीछत्र राय कूअर पूं कूअरी नी । करजो वेहेवामू काय के ॥
 बलतु कल्याण मित्र वदि जी । नीज हाथि देयो राज के ॥३४॥ राय०
 यम कूअरने राज भोगपडिजी । परजानां सरि काज के ॥
 राजायि राज स्वस्त होइ जी । स्वस्ति मुनी तया भोग के ॥३५॥ राय०
 स्वस्ति सङ्ग शास्त्र सांभलि जी । सांभलि धर्म संयोग के ॥
 राए तेह बोळ भात्रीयो जी । तब जायुं नगरी मन्धर के ॥३६॥ राय०

जसोमती के बैराग्य भाव से चारों ओर चिन्ता

जसोमती राय बैराग्य हवो जी । तब हवु हाहाकार के ॥
 तय अतेउर खल भल्लू जी । एक ऊतावली जाय के ॥३७॥ राय०
 मोती प्रोती तिम रह्यो जी । ते पण बन माहि धाय के ॥
 एक अरीसे मुख जोती जी । एक सणचारती काय के ॥३८॥ राय०
 एकनें भ्रंजन करि घरघो जी । वेगुलि बन महां धाय के ॥
 एकते वेणी गूधती जी । एक ते पीठी लायके ॥३९॥ राय०
 एक हार पिहिरदा करि घरघो जी । वेगुलिवन माहि धायके ॥
 एक सिहिभी सीरें रोपती जी । एक करि तिमक बराम के ॥४०॥ राय०
 एक फूली करि ग्रही जी । वेगुलि बन माहि धाय के ॥
 एक अवन तनु लायती जी । कबोली हाथि लेकामे के ॥४१॥ राय०
 एकें भोजन बाल त्यजी जी । वेगुलि बन माहि धायके
 एक अचुरे पान बीडी धरी जी । अचुरी छि मुख ठायके ॥४२॥ राय०
 चीर पिहिरि चोली बीसरी जी । वेगुलि बन माहि धाय के ॥
 एक अकलिं चीर पिहिरती जी । एक वाटवी बीसराय के ॥४३॥ राय०

प्रबोधे सुदि बेसी लखि जी । बेगुलि वन माहि बाध के ॥
 एक ही बरनती बोलती जी । पकड़ी ऊपर काय के ॥४३॥राव०
 एक केठेकी मखला पडि जी । बेगुलि वन माहि बाध के ॥
 एक बीछीया नीचरी पडि जी । एक पूबरा सुटी बाध के ॥४४॥राव०
 एक मू दही करि यो पडि जी । बेगुलि वन माहि बाध के ॥
 एक मोती हार मोरती जी । एक काकड़ मोरती के ॥४५॥
 एक बेसी आछावती जी । बेगुलि वन माहि बाध के ॥
 एक मही-पर्वि सूचती जी । एकले काज काय के ॥४६॥राव०
 एक विजाय करतकी जी । बेगुलि वन माहि बाध के ॥
 नयन काजल बलि बोली तणा जी । मोती हुंस काला बाध के ॥४७॥
 एक नाहना मुसा बोलती जी । बेगुलि वन माहि बाध के ॥
 एक कसूवि मोबी मोरती जी । तेक कांचती बखाय के ॥४८॥
 नयण नीर करी नाहती जी । बेगुलि वन माहि बाध के ॥
 कुसुमावली राणी वीनवती जी । सुखो जसोमती राय के ॥४९॥
 तप फलि स्वर्ग पामीर जी । तेसि तह कंसु काज के ॥
 नयरी अमरावती समी जी । तू जी परलोक श्रे के ॥५०॥ राव०
 हुं इंद्राणी अपछरा जी । राखी केरो हुं द के ॥
 बली योवन रस लीजिबिजी । राव मोपी मन रंग के ॥५१॥राव०
 बीधु भाषम तप करु जी । दीसा लीठ उत्तंग के ॥
 पूषा चंदन नव्य बनि जी । नल ननि महु तुह पास के ॥५२॥ राव०
 महुने एकला तव्य मू कोपि जी । कीजीयि लील बीसास के ॥
 फूलहार बंधार समा जी । मूषण तह बिले मार के ॥५३॥राव०
 मयस दावानल तनु दाहि जी । दहीवली चंद्र अपार ॥
 तह बिले सुनी सेवकी जी । गोठकी कोरतु बाध के ॥५४॥राव०
 किम छाबी एही प्रीतकी जी । महु तह बिले नर बाध के ॥
 पवित्री पकड़ु हंसि राखी । सिद्धा बलबल बहू अंगीर जी ॥५५॥राव०
 जब जस बुरे जब के । राव कहि र एही सुखी जी ॥
 पमाही तनु रोग से संभवि जी । जगदी मक सुदि भाग के ॥५६॥राव०
 आत्महित से छाति करे जी । पवि कालस न बाध के ॥
 एक पकड़ु मार बली जी । मारकी बलबल उदाय के ॥५७॥राव०

कूप खलवा तब मांढरो जी । किम तेखी बचनी बहवार के ॥
 मारवित्त बचवारीयि जी । अहो जाण्यो राय निवार के ॥५६॥
 पालवी बेसी वेहु जसां जी । आख्या बनह मकार के ॥
 मुनीवरनि पाये पडयां जी । बीनव्यो जनीमती भूप ॥६०॥राय०
 तह्य विरल बरवार सोहि नही जी । तारा विरल सही रूप ॥
 जंतीदरी सहु बीनवी जी । एह तनु तह्ये सखवार के ॥६१॥
 मरम बाधानल बली रह्यो जी । मुं उपरि मांढो खंवार ॥
 तुळ नवनें अमीं करे जी । तुलही मेघममतार । ॥६२॥राय०
 प्रेम जल बरती करी जी । एह संताप निवार के ॥
 अहाने लहु पणि किम तबो जी । केम सरि प्रजा नो काज ॥
 निमित्त हवूं ते बल कहो जी । दीक्षा लेवा आज ॥६३॥राय०

ब्रूहा

राजा का निश्चय

राय कहि कूंभर सुणो, सुण्यो बसोचर भव जाण ॥
 मोर आदि तह्य लनि सही । पाप पुण्य भेद आण ॥१॥
 भव सुखतां अह्य वेहुनि । हवो जाती स्मरण सार ॥
 सात भव दुःख सामसयां । मूर्छा आवी तेणी बार ॥२॥
 सीतल बाहु खंभे करी । अह्ये कीर्षा साधनां ॥
 सुर्छा कारण अह्ये कहूं । तीणि दुह भर्ष विद्याम ॥३॥
 राय कहि तह्ये राजि सीढ । पालो प्रजा परिवार ॥
 काम तम सहुं साधि करी । अह्ये सीढ संजम भार ॥४॥
 दीवो राजमि तह्येने । बलतां केम सीढ प्राज ॥
 राजनीति इम रहित नहीं । आवि अती बहू लाज ॥५॥
 अथवा तह्ये तमत दुळ तह्ये । बांकीउं जोबनि हीत ॥
 मोह काव विनासो तह्ये । ए दीवी बीपरीत ॥६॥
 बाप जोबनि सुख करि । मुह कहीवि, से पाट ॥
 ते राय राम मांहि भोवनि । बलि नांकिळ बाट ॥७॥
 मु बाप तह्ये हीत करणु । तो देकावो बीजा सार ॥
 काज सीभि यम आयणां । दुस्तर तरीयि संतार ॥८॥

राज बहू जो बहू बने । ती ए खोखो बने ॥
 मोलि बालक के तारीबि । बहुबले तारबो न फल ॥२॥
 कल्याणविन धर्यानि कछु । राज नीचो तछुं धाव ॥
 जिम नीसल्ल राध तप लीबि । बहि कीको धरतल धाम ॥२०॥
 तब में तेह बोल मानीयो । राबे नीच वध दीध ॥
 दान पूजा धन तप करी । तल्व रहित मन कीच ॥२१॥
 इति श्रीमहर्षनमष्टया निवदितं ज्ञानं सप्तद्वीपकं ॥
 वृत्तं तत्त्रिवर्षाभितं भिदलसङ्घैर्विभवोद्भूतक ॥
 सदुगमोऽसुवृत्तकानिभविता न्यभिः सुरलानि वै ॥
 देवेन्द्रसुविक्रमसुतपवं कुर्वसु वी मंगलं ॥२॥
 इति श्री मशोचरमहाराजचरिते राजबूढामणी काव्यप्रतिबन्धे ।
 भूदेव कवि श्रीविक्रमसुत देवेन्द्रविरचिते । यज्ञोमती राज—
 पायाद्विनीर्वमनमुनिदर्शनं प्राप्तकोष कल्याणमिन्द्रयोग ।
 मूपलब्ध प्रतिबोधयसोमती वैराग्य लब्धमवधैवि ।
 राज्याधीकारवर्णनोनाम अष्टमोऽधिकारः ॥२॥

नवम अध्याय

× × × × ×
 भास नीता खंदनी—गोर गीरे तहा नीनवूए ॥
 मुनीवर स्वामी बोलीया ए । मधुरीव सुलसीत बाल ॥
 बसोव बसोचर बसोमती ए । तहा जावि भवांतर बाल ॥२॥

पूर्व कथा

पुष्य पाप कल पूवूधा ए । भवतनु विस्तार ॥
 मंभर्वपुर छि कोहामरुं ए । मंभर्व राजत उखर ॥२॥
 व्यंजती राखी छि तबतखी ए । रूप सोभावनी बाल ॥
 ते केहू कृति उपनीए । मंभर्वदेव कृमर नकाण ॥३॥
 बली तेह पुनी हवी कहीए । मंभर्वदेवा नाम ॥
 रूपसोभव सोहामरीए । जयस कनापुख डाय ॥४॥
 तेह राजानी मंची सखीए । राम नाम विवहात ॥
 तब गारी बन्दरेता सहीए । रूप ककल सुवाह ॥५॥

तस्यैव कृत्स्नं शरणागतं । सुखं वेदां देव ॥ १५ ॥
 जीतसन्मूढहृत्सोः कश्यपे ए । श्रीम नाम दूष्य होय ॥ १६ ॥
 वेटी राक्षसी केह कहीए । अंध्रव सेना सार ॥
 जीतसन्मूढप्रति स्वयं वरे बरीए । प्रीत ऊपनी ते वार ॥ १७ ॥
 रामसेवी सुख सुख बोक्थे ए । राजकुमारी सुमाहंत ॥
 गंधर्वराय एक वार गयो ए । पारव काज कृताए ॥ १८ ॥
 वन माहि मृग देखीयो ए । बाँध साँधतु देख ॥
 हरखी वेगें भाखी रही ए । हरण भरंतो लेख ॥ १९ ॥
 बाण तेणि ओरि मूँकयूए । बेबी हरखी अपार ॥
 बाँण नै बाइ भोइ पडी ए । प्राण गया तेणी वार ॥ २० ॥
 जो जो प्रीत हरखी तखी ए । नाह भाडि चरपु देह ॥
 प्रीत राखी प्राणानी गम्या ए । एहवु कहीइ सनेह ॥ २१ ॥
 सरखें भारी काणो प्रीतडीए । हरखीनें देह रोह ॥
 प्रीत राखी प्राण नीगम्या ए । एहवो कहीयि सनेह ॥ २२ ॥
 प्रीतडी जाणो वन समीए । मन पेई माहि बरी एह ॥
 प्रीत राखी प्राण नीगम्या ए । एहवो कहीयि सनेह ॥ २३ ॥
 प्रीत कहीइ खीर नीर समीए । जलवहि नासि देह ॥
 प्रीत राखी प्राण नीगम्याए । एहवो कहीइ सनेह ॥ २४ ॥
 रखेनीगम्या प्रीत रसकई ए । जाखें ऊकालो अरयो एह ॥
 प्रीत राखी प्राणनी गम्या ए । एहवो कहीयि सनेह ॥ २५ ॥
 माणस राक्षस सरीखडा ए । कोपतां वार न होय ॥
 प्रीति प्राण दीबो हरखलीए । पशुभां तयो नेह जोय ॥ २६ ॥
 केटला लोटखरं पाखो भिलवटिए । प्रीत करीइसि सोय ॥
 प्रीति प्राण दीबो हरखली ए । पशुभां तयो नेह जोय ॥ २७ ॥
 केटली भारी भाषावनी ए । माहनि कंधती जोय ॥
 प्रीति प्राण दीबो हरखली ए । पशुभां तयो नेह जोय ॥ २८ ॥
 नाह वेहें प्राण पावदे ए । पशुभां तयो नेह जोय ॥
 प्रीति प्राण दीबो हरखली ए । पशुभां तयो नेह जोय ॥ २९ ॥
 भाई पुषाकी कुट्टव कहुए । माहो माहि बाँधि बहू कोय ॥
 प्रीति प्राण दीबो हरखलीए । पशुभां तयो नेह जोय ॥ ३० ॥

बांकेन बांधन हारें सुत ए । कण्ठ कण्ठका होय ॥
 शीति प्राण्य दीयो हरखली ए । पदमा तयो मेह जोय ॥२१॥
 बांही हरखी मुळें तया ए । क्षति चाली तेखी वार ॥
 राय नगर भयनि प्राप्ते बल्बो ए । हरणें न शीठी नगर ॥२२॥
 राय पूठि मृग भाखो बल्बो ए । राय दीठो ते प्राण्य ॥
 हरखली तसि मोहि व्यापिबो ए । पाणीयो वृक्षिनी प्राण्य ॥२३॥
 झांझुं वारि मेह हींचहु ए । दस दिवस जूइ अपार ॥
 मध्य देखिते हरखली ए । व्यरह व्यापो अपार ॥२४॥
 पंच पड्यो पूठि आवतो ए । रडतो वृक्षियो होय ॥
 राय बीचारे नीज भनै ए । मोह तरणी गत जोय ॥२५॥
 न्यान विह्वलको ए मसू ए । भासा रहीत ते होय ॥
 विरह बकी ए दुःख घरे ए । मोह तरणी गत्य जोय ॥२६॥
 संसार वन ए दुःखे भरघुं ए । जीवने भमादि सोय ॥
 बीक्ष्य बसैं बौह्वल करी ए । मोह तरणी गत्य जोय ॥२७॥
 संसार सागर ए वुस्तरघुं ए । जीवनें बोलि सोय ॥
 कुटुंब पाषाण कठें करीए । मोह तरणी गत्य जोय ॥२८॥
 लाख चोरासी जोन चहुटबाए । संसार नगर ए होय ॥
 छेतारि जीवनें सोधि करीए । मोह तरणी गत्य जोय ॥२९॥
 लाख चुरासी रूप घरघा ए । जीवने नचाबि सोय ॥
 घापें नटुबो यह करीए । मोह तरणी गत्य जोय ॥३०॥
 कोष मानाधिक चोरबाए । संसार कूप ए होय ॥
 जीवने नंखावी प्रिय करीए । मोहतरणी गत्य जोय ॥३१॥
 संसार तरणी गत्य जोय । संसार भटवी जीव मृग ए ॥
 वेगें पीडे सोय । भस्मा पास नाली करीए ॥३२॥
 राजा मृग देखी दुःख घरे ए । एहनें कीहु संताप ॥
 बिषय केरे संघट पालि ए । केन कुटें सु पाय ॥३३॥
 वैराग्य मन मोहि नीतबली ए । पुत्र ने दीवु राज ॥
 दीक्षा जीवी वने जई ए । करवा पासक जय ॥३४॥
 तप करी घटी ऊजला ए । नीति इन्दी वार ॥
 अज्ञान जीवें करी संसारपी ए । कर्महरयो पंच चोर ॥३५॥

कुंभर राज पाणि न्यायसू ए । बाधयो सपत्नी राज ॥
गजबोडा रथ भंडार बसो ए । परधानी सारि काज ॥३६॥

एक वार कुंभर दीठी मुनीवर । ए गज बोडा बहु परिवार ।
ते देवी मोह ऊपनी ए । नारणु बीभ्यू तेरी वार ॥३७॥

तपकरी व्रत प्राचरी ए । नारणु न बाधिसो कोय ॥
नारिण तप नीःफल जाइए । कोडी हाथी देख्यो जोय ॥३८॥

ते रतन प्रापी काच लीजीयिए । घोडा साटि खर लेखि तेह ॥
भ्रामला मोती साटि लीयि संखली ए । तप करी नारणु बाधि जेह ॥३९॥

परधन पर रामा पर इधी ए । नारणु ज बाधि देख ॥
हाथ चीतामणि सांपडिए । काग ऊडाडतो लेख ॥४०॥

तयें कर्म क्षय ईछीयिए । ससार दुःख विच्छेद ॥
मोक्ष तणां सुख बांछीयिए । नव्य घरीयि मन खेद ॥४१॥

मरण पाम्यो मुनीवर तवाए । मालव देश ऊजेण ।
जसोबंध राजा तयो सयोए । जसोर्ब हबो गुण तेह ॥४२॥

गंधर्बराय राणी ब्यीऊसीधी ए । मीध्यात तप करपो जाण ॥
चन्द्रमती हवी ते सहीए । जसोधनी राणी बलाण ॥४३॥

देवीनें चीचु पाठनु कुंकडो ए । व्यर्जे करीमोई तेह ॥
मिध्यात पाप उदय हबो ए । सात भव भमी जेह ॥४४॥

गंधर्वसेना पुत्री रावनी ए । सील लोप्पू दुःख खारण ॥
भीम देव रमू अति बणुं ए । विषयासक्त ते जाण ॥४५॥

नार तयो असाधार लही ए । जीत सत्रु हबो करान्य ॥
मोह मद्धर राग परहरीए । दीक्षा पानी भलो भाग ॥४६॥

तप करी तेरो धती बखोए । पाल्पू संवय सील ॥
संन्यास लेई प्राण भूंकयाए । पाम्यो माहाराज सील ॥४७॥

राज जसोधर ते हबो ए । राणी वीलि संरेव ॥
पीठ कूकडा पाप उदय हबो ए । भव साते एम करेव ॥४८॥

राम मत्रीयि बहु बीषार सुष्ये ए । बीष बीग काय असार ॥
नारी सहीत तीरो प्राचरपो ए । सील वरत भवतार ॥४९॥

सील अतिचार विज्ञ पासी मूघाए । हवां विज्ञाचर तेह ॥
रूप सोभाग विद्या मलीए । बीजतणां फल एह ॥५०॥

पुष्प शारी नेहते प्रसां ए । अष्ट महाविष भोज ॥
 रोष संताप धीरि चही ए । पाक्यां पुष्प संवोज ॥५१॥
 मंग्रवसेन राजा ए । लखी ए । बेहेन तखे अन्याय ॥
 तव नैराप्य भुन बलो ए । लीषो तव गुण अय ॥५२॥
 संबम पालवो घति निर्मलोए । नाणूं बाण्यूं प्रसार ॥
 चवी करी एह प्रवतरघो ए । मारीपंत विचार ॥५३॥
 मघ्रब जी बेटी रावनीए । तप करी सोखी काय ॥
 ते मर करि उपनीए । समृताहवी क्यथाय ॥५४॥
 भीम देवर जे तेहनोए । तेखें भवें करघो जार ॥
 पोढा पाप तणि फलए । कूबडो हवो ममार ॥५५॥
 पूर भवि घासक्त हती ए । नाह त्यंजी अपार ॥
 एखें भवि नेह तिम बरघो ए । मारी निज भरतार ॥५६॥
 राम मंत्री विद्याधर हवो ए । पालीय आवकाबार ॥
 ते मरी करी अवतरघो ए । जलमती कुम्भार ॥५७॥
 चद्ररेषा राजे वीद्याधरीए । तेखे करघो बर्ष बसाण ॥
 कुसुमावली सही तेहवी ए । परखी जसोमती बाण ॥५८॥
 चित्रांगद बाण तहा तखे ए । तेणे खंखूं राज ॥
 तापस वीक्षा आदरी ए । कुतत्र करघु सुखकाम ॥५९॥
 कुनीर्ययात्रा लीषी बली ए । आवसो दीवी स्वान ॥
 हेवी हेखी स्नेह सांझो ए । तखी सांझु सजान ॥६०॥
 मरी करी ते केवी हवोए । मारीवत्त सुखे विचार ॥
 नाणूं समत महारजेए । मोह कर बू असार ॥६१॥
 वीत्ररेखा साह तहा तखीय । लीखि पाप करघो दीन रात ॥
 नैराप्यद मरी ते हवो ए । तखी करपखो वीवजात ॥६२॥
 मामा जीव साहि मोह बखोए । प्रहो ज्ञानो सही राय ॥
 संसार साहि जीव कल भजेए । निष्य्य तयो पसाय ॥६३॥
 यलोष पिता जे अज्ञोबंघ ए । अज्ञान भइ परिणाम ॥
 ते मरी अज्ञानत राज बत ए । हवो सुपत सुनाय ॥६४॥
 मंचरं राखी कोय मरी हवी ए । मंचरखनी बजोबह मार ॥
 निष्याव फलें मरी कोरो हवीए । मरीके जे हवयो विचार ॥६५॥

ते बली श्रेष्ठी चिर वस्त्र हवीए । मरतां पाप्मो नवकार ॥
 ते मारीदस तह्य सुत हसिए । किते राखी नरें सारें ॥६६॥
 मुनीवर तशी वांशी सांभलीए । मारीदस हवी बैराग्य ॥
 ससारवी स्थिति भावतो ए । सरण मुगति तणो ठाम ॥६७॥

भरवानन्द आदि को बैराग्य होना

राशी ते राज बेसाडी करीए । पंत्रीस राजा सहीव ॥
 दीक्षा लीषी निरमनीए । जीव तणूं करणूं हीत ॥६८॥
 भरवानन्द जोगहि बरघो ए । जीव हिंसा करघो पाप ॥
 तेह हवे किम छूट सूं ए । मुनिवर टाल्यो संताप ॥६९॥
 आयु थोडो जाशी करीए । दीक्षा अणसण लीष ॥
 बाबीस दीवस लषि तिरुए । अणसण पाळो प्रसीष ॥७०॥
 पापएवढो जो नो क्षय करणू ए । अणसण बरया माट ॥
 जोगी टली देव हवा ए । घन घन भरम महत ॥७१॥
 पाप एवढो जो नो क्षय करणू ए । अणसण बरया माट ॥
 उपवास बरत संजम तप ए । सही सरण मोक्ष वाट ॥७२॥
 ब्रह्मचारी बाई जेहतीए । प्रतीबोध्यो जेखि मारीदस ॥
 हिंसा ठाम जेखीवो ए । देवी संकोवी महत ॥७३॥
 तीणि महावत आवरो ए । आचरियो तप अपार ॥
 सोल संयम बणूं पालीयूं ए । अणसण सेई तेणुं वार ॥७४॥
 बीजो देव लोक साजीयो ए । संपुट सीला अंतार ॥
 सातधान रहीत तनए । मोती पिर बिचार ॥७५॥
 कनक कुंडन मुगट आदि ए । पहिरया नूपला होय ॥
 अंतरमुहूर्त माहि होय ए । सात हाय तनू सोय ॥७६॥
 बय जय कार देवी करीए । बरे वाली फुल माल ॥
 देवीय सूं क्रीडा करे ए । सोख भोगवि बिसाल ॥७७॥
 अकृत्रिम चैत्य कल्याणिक ए । यात्रा करें मनरंज ॥
 पूजा अभिवेक अती बणूं ए । पुण्य जीवे उत्तम ॥७८॥
 सुदत्ताचार्य मुनीवरें ए । अणसण लीषी उवार ॥
 समाधि सरीर यूंकी करीए । सोलमि सरण अंतार ॥७९॥

सुक भोगवि सिद्धा भती बस्ये ॥ वीवीम वल्लभ भोगिन
जनक वाग्य कल्याणक करे ॥ पुण्य तल्ली सयोगी ॥८०॥

भारीदस भादि मुनी सहीए । तप कीयो गह्वर ॥

भापापक्षा तप फलीए । सरय साधु जयवत ॥८१॥

बन्धु

राय बलेश्वर कथ्य विस्तार । पीतम स्वामी इस कथ्यो ॥

पया तपयो मंजय काख्यो । जनेशन जीम कृष्ण मकी ॥

सात भवांतर मन्मा बजाख्यो । पुण्य पाप फल प्रक्षमा ॥

स्वामी ज्ञान मंजय । वाय ससा सहीत तया ॥

श्रेणीक हूरधु अपार ॥२११॥

भास बचामहानी—राज धन्यासी

भगवान के धर्मोपदेश का प्रभाव

वीर स्वामी तही सार । वीज्यध्वन भती नीरमलीए ॥

पणधर गौतम स्वामी । विस्तारी भती सोहोबलीए ॥१॥

सुरवर फणधर स्वामी । व्यंतर ज्योतिकि सङ्गमलीए ॥

वली तिर्यंभ नर बाख्य । विद्याधरें बख्ये साधनी ॥२॥

हूरक वाग्या सङ्ग कोय । धानंद बख्यो यन गाहि बस्की ॥

चन्द्र पूरण जिन कोय । धामर कस्तोत जल्लास्योए ॥३॥

केला सीध ब्रह्म जीव । केले धर्हिता ह्य समरय्य ॥

केला विप्यातनि कीध । केले शयुजस अहरकव भाषरयोए ॥४॥

संभली खेलीक राय । हूरक ठपनी कममहि बखी ॥

जिनबाखी पुणठाव । स्वयन करि ह्यि केह बखी एनाध ॥

वीर वाणी बाख्ये केह । नय नय कयि बाजती ॥

बरसि धर्माभुत केह । भाषात वखी भद बाजती ॥१॥

स्वने मौल सुल जीव । इतिह्य काकती रिम किय ॥

ज्ञान प्रवाह पविन । बुधि गरी काधि कण्य बखी ॥

सुदरसि भादि मन्मा जीव । नीरनि बख्ये मन्मावती ॥

बंजयरायने भतीव । विजयवती भती बाजती ॥

बरुहावृत्ति नहीं बरुही । बाद अर्परपर तीपत्रजे ए ॥
 तद्ग जीव संलय हाथी होय । ए आश्चर्य रूपजे ए ॥११॥
 हृदनीवगति न होय । सुष्टादि व्यापारन नीपत्रजे ए ॥
 प्रीति जीव सह कोय । मोटू आश्चर्य मने उपजि ए ॥१०॥
 सूरय प्रभा जिन बासि । मिथ्यात तिमिरनि टालती ए ॥
 नम्य कमल सुख साण । पातक पकनि राखती ए ॥११॥
 चन्द्रकांति संभ जिन भास । भव भ्रम वेदनि खेवती ए ॥
 हरक संसृष्ट उल्लास । कुवादीयां मान उखेवती ए ॥१२॥
 मेघ सुदर्शन जाय । बैतालसू नादिज बलगिए ॥
 पूरती भवीयां काय । महाबीर बाणी नांदी तब लगिए ॥१३॥
 लवणादि स्वयंभू समुद्र । द्वीप सहीत नादि जब लगिए ॥
 मेघ समीए अन्द्र । महाबीर बरुही नांदी तब लगिए ॥१४॥
 बिजयारव गिरि जाय । बेहू श्रेणसू नादि जब लगिए ॥
 तत्त्व रतन तणी साण । महाबीर बाणी नांदी तब लगिए ॥१५॥
 कुल गिरि हिमवंत आदि । पद्मद्रह नादि जब लगिए ॥
 हरती विषय विषाद । महाबीर बाणी नांदी तब लगिए ॥१६॥
 गंगा आदि नदी परवाह । सिध बीब अभीषेक जब लगिए ॥
 सुखसां प्रापि उखाह । महाबीर बाणी नांदी तब लगिए ॥१७॥
 गंगादि महानदी बीद । नदी पर बरीं नादि जब लगिए ॥
 प्रतिद्वीपे सुप्रमोद । महा० ॥१८॥
 गजवंत गिरि वील संख्य । जिन मुवन सुनादि जब लगिए ॥
 अर्परपरए बलका महा० ॥१९॥
 विवेहादि आरज बांड । बरम सहीत नादि जब लगिए ॥
 न्येच्छ बांड नादि प्रबंध । महा० ॥२०॥
 चन्नी हरी बलदेव । प्रसट पराक्रम जब लगिए ॥
 सुर नर करे अह सेव । महा० ॥२१॥
 जिनवर पंच कल्याण । इन्द्र रक्षित नादि जब लगिए ॥
 मेहेरनाम्य जिन नाण । महा० ॥२२॥
 प्रतीहरी का अय्यार । अय्यार प्रसटि जब लगिए ॥
 विभुवन जन सुखकार । महा० ॥२३॥

मुनीवर रथी निधान । केवल ज्ञानादि जब लमिए ॥
प्रवटि बने दिधान महा०॥२४॥

कर्म हुरी मुनी संत । सिव मर पांने जब लमिए ॥
अर्गत सौख्य महन्त । महा०॥२५॥

चक्रवर्ती नाभि कुत । रुपभाषल नादि जब लमिए ॥
योजन विस्तारें अवभूत । महा०॥२६॥

नीचधानीलोपरि बाण । रवि मणी उदय जब लमिए ॥
ग्रह नक्षत्र सूर् चक्राण । महा०॥२७॥

रवि मणी ग्रह नक्षत्र । भेष प्रदक्षिण जब लमिए ॥
करी दिन रात्रि विविध । महा०॥२८॥

असंख्यात योतकलोक । चैत्याला नादि जब लमिए ॥
सुणतां टलि सङ्ग शोक । महा०॥२९॥

अंतर ये असंख्यात । अष्टप्रकारि नादि जब लमिए ॥
चैत्याला सुविख्यात । महा०॥३०॥

मवनवासी दस भास । चैत्याला सूर् नादि जब लमिए ॥
सात कीड बीहोसर भास । महा०॥३१॥

सुधर्म ईसान भादि होय । सोल सरव नादि जब लमिए ॥
कल्पवासी विमान जोय । महा०॥३२॥

यं देवक मनीसर । चण्डोसर नादि जब लमिए ॥
कल्पसील अमर । महा०॥३३॥

जास चौरासी सहस्र । अंतरसु चैवीस संख्य जब लमिए ॥
चैरकासासु विधाना वास । महा०॥३४॥

मुपती मिलानी अंतरीक । सिधावगमह नादि जब लमिए ॥
विभुसु विषेय अमर । महा०॥३५॥

वातवलय नुहु भेद । विमुचव बरी रही अक्षःलमिए ॥
बद् हव्ये बरयो अक्षि । महा०॥३६॥

विमलप्रसिद्ध अमर । अतिकर्म अमरि क्व लमिए ॥
सास्वतो आने अर्म । महावीर नाथो तक लमिए ॥३७॥

हय कासी कासी राव । चैतिक भाखी हरम बली ए ॥
महावीर पूबया सुठाय । अष्टप्रकारी सावनी मण्यो ए ॥३८॥

रतन जकील कुंभार । नीरमल जल पूजा करे ॥
 वीर आगल दीपि जण्यधार । जनम जस मरख हरिए ॥४३॥
 कुं कुम केसर, सार । कूरी कंदन पूजा भलीए ॥
 सुगधि शरीर उदार । जिनमुख प्राप्तवा मनु रबीए ॥४०॥
 नीरमल मोक्षी बान्ध । संकुल पंच पूज करिए ॥
 अक्षय पद नीर्वाण । दीयो स्वामी इम भाव बरीए ॥४१॥
 जाई जुई, लखकुंद । चंदा, कमल आदि फूल प्रहीए ॥
 तहूँ कीचो काम भीकद । एह गुण लिहिवा पुबिह सहीए ॥४२॥
 पंचामृत नैवेद । उत्तारि हेमबाल बरीए ॥
 नहीं कुफ मुवा वृषा वेद । तेह गुण प्राप्त होय करीए ॥४३॥
 रतन कपूरना दीप । उत्तारि जीन आगलिए ॥
 तस्व प्रकासन रूप । केवल ज्ञान लिहिवा बलीए ॥४४॥
 कृष्णागुरु आदि वृष । जिन आगलिउ सेवितो ए ॥
 कर्मदाह करो भूप । अह्य तयो इम मन भावतो ए ॥४५॥
 मोच बोच जंबीर । अंवा, आदि बहू फल ए ॥
 शिव सुख फल दीयो वीर । तहूँ स्वामी मुख आगला ए ॥४६॥
 कनक आल भरि करी अर्घ । वीर आगलि उत्तारतु ए ॥
 रत्नत्रय जे प्रनर्घ्य । सामी भव दुःख तारतु ए ॥४७॥
 पूजा करी अष्ट वेद । श्री महावीर स्वामी तखी ए ॥
 करवा भव उछेद । नृत्य भावना भाकी बखी ए ॥४८॥
 कु डमपेर धन धन्य । वीर जसके जे पवित्र कलकी ए ॥
 सीधारथ नृप धन धन्य । वेह धर स्वामी अक्षतदसो ए ॥४९॥
 धन धनपति यक्ष । षट लक्षमास रत्नवर्षको ए ॥
 चउनीकाय असक्य । देव समूह सखी सुखतो ए ॥५०॥

मगवान महावीर की स्तुति

धन धन्य त्रिसुखो मात । जीशीवि वीर जिन जनमयो ए ॥
 धन नाथ बंस विख्यात । त्रिभुवन माहि जे अंपवैवी ए ॥५१॥
 धन धन सोधर्म इन्द्र । मेरु सीखर स्तपन कीड ए ॥
 धन धन जिन बालचंद्र । वृषियां में जे उद्योतीयो ए ॥५२॥

वन जिन तनु सत हृष । वल सत लखतु मंडीह ए ॥
 कनक वरस वीरनाथ । बन्धुजान करी मंडीहो ए ॥१४४॥
 कुंडल मुकट मणि हार । इन्द्र निकाल जिन मूलतो ए ॥
 नमन करंता अपार । भाल दुरभर भुसतोए ॥१४५॥
 जिस वरस कुमार । बैरामि लोकातिक सेविस ए ॥
 दीक्षा कल्याणक सार । कौयो लीव नवी संजम लीड ए ॥१४६॥
 वाति करम जय कीव । केवसजान रवि प्रमटयो ए ॥
 लोकालोक कीव प्रसिद्ध । विष्यातम विमटयो ए ॥१४७॥
 समोसरण सादि होय । धनस वसुष्टम भावीयो ए ॥
 तिहुअण मवीयस लीय । सेवि बांछित फल पावीयो ए ॥१४८॥
 सिंह लांछन जय वीर । वर्द्धमान महावीर सम्मतीय ॥
 महती महावीर वीर । जयो जयो जनबुरु जगपती ए ॥१४९॥
 जयो ब्रह्मा तु ब्रह्मा विष्णु । व्यापक सिवशंकर ए ॥
 बुद्ध भलक निःकर्म । हरी हर तु वासक हरो ए ॥१५०॥
 बोहोत्पर वरस जिन प्राय । विक्रम देवेन्द्रि पूजीयो ए ॥
 जयधैव तिसुवन राय । भवीअण जन जय जय कीयो ए ॥१५१॥
 इम स्तवी जिन वीर । पुष्पाजलीवि बधावतो ए ॥
 श्रेणीक साहस वीर । गणेशर नवी पुष्प प्रावतो ए ॥१५२॥
 हरकीत मुसह समुद्र । वीरमें इन्द्र भारती करे ए ॥
 साडीबार कोड भती मंद । बाजिब ध्वनी अति विस्तरे ए ॥१५३॥
 करतो जय जय कार । इन्द्र उतारे भारती ए ॥
 नरबंता हरष अपार । दीठठि दुरीतनी भारती ए ॥१५४॥
 रतन जडीस हेम थाल । रतनदीवि उद्योतनीए ॥
 रचना रतन फूल भाल । बाणो जान सुसंतती ए ॥१५५॥
 चौंसठ लभर कंसत । किन्कर किचरी मुस मावती ए ॥
 ता ता वेई वेई करंत । सप्रभरा नाणे नवी भावतीए ॥१५६॥
 करता स्वसन अस्तु जगमाल । छंद प्रबंध मणि सुरवर ए ॥
 मानकी संनक विनाक । मवीयस जन जय जय करीए ॥१५७॥
 करता जय जय कर । इन्द्र उतमदि सारती ए ॥
 नरबंता हरष अपार । वीरमें दुरीत लीवराती ए ॥१५८॥

जय श्रीराम नमो देव । श्रीर विजय अयोध्यापुर ए ॥
विक्रम देवेन्द्र करि श्रेय । जय जय देव दुत इम उचरि ए ॥६६॥

वस्तु

इन्द्र भारती इन्द्र भारती कीच उचार ।
भवतसी भारती भंडती रंजती मकीयां नील वीठीय ॥
दुरित विमिर निवारती । बंदी सुर नरें मती गरीबीय ॥
हरलीत शैशिक नृप तथा । विजय अयोध्या मनी पाव ॥
बेलया तथा परिवार सू' धाम्यो निजपुर ठाय ॥१॥
भास साहेलजी नी । राग धुल धन्यासी ॥

प्रशस्ति

नव सहस्र देस सदा भलो । साहेलजीए । ठाम ठाम बहु गाव ॥
नगर पुर पाठन भया साहेलजीए । छेडा द्रोण सुनभ ॥१॥
धन कस्य कस्य रस्यें भरया । सा०। बोधन तथा नहीं पार तो ॥
महिषी मोटी दीसि बनी । सा०। दूय छि तेहनी फारतो ॥२॥
कनक भाज न भोइ मेहेली । सा०। रोहता होइ पार नावतो ॥
पंखीयडा नासि पांमि । सा०। मोर नाथि सुणे सादतो ॥३॥
सालक्षेत्र सीहि बरया । सा०। सूडा साव सोहंत तो ॥
परीमल दहो दख बिस्तरे । सा०। रस्य कस्य भमरा करंत तो ॥४॥
अनेक धान्य क्षेत्र भला । सा०। गीरी समा आनक अंभार तो ॥
भांवां बन विविध परी । सा०। ठाम ठाम बन बिस्तार तो ॥५॥
नदी कुमा व्यावबरणी । सा०। सरोवर भरया अंपार तो ॥
कमल रातां नीलां नीलां ऊजला । सा०। भमर तथा बुंजार तो ॥६॥

महुष्या नगर वर्णन

तेह देस माहि सीहि । सा०। बहुधा नयेरी कसंत तो ॥
धन कस्य कस्य रतने भरी । सा०। माहाजन कस्य अहंत तो ॥७॥
ब्राह्मण बंधने अम्याते । सा०। माहि पूरुण नदी माहि तो ॥
अवर वरस्य बरणा वसि । सा०। नित नित होइय उज्जहि तो ॥८॥
मोटा मंदिर बालीयां । सा०। तोरख अवि बहु सोभती ॥
मेडी कुसने आलीयां । सा०। कहोइ नहीं तस्य सीकरी ॥९॥

चहुँटा पीटा हाट बँहा । सा० । निम्नार्थी करी सारंगी ॥
 मारुती दीदी बरुही । सा० । कण्ठक लखी । पार । सा० ॥१०॥
 चोम मकुल बेल मीमको । सा० । नासकेली बरुही बरुके । तो ॥
 राम लमल बाबा बाबू । सा० । बाडी अन सुमीके । सा० ॥११॥
 सिंहपुर कुल बँडल । सा० । पहिलानीया अनक बसंत तो ॥
 राम भूवा बत बरुके । सा० । बहु बरी बरुके । सा० ॥१२॥
 ते नयरी बाहि कनत । सा० । जिन जराबा बिलाल तो ॥
 तोरख कलस बना लहिकि । सा० । तारका सोहि निम्नार्थी ॥१३॥
 वेदी स्वयं बला भावि । सा० । वाली बोल सुबंन तो ॥
 मर्मगुह कंबाड भली । सा० । चंदोपक पंचरंज तो ॥१४॥
 रथमंडप मोतीबासी । सा० । नाटक जाला रसाल तो ॥
 भीत बिजाम चतुर चमके । सा० । लके बहु फूल माल तो ॥१५॥
 मोती फूल तथा चोक । सा० । चोक मोटी पटसाल तु ॥
 कलस भृंगार चमर रुडा । सा० । भामडल काक भंजाल तो ॥१६॥
 रत्न कनक पीतल रुपा । सा० । धारजम प्रतिभा बसंत तो ॥
 तेजि सूरज जीपता । सा० । कीर्ति होब पय तक मंत्र तो ॥१७॥
 ताल कंताल बँडा बरी । सा० । धूमरी भस्वरी साह तो ॥
 मनेक बली पंजीत मलि । सा० । कीर्ति हरज अपार तो ॥१८॥
 भूलभायक कण्ठक । सा० । सोम सुरती कूट ठालो ॥
 चन्द्रपुरी म्हाबेन बत । सा० । बन अन बरुके मय तो ॥१९॥
 डेडसो चमूक कनत सही । सा० । चन्द्रहरण सोही देह तो ॥
 धन धन चन्द्रकल भव । सा० । चर्मामृत जामि मेह तो ॥२०॥
 श्रीगु मण्णरि केरीव । सा० । धन धन कमल सुनेव तो ॥
 धन धन चन्द्र कालि । सा० । धन धन जिन जम तो ॥२१॥
 धामु धन लाल पुरव । सा० । पुरनि बाँधीत काम तो ॥
 काम धीह भी नेम की । सा० । होत तबनीय केह ताम तो ॥२२॥
 धन धन जिन त्रिभुवन पती । सा० । धन धन धन विभास तो ॥
 धन धन तु अनवीरवर । सा० । धन धन बरुके नाम तु ॥२३॥
 धनि निबल केपि टुनि । सा० । धन धन बरुके विताल तो ॥
 धन धन धन धन । सा० । धनीधनी धन नाम तो ॥२४॥

मेंदीस मो जीन जचितोलो ।सा०। पास विषन हर नाम तो ॥
 बाराखली पुरी बीस्वेसन प्रभु ।सा०। काहली बनम्बी अशोराम तो ॥२५॥
 नीलवरख तनु नब हस्त ।सा०। सुरनर रचीत कल्याण तो ॥
 बरखेन्द्र बहभाषती पूजीयो ।सा०। जेह नामि हीय कल्याण तो ॥२६॥
 नागसांखन नवनिबी पूरें ।सा०। चूरि बीघनतखी रास तो ॥
 डाकली साकिशी भ्यंतरा ।सा०। नूत भय जेह नामि भास तो ॥२७॥
 पुत्र कलत्र मित्र संपदा ।सा०। भवीबां पूरि भरत तो ॥
 कवि देवेंद्र पूजीयो ।सा०। जयो जिन विषनहर पास तो ॥२८॥
 जिन सासन रक्षा करो ।सा०। जयो जायो श्री खेनवाल तो ॥
 नागो नाग विभूषणो तो ।सा०। हाबि डमरू जटाल तो ॥२९॥
 घूघरी पायें धमधमे ।सा०। नेउर रम भूमकार तो ॥
 माणीभद्र अरी मदचूरी ।सा०। संबनि करो जयकार तो ॥३०॥

मट्टारक परम्परा

मूलसंघ सरसती गङ्ग ।सा०। बलात्कार गण अशिराम तो ॥
 यमनंब गुह नखपती ।सा०। देवेंद्रकीरती मुख ठामतो ॥३१॥
 विद्यामं वि विद्यानीलो ।सा०। तस पाटि सोहि नीवान तो ॥
 मल्लिकार्जुन महीमा भलो ।सा०। मानीयो जेह सुलतान तो ॥३२॥
 ललित मंग लक्ष्मीचंद्र ।सा०। तेहपाटि बलनीबी चन्द्र तो ॥
 तप तेजें करीं सोहीयो ।हा०। बीरचंद्र सुमुनींद्र तो ॥३३॥
 साठवंस सौभा करू ।सा०। तेह पटि सार सखवार तो ॥
 ज्ञानसूचख ज्ञाने भलो ।सा०। अभिनयो गोयम प्रवतार तो ॥३३॥
 सुमतिकीरती सूरि आचार्य ।सा०। सेवयो जेह समुदीन तो ॥
 रत्नसूचख सूरि बरि स्तम्भो ।सा०। ज्ञानसूचख सूरि चण्य तो ॥३४॥
 तेह पाटि घुरंवर ।सा०। बीछा हुंभड वंसतो ॥
 प्रभाचंद्र महीचावलो ।सा०। ज्ञान सरोवर हुंस तो ॥३५॥
 कल्याण कीरती आचार्य ।सा०। सेवयो जेह सुभ मंन तो ॥
 बाहिराज ब्रह्म स्तम्भो ।सा०। प्रभाचंद्र बन वंन तो ॥३६॥
 तेह पाट उदंबाबल सूर ।सा०। निव्यावादी मदचूर तो ॥
 बाबिचंद्र बादिस्वर ।सा०। दीठडि हीई अशोद तो ॥३७॥

तेह बसपती भाँईस थीं ।सा०। बसुवा नयर बसाद तीं ॥
 बसपती बसुवा ।सा०। रास रण्यो सुखकार तीं ॥३६॥
 संघी भाकर मंघन ।सा०। संघति लीकवस तीं ॥
 ब्रूवात कुल लीह कर ।सा०। संघी बाँवाई सुखरस तीं ॥३६॥
 साहा भाहं नकुल कल्लो ।सा०। बाँवाई वन वर तीं ॥
 संघी वना कुल मंडल ।सा०। बसपंत संघी उदारती ॥३७॥
 हंकरास सुत साहा कुंवर तीं ।सा०। बाँह सुत बाँघीकी सुभंग तीं ॥
 बसपती भाँई संघ बाबरती ।सा०। रास रण्यो कन रंग तीं ॥३८॥

बनपुर नगर

मंदावती देस बली ।सा०। बनपुर नयर सुनाम तीं ॥
 भाँवा वन विविध परी ।सा०। दीसि बसा ठाव ठाव तीं ॥३८॥
 वाव्य कुमा सरोवर बसा ।सा०। कमल पोमछा बहुभाँव तीं ॥
 क्षेत्र बीसि धाम्य तसा ।सा०। ईशुवाकी विख्यात तीं ॥३९॥
 ईशुवांग तसा बीत्कार ।सा०। बाणो ए बीत नाव तीं ॥
 भूक्ति पीठवा पंथीया ।सा०। जीता दकती तैठायती ॥४०॥
 द्रास तथा मंडप बहु ।सा०। पंथीयडा करव विधान तीं ॥
 नमबेल बाकी बली ।सा०। केन तसा कन लखीराम तीं ॥४१॥
 उन्नतपठ डोल पीठी ।सा०। बँदिर जोडन बाबाद तीं ॥
 हाट भोली सोइमली ।सा०। महावद कचन भो बास तीं ॥४२॥
 नमि बुलाकल बन बसा ।सा०। बीबाहारीया लखरंम तीं ॥
 बाँहया नमि तीहा बसा ।सा०। वेवसास कबी उरंत तीं ॥४३॥
 सोहि भाबाद पीलीना तसा ।सा०। कल्ल बसा लहीत तीं ॥
 कनक पीतल बीब भवा ।सा०। सुर नर लखुह नें बोहीत तीं ॥४४॥
 बँटा तोरस कल्लरी ।सा०। भार्मडल वृंनार तीं ॥
 सात कंसाल कलसं भाँई ।सा०। बँधुवा सोहि उदार तीं ॥४५॥
 बस संघक भाँई विभ ।सा०। दीठके होव भाँईव तीं ॥
 लीमबुदंत रलीया बसा ।सा०। पुण्य लखवर कंध तीं ॥४६॥

लख पुत्र दोए बनिय । सा० बीकन बन्यावर नास तो ॥
 जैनकादी बिद्याविला । सा० समीकित रतन बुझ्य तो ॥६५॥
 बन्यावर तप उद्धरयो । सा० ब्रह्म बीभान्य समुद्र तो ॥
 बिसालभीति पांटे हवा । सा० देवेन्द्रकीसि सुरेन्द्र तो ॥६६॥
 लकलक सुरी सौंवासनि । सा० कनटि देव प्रसीध तो ॥
 बिनयन दीहा उद्धरयो । सा० जैनराधासि बुजा कीबली ॥६६॥
 त्रिविध ज्ञानम आखि मला । सा० विक्रमभट्ट बिल्वात तो ॥
 बिसादान बीखि दीया । सा० महीयलकीसि बुजाल तो ॥६७॥
 लखबाई तस भाभिनी । सा० सीलसमकित गुण लखतो ॥
 तसवि पुत्र बीसारद । सा० देवेन्द्र वासुदेव आखतो ॥६८॥
 जिनवर वरण कसल सेवि । सा० करि जिन शारद प्रस्थास तो ॥
 कवी देवेन्द्र एह रच्यो । सा० राम लखीवर तराँ रास तो ॥६९॥
 सांभलि सर्व सुख संपजि । सा० बर्मबुधी होइ प्रकास तो ॥
 पुत्र पीत्र धान्य बन । सा० मंगल ज्ञानंद उलसस तो ॥७०॥
 संवत १६ छाडभीसि । सा० भासो सुद बीज मुकुवार तो ॥
 रास रच्यो नब रस भरयो । सा० बहुधा नवर मकार तो ॥७१॥
 लखे लखाविषे भखि । सा० नाब सहित सुखि जेह तो ॥
 तेह धिर नख नख संपजि । सा० नित मंगल तेह जेह तो ॥७२॥
 मुनीसुव्रत जिन बयितीलो । सा० विक्रमदेवेन्द्र करि सेव तो ॥
 वासुदेव चक्रीरामे । सा० जयदेव कही स्तव्यो देव तो ॥७३॥
 पंचकत्याधि पूबीयो । सा० देवकीय सुयस प्रकास तो ॥
 श्री सिधनें मंगल करो । सा० सो जिन पूरयो भास तो ॥७४॥

बस्तु

जिन बोबीस तराण जिन बोबीस तराण
 नमीते पाया । राम जसोहर जेह तराण । रास रच्यो के शार नीर्मल
 शरद्वती भय प्रकास बी । बीनुदतलो बह्मिभय उज्जल ॥

यज्ञार माङ्ग पद स्वर, जो काँई पूको होय
 भावरयो कवी सुब करी, जमा करयो सङ्ग कोय ॥१॥

श्रीरस्तु उत्तमदानवीलपुत्रभृत् संघायतुयत्पने
 नंबत्वे तदनतकीर्त्ति महिमाहंद् वसत् सासर्न ॥

जीवतु ऋषसचाक् सुधोक्षितहृता तापीः कवीन्द्राः सदां
 सङ्गमं : किलबद्धंता त्रिभुवनै जैनो दयालक्षसः ॥१॥

इति श्री यज्ञोपनिषद् महाराज चरित्रे रासभूषणायौ काव्य—
 प्रतिष्ठे श्रुतेषु कवि श्रीविक्रमसुतवेन्द्रे विरचिते
 यज्ञोपनिषद् राजादि भवांतर यथाक्रम स्वर्गगमनोनाम
 नवमोऽधिकारः । यज्ञोपनिषद् रास संपूर्ण ॥ अरहतः ॥

संवत् १६४४ वर्षे भाद्रवा सुदि २ शुभौ । प्रद्योतकरपुर वास्तव्यं । उदीच
 जातीय राजल सोमनाथ सुत विश्वनाथ लीकत । शुभं भवतु ।
 ग्रंथ संख्या पांथीससे पूरा । प्रलोक ३५०० । इति शुभम् ।

